Radha Govind Geet

Part-1

(Hindi)

प्रकाशकीय

'**राधा गोविंद गीत**' एक अद्वितीय एवं अनुपमेय ग्रंथ है। समस्त वेदों, शास्त्रों, पुराणों एवं अन्यान्य धर्मग्रंथों के सार को जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज ने इतने सरस एवं सरल रूप में प्रस्तुत किया है कि जन साधारण भी उसे हृदयंगम करके वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञाता बन सकता है जो स्वयं अध्ययन करके तो सर्वथा असंभव ही है। भगवत्क्षेत्र संबंधी सभी प्रश्नों का उत्तर इस अनमोल ग्रंथ में निहित है। सिद्धान्त-पक्ष की अभूतपूर्व समन्वयात्मक विवेचना के साथ-साथ लीला-पक्ष का माधुर्य भी ऐसा है कि वज्र हृदय भी भक्ति रस से ओतप्रोत हो जाय। अधिक क्या कहा जाय, वस्तुतः दैहिक, दैविक, भौतिक तापों में तप रहे कलिमल-ग्रसित जीवों के लिये यह ग्रंथ अनन्त करुणा-वरुणालय स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा अपनी अकारण-करुणा के वशीभूत हो कर की गई शीतल सुधा-वृष्टि ही है। पाठक जन इस ग्रंथ का अध्ययन करके उपरोक्त बात की यथार्थता का स्वयं अनुभव करेंगे।

राधा गोविंद समिति

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

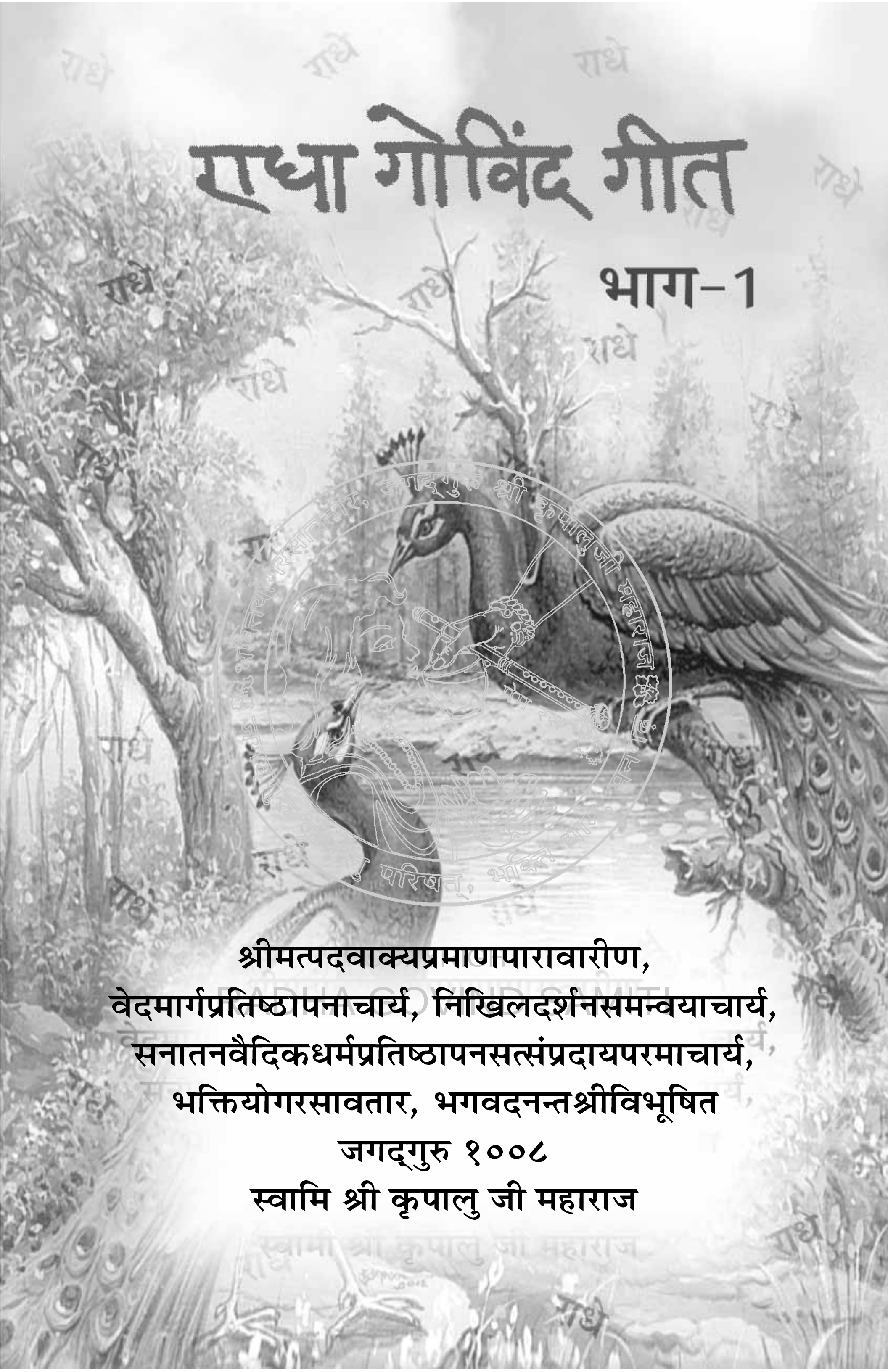

राधा गोविंद गीत

भाग–1

श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारीण,
वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्य, निखिलदर्शनसमन्वयाचार्य,
सनातनवैदिकधर्मप्रतिष्ठापनसत्संप्रदायपरमाचार्य,
भक्तियोगरसावतार, भगवदनन्तश्रीविभूषित
जगद्गुरु १००८
स्वामि श्री कृपालु जी महाराज

RADHA GOVIND SAMITI

जगद्‌गुरु कृपालु परिषत्

भक्ति धाम

मनगढ़ (कुण्डा) जिला प्रतापगढ़-229417 (यू.पी.) इण्डिया

फोन : 05341-230282, 230442

www.jagadgurukripaluparishat.org (jkp.org)

ISBN 978-81-909661-6-0

पहला संस्करण : गुरु पूर्णिमा 16 जुलाई 2000

चौथा संस्करण : जनवरी 2010

सर्वाधिकार सुरक्षित © 2010

राधा गोविन्द समिति, नई दिल्ली

इस प्रकाशन का कोई भी भाग पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी रूप में इलैक्ट्रानिक, यांत्रिक, फोटोग्राफिक अभिलेखन अथवा अन्य किसी भी प्रकार से प्रतिलिपि अथवा प्रसारित न किया जाय।

COPYRIGHT

RADHA GOVIND SAMITI

— प्रकाशक —

राधा गोविंद समिति

गोलोक धाम

एच. ए. एफ. (बी), पार्ट-1, सैक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली-110075

फोन: 011-25081088

e-mail: rgs108del@yahoo.com

प्राक्कथन

श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः

आनन्दकंद सच्चिदानंद श्री कृष्ण चंद्र की अकारण करुणा के परिणाम स्वरूप ही इस **'राधा गोविंद गीत'** की रचना हुई है। प्रस्तुत ग्रन्थ नाना वेद, शास्त्र पुराण एवं नाना आप्त ग्रन्थों का सारांश है। इस ग्रन्थ में जीव, ब्रह्म, माया का स्वरूप, जीव, ब्रह्म, माया का भेद, ब्रह्म, परमात्मा, भगवान का स्वरूप, मानव देह का माहात्म्य, जीव का चरम लक्ष्य, उस लक्ष्य की प्राप्ति का साधन, कर्म, योग, ज्ञान, भक्ति आदि का विशद निरूपण, महापुरुष का लक्षण, संसार का स्वरूप, भगवत्कृपा का स्वरूप, भगवत्शरणागति रहस्य, श्री राधा कृष्ण भक्ति का ही साधन एवं साध्य स्वरूप, क्रियात्मक साधना, श्री राधा तत्त्व, श्री कृष्ण तत्त्व, श्री राधा कृष्ण श्रृंगार, हरि नाम माहात्म्य, राधा कृष्ण बाल लीला, राधाकृष्ण-पौगंड लीला, राधा कृष्ण किशोर लीला आदि नाना विषयों का विशद निरूपण किया गया है। यदि इस **''ग्यारह सहस्त्र एक सौ ग्यारह''** पदों में से एक पद भी पाठक को श्री युगल सरकार के प्रेम प्राप्ति में सहायक होगा तो मैं स्वयं को अति धन्य मानूँगा। आशा है लघु शिशु की तोतली भाषा की रचना मान कर पाठक वृंद इसको स्वीकार कर लेंगे। अन्त में श्री राधा कृष्ण के प्रीत्यर्थ उन्हीं के कमल कोमल चरण कमलों में यह **''राधा गोविंद गीत''** ग्रन्थ समर्पित करता हूँ।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरुः
कृपालुः

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज

नाना पुराण वेद, गोविंद राधे।
मत सम्मत यह ग्रंथ बता दे॥
सब वैष्णवाचार्य, गोविंद राधे।
मतों का समन्वय ग्रंथ में बता दे॥
भक्तों को अर्पित, गोविंद राधे।
यह गीत माला है प्रेम बढ़ा दे॥
जगत का यह [illegible] गोविंद राधे।
जगत है [illegible] भक्ति को बता दे॥
तुम हो कृपालु माँगो, गोविंद राधे।
हम तो हैं भीख के कृपालु ही बता दे॥
राधा गोविंद गीत, गोविंद राधे।
इन हरि-चरणारविंद, अर्पित बता दे॥

कृपालु

जगद्गुरु श्री कृपालुजी महाराज
कृपालु परिषत्, भक्ति धाम, मनगढ़
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज का जन्म सन् 1922 ई. में शरत्पूर्णिमा की शुभ रात्रि में भारत के उत्तर प्रदेश प्रांत के प्रतापगढ़ जिले के मनगढ़ ग्राम में सर्वोच्च ब्राह्मण कुल में हुआ।

आपकी प्रारंभिक शिक्षा मनगढ़ एवं कुन्डा में सम्पन्न हुई। पश्चात् आपने इंदौर, चित्रकूट एवं वाराणसी में व्याकरण, साहित्य तथा आयुर्वेद का अध्ययन किया। 16 वर्ष की अल्पायु में ही चित्रकूट में शरभंग आश्रम के समीपस्थ बीहड़वनों में एवं वृन्दावन में वंशीवट के निकट जंगलों में वास किया।

सन् 1955 में आपने चित्रकूट में एक विराट दार्शनिक सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें काशी आदि स्थानों के अनेक विद्वान् एवं समस्त जगद्गुरु भी सम्मिलित हुए। सन् 1956 में ऐसा ही एक विराट संत सम्मेलन आपने कानपुर में आयोजित किया। आपके समस्त वेद शास्त्रों के अद्वितीय, असाधारण ज्ञान से वहाँ उपस्थित काशी के मूर्धन्य विद्वान् स्तम्भित रह गये। उस समय आपके संबंध में काशी के प्रख्यात पंडित, शास्त्रार्थ महाविद्यालय (काशी) के संस्थापक, शास्त्रार्थ महारथी, भारत के सर्वमान्य एवं अग्रगण्य दार्शनिक, काशी विद्वत्परिषत् के प्रधानमंत्री आचार्य श्री राज नारायण जी शुक्ल 'षट्शास्त्री' ने सार्वजनिक रूप से जो घोषणा की थी, उसका अंश इस प्रकार है—(कानपुर 19-10-56)

''काशी के पंडित आसानी से किसी को समस्त शास्त्रों का विद्वान् नहीं स्वीकार करते। हम लोग तो पहले शास्त्रार्थ करने के लिए ललकारते हैं। हम उसे हर प्रकार से कसौटी पर कसते हैं और तब उसे शास्त्रज्ञ स्वीकार करते हैं। हम आज इस मंच से इस विशाल विद्वन्मंडल को यह बताना चाहते हैं कि हमने संताग्रगण्य श्री कृपालु जी महाराज एवं उनकी भगवद्दत्त प्रतिभा को पहचाना है और हम आपको सलाह देना चाहते हैं कि आप भी इनको पहचानें और इनसे लाभ उठायें।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आप लोगों के लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि ऐसे दिव्य वांङ्मय को उपस्थित करने वाले एक संत आपके बीच में आये हैं। काशी समस्त विश्व का गुरुकुल है। हम उसी काशी के निवासी यहाँ बैठे हुए हैं। कल श्री कृपालु जी के अलौकिक वक्तव्य को सुनकर हम सब नत-मस्तक हो गये। हम चाहते हैं कि लोग श्री कृपालु जी महाराज को समझें और इनके सम्पर्क में

आकर उनके सरल, सरस, अनुभूत एवं विलक्षण उपदेशों को सुनें तथा अपने जीवन में उसे क्रियात्मक रूप से उतारकर अपना कल्याण करें।''

इसके पश्चात् आपको काशी विद्वत्परिषत् (भारत के लगभग 500 शीर्षस्थ शास्त्रज्ञ, वेदज्ञ विद्वानों की सभा है) ने काशी आने का निमंत्रण दिया।

श्री कृपालु जी के कठिन संस्कृत में दिये गये विलक्षण प्रवचन को सुनकर एवं भक्तिरस से ओत-प्रोत अलौकिक व्यक्तित्व को देखकर सभी विद्वान् मंत्रमुग्ध हो गये। तब सबने एकमत होकर आपको ''**जगद्गुरूत्तम**'' की उपाधि से विभूषित किया। उन्होंने स्वीकार किया कि श्री कृपालु जी जगद्गुरुओं में भी सर्वोत्तम हैं।

....धन्यो मान्य जगद्गुरूत्तम पदैः सोऽयं समभ्यर्च्यते।

यह ऐतिहासिक घटना 14 जनवरी सन् 1957 को हुई। उस समय श्री कृपालु जी महाराज की आयु मात्र 34 वर्ष की थी। जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज विश्व के पाँचवे मूल जगद्गुरु हैं। उनके पूर्व केवल चार महापुरुषों को ही जगद्गुरु की मूल उपाधि प्रदान की गई थी- जगद्गुरु श्री शंकराचार्य, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य, जगद्गुरु श्री रामानुजाचार्य एवं जगद्गुरु श्री माध्वाचार्य।

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज समन्वयवादी जगद्गुरु हैं अतएव ये पूर्ववर्ती समस्त आचार्यों **(जगद्गुरु निम्बाकाचार्य, जगद्गुरु रामानुजाचार्य, जगद्गुरु माध्वाचार्य एवं चैतन्यदेव)** के दार्शनिक सिद्धान्तों को सही सिद्ध करते हुये अपना समन्वयवादी सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैँ अतः 'काशी विद्वत्परिषत्' ने इन्हें 'निखिलदर्शन समन्वयाचार्य' की उपाधि से विभूषित किया, साथ ही भगवत्प्रेम के अष्ट सात्विक भावों को देखकर उन्हें 'भक्तियोग रसावतार' की उपाधि भी प्रदान की।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु-आदेश

श्रीकृष्ण का माधुर्य-भाव युक्त निष्काम प्रेम प्राप्त कर, उन की नित्य सेवा ही तुम्हारा लक्ष्य है।

वह दिव्य निष्काम प्रेम, गुरुकृपा द्वारा अंतःकरण-शुद्धि होने पर ही प्राप्त होगा।

वह अंतःकरण शुद्धि, गुरु द्वारा निर्दिष्ट साधना द्वारा ही संभव है।

साधना - श्रीराधाकृष्ण का रूपध्यान करते हुये (स्वेच्छा से बनाये हुये रूप मे दिव्य-भावना रखना है) रो कर उनके नाम गुण लीलादि का संकीर्तन करो।

सदा श्रीकृष्ण को अपने साथ ही मानो।

मोक्ष पर्यंत की कामना छोड़कर, केवल दिव्य शुद्ध प्रेम की कामना से ही प्रेम करो।

"वे ही मेरे हैं," इस भावना को निरंतर दृढ़ करो, एवं श्याममिलन की परमव्याकुलता पैदा करो।

परदोषदर्शनादि कुसंगों से बचो।

मानवदेह का प्रत्येक क्षण अमूल्य मानो।

— मैं सदा तुम्हारा सहायक हूँ — तुम्हारा कृपालु

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

— श्री गुरवे नमः —

गौर नागरिहिं श्याम रस,
श्याम नागरहिं गौर।
नागरिहिं रस की भरी,
करत दोउ रस भोर॥
श्री गुरु चरण शरण गहु
भजु श्री युगल किशोर।
तब कृपालु की कृपा तें
मिलइ प्रेम चितचोर॥

कृपालु

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अनुक्रमणिका

भाग 1

	विषय		*पद संख्या*		*पृष्ठ संख्या*
1.	दैन्य माधुरी	...	1–644	...	1
2.	जीव का लक्ष्य	...	645–828	...	57
3.	मानव देह	...	829–960	...	73
4.	शरणागति, कृपा	...	961–1248	...	85
5.	संसार	...	1249–1769	...	111
6.	महापुरुष	...	1770–2150	...	155
7.	कर्म	...	2151–2422	...	189
8.	योग	...	2423–2508	...	213
9.	ज्ञान	...	2509–3673	...	221
10.	भक्ति	...	3674–5901	...	319

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अनुक्रमणिका

भाग 2

	विषय	...	पद संख्या		पृष्ठ संख्या
11.	ब्रजधाम	...	5902–5995	...	507
12.	श्री राधा	...	5996–6446	...	517
13.	श्री राधा कृष्ण	...	6447–6586	...	557
14.	श्री राधा नाम महिमा	...	6587–6747	...	571
15.	अवतार	...	6748–7309	...	585
16.	लीला माधुरी	...	7310–10729	...	633
17.	संकीर्तन	...	10730–10965	...	921
18.	सत्संग–कुसंग	...	10966–11074	...	943
19.	शमादि परिभाषा	...	11075–11111	...	953

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

1

दैन्य माधुरी

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥ 1 ॥

राधा कृष्ण नाम है गोविंद राधे।
चैतन्य रस विग्रह सों बता दे॥ 2 ॥

राधे गोविंद गावें गोविंद राधे।
राधे गोविंद गावें रसिक बता दे॥ 3 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरे दोनों ठाकुर गोविंद राधे।
भोरी भारी राधे गोविंद सीधे सादे॥ 4 ॥

सदा मुस्कुरायें दोनों गोविंद राधे।
मेरी शुभ कामना है उनको बता दे॥ 5 ॥

मेरे दोउ ठाकुर गोविंद राधे।
मोहिं दासी दासी दासी दासी बना दे॥ 6 ॥

राधा गोविंद गीत

जीवन जीवन गोविंद राधे।
जीवनधन घनश्याम हैं बता दे॥ 7 ॥
जीवन जीवन गोविंद राधे।
श्याम, श्याम जीवन श्यामा बता दे॥ 8 ॥
राधे राधे गाये जा गोविंद राधे।
आँसू बहाये जा जग को भुला दे॥ 9 ॥
हरि को बुलाये जा गोविंद राधे।
जग को भुलाये जा जग तोहिं का दे॥ 10 ॥
नित्य बिहार करें गोविंद राधे।
ब्रज में या मेरे उर पुर में बता दे॥ 11 ॥
झूमत अइहैं कब गोविंद राधे।
श्यामा श्याम मो ढिग गरबँहियाँ दे॥ 12 ॥
गरबाँहीं दै के आजा गोविंद राधे।
उर बिच झूला डारि झूला झुला दे॥ 13 ॥
राधे देखें गोविंद गोविंद राधे।
हमको भी देखें कोऊ जा के बता दे॥ 14 ॥
एक वर दे दे राधे गोविंद राधे।
भूलेहुँ भूलूँ नहिं तोहिं पल आधे॥ 15 ॥
तुम भी न भूलो मोहिं गोविंद राधे।
मैं भी न भूलूँ तोहिं पल छिन आधे॥ 16 ॥
'मैं तेरी' भूलूँ भी तो गोविंद राधे।
'तू मेरा' यह कभू ना भुला दे॥ 17 ॥
दोनों दिव्य चन्द्रमा हैं गोविंद राधे।
मेरे दोउ नैना चकोर बना दे॥ 18 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जित देखूँ दीखें गोविंद राधे।
ऐसा जादू का डंडा घुमा दे॥ 19॥
बार बार देखूँ तोहिं गोविंद राधे।
बार बार दर्शन प्यास बढ़ा दे॥ 20॥
रोम रोम रस चुये गोविंद राधे।
आठों याम पीते तेरे जन न अघाते॥ 21 ॥
तुम हो कृपालु दोऊ गोविंद राधे।
कृपा कोर करि मेरी बिगरी बना दे॥ 22॥
सत चित आनन्द गोविंद राधे।
वृन्दाविपिनचन्द प्रेमसुधा दे॥ 23 ॥
नन्दनन्दानन्दकन्द गोविंद राधे।
पादारविन्द मकरन्द पिला दे॥ 24॥
भुक्ति मुक्ति कछु ना दे गोविंद राधे।
अष्टयामी सेवा करूँ ऐसी बना दे॥ 25 ॥
भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ गोविंद राधे।
ना दे ना दे ना दे हरि गुरु सेवा दे॥ 26॥
सब इच्छा छोड़ दिया गोविंद राधे।
एक इच्छा श्यामा श्याम सेवा दिला दे॥ 27 ॥
तू है सत्य संकल्प गोविंद राधे।
संकल्प ते ही निज सेवा दिला दे॥ 28॥
तेरी सेवा ही तो मेरा गोविंद राधे।
जन्म सिद्ध अधिकार मो को दिला दे॥ 29 ॥
तन मन धन सब गोविंद राधे।
सेवा में लगाऊँ तेरी ऐसा बना दे॥ 30॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निज सेवा ना दे यदि गोविंद राधे।
निज दास दास दास सेवा दिला दे॥ 31॥

तेरा ही रूप गुरु गोविंद राधे।
उनकी ही सेवा करूँ ऐसा बना दे॥ 32॥

मैं हूँ तेरा नित्य दास गोविंद राधे।
मेरा वही दासत्व मो को दिला दे॥ 33॥

दासी न बनावे यदि गोविंद राधे।
निज दासी गोपियों की दासी बना दे॥ 34॥

सब कछु है तेरा गोविंद राधे।
सब कछु ले ले मोहिं प्रेम सुधा दे॥ 35॥

तू ही मेरा सब कछु गोविंद राधे।
पुनि क्यों भुलाया मोहिं निठुर बता दे॥ 36॥

वेद कहें 'माहं ब्रह्म' गोविंद राधे।
भाव मैं तोहिं तू मोहिं ना भुला दे॥ 37॥

मैं तो भूला माया वश गोविंद राधे।
तू तो मायाधीश क्यों भुलाया बता दे॥ 38॥

माना मैं पतित अति गोविंद राधे।
दोषी तेरी दासी माया मैं ना बता दे॥ 39॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पापों की जननी तो गोविंद राधे।
माया है दासी तेरी मोहिं दोष का दे॥ 40॥

माया का भी दोष नाहिं गोविंद राधे।
माया जड़ तू चाहे जैसा घुमा दे॥ 41॥

तेरा भी दोष नाहिं गोविंद राधे।
आया न शरण तेरी तोहिं दोष का दे॥ 42॥

तू तो मन ही में रह गोविंद राधे।
पुनि मन शुद्ध नहिं हुआ क्यों बता दे॥ 43॥
 या तो मन शुद्ध करु गोविंद राधे।
 या तो तू चला जा राधारानी को बुला दे॥ 44॥
तू तो मेरा है ही हरि गोविंद राधे।
मैं भी तेरा हूँ या नहिं तू भी बता दे॥ 45॥
 तू तो कह तू है मेरा गोविंद राधे।
 यदि मैं हूँ तेरा निज प्रेम दिला दे॥ 46॥
तू जो दिव्य प्रेम ना दे गोविंद राधे।
तो निज जन ते ही प्रेम दिला दे॥ 47॥
 जिसको भी चाह ले तू गोविंद राधे।
 सोइ हो सुहागिनि वेद बता दे॥ 48॥
दीनों में दीन हूँ मैं गोविंद राधे।
तू है दीनबन्धु मोहिं बन्धु बना दे॥ 49॥
 तू तो है दीनबन्धु गोविंद राधे।
 तृण ते अधिक मोहिं दीन बना दे॥ 50॥
दीनता हो ऐसी जामें गोविंद राधे।
दीनताभिमान लेश भी न हो बता दे॥ 51॥
 तृण ते अधिक नम्र गोविंद राधे।
 तरु ते भी अधिक सहिष्णु बना दे॥ 52॥
सब को दूँ सम्मान गोविंद राधे।
आपु मान चाहूँ नहिं ऐसा बना दे॥ 53॥
 स्तुति सुनि फूलूँ नहिं गोविंद राधे।
 निन्दा सुनि पिचकूँ ना ऐसा बना दे॥ 54॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

परदोष देखूँ नहिं गोविंद राधे।
परनिन्दा करूँ नहिं ऐसा बना दे॥ 55॥
हीरा ना दे मोती ना दे गोविंद राधे।
या तो कछु ना दे या तो प्रेम सुधा दे॥ 56॥
हरि हर पद ना दे गोविंद राधे।
अमृत सर ना दे प्रेम सुधा दे॥ 57॥
भुक्ति ना दे मुक्ति ना दे गोविंद राधे।
देना है तो सीधे सीधे प्रेम भिक्षा दे॥ 58॥
स्वर्ग अपवर्ग ना दे गोविंद राधे।
गोपी प्रेम वाला एक प्याला पिला दे॥ 59॥
यदि कहो वर माँगो गोविंद राधे।
वर माँगूँ माँगने की कामना मिटा दे॥ 60॥
एक वर माँगूँ हरि गोविंद राधे।
माँगने की बुद्धि कभु सपनेहुँ ना दे॥ 61॥
तेरी इच्छा दिव्य दिव्य गोविंद राधे।
मेरी इच्छा मायिक पतन करा दे॥ 62॥
तो सों नहिं माँगूँ कछु गोविंद राधे।
COPYRIGHT
गोपी जन ते गोपी प्रेम दिला दे॥ 63॥
RADHA GOVIND SAMITI
वेद कहे तू ही मेरा गोविंद राधे।
प्राण लै के प्राणधन प्रेम दिला दे॥ 64॥
तू तो है कृपालु पुनि गोविंद राधे।
प्रेम दान में काहे किन्तु लगा दे॥ 65॥
तू तो अन्यथा कर्तुं गोविंद राधे।
समरथ बिनु पात्र प्रेम दिला दे॥ 66॥

प्रेम निष्काम माँगूँ गोविंद राधे।
एक बार कह तो दे दूँगा चाहे ना दे॥ 67॥

तेरे द्वार जो भी गया गोविंद राधे।
खाली हाथ लौटा कौन नाम बता दे॥ 68॥

कर्मी को स्वर्ग अरु गोविंद राधे।
ज्ञानी को मोक्ष मोहिं प्रेम सुधा दे॥ 69॥

योगियों को सिद्धि दे दे गोविंद राधे।
मोकूँ युगल पद सेवा दिला दे॥ 70॥

कछु नाहिं माँगूँ क्योंकि गोविंद राधे।
बिनु माँगे मोती मिले माँगे भीख ना दे॥ 71॥

तेरी सब वस्तु पै गोविंद राधे।
मेरा अधिकार है तू दे चाहे ना दे॥ 72॥

तुझते विमुख होके गोविंद राधे।
अति दुःख पाया हरि अब तो क्षमा दे॥ 73॥

तुझते विमुख होके गोविंद राधे।
हुआ निष्पाप कौन नाम बता दे॥ 74॥

तुझते विमुख होके गोविंद राधे।
पाप ही कमाया अब सन्मुखता दे॥ 75॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरा मेरा नाता जो गोविंद राधे।
छत्तीस है तिरसठ तू बना दे॥ 76॥

श्याम तू मिले ना मिले गोविंद राधे।
मिलने की तीव्र पिपासा बढ़ा दे॥ 77॥

दर्शन दे या ना दे गोविंद राधे।
दर्शन देने वाली लगन लगा दे॥ 78॥

तरसाने में ही सुख गोविंद राधे।
मिले यदि जी भर के तरसा दे॥ 79॥
गाती रहूँगी नाम गोविंद राधे।
तू ध्यान दे चाहे हवा में उड़ा दे॥ 80॥
अपना बनाया तोहिं गोविंद राधे।
अब पिय पाछे पग हटे ना बता दे॥ 81॥
प्यार करो या मारो गोविंद राधे।
पाछा नहिं छोड़ें हम पल छिन आधे॥ 82॥
छोड़ूँ न पाछा तेरा गोविंद राधे।
चाहे अपना ले मोहिं चाहे ठुकरा दे॥ 83॥
मेरे प्राणधन कृष्ण गोविंद राधे।
उर ते लगा ले पुनि चक्र चला दे॥ 84॥
मेरे थे रहोगे तुम गोविंद राधे।
प्यार करो चाहे चक्र चला दे॥ 85॥
मेरे थे रहोगे तुम गोविंद राधे।
चाहे यह कहो तू कौन है बता दे॥ 86॥
ममता बढ़ा दे मेरी गोविंद राधे।
COPYRIGHT
तुम दोनों ते ही शेष जग ते हटा दे॥ 87॥
RADHA GOVIND SAMITI
मेरा तो परम पति गोविंद राधे।
परम पिता परमात्मा बता दे॥ 88॥
मेरे तो एक ही हैं गोविंद राधे।
साँचो यार नन्दकुमार बता दे॥ 89॥
मेरे साँचे यार पै गोविंद राधे।
अगनित बार बलिहार बता दे॥ 90॥

और कछु माँगूं नहिं गोविंद राधे।
तू ही मेरा बन मोहिं अपनी बना दे॥ 91॥
अपनी बना ना बना गोविंद राधे।
मेरा बन गया या ना ये तो बता दे॥ 92॥
मेरा भी बना ना हो जो गोविंद राधे।
मेरा बनने का साधन बता दे॥ 93॥
मैंने तो बनाया पिया गोविंद राधे।
स्वीकार हो तो प्यारी कहि के बुला दे॥ 94॥
प्यारी कहने में यदि गोविंद राधे।
लाज लागे तो आके सिर ही हिला दे॥ 95॥
स्वामी, सखा, सुत, पति गोविंद राधे।
रसिक बतावें तोसों चार चार नाते॥ 96॥
कल्पित नाते भी गोविंद राधे।
जग में निभाते सत्य नाते निभा दे॥ 97॥
जग सों न तोड़ा नाता गोविंद राधे।
तोसों न जोड़ा नाता तोहिं दोष का दे॥ 98॥
माना न जोड़ा नाता गोविंद राधे।
फिर भी है नाता नाता नाता निभा दे॥ 99॥
कैसे रिझाऊँ तोहिं गोविंद राधे।
प्रेम ते हूँ निर्धन धनी तो बना दे॥ 100॥
रोम रोम चाहे तोहिं गोविंद राधे।
ऐसी प्रेम रस मदिरा को पिला दे॥ 101॥
जलहीन मीन जैसे गोविंद राधे।
तलफूँ मैं तेरे बिन ऐसी बना दे॥ 102॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

और कछु ना दे ना दे गोविंद राधे।
मिलन की व्याकुलता तो बढ़ा दे॥ 103॥
दर्शन दे या ना दे गोविंद राधे।
प्रेम सुधा सिन्धु में तो डुबा दे॥ 104॥
प्रेम सिन्धु में डुबा दे गोविंद राधे।
तू मेरा मैं तेरी भावना बढ़ा दे॥ 105॥
सुना है तू जादूगर गोविंद राधे।
ऐसा जादू कर मोहिं गोपी बना दे॥ 106॥
भगवान जनि बनु गोविंद राधे।
प्रियतम बनु मोहिं प्यारी बना दे॥ 107॥
तोहिं नहिं मानूँ ब्रह्म गोविंद राधे।
तू तो मेरा पिय मोहिं प्यारी बना दे॥ 108॥
उर ते लगा ले प्यारे गोविंद राधे।
सदा सदा को मोहिं प्यारी बना दे॥ 109॥
और प्यार दे या ना दे गोविंद राधे।
एक बार मेरी कहि सीने ते लगा दे॥ 110॥
उर ते लगा ना हरि तो गोविंद राधे।
COPYRIGHT
दूर ते ही मेरी ओर लखि मुसका दे॥ 111॥
RADHA GOVIND SAMITI
वो दिन कब आये गोविंद राधे।
जब श्याम प्यारी कहि भुज फैला दे॥ 112॥
एक दिन आना होगा गोविंद राधे।
तब लौं चाहे जितना तड़पा दे॥ 113॥
एक दिन मेरा प्यार गोविंद राधे।
देख लेना पिय तोहूँ तड़पा दे॥ 114॥

माना तुम भगवान गोविंद राधे।
हो, किन्तु मेरा प्रेम भग को भगा दे॥ 115॥
एक वर माँगूँ पिय गोविंद राधे।
दोउ कर की गरमाला पिन्हा दे॥ 116॥
मेरे पास आया नहिं गोविंद राधे।
मोको भी बुलाया नहिं कैसा पी बता दे॥ 117॥
आये न बुलाये न गोविंद राधे।
मेरा पिय तू ही था है रहेगा बता दे॥ 118॥
तेरा मेरा प्यार सच्चा गोविंद राधे।
एक बार प्यारी कहि मोहिं बुला दे॥ 119॥
तेरे तो अनेक जन गोविंद राधे।
मेरा एक तू ही जनि मोहिं भुला दे॥ 120॥
तेरा मेरा अंग संग गोविंद राधे।
होगा या ना होगा मेरे कान में बता दे॥ 121॥
तू तो मेरी आत्मा है गोविंद राधे।
मेरी आत्मा ते मेरा रमण करा दे॥ 122॥
तेरे बिनु जीना नहिं गोविंद राधे।
COPYRIGHT
जीना जी ना लगे अब जग ते उठा दे॥ 123॥
RADHA GOVIND SAMITI
वृंदारकवृंदवंद्य गोविंद राधे।
तुम बिन रहा नहिं जाये पल आधे॥ 124॥
विरह ना सहा जाये गोविंद राधे।
रहा नाहिं जाये करूँ क्या तू बता दे॥ 125॥
जब ते सुना है कान गोविंद राधे।
हरि-गुन आँखि कहे मोहूँ दिखा दे॥ 126॥

प्राण कहे मैं ना रहुँ गोविंद राधे।
आँखि कहे एक बार और दिखा दे॥ 127॥
जो मोहिं 'मेरा' माने गोविंद राधे।
वाय अपनाऊँ यह याद करो वादे॥ 128॥
अपना बनाना है तो गोविंद राधे।
झूठे वादे ना करु अपना बना दे॥ 129॥
सुना है कि तेरे घर गोविंद राधे।
अंधेर नहिं चाहे देर लगा दे॥ 130॥
देर लगाना अच्छा गोविंद राधे।
देर लगा के मेरा प्रेम बढ़ा दे॥ 131॥
एक दिन तू भी मेरा गोविंद राधे।
होगा इस सपने को साँच बना दे॥ 132॥
तेरा प्यार पाऊँगी मैं गोविंद राधे।
मेरी इस आस का विश्वास बढ़ा दे॥ 133॥
एक वर माँगूँ तो सों गोविंद राधे।
तव सुख सुखी रहूँ ऐसी बना दे॥ 134॥
स्वामी न चाहे कछु गोविंद राधे।
दासी भी न चाहे कछु ऐसी बना दे॥ 135॥
इच्छा में इच्छा रखूँ गोविंद राधे।
मैंने व्रत लिया मेरे व्रत को निभा दे॥ 136॥
परमानन्दकंद गोविंद राधे।
दोउ मुख चन्द का चकोर बना दे॥ 137॥
तू तो मोहिं देखे नित गोविंद राधे।
मैं भी तोहिं देखूँ ऐसी दृष्टि दिला दे॥ 138॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अर्जुन को जो दिये गोविंद राधे।
दिव्य दृष्टि मोको ना देना डरा दे॥ 139॥
जो दृष्टि गोपियों को गोविंद राधे।
दी थी सोई दृष्टि मोको दिला दे॥ 140॥
नित्य विहार देखूँ गोविंद राधे।
कृपा शक्ति द्वारा अधिकारी बना दे॥ 141॥
अति मतवारी प्यारी गोविंद राधे।
हंस लजाने वारी चाल दिखा दे॥ 142॥
मुरली की तान निज गोविंद राधे।
किसी ते कहूँगी नहिं चुपके सुना दे॥ 143॥
गरल सुधा मधु गोविंद राधे।
वारी प्यारी चितवनि नेकु दिखा दे॥ 144॥
बार बार देखा तोहिं गोविंद राधे।
फिर भी न देखा दै के आँख दिखा दे॥ 145॥
तू तो बिनु आँख देखे गोविंद राधे।
मोको निज आँख ते ही झाँकी दिखा दे॥ 146॥
कहीं ते भी आना नहिं गोविंद राधे।
उर में है बाहर झलक दिखा दे॥ 147॥
तेरे जन खरे खरे गोविंद राधे।
मैं हूँ एक खोटा सिक्का मोहिं चला दे॥ 148॥
भक्त तोहिं प्राण प्रिय गोविंद राधे।
हमसे पतित कहाँ जायें ये बता दे॥ 149॥
खरे को दे जग साथ गोविंद राधे।
खोटे को तेरे सिवा कोई साथ ना दे॥ 150॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मैं खोटे ते खोटा गोविंद राधे।
मारि दृग चोट लोट पोट करा दे॥ 151॥
मैं हूँ विचित्र पापी गोविंद राधे।
पापी न मानूँ कहूँ पावन बना दे॥ 152॥
दीनबंधु तेरा नाम गोविंद राधे।
मेरो बनि जाओ ऐसी उर दीनता दे॥ 153॥
ब्रह्म तो बनावे बड़ा गोविंद राधे।
मोको तो छोटे ते छोटा बना दे॥ 154॥
ब्रह्म तो बनावे ब्रह्म गोविंद राधे।
मोको तो ब्रह्म का दास बना दे॥ 155॥
तुझसा न दीनानाथ गोविंद राधे।
मुझसा न दीन अनाथ कृपा दे॥ 156॥
नाम भक्तवत्सल सुनि गोविंद राधे।
डरूँ, दीनबन्धु नाम साहस बढ़ा दे॥ 157॥
मेरे काजे काहे हरि गोविंद राधे।
आपुन दीनबन्धु विरद नसा दे॥ 158॥
बुद्धि ते न जाना जाये गोविंद राधे।
तो को जाने तू ही या तू जिसको जना दे॥ 159॥
प्राकृत बुद्धि ते तो गोविंद राधे।
आत्मा का ज्ञान ही असम्भव बता दे॥ 160॥
मेरी बुद्धि मायिक गोविंद राधे।
तू है दिव्य दिव्य ज्ञान कृपा ते करा दे॥ 161॥
तेरे हाथ में है सब गोविंद राधे।
माया को जिता दे चाहे जीव को जिता दे॥ 162॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तूने मारे कंस आदि गोविंद राधे।
मेरे काम आदि को भी मारि के दिखा दे॥ 163॥

मन बड़ा अभिमानी गोविंद राधे।
छवि दिखला के अभिमान मिटा दे॥ 164॥

तेरी छवि ज्ञानियों के गोविंद राधे।
मरे हुए मन को भी फिर ते जिला दे॥ 165॥

काम को हराया तूने गोविंद राधे।
मन दे चुनौती आजा मोहिं हरा दे॥ 166॥

तेरा तनु है त्रिभंगी गोविंद राधे।
मेरा मन भी त्रिभंगी तन ते मिला दे॥ 167॥

तुझसा दयालु कौन गोविंद राधे।
पूतना सी पापिनी को मुक्ति दिला दे॥ 168॥

तुझसा उदार कौन गोविंद राधे।
जो कुब्जा को भी कमला बना दे॥ 169॥

झोली न लाया मैं तो गोविंद राधे।
झोली भी दे झोली भर के दिखा दे॥ 170॥

तू तो आनन्द सिन्धु गोविंद राधे।
मैं हूँ अंश आनन्द बिन्दु ही पिला दे॥ 171॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आनन्दहुँ आनन्द गोविंद राधे।
प्रेमानन्द की एक बूँद पिला दे॥ 172॥

प्यासे रहे प्रेम के गोविंद राधे।
प्रेम सुधा दे मेरी प्यास बुझा दे॥ 173॥

तू तो है प्रेम सिन्धु गोविंद राधे।
इक बूँद इस प्यासे को भी पिला दे॥ 174॥

तेरे रोम रोम ते ही गोविंद राधे।
ब्रजरस चुये इक बूँद पिला दे॥ 175॥
फिर नाहिं माँगूँगा गोविंद राधे।
एक बार ब्रज रस छक के पिला दे॥ 176॥
तू तो ब्रजरस सिन्धु गोविंद राधे।
कहा घटि जाये तोरा छक के पिला दे॥ 177॥
तू तो ऐसा पूर्ण ब्रह्म गोविंद राधे।
पूर्ण ते निकालो पूर्ण पूर्ण बचा दे॥ 178॥
तन मन प्राण तेरा गोविंद राधे।
मैं हूँ भिखारी तू है दाता तोहिं का दे॥ 179॥
तुझ सा न प्रेम दाता गोविंद राधे।
मुझ सा भिखारी नहिं भीख दिला दे॥ 180॥
माँगने का काम मेरा गोविंद राधे।
देने का काम तेरा दे चाहे ना दे॥ 181॥
कछु भी न देना हो तो गोविंद राधे।
आके साफ साफ मेरे सामने बता दे॥ 182॥
तेरे जैसा दाता कोई गोविंद राधे।
COPYRIGHT
था, न तो है, न तो होगा बता दे॥ 183॥
RADHA GOVIND SAMITI
तुम ही हो साँचो दाता गोविंद राधे।
और सब तो हैं भिखारी भीख का दे॥ 184॥
तेरा सुत भीख माँगे गोविंद राधे।
द्वार भिखारियों के तू ध्यान ना दे॥ 185॥
विधि हरि हर तेरे गोविंद राधे।
द्वार के भिखारी पुनि सुर नर का दे॥ 186॥

मो सो कौन निर्बल गोविंद राधे।
तो सो कौन बलवान नाम बता दे॥ 187॥
मो सो कौन अपकारी गोविंद राधे।
तो सो कौन पर उपकारी बता दे॥ 188॥
तेरा सुत तेरी गोद गोविंद राधे।
मोह निशा में सोया अब तो जगा दे॥ 189॥
जगत बनाया और गोविंद राधे।
उसमें समाया पै दिखाई काहे ना दे॥ 190॥
जग जो बनाया तूने गोविंद राधे।
सुख क्यों छुपाया अब माया को हटा दे॥ 191॥
आजा मेरे सामने तू गोविंद राधे।
काहे खेले खेल लुका छुपी का बता दे॥ 192॥
पीछा नाहिं छोड़ूँ तेरा गोविंद राधे।
झुँझला के चाहे निज चक्र चला दे॥ 193॥
भटकत थकि गये गोविंद राधे।
युगल चरण की शरण दिला दे॥ 194॥
गोपियों ते रास किया गोविंद राधे।
मोते रास जनि करु रास तो दिखा दे॥ 195॥
घटि नाहिं जाये कछु गोविंद राधे।
मेरी ओर लखि दोउ टुक मुसका दे॥ 196॥
तेरा कहा घटि जाये गोविंद राधे।
अकारण करुणा का द्वार खुलवा दे॥ 197॥
तुझसा उदार नाहिं गोविंद राधे।
जो बिनु सेवा अपने आप को लुटा दे॥198॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरे उपकारों ते गोविंद राधे।
कौन हुआ है हरि उऋण बता दे॥ 199॥

बड़े बड़े ज्ञानी डूबे गोविंद राधे।
ब्रजरस महँ मैं भी तेरा हूँ डुबा दे॥ 200॥

तुम तो हो प्रेमसिन्धु गोविंद राधे।
बरबस मो को प्रेमसिन्धु में डुबा दे॥ 201॥

जनम जनम की है गोविंद राधे।
प्रेम पिपासा प्रेम प्याला पिला दे॥ 202॥

ह्लादिनी का सार प्रेम गोविंद राधे।
साधना ते मिले नहिं कृपा ते दिला दे॥ 203॥

तेरी निज कृपा शक्ति गोविंद राधे।
द्वारा, गुरु द्वारा प्रेम दान करा दे॥ 204॥

तेरे गुन गन सुनि गोविंद राधे।
आई हूँ शरण अब तो ना भगा दे॥ 205॥

प्रेम दिला दे या तो गोविंद राधे।
अपना सुदर्शन चक्र चला दे॥ 206॥

तुझ सा कृपण नहिं गोविंद राधे।
प्रेम का भण्डार भरा धरा किन्तु ना दे॥ 207॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

धन दिये धन बाढ़ै गोविंद राधे।
प्रेम दिये प्रेम बाढ़ै पात्र ध्यान ना दे॥ 208॥

मोहिं प्रेम दे दे यदि गोविंद राधे।
मेरे अनुयायी सब तेरे बना दे॥ 209॥

जो ना करे प्रेम तोसों गोविंद राधे।
वाको संग ना दे ना दे ना दे ना दे ना दे॥ 210॥

जो भी प्रेम करे तोसों गोविंद राधे।
वाके चरणों की मोहिं धूल बना दे॥ 211॥

रसिकों का संग दे दे गोविंद राधे।
कर्मी योगी ज्ञानी संग ना दे ना दे ना दे॥ 212॥

प्रेम दिला दे मोहिं गोविंद राधे।
पात्र में भी छिद्र याते पात्र बना दे॥ 213॥

दाता में कमी नहीं है गोविंद राधे।
पात्र ही कुपात्र है सुपात्र बना दे॥ 214॥

तेरी भक्ति के बिना गोविंद राधे।
किसका मन शुद्ध हुआ नाम बता दे॥ 215॥

रूपध्यान करूँ जब गोविंद राधे।
नींद मेरी सौत बनि आके सुला दे॥ 216॥

मुझसे न होगी भक्ति गोविंद राधे।
मैंने हार मानी भक्ति शक्ति ते करा दे॥ 217॥

सुनने में सरल भक्ति गोविंद राधे।
करने में कठिन वाय सरल बना दे॥ 218॥

तेरा नाम गुन गाऊँ गोविंद राधे।
COPYRIGHT
किन्तु मन अनुराग जागे ना जगा दे॥ 219॥
RADHA GOVIND SAMITI

नाम गुन लीला गाया गोविंद राधे।
किन्तु मन पिघला न तू ही पिघला दे॥ 220॥

तेरा नाम गाते गाते गोविंद राधे।
जीभ घिस गई प्रेम अब तो दिला दे॥ 221॥

नाम अपराध करूँ गोविंद राधे।
बार बार अब अपराध ते बचा दे॥ 222॥

सर्वप्रथम प्रार्थना है गोविंद राधे।
थोड़ा रस दे रस का चस्का लगा दे॥ 223॥

रोने का रोग दे दे गोविंद राधे।
दिव्य प्रेम पाने की लालसा बढ़ा दे॥ 224॥

पिछली भुला दे हरि गोविंद राधे।
अगली बना दे मोहिं पगली बना दे॥ 225॥

शिव भी शिवानी बने गोविंद राधे।
बनूँ मैं दिवानी ऐसा जादू चला दे॥ 226॥

पल लागे जुग सम गोविंद राधे।
सारा जग खारा लागे ऐसी बना दे॥ 227॥

दशहूँ दिशा में मोहिं गोविंद राधे।
जित देखुँ दीखे तू ही ऐसी बना दे॥ 228॥

तेरा ध्यान ऐसे करूँ गोविंद राधे।
गाय घास चरे बछरा न भुला दे॥ 229॥

तेरा ध्यान ऐसा करूँ गोविंद राधे।
तेरे सिवा मन सब जग को भुला दे॥ 230॥

तेरा ध्यान ऐसे करूँ गोविंद राधे।
जैसे भृंगी कीड़ा निज रूप को भुला दे॥ 231॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

विषयी की प्रीति जैसी गोविंद राधे।
विषयों में होती है सुदृढ़ बता दे॥ 232॥

वैसी ही मेरी प्रीति गोविंद राधे।
हरि गुरु चरणों में सदा करवा दे॥ 233॥

मैंने तोहिं देखा नहिं गोविंद राधे।
ध्यान करूँ कैसे टुक झाँकी दिखा दे॥ 234॥

मन ते बने ना तेरा गोविंद राधे।
रूपध्यान याते टुक झलक दिखा दे॥ 235॥
तेरा सारा जग खारा गोविंद राधे।
झलक दिखा के जग मीठा बना दे॥ 236॥
प्राणधन प्राणेश्वर गोविंद राधे।
प्राणपति प्राण प्राण झलक दिखा दे॥ 237॥
जिसने भी देखा तोहिं गोविंद राधे।
वैकुण्ठ सुख को भी अँगुठा दिखा दे॥ 238॥
गरबाहीं दीन्हें दोऊ गोविंद राधे।
एक बार मोहूँ सोई झाँकी दिखा दे॥ 239॥
गरबाहीं दीन्हें दोऊ गोविंद राधे।
कभू तो मिलोगे विश्वास दिला दे॥ 240॥
मोहिं तो भरोसो भारी गोविंद राधे।
कबहुँ तो अइहैं दोउ गलबँहियाँ दे॥ 241॥
दर्शन जनि चाहो गोविंद राधे।
सुना है कि दर्शन प्यास बढ़ा दे॥ 242॥
तुम दोनों एक ही हो गोविंद राधे।
मेरे उर अस विश्वास करा दे॥ 243॥
तू ही मेरा मैं भी तेरा गोविंद राधे।
यह ज्ञान मेरी बुद्धि में बिठा दे॥ 244॥
तेरे बीच मैं रहूँ गोविंद राधे।
मेरे बीच तू रहे बोध करा दे॥ 245॥
तू था है रहेगा मेरा गोविंद राधे।
उर अस आस विश्वास दिला दे॥ 246॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू ही रहेगा मेरा गोविंद राधे।
निज उर ते लगा या चक्र चला दे॥247॥
तेरी कठोरता भी गोविंद राधे।
मेरा निष्काम प्रेम और बढ़ा दे॥248॥
अपनी बना ले मोहिं गोविंद राधे।
तू तो मेरा था है रहेगा भी बता दे॥249॥
तू तो मेरे उर में है गोविंद राधे।
मुझको भी यह अनुभूति करा दे॥250॥
उर में तू बैठा बैठा गोविंद राधे।
मेरे कर्म लिखे यह मोहूँ जना दे॥251॥
गर्त गिरा रोये शिशु गोविंद राधे।
पिता कैसा देखे ना उठाये बता दे॥252॥
सुत माँगे भीख नित गोविंद राधे।
पितु देखे दयामय कैसे बता दे॥253॥
तूने उठाया गिरि गोविंद राधे।
क्या मैं गिरि ते भी भारी जो ना उठा दे॥254॥
तूने उठाया गज गोविंद राधे।
क्या मैं गज ते भी भारी जो ना उठा दे॥255॥
मैं तो हूँ अबोध शिशु गोविंद राधे।
तू ही मेरा सब कछु ज्ञान करा दे॥256॥
नवजात शिशु नहिं गोविंद राधे।
जाने कौन माता माता ज्ञान करा दे॥257॥
भूख है अनादि मेरी गोविंद राधे।
अँगुठा ही पिया प्रेम दुग्ध भी पिला दे॥258॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि तू भी कैसी माँ है गोविंद राधे।
शिशु कर जग चट्टू झुनझुना थमा दे॥ 259॥

ब्रजरस बूँद दे दे गोविंद राधे।
माँ भी शिशु मुख पय बूँद चुवा दे॥ 260॥

कैसा तू है पिता गोविंद राधे।
एक बार भी ना सुत सीने ते लगा दे॥ 261॥

कैसा तू है प्रियतम गोविंद राधे।
एक बार भी ना प्यारी शब्द सुना दे॥ 262॥

कैसा तू सखा है गोविंद राधे।
एक बार भी ना यार कहि के बुला दे॥ 263॥

स्वामी, सखा, सुत, पति गोविंद राधे।
चार चार नाता तो सों एक ही निभा दे॥ 264॥

नाता ना निभाना जाने गोविंद राधे।
आजा तोहिं नाता निभाना सिखा दे॥ 265॥

वेद कहे नित्य सखा गोविंद राधे।
उसी नित्य नाते को अब तो निभा दे॥ 266॥

वेद कहे सब कछु गोविंद राधे।
इस वाणी को सच करके दिखा दे॥ 267॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शास्त्र वेद पढ़ा सुना गोविंद राधे।
किन्तु नाहिं माना तू मोहिं मनवा दे॥ 268॥

अब तो शरण तेरी गोविंद राधे।
चाहे कछु दे चाहे मोहिं कछु ना दे॥ 269॥

ले ले मेरा प्राण प्रिय गोविंद राधे।
दे दे निज दिव्य प्रेम और कछु ना दे॥ 270॥

तन गंदा मन गंदा गोविंद राधे।
गंदा गंदा ले ले मोहिं बंदा बना दे॥ 271॥

तेरे सब बंदे अच्छे गोविंद राधे।
मैं हूँ बंदा गंदा मोहिं अच्छा बना दे॥ 272॥

नन्दनंदा सुखकंदा गोविंद राधे।
वृन्दावन चंदा मोहिं बंदा बना दे॥ 273॥

नन्दनंदा सुखकंदा गोविंद राधे।
काट मोह फंदा प्रेम फंदा लगा दे॥ 274॥

मेरा तन मन धन गोविंद राधे।
सेवा में ले ले कछु दे चाहे ना दे॥ 275॥

तेरी इच्छा मेरी इच्छा गोविंद राधे।
चाहे कछु दे दे चाहे मोहिं कछु ना दे॥ 276॥

तू भी प्यार करता है गोविंद राधे।
क्योंकि मैं भी प्यार करता हूँ बता दे॥ 277॥

दोउ मम प्राण प्राण गोविंद राधे।
मेरा प्राण भी तो तेरा पुनि तोहिं का दे॥ 278॥

जैसा भी हूँ तेरा हूँ गोविंद राधे।
तेरी लाज जाये मेरा काम बना दे॥ 279॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मैं तो तेरा सुत हरि गोविंद राधे।
एक बार निज सुत गले ते लगा दे॥ 280॥

गले ना लगाया छोड़ो गोविंद राधे।
आके सामने तेरा पिता हूँ बता दे॥ 281॥

अब लौं सोया नहिं गोविंद राधे।
निज शिशु को निज गोद सुला दे॥ 282॥

युग युग सोया हरि गोविंद राधे।
मोह निशा में निज गोद सुला दे॥ 283॥

जग है खिलौना तेरा गोविंद राधे।
तू ही खेल मोको जनि यामें फँसा दे॥ 284॥

पाँच खिलौने दै के गोविंद राधे।
बहलाया अब रस पान करा दे॥ 285॥

पाँच खिलौने ऐसे गोविंद राधे।
बड़े बड़े ऋषि मुनि मनहूँ लुभा दे॥ 286॥

माया ने सुलाया ऐसा गोविंद राधे।
अगनित युग बीते अब तो जगा दे॥ 287॥

भूखा लखि सुत माता गोविंद राधे।
देर तक सोते हुए सुत को जगा दे॥ 288॥

माना मैं कुपूत तोहिं गोविंद राधे।
तजि को सुपूत हुआ नाम बता दे॥ 289॥

मायाधीन भी हो गोविंद राधे।
पाप भी ना करे एक नाम बता दे॥ 290॥

माना मैंने माना नहिं गोविंद राधे।
आभार किन्तु तू पिता है क्षमा दे॥ 291॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माना मैं कुपूत तेरा गोविंद राधे।
पिता तो मेरा समर्थ है बता दे॥ 292॥

होते हैं कुपूत जग गोविंद राधे।
हुई क्या कुमाता कहुँ तू ही बता दे॥ 293॥

मुझसे कुपूत ही तो गोविंद राधे।
तेरे सुपूतों का मान बढ़ा दे॥ 294॥

तेरी माया ने बनाया गोविंद राधे।
मोको कुपूत तू सुपूत बना दे॥ 295॥

तू तो मेरा सखा भी है गोविंद राधे।
गले ते लगा के सखा धर्म निभा दे॥ 296॥

तू तो मेरा सुत भी है गोविंद राधे।
पुनि क्यों पिता की गोद सूनी करा दे॥ 297॥

तू तो मेरा प्रियतम गोविंद राधे।
काहे मोहिं जग हाथ सौंपा बता दे॥ 298॥

तू ही साँचो प्रियतम गोविंद राधे।
माटी वारे गुड़रों ते पिंड छुड़ा दे॥ 299॥

तू तो मेरा प्राण ही है गोविंद राधे।
प्राणहीन तनु को तो लोग जला दें॥ 300॥

जीने को जी रहा हूँ गोविंद राधे।
तेरे बिनु जीना कोई जीना है बता दे॥ 301॥

तेरे बिनु जीना ऐसा गोविंद राधे।
जैसे जल बिनु मीन रसिक बता दे॥ 302॥

तेरे बिना मैं हूँ शव गोविंद राधे।
शव को तो प्रिय जन घर ते हटा दें॥ 303॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

या तो तू मन ले जा गोविंद राधे।
या तो मन में ही आ जा झगड़ा मिटा दे॥ 304॥

उर रह मैं भी तू भी गोविंद राधे।
तू तो मोहिं देखे मैं ना देखूँ दिखा दे॥ 305॥

उर रहें हम तुम गोविंद राधे।
मेरे तेरे बीच में जो आवे भगा दे॥ 306॥

मेरी तेरी यारी यार गोविंद राधे।
चोरी चोरी कब तक चलेगी बता दे॥ 307॥

बार बार रोते गाते गोविंद राधे।
युग बीते तोहिं सुनाई नाहिं का दे॥ 308॥

सिर हैं सहस्र तेरे गोविंद राधे।
सुने नहिं कान नहीं हैं का बता दे॥ 309॥

तुमने दुख भोगा नहिं गोविंद राधे।
याते आने में भी बड़ी देर लगा दे॥ 310॥

तुम हो आनन्दकंद गोविंद राधे।
तुम कहा जानो माया मारे रोने ना दे॥ 311॥

जीव बनि देखो टुक गोविंद राधे।
तीन ताप रात दिन मोहिं जला दे॥ 312॥

निर्मल मन चाहे गोविंद राधे।
अधम उधारन नाम हटा दे॥ 313॥

द्वार द्वार भीख माँगा गोविंद राधे।
तो भी तू दीन नहिं माने क्यों बता दे॥ 314॥

कुलिश कठोर दोऊ गोविंद राधे।
सेवें जन निशि दिन दर्शन ना दे॥ 315॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

टेढ़ी गति मति तेरी गोविंद राधे।
भृगु को बुलाऊँ तोहिं सीधा बना दे॥ 316॥

बहुत नचाया तूने गोविंद राधे।
प्रेम दे दे तो यह दास भी नचा दे॥ 317॥

तू तो कह तू मेरा गोविंद राधे।
यदि तेरा, मेरा कहि मोहिं बुला दे॥ 318॥

काहे कहे तू है मेरा गोविंद राधे।
यदि मैं हूँ तेरा ज्ञानानन्द दिला दे॥ 319॥

तू ही है पिता माता गोविंद राधे।
सुत प्रति पितु कर्त्तव्य निभा दे॥ 320॥

तू ही माता पिता भ्राता गोविंद राधे।
वेद बतलाता है नाता निभा दे॥ 321॥

तू तो मेरा पिता हरि गोविंद राधे।
एक बार मेरा सुत कहि के बुला दे॥ 322॥

तू मेरा मैं तेरा गोविंद राधे।
और सब मेरा तेरा मिथ्या बता दे॥ 323॥

वेद अनुसार या तो गोविंद राधे।
सुत मान या तो वेद मिथ्या बता दे॥ 324॥

जो भी खाये माता पिता गोविंद राधे।
सोइ खाद्य निज शिशु को भी खिला दे॥ 325॥

तू तो भोगे दिव्य सुख गोविंद राधे।
निज शिशु को काहे सुख लेश ना दे॥ 326॥

तू तो कह तू है सुत गोविंद राधे।
किन्तु ऐसा कैसा पिता सुत को भुला दे॥ 327॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पिता पुत्र साथ रहें गोविंद राधे।
गले ना लगाया कैसा पिता है बता दे॥ 328॥

शिशु नहिं जाने पिता गोविंद राधे।
पिता पाले अरु पितु ज्ञान करा दे॥ 329॥

शिशु नहिं जाने पिता गोविंद राधे।
पिता सुत को न कूड़ेदान डला दे॥ 330॥

शिशु नहिं जाने पिता गोविंद राधे।
कहा पिता वाय निज घर ते भगा दे॥ 331॥

सुत पूछे पिता मोहिं गोविंद राधे।
माया के हवाले कर दिया क्यों बता दे॥ 332॥

तेरा सुत पिटा करे गोविंद राधे।
तेरी दासी मारे तू देखे ध्यान ना दे॥ 333॥

कैसा तू पिता है मेरा गोविंद राधे।
सुत दयनीय दशा देखे ध्यान ना दे॥ 334॥

सुत को सतावे दासी गोविंद राधे।
देखा कैसे जाये माता पिता ते बता दे॥ 335॥

दासी को चढ़ाया सिर गोविंद राधे।
लख चौरासी द्वार सुत को घुमा दे॥ 336॥

तेरे मेरे मिलन में गोविंद राधे।
बाधा है तेरी दासी माया भगा दे॥ 337॥

दासी ने सताया अति गोविंद राधे।
कब लौं सहौं हौं दुख तू ही बता दे॥ 338॥

दासी सुत दोनों में ते गोविंद राधे।
एक अपना ले एक दूर भगा दे॥ 339॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शरण में आजा कहे गोविंद राधे।
पहले तो माया ते पीछा छुड़ा दे॥ 340॥

शरण में आजा कहे गोविंद राधे।
नानी याद आये जीव बन के दिखा दे॥ 341॥

शरणागत पै गोविंद राधे।
कृपा करो यह निज नियम हटा दे॥ 342॥

तेरा सब दिव्य हरि गोविंद राधे।
मेरा सब मायिक कहु तोहिं का दे॥ 343॥

मेरा मन मायिक गोविंद राधे।
तेरे कौन काम आये तू ही बता दे॥ 344॥

माना मन मायिक गोविंद राधे।
दे दे हरि को हरि दिव्य बना दे॥ 345॥

मन बुद्धि मोते माँगे गोविंद राधे।
मेरा तो मैं भी नहिं मन बुद्धि का दे॥ 346॥

मन बुद्धि मायिक गोविंद राधे।
लै के क्या करेगा पहले दिव्य बना दे॥ 347॥

निर्मल मन चाहे गोविंद राधे।
मेरा मन समल विमल मन ला दे॥ 348॥

मेरे उर में रहे गोविंद राधे।
वाको जो किराया बने वाय चुका दे॥ 349॥

पूछो जो किराया मोते गोविंद राधे।
तेरे सिवा उर जो हो मारि भगा दे॥ 350॥

लख चौरासी स्वाँग गोविंद राधे।
धरि धरि नाचे कछु पुरस्कार ना दे॥ 351॥

या तो दे पुरस्कार गोविंद राधे।
या तो बहुरूपिये के पद ते हटा दे॥ 352॥

वेद में कहा है तूने गोविंद राधे।
सब जीव ही मेरे सुत हैं बता दे॥ 353॥

सुत माँगे पितु सों जो गोविंद राधे।
वाको जग में ना कोई भीख बता दे॥ 354॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पिता वाला प्यार दे दे गोविंद राधे।
भुक्ति मुक्ति बैकुंठ आदि मोहिं ना दे॥ 355॥
यदि है बनाना कछु गोविंद राधे।
मोहिं दास सखा पिता प्रेयसी बना दे॥ 356॥
यदि ना बनावे कछु गोविंद राधे।
माया ने बनाया जो भी वाको मिटा दे॥ 357॥
तेरी होके सुख माँगूँ गोविंद राधे।
द्वार द्वार कहु कहा तोहिं शोभा दे॥ 358॥
मेरी पुकार में ही गोविंद राधे।
कोई कमी है तोहिं झूठा दोष का दे॥ 359॥
तू तो गोद लेना चाहे गोविंद राधे।
शिशु जैसा रोया नहिं तोहिं दोष का दे॥ 360॥
तू तो मेरे साथ रहे गोविंद राधे।
मैंने किया पीठ मोहिं सन्मुख ला दे॥ 361॥
तू तो सदा साथ रहा गोविंद राधे।
मैं ही कृतघ्नी भूला तोहिं दोष का दे॥ 362॥
तू तो शुद्ध पारस गोविंद राधे।
मैं ही हूँ अशुद्ध लोहा तोहिं दोष का दे॥ 363॥
तू तो मोहिं परखत गोविंद राधे।
मैं ही पीठ करि बैठा तोहिं दोष का दे॥ 364॥
बार बार नर तनु गोविंद राधे।
पाया गमाया हरि तोहिं दोष का दे॥ 365॥
तुझ सा कृपालु नहिं गोविंद राधे।
मुझ सा कृतघ्नी कोई हो तो बता दे॥ 366॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माना मैं कृतघ्नी हूँ गोविंद राधे।
तू बिनु कारण के ही कृपा दे॥ 367॥

जनम जनम की है गोविंद राधे।
आसक्ति जग की तू ही छुड़ा दे॥ 368॥

जग ते मिटा दे नाता गोविंद राधे।
बरबस अपने आपु ते जुड़ा दे॥ 369॥

मन मथ मनमथ गोविंद राधे।
मेरा भी चपल मन मथि के दिखा दे॥ 370॥

मैं तो तेरा सदा ते हूँ गोविंद राधे।
मन को भी निज परिजन बनवा दे॥ 371॥

मेरा मन दास किंतु गोविंद राधे।
मेरी नहिं माने निज दास बना दे॥ 372॥

मन तो था मेरा दास गोविंद राधे।
माया मोहिं मन का ही दास बना दे॥ 373॥

मन जो जो चाहे वो वो गोविंद राधे।
तू दे दे जगत ते पिंड छुड़ा दे॥ 374॥

मन एक जग लागा गोविंद राधे।
तुझमें लगाने को दूजा मन ला दे॥ 375॥

मन मेरा सुने नहिं गोविंद राधे।
तू तो है चक्रधारी चक्र दिखा दे॥ 376॥

मन बड़ा निर्लज्ज गोविंद राधे।
बार बार जूते लात खाये भुला दे॥ 377॥

कुबरी को सीधा किया गोविंद राधे।
मेरा मन कुटिल है सीधा करा दे॥ 378॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरे जन सीधे सादे गोविंद राधे।
मैं हूँ कुटिल अति सीधा बना दे॥ 379॥

तूने मोहे हरि हर गोविंद राधे।
सुना है, न माने मन, वाय मना दे॥ 380॥

तू तो माँगे पूरा पूरा गोविंद राधे।
मैं तो देना चाहूँ थोड़ा पूरा दिला दे॥ 381॥

तू तो कह 'ही' लगा दे गोविंद राधे।
बुद्धि कह 'ही' ना अभी 'भी' ही लगा दे॥ 382॥

तू ही साँचो नातेदार गोविंद राधे।
जग के तो नातेदार स्वारथी बता दे॥ 383॥

पढ़ा सुना समझाया गोविंद राधे।
मन ने न माना तू ही मन को मना दे॥ 384॥

जाना भी माना भी गोविंद राधे।
किन्तु परन्तु मन फिर भी लगा दे॥ 385॥

मन मनमानी करे गोविंद राधे।
बुद्धि भी मन की हाँ में हाँ मिला दे॥ 386॥

मन मनमानी करे गोविंद राधे।
याको ब्रजरस का चस्का लगा दे॥ 387॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रजरस बात सुनुँ गोविंद राधे।
मन चह विषयन का करूँ बता दे॥ 388॥

कामना ते हारा मैं तो गोविंद राधे।
काम को हराया तूने कामना हरा दे॥ 389॥

मन पाँच विषय माँगे गोविंद राधे।
अपना विषय दै के अपना बना दे॥ 390॥

वेद ने जो ज्ञान दिया गोविंद राधे।
बुद्धि तो माने किन्तु मन झुठला दे॥ 391॥

बुद्धि माने तू ही मेरा गोविंद राधे।
मन नहिं माने कहे अनुभव करा दे॥ 392॥

मन माया दासी सुत गोविंद राधे।
मैं तो हूँ तेरा सुत मोहूँ हरा दे॥ 393॥

तू भी चाहे मेरा हित गोविंद राधे।
मैं भी चाहूँ निज हित मन साथ ना दे॥ 394॥

बड़े बड़े सन्त हारे गोविंद राधे।
मन ते, तू याय हरा के दिखा दे॥ 395॥

निज मनमोहन गोविंद राधे।
मम मनमोहन बन के दिखा दे॥ 396॥

मनमोहन नाम झूठा गोविंद राधे।
यदि सच्चा मेरा मन मोहि के दिखा दे॥ 397॥

मन को न कोई जीता गोविंद राधे।
मनमोहन मन मोहि के हरा दे॥ 398॥

मन नाहिं माने मेरा गोविंद राधे।
मन मोहि मनमोहन मनवा दे॥ 399॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उमा रमा मन मोहे गोविंद राधे।
मेरा भी तो मन मोहि के दिखा दे॥ 400॥

विधि हरि हर मोहे गोविंद राधे।
हौं तब मानौं मोहिं मोहि दिखा दे॥ 401॥

तू तो जग मोहन गोविंद राधे।
क्या मैं तेरे जग में नहीं हूँ बता दे॥ 402॥

तेरे पास आठों सिद्धि गोविंद राधे।
वशिता ते निज वश मन को करा दे॥ 403॥

बड़े बड़े दैत्य मारे गोविंद राधे।
मेरे मन ते क्यों हारे कारण बता दे॥ 404॥

तेरी कृपा शक्ति ऐसी गोविंद राधे।
मूक को भी वेदों का वक्ता बना दे॥ 405॥

तू तो सर्व समरथ गोविंद राधे।
पंगु को भी चाह ले तो गिरि पै चढ़ा दे॥ 406॥

तू तो सर्व समरथ गोविंद राधे।
चाहे बना दे चाहे मिटा दे॥ 407॥

स्याह को सफेद करे गोविंद राधे।
चाहे तो सफेद को भी स्याह बना दे॥ 408॥

खोटे को खरा अरु गोविंद राधे।
खरे को भी जब चाहे खोटा बना दे॥ 409॥

तेरी गति तू ही जाने गोविंद राधे।
कब किसको उठा दे किसको गिरा दे॥ 410॥

तेरे हाथ सब कछु गोविंद राधे।
COPYRIGHT
तू चाहे करतल बाल उगा दे॥ 411॥
RADHA GOVIND SAMITI

तेरे हाथ सब कछु गोविंद राधे।
तू चाहे कछु ना ते जगत बना दे॥ 412॥

तू तो है नट जैसा गोविंद राधे।
नट जैसा चाहे मरकट को नचा दे॥ 413॥

तू ही उर प्रेरक गोविंद राधे।
जिसे जैसा चाहे वैसी चाभी घुमा दे॥ 414॥

तू तो सर्वशक्तिमान गोविंद राधे।
मन ते क्यों हार मानी मन को हरा दे॥ 415॥

तू तो मन मोहन गोविंद राधे।
मेरे मन ते क्यों हार मानी बता दे॥ 416॥

सर्वशक्ति युक्त है तो गोविंद राधे।
निज शक्ति ते माया शक्ति को भगा दे॥ 417॥

सर्वसमर्थ है तो गोविंद राधे।
आँखि दिखा के माया शक्ति को डरा दे॥ 418॥

सर्वनियन्ता है तो गोविंद राधे।
मेरा मन नियमन करके दिखा दे॥ 419॥

माया ने मन मोहा गोविंद राधे।
तू तो माया का स्वामी, मन को हरा दे॥ 420॥

माया वश भूला तोहिं गोविंद राधे।
यामें तोहिं अचरज लगे तो बता दे॥ 421॥

मैंने जो भुलाया तोहिं गोविंद राधे।
तेरी माया दासी दोषी माया को भगा दे॥ 422॥

तेरी माया जड़ शक्ति गोविंद राधे।
कछु ना कर पाये यदि तू शक्ति ना दे॥ 423॥

माया ते सब हारे गोविंद राधे।
याको टुक टेढ़ी भौंह दिखा दे॥ 424॥

तेरी माया तेरी दासी गोविंद राधे।
टुक भौंह टेढ़ी करि वाय भगा दे॥ 425॥

माया तो है तेरी शक्ति गोविंद राधे।
माया शक्ति विधि हरि हरहूँ हरा दे॥ 426॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

विधि हरि हर को भी गोविंद राधे।
माया है नचाती तू भी माया को नचा दे॥ 427॥
तू तो योगमाया पति गोविंद राधे।
योगमाया ते मेरी माया हटा दे॥ 428॥
तेरी माया ने बिगाड़ा गोविंद राधे।
तेरी योगमाया सब बिगरी बना दे॥ 429॥
माया ने भुलाया तेरी गोविंद राधे।
माया को भगा दे योगमाया को बुला दे॥ 430॥
माया दाल गले नहिं गोविंद राधे।
माया पै तू ऐसा चक्कर चला दे॥ 431॥
माया ते तीन काया गोविंद राधे।
दिव्य काया दै के तीन काया मिटा दे॥ 432॥
तीन काल की जाने गोविंद राधे।
भावी ना बता दे मेरी भावी बना दे॥ 433॥
अविद्या की ग्रन्थि ते गोविंद राधे।
उरझा है जीव उसे कृपा ते सुरझा दे॥ 434॥
तोहिं सोचना ही तो है गोविंद राधे।
तेरा सोचना ही मेरा काम बना दे॥ 435॥
तू तो बिनु कारण गोविंद राधे।
कृपा करे अब सब कारण हटा दे॥ 436॥
कहाँ जाउँ का सों कहूँ गोविंद राधे।
तुम बिनु कौन सुने ठौर बता दे॥ 437॥
तेरे सिवा और कौन गोविंद राधे।
जग में कृपालु वाको पता ही बता दे॥ 438॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माना अपराधी हूँ गोविंद राधे।
कृपा शक्ति द्वारा मोहिं क्षमा करवा दे ॥ 439 ॥

जानि जानि पाप किये गोविंद राधे।
अति दुःख पाये प्रभु अब तो क्षमा दे ॥ 440 ॥

पाप अनन्त किये गोविंद राधे।
यम सोचे ऐसे पापी को दण्ड का दे ॥ 441 ॥

न्यायी जनि बनु हरि गोविंद राधे।
मेरे लिये तो कृपालु बनि के कृपा दे ॥ 442 ॥

न्याय नहिं चाहता मैं गोविंद राधे।
कृपा शक्ति द्वारा टुक कृपा करवा दे ॥ 443 ॥

तेरी हैं अनंत शक्ति गोविंद राधे।
कृपा शक्ति पतितों के नाम लिखवा दे ॥ 444 ॥

पतितों के काम की है गोविंद राधे।
तेरी कृपा शक्ति जो पावन बना दे ॥ 445 ॥

तेरी कृपा का तो गोविंद राधे।
ओर है न छोर है अनन्त बता दे ॥ 446 ॥

अधम ते अधम मैं गोविंद राधे।
अधम उधारन वादे निभा दे ॥ 447 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू तो था सदा ते मेरा गोविंद राधे।
कृपा द्वारा मोहूँ कहँ अपना बना दे ॥ 448 ॥

मैंने अपनाया नहिं गोविंद राधे।
तू ही अपना के अज्ञान मिटा दे ॥ 449 ॥

तेरी कृपा के बिना गोविंद राधे।
पाय सका है कौन नाम बता दे ॥ 450 ॥

भक्ति हो अनन्य मेरी गोविंद राधे।
ऐसी मति जहाँ मिले मोहिं मँगवा दे॥ 451॥
अब ना बनाऊँ कभू गोविंद राधे।
कोई बहाना तेरी भक्ति में बता दे॥ 452॥
जिस जिस योनि में मैं गोविंद राधे।
जन्म लूँ भक्ति रहे तोमें बता दे॥ 453॥
तू तो मोहिं भूला नहिं गोविंद राधे।
मैं भी तोहिं भूलूँ नहिं ऐसी बना दे॥ 454॥
तेरे उपकारों का गोविंद राधे।
आभार माना नहिं मानना सिखा दे॥ 455॥
ऐसी कोई वस्तु नहिं गोविंद राधे।
तेरे ऋण ते जो उऋण करा दे॥ 456॥
गुरु ते मिलाया तूने गोविंद राधे।
तेरे ऋण उऋण न ऋणियाँ बना दे॥ 457॥
जला सदा तीन ताप गोविंद राधे।
अब उर निज विरहाग जला दे॥ 458॥
पंचकोश बाँधे मोहिं गोविंद राधे।
निज विरहाग दै के वाय जला दे॥ 459॥
माया ने सताया अति गोविंद राधे।
अपना वियोग दै के तू भी सता दे॥ 460॥
योग में वियोग भय गोविंद राधे।
याते वियोग ही दे योग मोहिं ना दे॥ 461॥
जग के लिए तो रोया गोविंद राधे।
रोया नहिं तेरे लिये अब तो रुला दे॥ 462॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अति दुःख पाया जग गोविंद राधे।
जिउँ नहिं मरुँ नहिं करूँ क्या बता दे॥ 463॥

तुझ ते विमुख होके गोविंद राधे।
बूड़े उतराये भव सिन्धु अगाधे॥ 464॥

जग ने नचाया नाचा गोविंद राधे।
एक बार तू भी निज संग नचा दे॥ 465॥

तू तो है आत्माराम गोविंद राधे।
मेरी आत्मा भी तेरी रमण करा दे॥ 466॥

चौरासी लाख घर गोविंद राधे।
वास किया अब ब्रज वास करा दे॥ 467॥

सत्याग्रह करुँगा मैं गोविंद राधे।
दिव्य दृष्टि द्वारा निज द्वार दिखा दे॥ 468॥

सारा जग देखा भाला गोविंद राधे।
तेरा लोक देखा नहिं वाउ दिखा दे॥ 469॥

लख चौरासी द्वार गोविंद राधे।
देखा एक और तव द्वार दिखा दे॥ 470॥

लख चौरासी द्वार गोविंद राधे।
COPYRIGHT
माया ने घुमाया तू घर पहुँचा दे॥ 471॥
RADHA GOVIND SAMITI

मैं तो हूँ जन्म सूर गोविंद राधे।
मेरा कर गहि मेरे घर पहुँचा दे॥ 472॥

लख चौरासी द्वार गोविंद राधे।
माँगा प्रेम पाया नहिं अब तो दिला दे॥ 473॥

प्यार ही है प्यारा तोहिं गोविंद राधे।
प्यार कैसे करूँ प्यार करना सिखा दे॥ 474॥

ब्रह्मा भी न जाने तोहिं गोविंद राधे।
मैं कैसे जानूँ पहिचानूँ बता दे॥ 475॥

चेतनों का चेतन गोविंद राधे।
चेतन चेत न नींद भगा दे॥ 476॥

पाँच ज्ञान इन्द्रियों को गोविंद राधे।
बरबस तू निज सेवा में लगा दे॥ 477॥

उर में त्रिताप ताप गोविंद राधे।
मोहिं तपाये हरि तू ही बचा दे॥ 478॥

तू चह अकिंचन गोविंद राधे।
सब कछु छीनि अकिंचन बना दे॥ 479॥

बैठे उर जग वारे गोविंद राधे।
लै के सुदर्शन सब को भगा दे॥ 480॥

तू तो उरगृह स्वामी गोविंद राधे।
जिसे चाहे राखे जिसे चाहे भगा दे॥ 481॥

मेरे उर तू भी रह गोविंद राधे।
मैं भी उर में ही रहुँ पर्दा उठा दे॥ 482॥

परदा हटाऊँ कैसे गोविंद राधे।
परदा की डोरी तेरे कर तू हटा दे॥ 483॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू तो हेतु मेरा गोविंद राधे।
हेतु बिनु कार्य का स्वत्व ना बता दे॥ 484॥

तू है सूर्य मैं हूँ तेरी गोविंद राधे।
किरण वियुक्त मोहिं युक्त बना दे॥ 485॥

मैं हूँ तरंग तू है गोविंद राधे।
जलनिधि मोहिं जलनिधि में मिला दे॥ 486॥

तू तो है विराट सिन्धु गोविंद राधे।
मैं हूँ तेरा लघु बिन्दु सिन्धु ते मिला दे॥ 487॥

तू है पुरुष भूमा गोविंद राधे।
मैं हूँ अति अल्प मोहिं भूमा बना दे॥ 488॥

तेरी सत्ता विभु चित् गोविंद राधे।
मेरी सत्ता अणु चित् निज दासता दे॥ 489॥

तू तो बड़ा चुंबक गोविंद राधे।
मैं हूँ लौह कण मोहिं खींचि के दिखा दे॥ 490॥

तू तो जनु पारस गोविंद राधे।
मैं हूँ जनु लोहा मोहिं सोना बना दे॥ 491॥

तू तो ज्ञानानंदमय गोविंद राधे।
मुझे भी कृपा ते आपु जैसा बना दे॥ 492॥

तू तो है प्रकाश पुंज गोविंद राधे।
उर में निवास भी है तम को भगा दे॥ 493॥

तू तो कोटि सूर्य सम गोविंद राधे।
माया तम लघु तेज ते भगा दे॥ 494॥

तू तो सर्वशक्तिमान गोविंद राधे।
माया जड़ तो अशक्त यदि शक्ति ना दे॥ 495॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सृष्टि आदि कर्म करे गोविंद राधे।
रहे भी अकर्ता ऐसा मोहिं बना दे॥ 496॥

कर्म, ज्ञान, भक्ति नहिं गोविंद राधे।
कैसे रिझाऊँ तोहिं तू ही बता दे॥ 497॥

मैं तेरा मेरा तेरा गोविंद राधे।
तू ही बता दे पुनि हौं तोहिं का दे॥ 498॥

मैं मेरा सब तेरा गोविंद राधे।
जनम जनम का भिखारी तोहिं का दे॥ 499॥

रिद्धि सिद्धि दासी तेरी गोविंद राधे।
जग के भिखारी हम सब तोहिं का दे॥ 500॥

रत्नाकर घर तव गोविंद राधे।
गृहिणी पद्मा भिखारी तोहिं का दे॥ 501॥

बातें ना बना रे जीव गोविंद राधे।
तेरे पास जो कछु भी है काहे ना दे॥ 502॥

तुमको है प्यार प्यारा गोविंद राधे।
हमको संसार प्यारा प्यार दिला दे॥ 503॥

स्वार्थ ही ते प्यार किया गोविंद राधे।
स्वार्थ बिना कैसे प्यार होता है बता दे॥ 504॥

प्रेम प्रेम सब कहें गोविंद राधे।
प्रेम क्या है जानें नहिं प्रेम जना दे॥ 505॥

प्रेमरस जानूँ नहिं गोविंद राधे।
प्रेमरस-सिद्धान्त मोहिं समझा दे॥ 506॥

ज्ञान की सीमा तो है गोविंद राधे।
प्रेम याते ज्ञान नहिं प्रेम दिला दे॥ 507॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

धर्म अर्थ काम मोक्ष गोविंद राधे।
ना दे मोहिं निष्काम प्रेम सुधा दे॥ 508॥

मिलती है स्वरूप शक्ति गोविंद राधे।
एकमात्र भक्ति ते भक्ति दिला दे॥ 509॥

भक्ति तो है तेरी शक्ति गोविंद राधे।
भक्ति प्राप्त भक्तों ते भक्ति दिला दे॥ 510॥

तू तो आनन्दमय गोविंद राधे।
पतितों के उर कैसे रहता बता दे॥ 511॥
होते न पतित जो तो गोविंद राधे।
कौड़ी के होते तुम महँगे बता दे॥ 512॥
जग में पतित न हों गोविंद राधे।
तो तोहिं पूछेगा कौन बता दे॥ 513॥
पतितों ने ही तेरी गोविंद राधे।
पूजा करवाई सारे जग में बता दे॥ 514॥
पतितों का ऋण तो पै गोविंद राधे।
दै के दिव्य प्रेम हो उऋण बता दे॥ 515॥
पतितों की मानो जो ना गोविंद राधे।
जायें हम राधा दरबार बता दे॥ 516॥
मेरे जैसा पतित ना गोविंद राधे।
तेरे जैसा पावन ना पावन बना दे॥ 517॥
तुमको तो पापी प्यारा गोविंद राधे।
मोहिं पाप प्यारा तोहिं पाप छोड़ि का दे॥ 518॥
पूतना ने विष दिया गोविंद राधे।
वापै जैसी कृपा किया वैसी कृपा दे॥ 519॥
मैं हूँ अति दीन हीन गोविंद राधे।
दीनबन्धु नाम वाला विरद निभा दे॥ 520॥
निबल का साथ तू दे गोविंद राधे।
सबल का साथ जग वाले सदा दें॥ 521॥
तेरे जैसा कौन हुआ गोविंद राधे।
स्वामी बने दास दास स्वामी बना दे॥ 522॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जासों मेरा हित हो सो गोविंद राधे।
दे दे हरि जासों हो अहित ना दे ना दे॥ 523॥

दे दे दे दे दे दे मूढ़ गोविंद राधे।
सब कछु दाता को भिखारी बना दे॥ 524॥

बना फिरता है दाता गोविंद राधे।
प्रेम माँगूँ तो प्रेमी ढिग क्यों पठा दे॥ 525॥

निज चमचों को तो गोविंद राधे।
देता सब, औरों को अँगुठा दिखा दे॥ 526॥

कहूँगा मैं खोटी खरी गोविंद राधे।
याते मोको भी निज चमचा बना दे॥ 527॥

मौन तो तोड़ो हरि गोविंद राधे।
उत्तर हाँ में या ना में बता दे॥ 528॥

जाना जाना जाना अब गोविंद राधे।
मौन का अर्थ स्वीकार बता दे॥ 529॥

तेरे सब बच्चे अच्छे गोविंद राधे।
अच्छों के साथ एक बुरे को चला दे॥ 530॥

बुरा बच्चा भी है अच्छा गोविंद राधे।
बुरा बच्चा अच्छों का मान बढ़ा दे॥ 531॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

फिर भी न माने यदि गोविंद राधे।
माना बुरा है बच्चा अच्छा बना दे॥ 532॥

मेरे तो बनाने ते गोविंद राधे।
बिगरी बने ना तू ही बिगरी बना दे॥ 533॥

माना मैं हूँ मायाधीन गोविंद राधे।
माया को हटा दे मायातीत बना दे॥ 534॥

'मैं' को नहिं जाना याते गोविंद राधे।
माया ने घुमाया अब ज्ञान करा दे॥ 535॥

माया को न जीता कोई गोविंद राधे।
किन्तु जिसे चाहे तू ही उसी को जिता दे॥ 536॥

जिसका वरण करे गोविंद राधे।
अमर सुहागिनि वाय बना दे॥ 537॥

तेरा पर्दा योगमाया गोविंद राधे।
मेरा पर्दा माया दोनों पर्दा हटा दे॥ 538॥

जानूँ पहिचानूँ नहिं गोविंद राधे।
एक दूसरे की पहिचान करा दे॥ 539॥

अच्छा हूँ बुरा हूँ जो हूँ गोविंद राधे।
तेरा ही तो सुत पितु लाज बचा दे॥ 540॥

मैं पतंग डोर तू है गोविंद राधे।
पास बुला ले चाहे दूर भगा दे॥ 541॥

तू है सँपेरा मेरा गोविंद राधे।
मैं तेरी नागिनि तूंबी बजा दे॥ 542॥

तू भी है चोर मैं भी गोविंद राधे।
चोरी चोरी पाप करूँ जोरी बना दे॥ 543॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तन है त्रिभंगी तेरा गोविंद राधे।
मन है त्रिभंगी मेरा जोरी बना दे॥ 544॥

तन तेरा काला काला गोविंद राधे।
मन मेरा काला काला जोरी बना दे॥ 545॥

तोको नचावे गोपी गोविंद राधे।
मोको नचावे माया जोरी बना दे॥ 546॥

तू है जैसा मैं भी वैसा गोविंद राधे।
दोनों ही हैं हरजाई जोरी बना दे॥ 547॥
तेरे रिपु कंस आदि गोविंद राधे।
मेरे रिपु काम आदि जोरी बना दे॥ 548॥
तूने भुलाया मोहिं गोविंद राधे।
मैंने भी भुलाया तोहिं जोरी बना दे॥ 549॥
हम हैं अधम तुम गोविंद राधे।
अधम उधारन जोरी बना दे॥ 550॥
उर में रहें नित गोविंद राधे।
हम और तुम साथ जोरी बना दे॥ 551॥
हम रहें तुम में ही गोविंद राधे।
तुम रहो हम में ही जोरी बना दे॥ 552॥
हम तो हैं तव तनु गोविंद राधे।
तुम मम आत्मा हो जोरी बना दे॥ 553॥
वेद कहे हम तुम गोविंद राधे।
दोनों हैं नित्य सखा जोरी बना दे॥ 554॥
शिव शुक चित चोरा गोविंद राधे।
मोरा चित चोरा नहिं काहे बता दे॥ 555॥
चौर सिरमौर दोनों गोविंद राधे।
दोनों मिलि मेरा चित चोरि दिखा दे॥ 556॥
मेरा चित महाबली गोविंद राधे।
या तो हार मान या तो तू ही हरा दे॥ 557॥
या तो मेरा चित चोर गोविंद राधे।
या तो चितचोर नाम कोष ते हटा दे॥ 558॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरा चित चोरा नहिं गोविंद राधे।
चित चोरी छोड़ दी का साफ बता दे॥ 559॥
चोरी यदि छोड़ दिया गोविंद राधे।
अच्छा किया मेरा चित सेवा में लगा दे॥ 560॥
चोरी छोड़ा धन्यवाद गोविंद राधे।
पहले चुराये चित वापस दिला दे॥ 561॥
तोरा चित चोरा राधा गोविंद राधे।
मोरा चित ले ले चाहे कछु दाम ना दे॥ 562॥
दोउ दोउ चित चोरा गोविंद राधे।
मोरा चित्त ले ले चाहे धन्यवाद ना दे॥ 563॥
ले ले मेरा सब कछु गोविंद राधे।
दे दे अपना सब कछु या दिला दे॥ 564॥
मेरा सब कछु ले ले गोविंद राधे।
तू अपना सब कछु दे या ना दे॥ 565॥
तन मन धन तेरा गोविंद राधे।
मैं हूँ कृतघ्नी तेरी वस्तु तोहिं ना दे॥ 566॥
मैं तेरा मेरा तेरा गोविंद राधे।
तेरी वस्तु को माना अपनी क्षमा दे॥ 567॥
तन मन प्राण ले ले गोविंद राधे।
निज वस्तु लेने में लज्जा क्यों बता दे॥ 568॥
तन मन प्राण तेरा गोविंद राधे।
सेवा में ले ले मोहिं सेवा दिला दे॥ 569॥
तन मन प्राण तेरा गोविंद राधे।
मैं तो हूँ सदा का भिखारी तोहिं का दे॥ 570॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरा सब कछु तेरा गोविंद राधे।
तेरा तो है ही तेरा हम तोहिं का दें॥ 571॥

विधि हरि हर भी हैं गोविंद राधे।
दर के भिखारी तेरे हम तोहिं का दें॥ 572॥

तू ही बिनु हेतु दाता गोविंद राधे।
जग कछु लै के कछु दे दान ना दे॥ 573॥

तेरे जैसा दाता कौन गोविंद राधे।
मेरे जैसा भिक्षु कौन बानक बना दे॥ 574॥

हरि हैं दूर मोते गोविंद राधे।
यह भावना मम मन ते हटा दे॥ 575॥

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
दूरी अनादि वाको अन्त करा दे॥ 576॥

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
देरी अनादि वाय दूर भगा दे॥ 577॥

तेरा मेरा नाता ऐसा गोविंद राधे।
फूल में हो गन्ध जैसे दूरी हटा दे॥ 578॥

तुझमें मैं मुझमें तू गोविंद राधे।
दूरी तो नहीं है कछु देरी भी मिटा दे॥ 579॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
अनबन है मेरा बनि के मिटा दे॥ 580॥

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
आँखमिचौनी वाय बंद करा दे॥ 581॥

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
खींचातानी हो उसे दूर भगा दे॥ 582॥

तेरे मेरे बीच में है गोविंद राधे।
पाप पुण्य बाधा वामें आग लगा दे॥ 583॥
तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
नीच अज्ञान वाय 'अ' को मिटा दे॥ 584॥
तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
अज्ञान वाको स्वर्ग वास करा दे॥ 585॥
तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
ज्ञान आवे वाय सायुज्य दिला दे॥ 586॥
तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
काम आवे वाय कुबरी ते मिला दे॥ 587॥
तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
माया की ग्रन्थि आवे कैंची चला दे॥ 588॥
तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
माया सौत बैठी वाय चक्र दिखा दे॥ 589॥
तेरे मेरे मिलन में गोविंद राधे।
तेरी दासी बाधा वाय आँखि दिखा दे ॥ 590॥
तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
माया तम बाधा वाय तेज ते भगा दे॥ 591॥
तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
पर्दा पड़ा है वह पर्दा हटा दे॥ 592॥
मैं हूँ अंश तू ही अंशी गोविंद राधे।
मोते कौन पर्दा सब पर्दा हटा दे॥ 593॥
तेरे मेरे प्यार को जो गोविंद राधे।
संसारी रोके वाय अँगुठा दिखा दे॥ 594॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोते तू प्यार करु गोविंद राधे।
जग यदि हँसे वाय तू हँसवा दे॥ 595॥

तेरा मेरा प्यार अमर गोविंद राधे।
स्वार्थी संसार ते पीछा छुड़ा दे॥ 596॥

तेरी मेरी यारी में जो गोविंद राधे।
बाधा बनि आवे वाय सबक सिखा दे॥ 597॥

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
बाधा बनि आवे वाय लठिया दिखा दे॥ 598॥

तेरे मेरे प्यार में जो गोविंद राधे।
आड़े आवे आड़े हाथों धूल चटा दे॥ 599॥

तेरे मेरे प्यार में जो गोविंद राधे।
रोड़ा अटकाये वाय यम ते मिला दे॥ 600॥

तेरे मेरे प्यार में जो गोविंद राधे।
टाँग अड़ाये वाको भौंह दिखा दे॥ 601॥

तेरे मेरे प्यार में जो गोविंद राधे।
नजर लगावे मुँह काला करा दे॥ 602॥

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
सैन चलावे वाय कमरी उढ़ा दे॥ 603॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
उलटा पढ़ावे वाय सीधा करा दे॥ 604॥

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
श्यामा प्यारी आवें पीतपट को बिछा दे॥ 605॥

तेरे मेरे बीच में जो गोविंद राधे।
ब्रजबामा आवे वाको स्वागत करा दे॥ 606॥

तेरे मेरे बीच में है गोविंद राधे।
नाम ही ऐसा तेरा तुझते मिला दे॥ 607॥

हरि तोहिं आना होगा गोविंद राधे।
मेरा बल है तेरा नाम बता दे॥ 608॥

तेरा नाम चिंतामणि गोविंद राधे।
पूर्ण शुद्ध नित्य मुक्त रसिक बता दे॥ 609॥

राधे राधे गावूँ ध्यावूँ गोविंद राधे।
रसिकों ते ऐसा छूमंतर करा दे॥ 610॥

श्वास श्वास नाम जपुँ गोविंद राधे।
नामी नाम भेद नहिं विश्वास ला दे॥ 611॥

नाम सुधा पीके नित गोविंद राधे।
मस्ती में नाचूँ गाऊँ लज्जा भगा दे॥ 612॥

तेरा नाम गाते गाते गोविंद राधे।
सात्त्विक भाव उद्रेक करा दे॥ 613॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब हरि नाम लै के आँसू बहा दे॥ 614॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब नाम वाणी गद्गद करा दे॥ 615॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब कंठ भर आये नाम लै बता दे॥ 616॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब हरिनाम रोमांच करा दे॥ 617॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब हरिध्यान तनु कम्प करा दे॥ 618॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब हरिध्यान तनु स्वेद बहा दे॥ 619॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब हरिध्यान तनु खंभ बना दे॥ 620॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब हरि बिनु पल कलप जना दे॥ 621॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब हरि बिनु जग शून्य बना दे॥ 622॥

वह दिन कब आये गोविंद राधे।
जब हाय पिय कहि तरु ज्यों गिरा दे॥ 623॥

तेरा नाम गुन गाते गोविंद राधे।
ऐसा प्रेम बाढ़ै सुधि बुधि बिसरा दे॥ 624॥

रहा नहिं जाये मोते गोविंद राधे।
तुम बिन एक पल ऐसी बना दे॥ 625॥

श्यामा तेरे धाम आई गोविंद राधे।
पात्र नहिं प्रेम कैसे माँगूँ बता दे॥ 626॥

श्यामा तेरे धाम आई गोविंद राधे।
बहुत सुना था नाम कछु भिक्षा दे॥ 627॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्यामा तेरे धाम आई गोविंद राधे।
तव अपयश खाली हाथ लौटा दे॥ 628॥

खाली हाथ लौटूँ जो तो गोविंद राधे।
लोग पूछें पाया क्या बताऊँ क्या बता दे॥ 629॥

काहू ते बताऊँ नहिं गोविंद राधे।
ब्रजरस की इक बूँद पिला दे॥ 630॥

राधे रानी कृपा करि गोविंद राधे।
मोहूँ ब्रजरस का चस्का लगा दे॥ 631॥

ब्रजधाम वास करूँ गोविंद राधे।
दिव्य दृष्टि दै के ब्रजधाम दिखा दे॥ 632॥

नवल निकुंजनि गोविंद राधे।
विहरूँ स्वामिनि संग बता दे॥ 633॥

गहवर वन पथ गोविंद राधे।
देउँ बुहारी दिन रात बता दे॥ 634॥

प्रेम दिवानी बनि गोविंद राधे।
गाउँ रो के राधे राधे राधे बता दे॥ 635॥

मधुमती वीणा ते गोविंद राधे।
श्याम गुण गाती राधा दरस दिखा दे॥ 636॥

श्याम की वेणु अरु गोविंद राधे।
श्यामा की वीणा में होड़ हो बता दे॥ 637॥

रससिन्धुसार रूप गोविंद राधे।
कब देखुँ श्री मुखचन्द्र बता दे॥ 638॥

कब राधा केलि कुंज गोविंद राधे।
भवन की बनूँगी बुहारी बता दे॥ 639॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे रानी स्वामिनी गोविंद राधे।
महलटहलिनी मोहूँ बना दे॥ 640॥

राधे रानी स्वामिनी गोविंद राधे।
महल टहल कोई भी दिला दे॥ 641॥

महल टहल ना दे गोविंद राधे।
जो तो पुष्प वाटिका की टहल दिला दे॥ 642॥

वाटिका टहल ना दे गोविंद राधे।
जो तो निज दासी की टहल दिला दे॥ 643॥

दासी की टहल ना दे गोविंद राधे।
जो तो दासी दासी की टहल दिला दे॥ 644॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

2

जीव का लक्ष्य

प्रेय ते हटा दे मन गोविंद राधे।
श्रेय रूपी हरि में ही मन को लगा दे॥ 645॥

श्रेय में प्रथम हो गोविंद राधे।
दुख किन्तु पाछे हो सुख ही बता दे॥ 646॥

प्रेय में प्रथम तुच्छ गोविंद राधे।
सुख किन्तु पाछे हो दुख ही बता दे॥ 647॥

कृष्ण प्रीति हित जो हो गोविंद राधे।
विषयोपभोग सो तो श्रेय बता दे॥ 648॥

निज प्रीति हित जो हो गोविंद राधे।
विषयोपभोग सो तो प्रेय बता दे॥ 649॥

जो सुख आत्म हित गोविंद राधे।
सोई सुख है श्रेय बता दे॥ 650॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आत्म हित कृष्ण प्रेम गोविंद राधे।
सोई है सच्चा सुख श्रेय बता दे॥ 651॥

बौद्धों का तत्त्ववाद गोविंद राधे।
सत् की ही देता है शिक्षा बता दे॥ 652॥

अद्वैतियों का वाद गोविंद राधे।
चित् की ही देता है शिक्षा बता दे॥ 653॥

वैष्णवों का भक्तिवाद गोविंद राधे।
शिक्षा आनन्द की ही देता है बता दे॥ 654॥

सांख्य अरु योग में तो गोविंद राधे।
आनन्द सात्विक वृत्ति बता दे॥ 655॥

श्रीकृष्ण भक्ति में तो गोविंद राधे।
आनन्द दिव्य सत्व वृत्ति बता दे॥ 656॥

पशु पक्षी कीट आदि गोविंद राधे।
आनन्द ही के हेतु व्यग्र बता दे॥ 657॥

जीव की दशा ऐसी गोविंद राधे।
सिन्धु बिच मीन जैसे प्यासी बता दे॥ 658॥

आनन्दसिन्धु हरि गोविंद राधे।
मध्य रहे मत्स्य जीव प्यासा बता दे॥ 659॥

ऐसे ही प्राणीमात्र गोविंद राधे।
ज्ञान के हेतु भी हैं व्यग्र बता दे॥ 660॥

ऐसे ही प्राणीमात्र गोविंद राधे।
जीवन के हेतु भी हैं व्यग्र बता दे॥ 661॥

नास्तिक भी चाहे यह गोविंद राधे।
सदा रहुँ कभु नहिं मरूँ मैं बता दे॥ 662॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मीन को जल ज्यों गोविंद राधे।
प्रिय त्यों जीव को भी हरि हैं बता दे॥ 663॥
श्रीकृष्ण भगवान गोविंद राधे।
सब की आत्मा की आत्मा बता दे॥ 664॥
प्राणों के प्राण अरु गोविंद राधे।
जीवों के जीवन कृष्ण हैं बता दे॥ 665॥
दिव्य हरिधाम में तो गोविंद राधे।
हरि दासत्व जीव लक्ष्य है बता दे॥ 666॥
जीव चह कृष्णानन्द गोविंद राधे।
जो है अनन्त दिव्य नित्य बता दे॥ 667॥
जीव तो सदा ते ही गोविंद राधे।
आनन्ददास था है रहेगा बता दे॥ 668॥
एक है प्रवृत्ति मार्ग गोविंद राधे।
जाते मिलें सुख जग के बता दे॥ 669॥
एक है निवृत्ति मार्ग गोविंद राधे।
जाते मिलें सुख हरि के बता दे॥ 670॥
निवृत्ति मार्ग दो हैं गोविंद राधे।
एक ते मिले अपवर्ग बता दे॥ 671॥
एक निवृत्ति मार्ग गोविंद राधे।
दे कृष्णप्रेम निष्काम बता दे॥ 672॥
धर्म अर्थ काम मोक्ष गोविंद राधे।
चार पुरुषार्थ पंचम प्रेम बता दे॥ 673॥
धर्म का है फल मोक्ष गोविंद राधे।
धन आदि लाभ नहिं सब को बता दे॥ 674॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

धन का है फल धर्म गोविंद राधे।
काम आदि नहिं यह सब को बता दे॥ 675॥
काम फल निर्वाह गोविंद राधे।
इन्द्रिय सुख भोग नाहिं बता दे॥ 676॥
आत्मा ते जो सुख गोविंद राधे।
मिले उस सुख को सात्विक बता दे॥ 677॥
विषयों ते जो सुख गोविंद राधे।
मिले उस सुख को राजस बता दे॥ 678॥
मोहादि का जो सुख गोविंद राधे।
मिले उस सुख को तामस बता दे॥ 679॥
हरि हरिजन सुख गोविंद राधे।
सर्वश्रेष्ठ शास्त्र जिसे निर्गुण बता दे॥ 680॥
ईश्वरीय सुख बिम्ब गोविंद राधे।
स्वर्ग मर्त्य सुख प्रतिबिम्ब बता दे॥ 681॥
जड़ जड़ योग सुख गोविंद राधे।
इन्द्रियों ते विषयों का भोग बता दे॥ 682॥
जड़ चेतन सुख गोविंद राधे।
मन आत्मा की समाधि है बता दे॥ 683॥
चेतन चेतन गोविंद राधे।
सुख दिव्य मन युक्त श्याम ते मिला दे॥ 684॥
गोविंद आनन्द गोविंद राधे।
पर्यायवाची हैं वेद बता दे॥ 685॥
सन्मात्र चिन्मात्र गोविंद राधे।
आनन्दमात्र हैं कृष्ण बता दे॥ 686॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जीव का लक्ष्य

जीव अंश आनन्द गोविंद राधे।
याते जीव चाहे आनन्द बता दे॥ 687॥
जीव चाहे आनन्द गोविंद राधे।
याते तदर्थ सब कर्म करा दे॥ 688॥
जीव भी है चित् गोविंद राधे।
आनन्द ब्रह्म भी चित् है बता दे॥ 689॥
याते जीव आनन्द गोविंद राधे।
सम्बन्ध है अनुकूल बता दे॥ 690॥
आनन्द पाने की गोविंद राधे।
जीव में नित्य आकांक्षा बता दे॥ 691॥
याते जीव मात्र में है गोविंद राधे।
आनन्द भोग की योग्यता बता दे॥ 692॥
ब्रह्म तो है आनन्द गोविंद राधे।
सत अरु चित हैं विशेषण बता दे॥ 693॥
सत् का है अर्थ नित्य गोविंद राधे।
याते ब्रह्म आनन्द नित्य बता दे॥ 694॥
चित् अर्थ चेतन गोविंद राधे।
याते ब्रह्म आनन्द चेतन बता दे॥ 695॥
चेतन आनन्द गोविंद राधे।
याते आनन्द जीवों को दिला दे॥ 696॥
जो ब्रह्म सत्स्वरूप गोविंद राधे।
वही ब्रह्म चिदानन्द रूप भी बता दे॥ 697॥
जो ब्रह्म चित्स्वरूप गोविंद राधे।
वही ब्रह्म सदानन्द रूप भी बता दे॥ 698॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो ब्रह्म आनन्द गोविंद राधे।
वही ब्रह्म सच्चित् भी है बता दे॥ 699॥
सत चित आनन्द गोविंद राधे।
भाव, क्रिया बुद्धि निज सुख है बता दे॥ 700॥
क्रिया बुद्धि निज सुख गोविंद राधे।
हरि को समर्पण अर्पण बता दे॥ 701॥
'रसो वै सः' मंत्र गोविंद राधे।
कहे जीव रस अधिकारी बता दे॥ 702॥
जीव आनन्द चित् गोविंद राधे।
जीव आनन्द अधिकारी बता दे॥ 703॥
रसना रसगुल्ले की गोविंद राधे।
अधिकारिणी है अवशि बता दे॥ 704॥
रसना में पित्त रोग गोविंद राधे।
याते रसगुल्ला लगे कड़ुवा बता दे॥ 705॥
जीव आनन्द मध्य गोविंद राधे।
माया विजातीय बाधा बता दे॥ 706॥
जीव का चित्त यदि गोविंद राधे।
भक्ति ते विमल हो तो बाधा हटा दे॥ 707॥
नर स्व स्वरूप भूला गोविंद राधे।
मायावश सात्विक सुखी हो बता दे॥ 708॥
लक्ष्य बोलने में दो हैं गोविंद राधे।
सुखप्राप्ति दुःखनिवृत्ति बता दे॥ 709॥
सब साधन फल गोविंद राधे।
दुःख निवृत्ति सुखप्राप्ति बता दे॥ 710॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगसुख मायिक गोविंद राधे।
परिणाम दुख बाधा विविध बता दे॥ 711॥

बार बार सारा जग गोविंद राधे।
छान मारा कहुँ सुख मिला ना बता दे॥ 712॥

जलचर भूचर गोविंद राधे।
खेचर बनि देखा धोखा बता दे॥ 713॥

चराचर घर देखा गोविंद राधे।
क्षण भर को भी मिला चैन ना बता दे॥ 714॥

ब्रह्म लोक तक देखा गोविंद राधे।
स्वप्न में भी सुख कभु मिला ना बता दे॥ 715॥

हम चाहें भूमा सुख गोविंद राधे।
अल्प सुख ते कैसे सुखी हों बता दे॥ 716॥

श्रोत्र नेत्र भौतिक गोविंद राधे।
किन्तु दोनों ही विषय पृथक बता दे॥ 717॥

दिव्य आत्मा का जग गोविंद राधे।
भौतिक विषय हो कैसे बता दे॥ 718॥

जग सुख क्षणिक है गोविंद राधे।
कभु मिले कभु छिन जाय बता दे॥ 719॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग सुख तो अल्प गोविंद राधे।
प्यास नहिं जाये प्यास और बढ़ा दे॥ 720॥

सच्चा ईश्वरीय सुख गोविंद राधे।
सदा सदा को मिल जाय बता दे॥ 721॥

जलनिधि में न जल गोविंद राधे।
जल-निधि ही है जलनिधि बतला दे॥ 722॥

ऐसे हरि में न सुख गोविंद राधे।
हरि ही हैं सुखसिन्धु रूप बता दे॥ 723॥
हरि में जो सुख हो तो गोविंद राधे।
हरि कोइ सुखहीन पात्र हो बता दे॥ 724॥
हरि कहु सुख कहु गोविंद राधे।
हरि सुख पर्यायवाची बता दे॥ 725॥
सब जीव सुख चाहें गोविंद राधे।
याते सब जीव हरि भक्त हैं बता दे॥ 726॥
सारा जग सुख चाहे गोविंद राधे।
सुख का ही अंश जीव वेद बता दे॥ 727॥
सब हरि सुख भक्त गोविंद राधे।
जग सुख मिथ्या याते हरि सुख ना दे॥ 728॥
हरि सुख अनन्त दिव्य गोविंद राधे।
दुःख भी दिव्यानन्द युक्त है बता दे॥ 729॥
तुम भी चित् हम भी चित् गोविंद राधे।
तुम हो विज्ञ हम हैं अज्ञ क्यों बता दे॥ 730॥
तू भी उर मैं भी उर गोविंद राधे।
तू है द्रष्टा मैं हूँ भोक्ता क्यों बता दे॥ 731॥
मैं हूँ ब्रह्म मायाधीश गोविंद राधे।
तू है जीव मायाधीन भेद यों बता दे॥ 732॥
तुम मायी हम मायी गोविंद राधे।
मायाधीश मायाधीन भेद क्यों बता दे॥ 733॥
तुममें हममें माया रहे गोविंद राधे।
तुममें दासी हम में स्वामिनि क्यों बता दे॥ 734॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तुम योगमाया युक्त गोविंद राधे।
जीव तो है मायाधीन भेद बता दे॥ 735॥

तुम भी चेतन हरि गोविंद राधे।
हम भी हैं चेतन भेद क्या बता दे॥ 736॥

तुम हो व्यापक जग गोविंद राधे।
हम भी व्यापक तनु भेद क्या बता दे॥ 737॥

तुम भी हो अनादि हरि गोविंद राधे।
हम भी हैं अनादि पुनि भेद क्या बता दे॥ 738॥

तुम झूठे अज्ञ बने गोविंद राधे।
मैं भी झूठा विज्ञ बना भेद क्या बता दे॥ 739॥

तुम विज्ञ कर्म अज्ञ गोविंद राधे।
मैं अज्ञ कर्म विज्ञ भेद क्या बता दे॥ 740॥

जेहि उर तुम रहो गोविंद राधे।
सोइ उर मैं भी रहुँ भेद क्या बता दे॥ 741॥

तू भी माँगे द्वार द्वार गोविंद राधे।
छाछ, मैं भी माँगूँ सुख भेद क्या बता दे॥ 742॥

तू भी प्रेमियों ते माँगे गोविंद राधे।
प्रेम, मैं भी माँगूँ प्रेम भेद क्या बता दे॥ 743॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दिव्य प्रेम का ही तो हूँ गोविंद राधे।
मैं भूखा तू भूखा भेद क्या बता दे॥ 744॥

चोरी ते तू पाप हरे गोविंद राधे।
चोरी ते मैं पाप करूँ भेद क्या बता दे॥ 745॥

गोपी प्यार ते तू जार गोविंद राधे।
जग प्यार ते मैं जार भेद क्या बता दे॥ 746॥

तेरे पास भी है माया गोविंद राधे।
मेरे पास भी है माया भेद क्या बता दे ॥ 747 ॥

तू भी निज जन प्रेमी गोविंद राधे।
मैं भी निज जन प्रेमी भेद क्या बता दे ॥ 748 ॥

तेरे भी जन्म कर्म गोविंद राधे।
मेरे भी जन्म कर्म भेद क्या बता दे ॥ 749 ॥

तू भी सुखी दुखी होवे गोविंद राधे।
मैं भी सुखी दुखी होउँ भेद क्या बता दे ॥ 750 ॥

तेरे भी माता पिता गोविंद राधे।
मेरे भी माता पिता भेद क्या बता दे ॥ 751 ॥

तूने भी भुलाया मोहिं गोविंद राधे।
मैंने भी भुलाया तोहिं भेद क्या बता दे ॥ 752 ॥

तुममें हममें भेद यही गोविंद राधे।
तुम अंशी हम अंश बता दे ॥ 753 ॥

हममें तुममें भेद यही गोविंद राधे।
तुम हो नियन्ता हम नियम्य बता दे ॥ 754 ॥

हममें तुममें भेद यही गोविंद राधे।
तुम सर्वज्ञ हम अज्ञ बता दे ॥ 755 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तुम तो हो मुक्तिदाता गोविंद राधे।
हम हैं अनादिबद्ध भेद बता दे ॥ 756 ॥

तुम तो सर्वव्यापक गोविंद राधे।
हम तो हैं व्याप्य यह भेद बता दे ॥ 757 ॥

तुम तो सर्वशक्तिमान गोविंद राधे।
हम अल्पशक्तिमान भेद बता दे ॥ 758 ॥

तुम तो हो जगस्रष्टा गोविंद राधे।
हम तो हैं सृज्य यह भेद बता दे॥ 759॥
ब्रह्म अंशी जीव अंश गोविंद राधे।
अंशी अंश में भेदाभेद बता दे॥ 760॥
जीव तो है ब्रह्म शक्ति गोविंद राधे।
याते जीव को ब्रह्म अंश बता दे॥ 761॥
शक्ति शक्तिमान में तो गोविंद राधे।
भेद भी नहीं है भेद भी है बता दे॥ 762॥
कौन हूँ मैं किसका हूँ गोविंद राधे।
कौन मेरा तीनों बातें कोई बता दे॥ 763॥
दास हूँ मैं स्वामी का गोविंद राधे।
स्वामी मेरे हरि प्रश्नकर्ता को बता दे॥ 764॥
मेरा साध्य क्या है अरु गोविंद राधे।
साधन क्या है कोई याय समझा दे॥ 765॥
तेरा साध्य हरि सेवा गोविंद राधे।
साधन श्रीकृष्ण भक्ति बता दे॥ 766॥
हरि भक्ति भी हो अरु गोविंद राधे।
निष्कामता भी हो तो साध्य दिला दे॥ 767॥
हरि सर्वव्यापक गोविंद राधे।
यह मानना ही तेरा साध्य दिला दे॥ 768॥
हरि तेरे उर रह गोविंद राधे।
यह मानना ही तोहिं हरि ते मिला दे॥ 769॥
हरि में निवास तेरा गोविंद राधे।
यह मानना ही तोहिं लक्ष्य दिला दे॥ 770॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उच्च साधक यदि गोविंद राधे।
मर जाय तो कौन गति हो बता दे॥ 771॥
वह उच्च साधक गोविंद राधे।
उच्च साधक घर जन्म ले बता दे॥ 772॥
पुनि सत्संग द्वारा गोविंद राधे।
वाते भी आगे करे साधना बता दे॥ 773॥
साधना का फल हरि गोविंद राधे।
अपर जन्म में देंगे बता दे॥ 774॥
क्या क्या चाहे तू गोविंद राधे।
क्या क्या न चाहे तू यह भी बता दे॥ 775॥
जग का अभाव चाहूँ गोविंद राधे।
गोपी प्रेम भाव चाहूँ गोपी ते दिला दे॥ 776॥
हरि तेरा सुख चाहूँ गोविंद राधे।
निज सुख नहिं चाहूँ उत्तर बता दे॥ 777॥
कछु नहिं चाहूँ तो सों गोविंद राधे।
यह चाहूँ चाह मेरी जड़ ते मिटा दे॥ 778॥
प्रेम निष्काम चाहूँ गोविंद राधे।
भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ सुख मोहिं ना दे॥ 779॥
हम कौन हरि कौन गोविंद राधे।
हरि ते हमारा कौन नाता जना दे॥ 780॥
हम दास स्वामी हरि गोविंद राधे।
हरि ते हमारा सब नाता बता दे॥ 781॥
जीव ब्रह्म सम्बन्ध गोविंद राधे।
सायुज्य भी जीव ब्रह्म में बता दे॥ 782॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जीव ब्रह्म सम्बन्ध गोविंद राधे।
साजात्य सख्य सादेश्य बता दे॥ 783॥

'द्वा सुपर्णा' मंत्र में तो गोविंद राधे।
दो सखा बालक पालक बता दे॥ 784॥

'द्वा सुपर्णा' वेद मंत्र गोविंद राधे।
कहे तेरे नित्य सखा कृष्ण हैं बता दे॥ 785॥

जहाँ जहाँ जीव जाये गोविंद राधे।
तहाँ तहाँ कृष्ण सखा जाये बता दे॥ 786॥

हरि की ही गोद में तो गोविंद राधे।
जीव का है नित्य निवास बता दे॥ 787॥

सिन्धु की तरंग जैसे गोविंद राधे।
जल ते हो ओतप्रोत बता दे॥ 788॥

कृष्ण अंश जीव वैसे गोविंद राधे।
कृष्ण ते है ओत प्रोत बता दे॥ 789॥

अग्नि चिन्गारियों में गोविंद राधे।
अग्नि के सब गुण रहें ज्यों बता दे॥ 790॥

वैसे अंश जीव में भी गोविंद राधे।
कृष्ण के गुणों का आभास बता दे॥ 791॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हम दो हमारे दो गोविंद राधे।
इतना ही बस तत्त्वज्ञान है बता दे॥ 792॥

हम हैं दो कौन गोविंद राधे।
कौन दो हमारे हैं यह भी बता दे॥ 793॥

'हम' एक जीव भी है गोविंद राधे।
'हम' एक देह भी है तत्त्व बता दे॥ 794॥

जीव के भेद दो हैं गोविंद राधे।
एक बद्ध एक है मुक्त बता दे॥ 795॥
देह के भेद दो हैं गोविंद राधे।
एक दिव्य अरु एक मायिक बता दे॥ 796॥
'हम' जीव तो सत्य गोविंद राधे।
'हम' देह मिथ्या है तत्त्व बता दे॥ 797॥
'हम' जीव तो दिव्य गोविंद राधे।
'हम' देह मायिक है तत्त्व बता दे॥ 798॥
'हम' जीव अंश हरि गोविंद राधे।
'हम' देह पंच महाभूत का बता दे॥ 799॥
'हम' जीव नित्य तत्त्व गोविंद राधे।
'हम' देह शीर्णशील नश्वर बता दे॥ 800॥
'हम' जीव कर्ता भोक्ता गोविंद राधे।
देह भोग्य इन्द्रिय मन है बता दे॥ 801॥
'हम' जीवात्मा का गोविंद राधे।
एक है हमारा परमात्मा बता दे॥ 802॥
दूसरे 'हम' देह का गोविंद राधे।
सारा संसार है हमारा बता दे॥ 803॥
'हम' जीवात्मा का गोविंद राधे।
सुख है अनन्त अरु नित्य बता दे॥ 804॥
दूसरे 'हम' देह का गोविंद राधे।
सुख तो है दुखयुक्त नश्वर बता दे॥ 805॥
'हम' जीवात्मा का गोविंद राधे।
लक्ष्य है श्रीकृष्ण सेवा बता दे॥ 806॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रीकृष्ण दर्शन गोविंद राधे।
जीव का चरम लक्ष्य नाहिं बता दे॥ 807॥

वस्तुतस्तु कृष्ण की गोविंद राधे।
प्रेममयी सेवा है लक्ष्य बता दे॥ 808॥

दूसरे हम देह का तो गोविंद राधे।
लक्ष्य है क्षणिक सुख भोग बता दे॥ 809॥

'हम' जीव एक ही थे गोविंद राधे।
एक हैं एक ही रहेंगे बता दे॥ 810॥

'हम' देह तो अनन्त गोविंद राधे।
हो चुके अब तक सब को बता दे॥ 811॥

'हम' जीव का रूप गोविंद राधे।
जीवात्मा अरु महात्मा बता दे॥ 812॥

'हम' देह का रूप गोविंद राधे।
स्थूल सूक्ष्म अरु कारण है बता दे॥ 813॥

'हम' देह में तो है गोविंद राधे।
इन्द्रिय मन अरु बुद्धि बता दे॥ 814॥

पाँच तो कर्मेन्द्रिय गोविंद राधे।
पाँच ज्ञानेन्द्रिय दस हैं बता दे॥ 815॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पाँच ज्ञानेन्द्रियों का गोविंद राधे।
सारा विश्व विषय है पाँच बता दे॥ 816॥

पाँच ज्ञान इन्द्रिय गोविंद राधे।
श्रोत्र, नेत्र, त्वक्, नासा, रसना बता दे॥ 817॥

ज्ञान इन्द्रिय विषय गोविंद राधे।
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध बता दे॥ 818॥

एक और मन भी है गोविंद राधे।
उसका ही रूप दूजा बुद्धि बता दे॥ 819॥

बुद्धि के अधीन मन गोविंद राधे।
मन के अधीन हैं इन्द्रिय बता दे॥ 820॥

जीव दास हरि का है गोविंद राधे।
देह दास जीव का है तत्त्व बता दे॥ 821॥

जिसकी भी आदि होगी गोविंद राधे।
एक दिन उसका हो अन्त बता दे॥ 822॥

जिसकी न आदि होगी गोविंद राधे।
उसका न अन्त हो अनन्त बता दे॥ 823॥

देह की है आदि याते गोविंद राधे।
देह का हो अन्त अवश्य बता दे॥ 824॥

आत्मा की आदि नहिं गोविंद राधे।
याते आत्मा तो है नित्य बता दे॥ 825॥

हरि अज मैं भी अज गोविंद राधे।
हरि ने बनाया मोहिं झूठ बता दे॥ 826॥

हरि पिता मैं हूँ सुत गोविंद राधे।
आयु में समान दोनों पिता को बता दे॥ 827॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म, जीव, माया, वेद गोविंद राधे।
चारों हैं अनादि अनन्त बता दे॥ 828॥

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

3

मानव देह

मायाबद्ध जीव कभु गोविंद राधे।
देहरहित नहिं रहता बता दे॥ 829॥
देह है जरायुज गोविंद राधे।
अण्डज उद्भिज स्वेदज बता दे॥ 830॥
देह की अवस्था तीन गोविंद राधे।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति बता दे॥ 831॥
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
एक अवस्था और गोविंद राधे।
ज्ञानियों की वाय तुरीय बता दे॥ 832॥
देह परिणाम तीन गोविंद राधे।
कृमि अरु भस्म अरु विष्ठा बता दे॥ 833॥
देह तो मरण शील गोविंद राधे।
किन्तु दिव्य प्रेम अमरत्व दिला दे॥ 834॥

माना देह मायिक गोविंद राधे।
किन्तु देह बिनु भक्ति हो न बता दे॥ 835॥
हीरे ते हीरा कटे गोविंद राधे।
ऐसे देह ते देहमुक्ति बता दे॥ 836॥
नश्वर देह ते ही गोविंद राधे।
अविनाशी हरि प्राप्त होते बता दे॥ 837॥
देह का प्रकार तो है गोविंद राधे।
लख चौरासी योनि बता दे॥ 838॥
जीव को दिये हैं हरि गोविंद राधे।
लख चौरासी भाँति वस्त्र बता दे॥ 839॥
लख चौरासी में गोविंद राधे।
नर योनि ही कर्म योनि है बता दे॥ 840॥
नर चाहे स्वर्ग सुख गोविंद राधे।
स्वर्ग सुर चाहें नर तनु दिलवा दे॥ 841॥
वेदों में सुरों को गोविंद राधे।
असुर कहा आश्चर्य बता दे॥ 842॥
'असुषु रमंते इति' गोविंद राधे।
व्युत्पत्ति सुर को असुर बता दे॥ 843॥
असु अर्थ प्राण, सुर गोविंद राधे।
प्राणों में ही करें रमण बता दे॥ 844॥
नर के पलक चले गोविंद राधे।
देव के पलक नहिं चलती बता दे॥ 845॥
नर चले भू पै गोविंद राधे।
देवों के पैर भू पै परें ना बता दे॥ 846॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नर की तो छाया हो गोविंद राधे।
देव के शरीर की न छाया बता दे॥ 847॥
नर तनु पै धूलि गोविंद राधे।
देव तनु पै धूलि लगे ना बता दे॥ 848॥
नर तनु फूल माला गोविंद राधे।
मुरझाये, देव तनु एक सी बता दे॥ 849॥
नर तनु मल मूत्र गोविंद राधे।
देव तनु मल मूत्र रहित बता दे॥ 850॥
मल मूत्र का पिटारा गोविंद राधे।
किन्तु नर तनु सुर चाहें बता दे॥ 851॥
सुर योनि भोग योनि गोविंद राधे।
नर योनि ही कर्मयोनि बता दे॥ 852॥
स्वर्ग लोक में भी माया गोविंद राधे।
फल भोग पश्चात् पतन करा दे॥ 853॥
स्वर्ग में भी काम क्रोध गोविंद राधे।
लोभ आदि का अधिकार बता दे॥ 854॥
देवासुर युद्ध में गोविंद राधे।
विजय हुई थी देवों की बता दे॥ 855॥
देवों को गर्व हुआ गोविंद राधे।
हमने ही असुरों को जीता बता दे॥ 856॥
हरि ने यक्ष बनि गोविंद राधे।
गर्व चूर चूर कर दिया था बता दे॥ 857॥
मृत्यु लोक जन सम गोविंद राधे।
स्वर्ग सुर भी मायाधीन बता दे॥ 858॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इन्द्र भी है मायाधीन गोविंद राधे।
सौ अश्वमेध यज्ञ इन्द्र बना दे॥ 859॥
नर तनु आधीन गोविंद राधे।
नरक स्वर्ग अपवर्ग बता दे॥ 860॥
नर तनु को तो वेद गोविंद राधे।
सब ही फलों की निसेनी बता दे॥ 861॥
भव तो है जलनिधि गोविंद राधे।
नर तनु जलयान पार पहुँचा दे॥ 862॥
भव पार जाना हो तो गोविंद राधे।
जलयान चालक गुरु को बना दे॥ 863॥
उठ उठ जाग जाग गोविंद राधे।
गुरु ढिग जा गुरु गैल बता दे॥ 864॥
अति दुर्लभ तीनों गोविंद राधे।
नर-तनु श्रद्धा गुरु-शरण बता दे॥ 865॥
हरि को न भूलो मन गोविंद राधे।
नर तनु सुर दुर्लभ ना गमा दे॥ 866॥
हरि की कृपा ते कभु गोविंद राधे।
नर तनु मिले वाय यूँ ही ना गँवा दे॥ 867॥
पुण्य पुंज हरि कृपा गोविंद राधे।
नर तनु पाया काहे जग में गँवा दे॥ 868॥
अगनित जनम तो गोविंद राधे।
जग में गमाया यह तनु ना गमा दे॥ 869॥
जीवन धारण गोविंद राधे।
वृक्ष भी करते हैं जग में बता दे॥ 870॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लोहार धौंकनी भी गोविंद राधे।
वायु ग्रहण त्याग करती बता दे॥ 871॥
ग्राम के अन्य पशु गोविंद राधे।
खाते विषय भोग करते बता दे॥ 872॥
ऐसे हरि भक्ति बिनु गोविंद राधे।
नर जीवन पशुवत है बता दे॥ 873॥
कृष्ण भक्ति बिनु नर गोविंद राधे।
कूकर शूकर सम हैं बता दे॥ 874॥
नर सम विषयी न गोविंद राधे।
पशु पक्षी कीट पतंग बता दे॥ 875॥
जीव तो है तोता सम गोविंद राधे।
तन हाड़ माँस का है पिंजरा बता दे॥ 876॥
हाड़ माँस पिंजड़ा है गोविंद राधे।
तनु किन्तु नर तनु हरि ते मिला दे॥ 877॥
नर देह को न कोसो गोविंद राधे।
नर देह ही तो तोहिं हरि ते मिला दे॥ 878॥
राधे राधे बोल मन गोविंद राधे।
सुर दुर्लभ तनु सफल बना दे॥ 879॥
राधे राधे बोल मन गोविंद राधे।
तन का भरोसा नहिं छन में छिना दे॥ 880॥
राधे राधे बोल मन गोविंद राधे।
जाने काल कब तेरा टिकट कटा दे॥ 881॥
राधे राधे बोल मन गोविंद राधे।
अब लौं नसाया अब तो ना नसा दे॥ 882॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि कृपा तनु पाया गोविंद राधे।
तू भी कृपा करु मन को लगा दे॥ 883॥

गर्भ में किये थे वादे गोविंद राधे।
भक्ति ही करूँगा किंतु भूल गये वादे॥ 884॥

अमर सुरहु मरे गोविंद राधे।
नर माने अमर जो हरि को भुला दे॥ 885॥

सुर नर मुनि सब गोविंद राधे।
काल के कलेवा बने बनेंगे बता दे॥ 886॥

बाल युवा वृद्ध सब गोविंद राधे।
हरि भजु जाने कब तनु धोखा दे॥ 887॥

पा भी लो कुबेर पद गोविंद राधे।
एक दिन काल वाको कवल बना दे॥ 888॥

नर की बिसात क्या है गोविंद राधे।
इन्द्र को भी जाना होगा स्वर्ग ते बता दे॥ 889॥

बड़े बड़े ज्ञानी ध्यानी गोविंद राधे।
एक दिन होंगे काल कवल बता दे॥ 890॥

तन धन धाम सब गोविंद राधे।
COPYRIGHT
छोड़ जाय कर्म साथ जायें बता दे॥ 891॥
RADHA GOVIND SAMITI

मोह निशा में सोया गोविंद राधे।
आदि मध्य खोया अब अन्त तो बना दे॥ 892॥

जनम अनन्त खोया गोविंद राधे।
अन्त में मन निज कन्त में लगा दे॥ 893॥

जीव जब तनु त्यागे गोविंद राधे।
जग कहे तनु तो है माटी बता दे॥ 894॥

तन तो है माटी का गोविंद राधे।
एक दिन माटी में माटी मिला दे॥ 895॥
माटी का पुतला तू गोविंद राधे।
काल जब चाहे तोहिं माटी बना दे॥ 896॥
हरि की शरण गहु गोविंद राधे।
हाय हाय में काहे जनम गँवा दे॥ 897॥
गर्भ ते न लाया कछु गोविंद राधे।
संग भी न जाये कछु मन को बता दे॥ 898॥
मुट्ठी बाँधे आया था तू गोविंद राधे।
हाथ पसारे जाये मन को बता दे॥ 899॥
नंगे तनु आया था गोविंद राधे।
बिनु तनु जाये काल तनु भी छिना दे॥ 900॥
नंगा तनु संग लाया गोविंद राधे।
जग वाले तनु को भी आग में जला दें॥ 901॥
जग छोड़ना ही होगा गोविंद राधे।
पहले ही छोड़ि मन हरि में लगा दे॥ 902॥
एक दिन जाना होगा गोविंद राधे।
ससुराल मन मायके ते हटा दे॥ 903॥
आया है जो भी जग गोविंद राधे।
एक दिन जाना है जग ते बता दे॥ 904॥
जग एक धर्मशाला गोविंद राधे।
लोग आवें जावें कौन किसका बता दे॥ 905॥
एक दिन तनु छिने गोविंद राधे।
याते मूढ़! मन हरि गुरु में लगा दे॥ 906॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि मन लाये नहिं गोविंद राधे।
केहि बल पै इतराय बता दे॥ 907॥

निज सब बल तजु गोविंद राधे।
निर्बल बनि बल हरि को बना दे॥ 908॥

तन यौवन धन गोविंद राधे।
चार दिन की है सब चाँदनी बता दे॥ 909॥

जो आया जाये वह गोविंद राधे।
केहि लगि तू धन धाम सजा दे॥ 910॥

बड़े बड़े आये गये गोविंद राधे।
तन धन आदि अभिमान मिटा दे॥ 911॥

धन में कुबेर नहिं गोविंद राधे।
पुनि धन का अभिमान क्यों बता दे॥ 912॥

मान ना गणेश सम गोविंद राधे।
पुनि मान का है अभिमान क्यों बता दे॥ 913॥

वैभव इन्द्र का ना गोविंद राधे।
पुनि वैभव का है मद क्यों बता दे॥ 914॥

रूप काम सा नहिं गोविंद राधे।
पुनि रूप का है अभिमान क्यों बता दे॥ 915॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बुद्धि शारदा सी ना गोविंद राधे।
पुनि बुद्धि का अभिमान क्यों बता दे॥ 916॥

प्रभुता न विधि सम गोविंद राधे।
पुनि प्रभुता का है मद क्यों बता दे॥ 917॥

नृत्य उर्वशी सा ना गोविंद राधे।
पुनि नृत्य का अभिमान क्यों बता दे॥ 918॥

मानव देह

यौवन दो दिन गोविंद राधे।
आयु भी है चार दिन मद क्यों बता दे॥ 919॥
बल नहिं काल सम गोविंद राधे।
पुनि बल का अभिमान क्यों बता दे॥ 920॥
जो भी आए जाए वह गोविंद राधे।
मायाधीन हो या मायामुक्त बता दे॥ 921॥
आने को सब जानें गोविंद राधे।
जाने को जानें मायामुक्त बता दे॥ 922॥
आने में सुख जैसा गोविंद राधे।
जाने में दुःख वैसा ही हो बता दे॥ 923॥
संचय अंत क्षय गोविंद राधे।
उत्थान का अंत पतन बता दे॥ 924॥
विरह मिलन अंत गोविंद राधे।
जीवन का अन्त है मरण बता दे॥ 925॥
प्रतिदिन जाते लखि गोविंद राधे।
बचे हुए जग सुख सत्य बता दे॥ 926॥
अब लौं गमाया तूने गोविंद राधे।
अब हरि गुरु में ही मन को लगा दे॥ 927॥
बीता सो बीता भूत गोविंद राधे।
वर्तमान को तो मूढ़ भक्ति ते बना दे॥ 928॥
मनमानी खाया सोया गोविंद राधे।
भूत सब खोया अब भावी बना दे॥ 929॥
प्रति जन्मदिन पै गोविंद राधे।
सोचो आयु बीती जाती भक्ति करा दे॥ 930॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भजूँगा भजूँगा कहि गोविंद राधे।
काहे अगनित जन्म यूँ ही गमा दे।। 931।।
करूँगा करूँगा कहि गोविंद राधे।
बीते युग युग भक्ति अब तो करा दे।। 932।।
करूँगा करूँगा इमि गोविंद राधे।
जनि करु करु हरि भक्ति बता दे।। 933।।
अवसर बीत्यो जात गोविंद राधे।
भजूँगा भजूँगा कहे कब लौं बता दे।। 934।।
अवसर बीत्यो जात गोविंद राधे।
आज कालि परसों में बरसों गँवा दे।। 935।।
अवसर बीत्यो जात गोविंद राधे।
काल लगायो घात नींद को भगा दे।। 936।।
अवसर बीत्यो जात गोविंद राधे।
इस नर तनु में तो बिगरी बना दे।। 937।।
अवसर बीत्यो जात गोविंद राधे।
नर तनु सुर दुर्लभ है बता दे।। 938।।
अभी भक्ति करो काल गोविंद राधे।
जाने कब राम नाम सत्य करा दे।। 939।।
आज कहे कालि करूँ गोविंद राधे।
कालि कहे काल ऐसे जनम गवाँ दे।। 940।।
कालि कालि जनि करु गोविंद राधे।
जाने आजु काल लाल झण्डी दिखा दे।। 941।।
आजु करूँ कहो जनि गोविंद राधे।
अभी करूँ यह कहि मन को लगा दे।। 942।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तन क्षणभंगुर गोविंद राधे।
तजि दे गुमान मन हरि में लगा दे॥ 943॥
चार दिन चाँदनी है गोविंद राधे।
पुनि अँधियारी रात मूढ़ ध्यान ना दे॥ 944॥
कोटि यतन करु गोविंद राधे।
तन धन धाम तेरा कोई साथ ना दे॥ 945॥
जग तोहिं छोड़े नहिं गोविंद राधे।
चाहे और अगनित जनम गमा दे॥ 946॥
तू तो जग छोड़े नहिं गोविंद राधे।
काल जब चाहे क्षण में छुड़वा दे॥ 947॥
काल ते छुड़ाने के गोविंद राधे।
पूर्व मूढ़! मन को हरि में लगा दे॥ 948॥
काल ते तो जग काँपे गोविंद राधे।
देवराज इन्द्र पै भी गाज गिरा दे॥ 949॥
काल ते तो सब हारे गोविंद राधे।
जग के विधाता को भी पद ते हटा दे॥ 950॥
काल के भी काल हरि गोविंद राधे।
एक दिन काल की भी छुट्टी करा दें॥ 951॥
सारी में थोड़ी बची गोविंद राधे।
बची खुची थोड़ी ते सारी बना दे॥ 952॥
हरि भजु जाने कब गोविंद राधे।
काल तेरा बिस्तर गोल करा दे॥ 953॥
बेर न करु भजु गोविंद राधे।
देर का न अंत कभु होगा बता दे॥ 954॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बेर न करु भजु गोविंद राधे।
जाने कब यम यमदूत पठा दे॥ 955॥
आयु जल बुलबुला गोविंद राधे।
जाने कब फूट जाये सबको बता दे॥ 956॥
पल का भरोसा नहिं गोविंद राधे।
जाने कब काल नर तनु छिनवा दे॥ 957॥
सब तज हरि भज गोविंद राधे।
तेरी सब बिगरी आपु बना दे॥ 958॥
हरि दंड देंगे तो गोविंद राधे।
लख चौरासी द्वार घुमा दे॥ 959॥
सैर तो बड़ों का काम गोविंद राधे।
हरि साथ होंगे सौभाग्य बता दे॥ 960॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

4

शरणागति, कृपा

'इन्द्रं त्रिधातु शरणं' गोविंद राधे।
शरणागति वेद सम्मत बता दे॥ 961॥

'यो ब्रह्माणं' मंत्र गोविंद राधे।
शरणागति वेद सम्मत बता दे॥ 962॥

अनुकूल संकल्प गोविंद राधे।
प्रतिकूल मनन न शरण बता दे॥ 963॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

विश्वास रक्षा में गोविंद राधे।
वरण गोप्तृत्व में शरण बता दे॥ 964॥

आत्म निक्षेप अरु गोविंद राधे।
भाव कार्पण्य शरण बता दे॥ 965॥

चला जा शरण श्याम गोविंद राधे।
बिनु ही कहे माया भागे बता दे॥ 966॥

हरि भक्त लखि माया गोविंद राधे।
ऐसे भागे जैसे रवि तम को भगा दे॥ 967॥
हरि को बुला के उर गोविंद राधे।
माया को नौ दो ग्यारह करा दे॥ 968॥
हरि उर लखि माया गोविंद राधे।
सिर पै पैर धरि भाजे बता दे॥ 969॥
माया ते डरो जनि गोविंद राधे।
मायापति शरण ते माया को भगा दे॥ 970॥
शरणागत का गोविंद राधे।
आपु बने कर्ता अकर्ता बना दे॥ 971॥
ब्रह्म कहे तेरा मैं हूँ गोविंद राधे।
जीव कहे जग मेरा झगड़ा मिटा दे॥ 972॥
जग में लगाओ बुद्धि गोविंद राधे।
याते हो जग ते विराग बता दे॥ 973॥
हरि में लगाओ मन गोविंद राधे।
बुद्धि को हरि की शरण बता दे॥ 974॥
अब लौं किया जो किया गोविंद राधे।
जैसे भी हटे किन्तु किन्तु को हटा दे॥ 975॥
किन्तु जब हट जाये गोविंद राधे।
झट पट हठी मन हरि में लगा दे॥ 976॥
जो भी हो प्रपन्न वाकी गोविंद राधे।
आपु हरि भक्ति करें गीता बता दे॥ 977॥
गर्भस्थ शिशु ज्यों गोविंद राधे।
निज लात मारै मातु हँसि के भुला दे॥ 978॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐसे ही हरि भी गोविंद राधे।
प्रपन्न के अपराध पै ध्यान ना दे॥ 979॥

जो भी हो प्रपन्न वाको गोविंद राधे।
क्रीत दास बनि सेवें श्याम बता दे॥ 980॥

भक्त योगक्षेम हरि गोविंद राधे।
वहन करें भक्त शरण हो बता दे॥ 981॥

शरण में जाये जो भी गोविंद राधे।
त्रिगुण त्रिकर्म त्रिताप मिटा दे॥ 982॥

जो भी हो प्रपन्न वाकी गोविंद राधे।
जीव माया गुण माया दोनों भगा दे॥ 983॥

जो भी हो प्रपन्न वाकी गोविंद राधे।
विद्या अविद्या दोनों माया भगा दे॥ 984॥

जो भी हो प्रपन्न वाके गोविंद राधे।
पंचक्लेश पंचकोश भस्म करा दे॥ 985॥

शरण जाने में घाटा गोविंद राधे।
मेरा प्यारा पाप पुण्य लै के जला दे॥ 986॥

हरि सों जो प्रेम करे गोविंद राधे।
वेद कहे लोक परलोक नसा दे॥ 987॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि जनि भजु मन गोविंद राधे।
तेरा सब कछु छीनि भिक्षुक बना दे॥ 988॥

शरण में जाऊँ यदि गोविंद राधे।
माया छुड़ा के योगमाया लगा दे॥ 989॥

शरण में जाऊँ जो तो गोविंद राधे।
लख चौरासी खिलौने छिना दे॥ 990॥

शरणागत का गोविंद राधे।
सब पाप हरि हरि ले दाम ना दे॥ 991॥
शरण में जाये कौन गोविंद राधे।
तीन तीन देह मेरे मोते छुड़ा दे॥ 992 ॥
देह का प्रकार चार गोविंद राधे।
स्थूल, सूक्ष्म, कारण, दिव्य बता दे॥ 993॥
स्थूल, सूक्ष्म, कारण गोविंद राधे।
मायिक देह, चौथा दिव्य बता दे॥ 994॥
स्थूल शरीर को तो गोविंद राधे।
अन्नमय कोश का बताते हैं बता दे॥ 995॥
सूक्ष्म शरीर प्राण गोविंद राधे।
मन विज्ञान तीन कोश का बता दे॥ 996॥
कारण शरीर तो गोविंद राधे।
आनन्दमय कोश का है अन्तिम बता दे॥ 997॥
कारण शरीर संग गोविंद राधे।
रहे प्रलय में वासनात्मक बता दे॥ 998॥
भक्तों के हेतु चौथा गोविंद राधे।
दिव्य है शरीर गोलोक में बता दे॥ 999॥
स्थूल सूक्ष्म कारण गोविंद राधे।
तीनों शरीरों का बन्धन बता दे॥ 1000॥
स्थूल सूक्ष्म कारण गोविंद राधे।
तनु जब लौं, न स्वतंत्र हो बता दे॥ 1001॥
हरि प्रिय शत्रु न गोविंद राधे।
सब पै सामान्य कृपा हो बता दे॥ 1002॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शरणागति, कृपा

हरि भक्त ऊपर गोविंद राधे।
होती विशेष कृपा हरि की बता दे॥ 1003॥
कृपा पात्र बनने को गोविंद राधे।
तन मन धन अर्पन करवा दे॥ 1004॥
आत्मसमर्पण अर्थ गोविंद राधे।
निज मन प्राण आदि दान है बता दे॥ 1005॥
जितनी प्रपत्ति होगी गोविंद राधे।
उतनी कृपा भी होगी हरि की बता दे॥ 1006॥
जितनी प्रपत्ति होगी गोविंद राधे।
उतनी सँभार करें हरि भी बता दे॥ 1007॥
जितना जो प्यार करे गोविंद राधे।
उतना ही प्यार करें श्याम भी बता दे॥ 1008॥
जीव जोइ नाता जोरे गोविंद राधे।
श्याम भी सोई नाता जोरें बता दे॥ 1009॥
पूर्ण प्रपन्न हो जा गोविंद राधे।
बन जा पतंग डोरी हरि को थमा दे॥ 1010॥
हरि के प्रपन्न हो जा गोविंद राधे।
मन शुद्ध करि दिव्य कर ले बता दे॥ 1011॥
पुनि इस जग में भी गोविंद राधे।
दसों दिशा में पाये रस ही बता दे॥ 1012॥
कृष्ण दिव्य रस चाहे गोविंद राधे।
कृष्ण भक्ति द्वारा मन दिव्य बना दे॥ 1013॥
संशय तजु मन गोविंद राधे।
भोला शिशु बनि हो प्रपन्न बता दे॥ 1014॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बुद्धि का अभिमान गोविंद राधे।
बड़ों बड़ों का भी पतन करा दे॥ 1015॥
हरि भक्ति नौका पै गोविंद राधे।
बैठ जा पतवार हरि को थमा दे॥ 1016॥
हरि यदि थामे ना तो गोविंद राधे।
पतवार गुरुदेव कर में थमा दे॥ 1017॥
हरि गुरु मन माँगें गोविंद राधे।
मायिक मन लै दिव्य बना दें॥ 1018॥
दाता होके माँगे हरि गोविंद राधे।
तन मन दे दे हरि दिव्य बना दे॥ 1019॥
तन मन धन खोया गोविंद राधे।
जगत में सोच तो जग तोहिं का दे॥ 1020॥
निर्बल के बल गोविंद राधे।
शरण ग्रहण करु बल को भुला दे॥ 1021॥
हरि परखत नित गोविंद राधे।
जाने कब जीव मन मुझमें लगा दे॥ 1022॥
हरि हैं समदर्शी गोविंद राधे।
किसी के मित्र या शत्रु ना बता दे॥ 1023॥
शरणागत हित गोविंद राधे।
योग क्षेम वहन कर्ता हरि हैं बता दे॥ 1024॥
एक बार गालव मुनि गोविंद राधे।
दे रहे सूर्य को अर्घ्य बता दे॥ 1025॥
आकाश मार्ग ते गोविंद राधे।
चित्रसेन ने पीक थूका बता दे॥ 1026॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अकस्मात वह पीक गोविंद राधे।
गालव अंजलि में आ गिरी बता दे॥ 1027॥
गालव गये कृष्ण ढिग गोविंद राधे।
चित्रसेन नीचता बताया बता दे॥ 1028॥
कृष्ण ने प्रतिज्ञा की गोविंद राधे।
चौबीस घंटे में मारूँगा बता दे॥ 1029॥
चित्रसेन नारद ढिग गोविंद राधे।
गया, कहा, आपकी शरण हूँ बता दे॥ 1030॥
नारद ने कहा जाओ गोविंद राधे।
अर्धरात्रि यमुना तट रोना बता दे॥ 1031॥
वहाँ आयेंगी एक गोविंद राधे।
नारी रक्षा वर माँगना बता दे॥ 1032॥
पुनि गये नारद गोविंद राधे।
पास सुभद्रा के कहा यह बता दे॥ 1033॥
यमुना नहाने का गोविंद राधे।
आज बहुत बड़ा फल है बता दे॥ 1034॥
वहाँ जो भी जो भी माँगे गोविंद राधे।
वर, उसे वर देना अवशि बता दे॥ 1035॥
सुभद्रा नहाने गईं गोविंद राधे।
चित्रसेन जोर जोर रोया बता दे॥ 1036॥
पूछा सुभद्रा ने गोविंद राधे।
कहो तुम्हें कौन सा कष्ट है बता दे॥ 1037॥
चित्रसेन ने बताया गोविंद राधे।
अपनी पूरी कहानी बता दे॥ 1038॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कहा सुभद्रा ने गोविंद राधे।
जाओ मैं रक्षा करूँगी बता दे॥ 1039॥

पार्थ ते सुभद्रा ने गोविंद राधे।
कहा यह सब वृत्तान्त बता दे॥ 1040॥

पार्थ ने भी प्रण किया गोविंद राधे।
चित्रसेन रक्षा करूँगा बता दे॥ 1041॥

पार्थ कृष्ण युद्ध हुआ गोविंद राधे।
पार्थ पाशुपत कृष्ण चक्र उठा दे॥ 1042॥

तब आये शंकर गोविंद राधे।
बीच बचाव किया उन्होंने बता दे॥ 1043॥

गालव ने उठाया जल गोविंद राधे।
सब को ही शाप देने को बता दे॥ 1044॥

सुभद्रा शक्ति ने गोविंद राधे।
जल को न गिरने दिया हाथ ते बता दे॥ 1045॥

पाप अरु दण्ड बिच गोविंद राधे।
होड़ है अनादि कोउ कोउ ना हरा दे॥ 1046॥

हरि की शरण में जा गोविंद राधे।
अगनित पापों ते मुक्त करा दे॥ 1047॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अगणित जन्मों के गोविंद राधे।
शुभाशुभ कर्मों के बन्धन छुड़ा दे॥ 1048॥

द्वार द्वार भीख माँगा गोविंद राधे।
हरि द्वार जा हरि प्रेम सुधा दे॥ 1049॥

मायिक मन दे दे गोविंद राधे।
कृष्ण दिव्य मन करि तोहिं लौटा दे॥ 1050॥

मायिक मन दै के गोविंद राधे।
दिव्य प्रेम लूटो दोनों हैं सीधे सादे॥ 1051॥

सब कछु हरि का है गोविंद राधे।
हरि को ही दे दे कहु प्रेम सुधा दे॥ 1052॥

थोड़ा थोड़ा काहे दिया गोविंद राधे।
प्यार किया है तो सब कछु लुटा दे॥ 1053॥

थोड़ा देगा हरि को तो गोविंद राधे।
हरि देगा थोड़ा तोहिं सब को बता दे॥ 1054॥

हरि ते भी प्यार तेरा गोविंद राधे।
'भी' को हटा दे अब 'ही' को लगा दे॥ 1055॥

'तेरे मेरे' बीच हरि गोविंद राधे।
'भी' तो लगावें सब 'ही' ना लगा दे॥ 1056॥

तू भी मेरा सब मानें गोविंद राधे।
तू ही मेरा माने कोई बिरला बता दे॥ 1057॥

बार बार सोचो मन गोविंद राधे।
मैं हूँ जीव मेरे हरि ही हैं बता दे॥ 1058॥

हरि बिनु जीव ऐसा गोविंद राधे।
जल बिनु जैसा हो जलद बता दे॥ 1059॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शरण गये बिनु गोविंद राधे।
कृपा शक्ति कृपा ना दे कृपा ना दे ना दे॥ 1060॥

हिम गिरि ढिग ना जा गोविंद राधे।
सूर्य ढिग जा सूर्य शीत भगा दे॥ 1061॥

तम सन्मुख तू है गोविंद राधे।
सूर्य सन्मुख हो जा तम को भगा दे॥ 1062॥

आँख मोतिया बिन्द गोविंद राधे।
सूर्य के प्रकाश को मूढ़ दोष का दे॥ 1063॥
हरि मन दोनों हठी गोविंद राधे।
हरि माँगे मन मन माँगे कृपा दे॥ 1064॥
मन का ही दोष नहिं गोविंद राधे।
बुद्धि की मिली भगत मन ते बता दे॥ 1065॥
मन दे दे बुद्धि दे दे गोविंद राधे।
यही है प्रपन्न परिभाषा बता दे॥ 1066॥
ज्ञानी करे बुद्धि दान गोविंद राधे।
भक्त मन ही दे दोनों भोले बता दे॥ 1067॥
बुद्धि मात्र दान ते तो गोविंद राधे।
मन में वासना भर जायेगी बता दे॥ 1068॥
मन मात्र दान ते तो गोविंद राधे।
बुद्धि संसार में लगेगी बता दे॥ 1069॥
मन का ही रूप बुद्धि गोविंद राधे।
एक नाम अन्तःकरण बता दे॥ 1070॥
मन बुद्धि मानो यदि गोविंद राधे।
दो, बुद्धि आधीन मन को बता दे॥ 1071॥
बुद्धि है सारथी गोविंद राधे।
मन रस्सी इन्द्रियाँ घोड़े बता दे॥ 1072॥
जीव है रथी यात्री गोविंद राधे।
सारथी जहाँ चाहे रथ को घुमा दे॥ 1073॥
मन बुद्धि चित्त अहं गोविंद राधे।
चारों हैं मन के ही रूप बता दे॥ 1074॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आत्मा सूक्ष्म मन सूक्ष्म गोविंद राधे।
आत्मा में मन अध्यस्त बता दे॥ 1075॥
एक क्षण को भी कोई गोविंद राधे।
रहे न अकर्मा सन्यासी को बता दे॥ 1076॥
सुषुप्ति में भी कर्म गोविंद राधे।
कारण शरीर की अविद्या बता दे॥ 1077॥
अविद्या मनोगत तो गोविंद राधे।
सुषुप्ति में भी कैसे रहती बता दे॥ 1078॥
कोई अकर्मा नहिं गोविंद राधे।
श्वास लेना भी तो कर्म है बता दे॥ 1079॥
यदि मन हरि में हो गोविंद राधे।
तन करे कर्म अकर्ता बता दे॥ 1080॥
यदि मन हरि में हो गोविंद राधे।
तन ते किया कर्म कछु फल ना दे॥ 1081॥
आत्मा अकर्ता है गोविंद राधे।
इन्द्रियाँ अकर्ता मन कर्ता बता दे॥ 1082॥
मन के अधीन इन्द्रिय गोविंद राधे।
याते इन्द्रियों को भी हरि में लगा दे॥ 1083॥
इन्द्रियों की भक्ति ऐसी गोविंद राधे।
कछु ना ते कछु कछु अच्छा है बता दे॥ 1084॥
तन नहिं मन देखे गोविंद राधे।
कमला सा प्यार कुबरी को दिला दे॥ 1085॥
तन ते भजन किया गोविंद राधे।
प्यारा तो प्यार माँगे मन का बता दे॥ 1086॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन का ही कर्म कर्म गोविंद राधे।
याते रैन दिन मन हरि में लगा दे॥ 1087 ॥
हरि में या जग में ही गोविंद राधे।
एक काल एक ही स्मरण हो बता दे॥ 1088 ॥
तनु ते ही सुता का गोविंद राधे।
तनु ते ही कान्ता मिलन बता दे॥ 1089 ॥
याते तनु कर्म व्यर्थ गोविंद राधे।
मन का ही कर्म है कर्म बता दे॥ 1090 ॥
तनु डूबे यमुना में गोविंद राधे।
मन डूबे जग, शुद्ध क्यों हो बता दे॥ 1091 ॥
तन का नमन धोखा गोविंद राधे।
मन का नमन ही नमन बता दे॥ 1092 ॥
तन ते जगत कर्म गोविंद राधे।
मन ते भजन कर्मयोग सिखा दे॥ 1093 ॥
शरण कृपा के बीच गोविंद राधे।
झगड़ा पड़ा है बड़ा झगड़ा मिटा दे॥ 1094 ॥
प्रथम शरण गहु गोविंद राधे।
हरि कह, जीव कह प्रथम कृपा दे॥ 1095 ॥
अधिकारी पे कृपा करे गोविंद राधे।
इसको जग वाले व्यापार बता दें॥ 1096 ॥
मन हठ नहिं छोड़े गोविंद राधे।
शरण न जाय चाहे जितनी सजा दे॥ 1097 ॥
भजन करे न मन गोविंद राधे।
करूँगो करूँगो कहि पाठ पढ़ा दे॥ 1098 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन बड़ा चंचल गोविंद राधे।
छिन स्वर्ग छिन पाताल पठा दे॥ 1099॥
मन का भरोसा नहिं गोविंद राधे।
विश्वामित्र पराशर को भी धोखा दे॥ 1100॥
मन का भरोसा नहिं गोविंद राधे।
योगीश्वरों को भी सिद्धि में लुभा दे॥ 1101॥
मन का भरोसा नहिं गोविंद राधे।
सुर नर मुनि सब को बहका दे॥ 1102॥
मन का भरोसा नहिं गोविंद राधे।
हरि हरिजन तजि सब को नचा दे॥ 1103॥
मन मनमानी करे गोविंद राधे।
लख चौरासी योनि डर ते डरा दे॥ 1104॥
माया सुत मन करे गोविंद राधे।
पाप, फल भोगे हरि सुत क्यों बता दे॥ 1105॥
जीव मन दोनों मिलि गोविंद राधे।
कर्ता हैं मन नहिं इकलो बता दे॥ 1106॥
माया सत्य ब्रह्म शक्ति गोविंद राधे।
कोई भी उपाधि नहिं ग्राह्य बता दे॥ 1107॥
माया जीव सत्य शक्ति गोविंद राधे।
ब्रह्म शक्तिमान यह ज्ञान करा दे॥ 1108॥
क्षेत्र अरु क्षेत्रज्ञ गोविंद राधे।
अपरा परा क्षर अक्षर बता दे॥ 1109॥
माया शक्ति जड़ गोविंद राधे।
जीव शक्ति तो चैतन्य बता दे॥ 1110॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि जड़ शक्ति का गोविंद राधे।
चैतन्य पै अधिकार क्यों बता दे॥ 1111॥
माया यद्यपि जड़ गोविंद राधे।
हरि शक्ति पाके हरि सम है बता दे॥ 1112॥
माया को गीता में गोविंद राधे।
कहा गुणमयी दैवी शक्ति बता दे॥ 1113॥
वस्तुतस्तु माया का गोविंद राधे।
शक्तिमान है भगवान बता दे॥ 1114॥
याते हरि शक्ति पाके गोविंद राधे।
माया हो हरि के समान बता दे॥ 1115॥
याते हरि हरिजन गोविंद राधे।
तजि कोउ माया को जीता ना बता दे॥ 1116॥
बड़े बड़े योगी ज्ञानी गोविंद राधे।
माया ते मानि चुके हार बता दे॥ 1117॥
परा तो है जीव शक्ति गोविंद राधे।
अपरा है माया माया परा को नचा दे॥ 1118॥
जीव की बिसात क्या है गोविंद राधे।
माया ते डरें ब्रह्मादि भी बता दे॥ 1119॥
श्याम शक्ति पाके माया गोविंद राधे।
विधि हरि हर के भी छक्के छुड़ा दे॥ 1120॥
नारद मुनि को भी गोविंद राधे।
यह माया नर ते बानर बना दे॥ 1121॥
जनों की अविद्या को गोविंद राधे।
नष्ट करे वाको जनार्दन बता दे॥ 1122॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्याम की ही दासी माया गोविंद राधे।
श्याम जब चाहें तब माया भगा दें॥ 1123॥

माया तो बँदरिया है गोविंद राधे।
श्याम तो हैं नट जैसा चाहें नचा दें॥ 1124॥

माया ते न डरो कोउ गोविंद राधे।
माया पति उर में हैं माया को दिखा दे॥ 1125॥

माया को बुरा न कहो गोविंद राधे।
माया दुःख दै के मायापति ते मिला दे॥ 1126॥

जीव तो तटस्था शक्ति गोविंद राधे।
माया बहिरंगा ज्ञान जीव का भुला दे॥ 1127॥

ब्रह्म को भुलाया याते गोविंद राधे।
माया ने फँसाया मायापति को बुला दे॥ 1128॥

हरि है मायाधीश गोविंद राधे।
जीव मायाधीन हरि माया हटा दे॥ 1129॥

जीव दास माया दासी गोविंद राधे।
हरि शक्ति पाके दासी दास को हरा दे॥ 1130॥

जीव को नचावे माया गोविंद राधे।
हरि को नचावे योगमाया बता दे॥ 1131॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जीव तो हो माया मुक्त गोविंद राधे।
हरि योगमाया मुक्त हों ना बता दे॥ 1132॥

जैसे जलयान खग गोविंद राधे।
उड़ि थकि जलयान आवे बता दे॥ 1133॥

जीव जग सुख नहिं गोविंद राधे।
पावे तब आवे हरि शरण बता दे॥ 1134॥

माना मैं महापापी गोविंद राधे।
अचरज कौन यामें सोचि के बता दे॥ 1135 ॥
कहे तो तू महापापी गोविंद राधे।
माने क्यों न अचरज यों उर ला दे॥ 1136 ॥
मैं तो मानूँ पापी किन्तु गोविंद राधे।
तेरी माया मेरे मन को बहका दे॥ 1137 ॥
अब न बनाऊँगा गोविंद राधे।
अपना किसी को किन्तु माया भुला दे॥ 1138 ॥
उर में बिठा दे हरि गोविंद राधे।
माया का बिस्तर गोल करा दे॥ 1139 ॥
ब्रह्म पुत्र जीव आगे गोविंद राधे।
मन जड़ माया को हउवा बता दे॥ 1140 ॥
तू तो मायापति सुत गोविंद राधे।
माया ते न डर उठ माया को डरा दे॥ 1141 ॥
माया जो डरावे तोहिं गोविंद राधे।
माया पति नाम लै के माया को डरा दे॥ 1142 ॥
माया की बिसात क्या है गोविंद राधे।
राधे राधे गाके मायापति को डरा दे॥ 1143 ॥
माया बहकावे जो तो गोविंद राधे।
गुरु बुद्धि ते मन को समझा दे॥ 1144 ॥
माया ते न डरु लरु गोविंद राधे।
गुरु शक्ति ते माया शक्ति को हरा दे॥ 1145 ॥
माया को कौन तरे गोविंद राधे।
जो शरण्य गुरु नित सेवे बता दे॥ 1146 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माया को कौन तरे गोविंद राधे।
जो जग आसक्ति त्याग दे बता दे॥ 1147॥

आत्मा अकेली न गोविंद राधे।
कर्ता कहाती सब को बता दे॥ 1148॥

आत्मा है कर्ता सँग गोविंद राधे।
शरीरेन्द्रिय चेष्टा दैव बता दे॥ 1149॥

प्रकृति तो जड़ है गोविंद राधे।
यह कैसे हो कर्ता बता दे॥ 1150॥

सुकृत या दुष्कृत गोविंद राधे।
भाग्य हरि काल न कराता बता दे॥ 1151॥

कर्म शक्ति दाता हरि गोविंद राधे।
याते हरि को कर्म कर्ता बता दे॥ 1152॥

कर्म शक्ति मात्र दे गोविंद राधे।
कर्मों में स्वतंत्र सब जीवों को बना दे॥ 1153॥

कर्म तो है जड़ याते गोविंद राधे।
हरि ही है कर्म फल दाता बता दे॥ 1154॥

जीव तो है अल्पज्ञ गोविंद राधे।
याते कर्म फल दाता हरि हैं बता दे॥ 1155॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि ही करावें कर्म गोविंद राधे।
तो वेद व्यर्थ सिद्ध होंगे बता दे॥ 1156॥

हरि ही करावें कर्म गोविंद राधे।
तो जीव फल काहे भोगे बता दे॥ 1157॥

हरि ही करावें कर्म गोविंद राधे।
वह कर्म सिद्ध भक्तों का बता दे॥ 1158॥

भक्त को भी भाग्य भोग्य गोविंद राधे।
संचित क्षम्य क्रियमाण फल ना दे॥ 1159॥
मामा कृष्ण पिता अर्जुन गोविंद राधे।
अभिमन्यु मरा भाग्य भोग्य बता दे॥ 1160॥
कर्म में स्वतंत्र जीव गोविंद राधे।
ऐसा वेद शास्त्र बताता है बता दे॥ 1161॥
कर्म में स्वतंत्र सब गोविंद राधे।
फल भोगने में परतंत्र बता दे॥ 1162॥
मकड़ी के जाल जनु गोविंद राधे।
जग में फँसाया आपु काउ दोष का दे॥ 1163॥
शुभाशुभ कर्मों द्वारा गोविंद राधे।
बाँधा आपु आपु को हरिहिं दोष का दे॥ 1164॥
लालन कृपा ही है गोविंद राधे।
ताड़न भी कृपा फल दिव्य बता दे॥ 1165॥
प्रथम तो हीरे को गोविंद राधे।
खोदा काटा घिसा हीरा रोया बता दे॥ 1166॥
वही हीरा जब बना गोविंद राधे।
हरि के गले का हार धन्य बता दे॥ 1167॥
शिशु को नहलाये माँ गोविंद राधे।
शिशु रोये किन्तु हो स्वस्थ बता दे॥ 1168॥
पुत्रवत्सला माँ ज्यों गोविंद राधे।
भूखे सुत को नींद ते जगा दे॥ 1169॥
ऐसे श्री कृष्ण ने भी गोविंद राधे।
प्रलय के पश्चात् सृष्टि की बता दे॥ 1170॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भाव था यह जीव गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण को प्राप्त कर ले बता दे॥ 1171॥
श्रीकृष्ण प्राप्ति हित गोविंद राधे।
वेदों को भी किया प्रकट बता दे॥ 1172॥
बार बार श्रीकृष्ण गोविंद राधे।
लै के अवतार आये जग में बता दे॥ 1173॥
अपने जनों को भी गोविंद राधे।
बार बार भेजा समझाने बता दे॥ 1174॥
अपराधी सुत गोविंद राधे।
लखि माँ दे जैसे दण्ड बता दे॥ 1175॥
उसमें है वात्सल्य गोविंद राधे।
माँ का, सुधार हो सुत का बता दे॥ 1176॥
ऐसे ही जीव जब गोविंद राधे।
वेद विरुद्ध करे पाप बता दे॥ 1177॥
तब श्रीकृष्ण उसे गोविंद राधे।
दण्ड दें नरकादि भोग बता दे॥ 1178॥
दण्ड का अभिप्राय गोविंद राधे।
निज सुत जीव-कल्याण बता दे॥ 1179॥
संसारी दुःख भी है गोविंद राधे।
हरि की अव्यक्त कृपा ही बता दे॥ 1180॥
तनु व्याधि धन हानि गोविंद राधे।
जग का अभाव हरि कृपा है बता दे॥ 1181॥
कुन्ती ने वर माँगा गोविंद राधे।
जग वैभव मोहिं ना दे ना दे ना दे॥ 1182॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कुन्ती ने वर माँगा गोविंद राधे।
मोहिं दुख ही दुख दे सुख ना दे॥ 1183॥

सूर्य का स्वभाव जैसे गोविंद राधे।
जगत को देना प्रकाश बता दे॥ 1184॥

हरि गुरु का स्वभाव गोविंद राधे।
कारण बिनु कृपा करना बता दे॥ 1185॥

हरि गुरु कृपा मर्म गोविंद राधे।
अज्ञानी जीव नहिं जाने बता दे॥ 1186॥

किसी को संसार गोविंद राधे।
देना ही हरि गुरु कृपा है बता दे॥ 1187॥

किसी का संसार गोविंद राधे।
छीनना ही हरि गुरु कृपा है बता दे॥ 1188॥

जाको जग दे हरि गोविंद राधे।
वाको शक्ति दै के निर्लेप बना दे॥ 1189॥

माँ निज सुत हित गोविंद राधे।
कभू चूमे चिपटाये प्यार दे बता दे॥ 1190॥

माँ निज सुत हित गोविंद राधे।
कभू डाँटे और रुलाये बता दे॥ 1191॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रोग में निरादर में गोविंद राधे।
धन नाश में है कृपा हरि की बता दे॥ 1192॥

स्वजन वियोग में गोविंद राधे।
प्रिय मृत्यु में है कृपा हरि की बता दे॥ 1193॥

वस्तुतस्तु हरि गुरु गोविंद राधे।
कृपा के सिवा कछु करें ना बता दे॥ 1194॥

राम का क्रोध देखो गोविंद राधे।
रावण को मारि साकेत दिला दे॥ 1195॥
कुसुमहुँ कोमल गोविंद राधे।
असुरन बधि निज पग में मिला दे॥ 1196॥
शिशुपाल आदि को भी गोविंद राधे।
मारि हरि माया ते मुक्त करा दे॥ 1197॥
कृपा का अभाव हेतु गोविंद राधे।
प्रथम कपूयाचरण बता दे॥ 1198॥
कपूयाचरण तीन गोविंद राधे।
जिह्म अनृत मायाभाव बता दे॥ 1199॥
जिह्म भाव परिभाषा गोविंद राधे।
मन में हो विविध कुटिलता बता दे॥ 1200॥
अनृत भाव परिभाषा गोविंद राधे।
अच्छा कहलाने का यत्न बता दे॥ 1201॥
मायाभाव परिभाषा गोविंद राधे।
लोकरंजन का ही लक्ष्य बता दे॥ 1202॥
कृपा का अभाव हेतु गोविंद राधे।
दूजो आध्यात्मिक तुष्टि बता दे॥ 1203॥
आध्यात्मिक तुष्टि चार गोविंद राधे।
क्रम ते उनकी परिभाषा बता दे॥ 1204॥
एक भगवत् तुष्टि गोविंद राधे।
हरि की कृपा हो तो साधना करा दे॥ 1205॥
शरण वरण तुष्टि गोविंद राधे।
शरणागति शाब्दिक ही हो बता दे॥ 1206॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक है काल तुष्टि गोविंद राधे।
समय जब आये तो साधन करा दे॥ 1207 ॥

एक है भाग्य तुष्टि गोविंद राधे।
भाग्य अपने आप साधन करा दे॥ 1208 ॥

भोग में रोग भय गोविंद राधे।
योग में वियोग का भय है बता दे॥ 1209 ॥

बल में हो शत्रु भय गोविंद राधे।
रूप में बुढ़ापे का भय है बता दे॥ 1210 ॥

धन में तो खल भय गोविंद राधे।
तन में यमराज का भय है बता दे॥ 1211 ॥

जग में सर्वत्र भय गोविंद राधे।
हरि की भक्ति ही निर्भय बता दे॥ 1212 ॥

भुक्ति मुक्ति भक्ति का है गोविंद राधे।
कारण मन यह बुद्धि को बता दे॥ 1213 ॥

करना नहीं है कछु गोविंद राधे।
मन ते मनन करि मन को लगा दे॥ 1214 ॥

हरि माँगे मन तेरा गोविंद राधे।
मन ते हरि सुमिरन करवा दे॥ 1215 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग में भी सुना होगा गोविंद राधे।
मन यार में तन कार में लगा दे॥ 1216 ॥

मन एक क्षेत्र दो हैं गोविंद राधे।
जग में लगा दे चाहे हरि में लगा दे॥ 1217 ॥

तन चाहे जग, दे दो गोविंद राधे।
मन चाहे हरि, दे दो काम बना दे॥ 1218 ॥

वेद शास्त्र ज्ञान यह गोविंद राधे।
श्याम ही में आठों याम मन को लगा दे॥ 1219॥
कछु काल हरि भक्ति गोविंद राधे।
कछु काल जग भक्ति धोखा बता दे॥ 1220॥
मन माया जग में जो गोविंद राधे।
चला जाय वहाँ हरि गुरु को बिठा दे॥ 1221॥
मन में हो हरि प्रेम गोविंद राधे।
फिर वा ते जैसा चाहे कर्म करा दे॥ 1222॥
मन यदि जग में हो गोविंद राधे।
तन ते भजन करे निष्फल बता दे॥ 1223॥
मुख कह तू ही मेरा गोविंद राधे।
मन कह जग मेरा धोखा बता दे॥ 1224॥
मन में जो छल हो तो गोविंद राधे।
आपु ही छल सब पाप करा दे॥ 1225॥
लोभ यदि मन में है गोविंद राधे।
अवगुण सब आपु आवें बता दे॥ 1226॥
मन यदि शुद्ध है तो गोविंद राधे।
चारों धाम जाना है व्यर्थ बता दे॥ 1227॥
मन गढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
नित्य विहार करें निकरन ना दे॥ 1228॥
मन गढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
माया यदि आवे मायापति को दिखा दे॥ 1229॥
मन गढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
इन्द्रिन होड़ गुरु मोहिं सेवा दे॥ 1230॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन गढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
एक कामना हो मोहिं प्रेम सुधा दे॥ 1231॥
मन गढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
काम क्रोध आवे तो हरि का बना दे॥ 1232॥
मन गढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
मैं गुरु हरि तीनों तीनों में मिला दे॥ 1233॥
मन गढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
माया भगा दे योगमाया बुला दे॥ 1234॥
मन गढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
गुरु ते कहु मोहिं पद सेवा दे॥ 1235॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
मन यार में हो तन कार में लगा दे॥ 1236॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
गुरु उर बैठे हरि झलक दिखा दे॥ 1237॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
हरि गुरु दोनों रहें दोनों ते मिला दे॥ 1238॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
हरि गुरु में गुरु हरि में समा दे॥ 1239॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
हरि कहे गुरु याको प्रेम सुधा दे॥ 1240॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
जित देखूँ हरि गुरु ही दिखा दे॥ 1241॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
माया काल आवें नहिं आवें तो भगा दे॥ 1242॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शरणागति, कृपा

मनगढ़ ऐसा नित गोविंद राधे।
राधे राधे गोविंद कीर्तन सुना दे॥ 1243॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
सोते जागते हो राधे प्रेम अगाधे॥ 1244॥
मनगढ़ ऐसा धाम गोविंद राधे।
जहाँ हरि गुरु बिनु माँगे कृपा दें॥ 1245॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
हरि गुरु होड़ करि उर ते लगा दें॥ 1246॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
हरि गुरु दोनों होड़ करके कृपा दें॥ 1247॥
मनगढ़ ऐसा जामें गोविंद राधे।
नित ही 'कृपालु' रहें और कृपा दें॥ 1248॥

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज

5

संसार

यह संसार वृक्ष गोविंद राधे।
प्रवाह रूप से है नित्य बता दे॥ 1249॥
यह संसार वृक्ष गोविंद राधे।
सदा सदा ते ही रहा है बता दे॥ 1250॥
संसार वृक्ष के तो गोविंद राधे।
दो बीज पाप अरु पुण्य बता दे॥ 1251॥
संसार वृक्ष के तो गोविंद राधे।
फल फूल मोक्ष अरु भोग बता दे॥ 1252॥
संसार वृक्ष की तो गोविंद राधे।
वासना असंख्य जड़ सम है बता दे॥ 1253॥
संसार वृक्ष के तो गोविंद राधे।
सत्व रज तम गुण तने हैं बता दे॥ 1254॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

संसार वृक्ष की तो गोविंद राधे।
शाखा पंच महाभूत हैं बता दे॥ 1255॥
संसार वृक्ष के तो गोविंद राधे।
शब्द स्पर्श आदि रस हैं बता दे॥ 1256॥
संसार वृक्ष की तो गोविंद राधे।
ग्यारह इन्द्रिय उपशाखा बता दे॥ 1257॥
इस विश्व वृक्ष में तो गोविंद राधे।
सुख दुख दो लगे फल हैं बता दे॥ 1258॥
यह विश्व वृक्ष तो गोविंद राधे।
ब्रह्म लोक तक है फैला बता दे॥ 1259॥
वृक्ष के घोंसले में गोविंद राधे।
ईश्वर जीव दो पक्षी बता दे॥ 1260॥
इस विश्व वृक्ष में तो गोविंद राधे।
वात पित्त कफ तीन छालें बता दे॥ 1261॥
ब्रह्म स्रष्टा व्यापक गोविंद राधे।
ब्रह्म सत्य याते जग सत्य बता दे॥ 1262॥
हरि सृष्ट जग सत्य गोविंद राधे।
मन सृष्ट जग तो है मिथ्या बता दे॥ 1263॥
सत्य संकल्प हरि गोविंद राधे।
हरि ते बना जग सत्य बता दे॥ 1264॥
ब्रह्म जीव माया तीनों गोविंद राधे।
जग रहें याते जग सत्य बता दे॥ 1265॥
सब वैष्णवों का मत गोविंद राधे।
जगत सत्य उपादान सत्य है बता दे॥ 1266॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वेदान्त सूत्रों में गोविंद राधे।
जगत् ब्रह्म का परिणाम बता दे॥ 1267॥
किन्तु शंकराचार्य गोविंद राधे।
विवर्तवाद सिद्धान्त चला दे॥ 1268॥
मूल वस्तु अविकारी गोविंद राधे।
परिणाम हो अन्य रूप बता दे॥ 1269॥
रज्जु में सर्प भय गोविंद राधे।
ऐसे ही है विवर्तवाद बता दे॥ 1270॥
रज्जु ते सर्प अरु गोविंद राधे।
सीप ते चाँदी पैदा हो ना बता दे॥ 1271॥
याते विवर्तवाद गोविंद राधे।
भ्रांत मति की ही है उपज बता दे॥ 1272॥
श्रुति कह ब्रह्म तो है गोविंद राधे।
जग का अन्तर्यामी बता दे॥ 1273॥
रज्जु सर्प सदृश है गोविंद राधे।
याते रज्जु में सर्प भ्रम हो बता दे॥ 1274॥
ब्रह्म अरु जग में तो गोविंद राधे।
कोइ सादृश्य स्वप्न में ना बता दे॥ 1275॥
ब्रह्म है निराकार गोविंद राधे।
जग साकार सादृश्य ना बता दे॥ 1276॥
ज्ञान स्वरूप ब्रह्म गोविंद राधे।
अज्ञान आवृत हुआ क्यों बता दे॥ 1277॥
ज्ञान पै अज्ञान गोविंद राधे।
यदि आ गया मान लें तो बता दे॥ 1278॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मुक्त होने पै गोविंद राधे।
पुनि अज्ञान आ जायेगा बता दे॥ 1279॥

आम के वृक्ष में गोविंद राधे।
सबको ही आम का भ्रम क्यों बता दे॥ 1280॥

घोड़े का चार पैर गोविंद राधे।
ऐसा भ्रम सबको ही हुआ क्यों बता दे॥ 1281॥

विवर्तवाद मानो तो गोविंद राधे।
सृष्टि अरु प्रलय व्यर्थ हों बता दे॥ 1282॥

विवर्तवाद मानो तो गोविंद राधे।
वेद सिद्धान्त व्यर्थ होंगे बता दे॥ 1283॥

ब्रह्म की भगवत्ता गोविंद राधे।
शंकर को स्वीकार्य ना बता दे॥ 1284॥

भगवत्ता मान लें तो गोविंद राधे।
अद्वैत सिद्ध नहिं होगा बता दे॥ 1285॥

विवर्तवाद मायावाद गोविंद राधे।
अद्वैतवाद तीनों एक हैं बता दे॥ 1286॥

भगवत्ता मान लें तो गोविंद राधे।
शक्ति शक्ति कार्य मान्य होंगे बता दे॥ 1287॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शक्ति कार्य मान लें तो गोविंद राधे।
ब्रह्म सविशेष साकार हो बता दे॥ 1288॥

सूक्ष्म चराचर हेतु गोविंद राधे।
स्थूल चराचर है कार्य बता दे॥ 1289॥

माया है जड़ शक्ति गोविंद राधे।
जीव के स्वरूप में नहीं है बता दे॥ 1290॥

आगन्तुक माया गोविंद राधे।
माया को भगाया जा सकता बता दे॥ 1291॥
माया की प्रतीति हो गोविंद राधे।
हरि की प्रतीति ना होने पै बता दे॥ 1292॥
माया की प्रतीति ना हो गोविंद राधे।
हरि की शक्ति बिनु, जड़ है बता दे॥ 1293॥
माया जड़ चीमटी है गोविंद राधे।
हरि कर जो चाहे सोई करा दे॥ 1294॥
जीव माया गुण माया गोविंद राधे।
माया की वृत्ति दो हैं सब को बता दे॥ 1295॥
गुण माया शक्ति रूपा गोविंद राधे।
सत्व, रज, तम साम्यावस्था बता दे॥ 1296॥
पराशक्ति ते कृष्ण गोविंद राधे।
जग के निमित्त कारण हैं बता दे॥ 1297॥
जीव माया शक्ति द्वारा गोविंद राधे।
कृष्ण जग का उपादान हैं बता दे॥ 1298॥
जीव माया सृष्टि का तो गोविंद राधे।
गौण निमित्त कारण है बता दे॥ 1299॥
गुण माया सृष्टि का है गोविंद राधे।
गौण उपादान कारण बता दे॥ 1300॥
प्रकृति है जड़ याते गोविंद राधे।
ब्रह्म शक्ति ते ही उपादान बता दे॥ 1301॥
निमित्तोपादान कारण गोविंद राधे।
मुख्य तो हैं भगवान कृष्ण ही बता दे॥ 1302॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते परिणाम विकारी बता दे॥ 1303॥
स्वरूप शक्ति द्वारा गोविंद राधे।
आपु रहे नित्य अविकारी बता दे॥ 1304॥
नर तनु चेतन गोविंद राधे।
चेतन तन जड़ नख उपजा दे॥ 1305॥
गोबर आदि जड़ गोविंद राधे।
किन्तु चेतन बिच्छू उपजा दे॥ 1306॥
आकाश एक गुणी गोविंद राधे।
वह गुण केवल शब्द का बता दे॥ 1307॥
वायु में दो गुण गोविंद राधे।
एक शब्द है दूजा स्पर्श बता दे॥ 1308॥
तेज में तीन गुण गोविंद राधे।
शब्द, स्पर्श तीसरा है रूप भी बता दे॥ 1309॥
जल में हैं चार गुण गोविंद राधे।
शब्द, स्पर्श, रूप अरु रस भी बता दे॥ 1310॥
पृथ्वी में पाँच गुण गोविंद राधे।
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध बता दे॥ 1311॥
पृथ्वी में पाँच गुण गोविंद राधे।
किन्तु प्रमुख है गंध ही बता दे॥ 1312॥
जल में हैं चार गुण गोविंद राधे।
किन्तु है प्रमुख एक रस ही बता दे॥ 1313॥
तेज में तीन गुण गोविंद राधे।
किन्तु है प्रमुख एक रूप ही बता दे॥ 1314॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वायु में दो गुण गोविंद राधे।
किन्तु है प्रमुख एक स्पर्श ही बता दे॥ 1315 ॥
आकाश में तो गुण गोविंद राधे।
एक ही प्रमुख है शब्द बता दे॥ 1316 ॥
हरि ते आकाश हुआ गोविंद राधे।
फिर वायु अग्नि जल पृथ्वी बता दे॥ 1317 ॥
नभ है निराकार गोविंद राधे।
अचरज जग साकार बना दे॥ 1318 ॥
आकाश स्पर्श हीन गोविंद राधे।
अचरज स्पर्श वाला वायु बना दे॥ 1319 ॥
वायु भी रूप हीन गोविंद राधे।
अचरज रूप वाला तेज बना दे॥ 1320 ॥
तेज भी रसहीन गोविंद राधे।
अचरज रस वाला जल उपजा दे॥ 1321 ॥
जल भी है गंध हीन गोविंद राधे।
अचरज गन्ध वाली पृथ्वी बना दे॥ 1322 ॥
सांख्य सृष्टि प्रकृति ते गोविंद राधे।
जैसे गाय तृण खा के दूध दे बता दे॥ 1323 ॥
किन्तु यदि तृण हेतु गोविंद राधे।
हो तो बैल के भी दूध होगा बता दे॥ 1324 ॥
पुरुष और प्रकृति गोविंद राधे।
सांख्य में दोनों स्वतंत्र बता दे॥ 1325 ॥
पुरुष अधीन प्रकृति गोविंद राधे।
वेदान्त का सिद्धान्त बता दे॥ 1326 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगत है ब्रह्म कार्य गोविंद राधे।
ब्रह्म है जगत का कारण बता दे॥ 1327॥
भूर्भुवः स्वः महः गोविंद राधे।
जन तप सत्य सात लोक बता दे॥ 1328॥
सात लोक और भी हैं गोविंद राधे।
अतल सुतल अरु वितल बता दे॥ 1329॥
तलातल महातल गोविंद राधे।
रसातल पाताल लोक बता दे॥ 1330॥
नैत्यिक प्रलय तो है गोविंद राधे।
सुषुप्ति अवस्था का सब को बता दे॥ 1331॥
दैनंदिन प्रलय है गोविंद राधे।
ब्रह्मा के एक दिन कल्प में बता दे॥ 1332॥
तैंतालिस लाख बीस गोविंद राधे।
हजार वर्ष का चतुर्युग बता दे॥ 1333॥
इकहत्तर चतुर्युगी गोविंद राधे।
एक मन्वन्तर सम है बता दे॥ 1334॥
चौदह मन्वन्तर का गोविंद राधे।
ब्रह्मा का एक दिन कल्प है बता दे॥ 1335॥
कल्प पश्चात् प्रलय गोविंद राधे।
पुनि एक कल्प ब्रह्मा सोते हैं बता दे॥ 1336॥
ब्रह्मा की पूर्ण आयु गोविंद राधे।
इसी गणित ते सौ वर्ष की बता दे॥ 1337॥
प्राकृत प्रलय तो है गोविंद राधे।
ब्रह्मा के सौ वर्ष पश्चात बता दे॥ 1338॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रलय आत्यन्तिक गोविंद राधे।
कैवल्य मोक्ष की प्राप्ति बता दे॥ 1339॥
प्रकृति परिणाम शीला गोविंद राधे।
मानो तो प्रलय कैसे होगा बता दे॥ 1340॥
भगवान वीक्षित गोविंद राधे।
पंच महाभूत की सृष्टि बना दे॥ 1341॥
भगवान मुसकान गोविंद राधे।
भौतिक अगणित विश्व बना दे॥ 1342॥
भगवान सुप्ति ही गोविंद राधे।
निखिल ब्रह्माण्ड का प्रलय करा दे॥ 1343॥
महाप्रलय में तो गोविंद राधे।
सावरण ब्रह्म अनुभव हो बता दे॥ 1344॥
तीनों लोकों के गोविंद राधे।
आदि देव परमदेव ब्रह्मा बता दे॥ 1345॥
सृष्टि की इच्छा ते गोविंद राधे।
कमल पै बैठे सोचें बता दे॥ 1346॥
सृष्टि करने की गोविंद राधे।
शक्ति नहीं है मो में बता दे॥ 1347॥
सोच ही रहे थे गोविंद राधे।
प्रलय समुद्र में ब्रह्मा बता दे॥ 1348॥
दो अक्षर सुने गोविंद राधे।
व्यंजन के तब कान में बता दे॥ 1349॥
अक्षर व्यंजन का गोविंद राधे।
सोलहवाँ इक्कीसवाँ बता दे॥ 1350॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भावार्थ तप तप गोविंद राधे।
ऐसा सुना दो बार बता दे॥ 1351॥
किसने कहा तप गोविंद राधे।
देखा चारों ओर बता दे॥ 1352॥
दीखा न कोई जब गोविंद राधे।
बैठे पुनि निज कमल बता दे॥ 1353॥
करने लगे तप गोविंद राधे।
ब्रह्मा जी मनोयोग ते बता दे॥ 1354॥
तप किया ब्रह्मा ने गोविंद राधे।
देव वर्ष एक सहस्र बता दे॥ 1355॥
कृष्ण प्रसन्न हुये गोविंद राधे।
उन्होंने दिखाया निज धाम बता दे॥ 1356॥
वह हरि धाम तो गोविंद राधे।
धामों में है सर्वश्रेष्ठ बता दे॥ 1357॥
उस दिव्य धाम में गोविंद राधे।
काल कर्म माया जाये ना बता दे॥ 1358॥
वहाँ नहिं माया के गोविंद राधे।
सत्व रज तम तीनों गुण भी बता दे॥ 1359॥
वहाँ तो निवास करें गोविंद राधे।
हरि के नित्य पार्षद ही बता दे॥ 1360॥
हरि का शरीर वहाँ गोविंद राधे।
दिव्य तेज युक्त श्याम रंग का बता दे॥ 1361॥
कमल नेत्र पीतपट गोविंद राधे।
रोम रोम रस सौन्दर्य बता दे॥ 1362॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अंग अंग मणिमय गोविंद राधे।
भूषण ते भूषित है बता दे॥ 1363॥
मूंगे वैदूर्य मणि गोविंद राधे।
कमल तन्तु सी छवि है बता दे॥ 1364॥
सिर पै है मुकुट गोविंद राधे।
कान में कुण्डल कनक बता दे॥ 1365॥
उस हरि धाम में गोविंद राधे।
कमला करें पद सेवा बता दे॥ 1366॥
ब्रह्मा ने देखा वहाँ गोविंद राधे।
पार्षद करें परिचर्या बता दे॥ 1367॥
पुरुष प्रकृति आदि गोविंद राधे।
पच्चीस तत्व करें सेवा बता दे॥ 1368॥
समग्र ऐश्वर्य गोविंद राधे।
धर्म यश अरु श्री शक्ति बता दे॥ 1369॥
ज्ञान वैराग्य छे गोविंद राधे।
नित्य सिद्ध शक्तियुक्त हरि हैं बता दे॥ 1370॥
स्वरूपानन्द में गोविंद राधे।
हरि हैं नित्य निमग्न बता दे॥ 1371॥
हरि दर्शन करि गोविंद राधे।
ब्रह्मा हो गये मत्त बता दे॥ 1372॥
सात्विक भाव सब गोविंद राधे।
प्रकट हो गये देह में बता दे॥ 1373॥
हरि ने कहा ब्रह्मा गोविंद राधे।
तुमको है वेदज्ञान बता दे॥ 1374॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तुमने तपस्या की गोविंद राधे।
हम हैं तुमते प्रसन्न बता दे॥ 1375॥
जो चाहो वर माँगो गोविंद राधे।
हम अभी तुमको देंगे बता दे॥ 1376॥
सब साधन फल गोविंद राधे।
मेरा अमोघ दर्शन है बता दे॥ 1377॥
सृष्टि की रचना में गोविंद राधे।
तुम तो थे असमर्थ बता दे॥ 1378॥
याही ते तप की गोविंद राधे।
आज्ञा दी थी मैंने बता दे॥ 1379॥
तप ते करूँ सृष्टि गोविंद राधे।
तप ते ही करूँ रक्षा बता दे॥ 1380॥
तप ते प्रलय करूँ गोविंद राधे।
तप ही है सर्वश्रेष्ठ बता दे॥ 1381॥
ब्रह्मा ने कहा आप गोविंद राधे।
सब उर पुर में साक्षी बता दे॥ 1382॥
ऐसी कृपा करें गोविंद राधे।
जाते हम जानें आप को बता दे॥ 1383॥
जानें सगुण रूप गोविंद राधे।
जानें निर्गुण रूप बता दे॥ 1384॥
आप सत्य संकल्प गोविंद राधे।
आप हैं मायाधीश बता दे॥ 1385॥
मकड़ी ज्यों मुख ते गोविंद राधे।
जाला आपु निकाले बता दे॥ 1386॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जाले में खेले पुनि गोविंद राधे।
अपने में करे लीन बता दे॥ 1387॥
ऐसे ही आप भी गोविंद राधे।
माया ते करें सृष्टि बता दे॥ 1388॥
पुनि अपने में गोविंद राधे।
उस सृष्टि को करें लीन बता दे॥ 1389॥
यह सब आश्चर्य गोविंद राधे।
मेरी बुद्धि ते गम्य नाहिं बता दे॥ 1390॥
ऐसी कृपा करें गोविंद राधे।
अहंकार आने नहिं पाये बता दे॥ 1391॥
आप की आज्ञा ते गोविंद राधे।
सृष्टि का कार्य करूँ मैं बता दे॥ 1392॥
हरि ने कहा ब्रह्मा गोविंद राधे।
गोपनीय ज्ञान सुनो ध्यान ते बता दे॥ 1393॥
मेरा विस्तार जो गोविंद राधे।
मेरे जो लक्षण दिव्य बता दे॥ 1394॥
मेरे रूप गुण आदि गोविंद राधे।
जितने हैं जैसे हैं बता दे॥ 1395॥
मेरी कृपा ते तुम गोविंद राधे।
वैसा अनुभव करोगे बता दे॥ 1396॥
सृष्टि पूर्व मैं ही था गोविंद राधे।
स्थूल सूक्ष्म अज्ञान था ना बता दे॥ 1397॥
वर्तमान में जो है गोविंद राधे।
वह भी एकमात्र मैं हूँ बता दे॥ 1398॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अन्त में बचेगा जो गोविंद राधे।
वह भी रहूँगा मैं ही बता दे॥ 1399॥
ऐसा उपदेश दै के गोविंद राधे।
हरि भये अन्तर्धान बता दे॥ 1400॥
ब्रह्मा ने प्रणाम किया गोविंद राधे।
पुनि प्रारम्भ किया सृष्टि बता दे॥ 1401॥
प्रलय पूर्व जैसी गोविंद राधे।
सृष्टि थी वैसी की पुनः बता दे॥ 1402॥
'यतो वा इमानि' गोविंद राधे।
कह सृष्टिकर्ता हरि हैं बता दे॥ 1403॥
'सदेव सौम्येद' गोविंद राधे।
मंत्र कह हरि हैं स्रष्टा बता दे॥ 1404॥
'तदैक्षत' मंत्र गोविंद राधे।
कह ईश्वर ही स्रष्टा बता दे॥ 1405॥
'स ईक्षत' मंत्र गोविंद राधे।
कह हरि जग स्रष्टा हैं बता दे॥ 1406॥
'स ईक्षांचक्रे' गोविंद राधे।
मंत्र कह कृष्ण ही हैं स्रष्टा बता दे॥ 1407॥
'ब्रह्म वा इदमेकं' गोविंद राधे।
मंत्र कह हरि हैं स्रष्टा बता दे॥ 1408॥
'आत्मा वा इदमेकं' गोविंद राधे।
मंत्र कह श्याम जग स्रष्टा बता दे॥ 1409॥
'तस्माद्वा एतस्मात्' गोविंद राधे।
मंत्र कह हरि हैं स्रष्टा बता दे॥ 1410॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

‘एको ह वै नारायण’ गोविंद राधे।
मंत्र जग स्रष्टा हरि को बता दे॥ 1411॥

‘ईक्षतेर्नाशब्दम्’ गोविंद राधे।
ब्रह्म सूत्र कह हरि स्रष्टा बता दे॥ 1412॥

हरि सदसत्रूपा गोविंद राधे।
गुणमयी माया ते विश्व बना दे॥ 1413॥

जग को बना के हरि गोविंद राधे।
व्याप्त हो रहे निर्लेप बता दे॥ 1414॥

मायावादी कह गोविंद राधे।
जग का मूल कारण प्रकृति बता दे॥ 1415॥

पुनि कह प्रकृति है गोविंद राधे।
स्वयं ही परिणामशीला बता दे॥ 1416॥

प्रकृति निमित्त अरु गोविंद राधे।
उपादान दोनों कारण बता दे॥ 1417॥

किन्तु प्रकृति जड़ गोविंद राधे।
परिणामशीला भी नहीं है बता दे॥ 1418॥

यदि हम मान भी लें गोविंद राधे।
प्रकृति को परिणामशीला बता दे॥ 1419॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि क्यों प्रकृति की गोविंद राधे।
प्रलय में साम्यावस्था बता दे॥ 1420॥

संकल्प ते ही गोविंद राधे।
सृष्टि या प्रलय हो नित्य बता दे॥ 1421॥

विवर्तवादी कह गोविंद राधे।
जग तो है ही नहीं भ्रान्ति है बता दे॥ 1422॥

जग की सत्ता नहिं गोविंद राधे।
श्रुतियों ने ऐसा कहीं कहा ना बता दे॥ 1423॥
यदि जग सत्ता नहिं गोविंद राधे।
ब्रह्म जग योनि कैसे कहा है बता दे॥ 1424॥
यदि वे जग मानें गोविंद राधे।
तो फिर कर्ता भी मानें बता दे॥ 1425॥
यदि जगकर्ता मानें गोविंद राधे।
तो हरिशक्तियाँ भी मानें बता दे॥ 1426॥
यदि हरिशक्ति मानें गोविंद राधे।
इच्छा बल बुद्धि भी मानें बता दे॥ 1427॥
यदि इच्छादि मानें गोविंद राधे।
तो साकार ब्रह्म मानें बता दे॥ 1428॥
वे तो ब्रह्म निर्गुण गोविंद राधे।
निर्विशेष निराकार मानें बता दे॥ 1429॥
सृष्टि का अर्थ यह गोविंद राधे।
प्रलय पूर्व जग प्राकट्य करा दे॥ 1430॥
हरि ना बनावें जग गोविंद राधे।
जैसा पूर्व में था वैसा प्रकट करा दें॥ 1431॥
हरि ते प्रकट जग गोविंद राधे।
हरि व्याप्त हरि ही में लीन हो बता दे॥ 1432॥
ब्रह्म ते निकला जग गोविंद राधे।
याते ब्रह्म अपादान कारक बता दे॥ 1433॥
ब्रह्म ते जीवित जग गोविंद राधे।
याते ब्रह्म है करण कारक बता दे॥ 1434॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म में हो लीन जग गोविंद राधे।
याते ब्रह्म है अधिकरण बता दे॥ 1435॥
वैष्णवाचार्यों में गोविंद राधे।
भिन्न भिन्न मत वैषम्य बता दे॥ 1436॥
कोई कह जीव जग गोविंद राधे।
ब्रह्म का ही है विशेषण बता दे॥ 1437॥
कोई कह जीव जग गोविंद राधे।
ब्रह्म ते सर्वथा पृथक है बता दे॥ 1438॥
कोई कह जीव जग गोविंद राधे।
ब्रह्म ते नित्य अभिन्न बता दे॥ 1439॥
कोई कह जीव जग गोविंद राधे।
ब्रह्म ते भिन्न अभिन्न बता दे॥ 1440॥
कृष्ण सृष्टि कारण गोविंद राधे।
सृष्टि है कृष्ण का कार्य बता दे॥ 1441॥
कारण का ही गुण गोविंद राधे।
कार्य में होता है जग में बता दे॥ 1442॥
कारण कार्य में तो गोविंद राधे।
विजातीय गुण नहिं होते बता दे॥ 1443॥
हरि हैं विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते हरि ते विरुद्ध जग है बता दे॥ 1444॥
कृष्ण कार्य जीव भोग्य गोविंद राधे।
जग दो प्रकार का है सबको बता दे॥ 1445॥
कृष्ण कार्य जग सत्य गोविंद राधे।
जीव भोग्य जग मिथ्या सब को बता दे॥ 1446॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जीव ने जग में जो गोविंद राधे।
कल्पना की बस वही मिथ्या बता दे॥ 1447 ॥
मणि रूपा सृष्टि एक गोविंद राधे।
वह है ईश्वरकृत सत्य बता दे॥ 1448 ॥
मणि में आसक्त को गोविंद राधे।
मणि के पाने ते सुख हो बता दे॥ 1449 ॥
मणि में आसक्त को गोविंद राधे।
मणि के न पाने ते दुख हो बता दे॥ 1450 ॥
मणि ते विरक्त को तो गोविंद राधे।
ना ही सुख ना ही दुख हो बता दे॥ 1451 ॥
जग का है कारण ब्रह्म गोविंद राधे।
कारण है सत्य कार्य सत्य बता दे॥ 1452 ॥
कृष्ण कार्य जग तो है गोविंद राधे।
तनु हित तनु ही ते भजन करा दे॥ 1453 ॥
हरि हैं मायावी गोविंद राधे।
जग है माया का खिलौना बता दे॥ 1454 ॥
मायावी सत्य वस्तु गोविंद राधे।
माया का खिलौना अनित्य बता दे॥ 1455 ॥
ख पुष्पवत् मिथ्या नहिं गोविंद राधे।
जगत को सत्य अनित्य बता दे॥ 1456 ॥
'यद्दृष्टं तन्नष्टं' गोविंद राधे।
भाव सब दृश्य है नश्वर बता दे॥ 1457 ॥
श्रीकृष्ण नित्य सत्य गोविंद राधे।
जग है अनित्य याते त्याज्य बता दे॥ 1458 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो है तत्ववेत्ता गोविंद राधे।
मायावी को ही चाहे बता दे॥ 1459॥
जो है अतत्वज्ञ गोविंद राधे।
माया के खिलौने में उलझे बता दे॥ 1460॥
परिणाम वाद ग्राह्य गोविंद राधे।
कार्य कारण संबंध में बता दे॥ 1461॥
शक्तिमान सेवा ही गोविंद राधे।
शक्ति स्वाभाविक धर्म है बता दे॥ 1462॥
जीव श्रीकृष्ण शक्ति गोविंद राधे।
शक्तिमान सेवा, शक्ति कार्य है बता दे॥ 1463॥
अंशी की सेवा ही गोविंद राधे।
अंश स्वाभाविक धर्म है बता दे॥ 1464॥
जीव श्रीकृष्ण अंश गोविंद राधे।
अंशी की सेवा, अंश कार्य है बता दे॥ 1465॥
जग गोरखधन्धा गोविंद राधे।
आदि भी न अन्त भी ना सन्त बता दे॥ 1466॥
कुत्ता सूखी हड्डी खाये गोविंद राधे।
निज मुख रक्त चूसे हड्डी रक्त ना दे॥ 1467॥
ऐसे मन जग में भी गोविंद राधे।
सुख माने सुख पाये जग सुख ना दे॥ 1468॥
बालू ते तेल मिले गोविंद राधे।
भले ही, जग ते मिले सुख ना बता दे॥ 1469॥
पानी ते घृत मिले गोविंद राधे।
जग ते न सुख मिले कभू भी बता दे॥ 1470॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वासनासक्त जीव गोविंद राधे।
विषय आधीन गीध ज्यों बता दे॥ 1471॥
जग में न सुख दुख गोविंद राधे।
मन की आसक्ति सुख दुःख दिला दे॥ 1472॥
जग का है सुख ऐसा गोविंद राधे।
शिशु पिये अँगुठा ज्यों धोखा बता दे॥ 1473॥
जग सुख ऐसा जैसे गोविंद राधे।
मृगजल हित मृग प्राण गवाँ दे॥ 1474॥
जग मृगजल ज्यों गोविंद राधे।
प्यास मिटाये ना प्यास बढ़ा दे॥ 1475॥
जग फूल सेमर गोविंद राधे।
सुवा चोंच मारे कछु पाये ना बता दे॥ 1476॥
जग सुख दुःख ही है गोविंद राधे।
दिव्य दुःख सुख ही है मरम बता दे॥ 1477॥
जग में है सब कछु गोविंद राधे।
सुख ही नहीं है काहे कोई बता दे॥ 1478॥
जग में है व्याप्त ब्रह्म गोविंद राधे।
वही सुख है नेत्र दिव्य तो बना दे॥ 1479॥
जग ते न माँगो सुख गोविंद राधे।
जग में न सुख तोहिं जग सुख का दे॥ 1480॥
सुख का भिखारी तो है गोविंद राधे।
सारा संसार पुनि तोहिं सुख का दे॥ 1481॥
तू जासों माँगे सुख गोविंद राधे।
वो भी तोसों माँगे सुख तोहिं सुख का दे॥ 1482॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दाता हरि गुरु दो हैं गोविंद राधे।
और सब जग है भिखारी तोहिं का दे॥ 1483॥

सब चाहें निज सुख गोविंद राधे।
याते खटपट रात दिन हो बता दे॥ 1484॥

काऊ को न दोष कछु गोविंद राधे।
सुख का स्वभाव सब ही का बता दे॥ 1485॥

जग में न मानो सुख गोविंद राधे।
अन्यथा वियोग में हो दुःख बता दे॥ 1486॥

जग में न सुख, यदि गोविंद राधे।
मान ले तो दुख नहिं मिलेगा बता दे॥ 1487॥

मिलन में सुख ना हो गोविंद राधे।
विरह में दुख ना हो मन यों बना दे॥ 1488॥

पंच प्रपंच ऐसा गोविंद राधे।
हरि गुरु अनुकम्पा पाके भी गवाँ दे॥ 1489॥

भूल भुलैया जग गोविंद राधे।
ज्ञानाभिमानी भी ज्ञान भुला दे॥ 1490॥

भूल भुलैया जग गोविंद राधे।
COPYRIGHT
जो भी आया आपु अरु बाप को भुला दे॥ 1491॥
RADHA GOVIND SAMITI

है है, ना है ना है गोविंद राधे।
है ना है, ना है है, हैं चार बता दे॥ 1492॥

जग वैभव भी हो गोविंद राधे।
मद भी न होय दुसम्भव बता दे॥ 1493॥

जग वैभव भी हो गोविंद राधे।
हरि भक्त भी हो योगभ्रष्ट बता दे॥ 1494॥

जग का भी दुःख मिले गोविंद राधे।
हरिहूँ न भजे महापापी बता दे॥ 1495॥
संसारी वैभव गोविंद राधे।
मदवर्धक हरि विमुख करा दे॥ 1496॥
जग वैभव ऐसा गोविंद राधे।
प्रज्ञा चक्षुओं को भी अन्धा बना दे॥ 1497॥
जग वैभव ऐसा गोविंद राधे।
सुग्रीव जैसा ज्ञानी राम को भुला दे॥ 1498॥
प्रभुता का मद ऐसा गोविंद राधे।
बड़े बड़े ज्ञानी को बधिर बना दे॥ 1499॥
प्रभुता हो मूर्खता हो गोविंद राधे।
यौवन धन भी हो गर्त में गिरा दे॥ 1500॥
धन की हैं तीन गति गोविंद राधे।
दान उपभोग अरु नाश बता दे॥ 1501॥
धन का है मद ऐसा गोविंद राधे।
बड़े बड़े ज्ञानी को अन्धा बना दे॥ 1502॥
अधिक धन होने ते गोविंद राधे।
पन्द्रह अनर्थ उत्पन्न हों बता दे॥ 1503॥
दम्भ, काम, क्रोध, गर्व गोविंद राधे।
हिंसा अरु चोरी, झूठ बोलना बता दे॥ 1504॥
अहंकार भेद-बुद्धि गोविंद राधे।
बैर अनीति लम्पटता बता दे॥ 1505॥
जुआ स्पर्धा शराब गोविंद राधे।
पन्द्रह अनर्थ पूर्ण पतन करा दे॥ 1506॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

धन आदि मद हित गोविंद राधे।
अपने ते ऊपर देखो बता दे॥ 1507॥
सोचो यह हरि का गोविंद राधे।
अगणित ब्रह्माण्ड विश्व बता दे॥ 1508॥
उस विश्व में है एक गोविंद राधे।
चतुर्मुखी ब्रह्मा ब्रह्माण्ड बता दे॥ 1509॥
उस ब्रह्माण्ड में तो गोविंद राधे।
अरबों आकाश गंगा हैं बता दे॥ 1510॥
एक आकाश गंगा गोविंद राधे।
भीतर हैं अरबों सूर्य बता दे॥ 1511॥
आकाश गंगा में तो गोविंद राधे।
सूर्य लगें जैसे राई बता दे॥ 1512॥
सूर्य मण्डल में तो गोविंद राधे।
यह पृथ्वी जैसे राई बता दे॥ 1513॥
ऐसी हरि सत्ता के गोविंद राधे।
आगे तुम्हारी सत्ता क्या बता दे॥ 1514॥
जो कछु है भी गोविंद राधे।
सब है नश्वर रूप बता दे॥ 1515॥
याते हरि शरण जा गोविंद राधे।
सब अभिमान निर्मूल नसा दे॥ 1516॥
धनी का तो धन मद गोविंद राधे।
दरिद्रता ही दूर करती बता दे॥ 1517॥
जग का जो दुःख मिले गोविंद राधे।
सोई दुःख वाते हरि भजन करा दे॥ 1518॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग में लगाया मन गोविंद राधे।
दुःख पाया अब मन हरि में लगा दे॥ 1519॥

हरि तो हैं सुखसिन्धु गोविंद राधे।
मन को लगाओ सुख पाओ बता दे॥ 1520॥

जग में लगा है मन गोविंद राधे।
हरि में लगाना है भेद बता दे॥ 1521॥

जग में लगा है मन गोविंद राधे।
कारण अनादि अज्ञान बता दे॥ 1522॥

जग में लगा है मन गोविंद राधे।
जग प्रत्यक्ष सुखाभास दिला दे॥ 1523॥

जग सुख भक्ति तजु गोविंद राधे।
हरि सुख भक्ति करु हरि ते मिला दे॥ 1524॥

दूध भी तरल तत्त्व गोविंद राधे।
जल भी तरल किंतु नवनीत ना दे॥ 1525॥

दूध सम हरि सुख गोविंद राधे।
जल सम जग सुख श्याम सुख ना दे॥ 1526॥

जीव है अनादि भूखा गोविंद राधे।
अँगुठा पिये भूख जाये ना बता दे॥ 1527॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि गुरु शरण में गोविंद राधे।
साँचो नित्य दिव्य सुख मिलेगा बता दे॥ 1528॥

जग का बड़ा सुख गोविंद राधे।
जाग्रत स्वप्न सन्धि बेला है बता दे॥ 1529॥

सर्व शक्तियुत भूप गोविंद राधे।
सर्वश्रेष्ठ नर आनन्द बता दे॥ 1530॥

उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
सुख है मनुष्य गन्धर्व का बता दे॥ 1531॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
देव गन्धर्व का सुख है बता दे॥ 1532॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
पितृ चिरलोक लोक सुख है बता दे॥ 1533॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
आजानज देव सुख है बता दे॥ 1534॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
कर्म देव देव का सुख है बता दे॥ 1535॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
देवताओं का लोक-सुख है बता दे॥ 1536॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
स्वर्ग सम्राट इन्द्र का सुख बता दे॥ 1537॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
इन्द्रगुरु बृहस्पति सुख है बता दे॥ 1538॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
प्रजापति का सुख बड़ा है बता दे॥ 1539॥
उसका भी शत गुना गोविंद राधे।
ब्रह्मा का ब्रह्म लोक सुख है बता दे॥ 1540॥
ब्रह्मलोक तक के तो गोविंद राधे।
सुख नश्वर सीमित हैं बता दे॥ 1541॥
ब्रह्मलोक पर्यन्त गोविंद राधे।
माया काल कर्म अधिकार बता दे॥ 1542॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सारा जग छान मारा गोविंद राधे।
कहीं ना मिला आनन्द बता दे॥ 1543॥
सारा जग छान मारा गोविंद राधे।
प्यास बुझाये नहिं प्यास बढ़ा दे॥ 1544॥
सारा जग छान मारा गोविंद राधे।
ब्रह्मलोक तक सुख धोखा बता दे॥ 1545॥
वास्तविक सुख तो है गोविंद राधे।
हरि का अनन्त नित्य दिव्य बता दे॥ 1546॥
जहाँ जा के लौटे नहिं गोविंद राधे।
वह तो है दिव्य हरिधाम बता दे॥ 1547॥
जो भी जाये आये जग गोविंद राधे।
भक्त जाये आये नहिं लौट के बता दे॥ 1548॥
जो भी जाये आये पुनि गोविंद राधे।
भक्त जाये आये स्वेच्छा ते बता दे॥ 1549॥
और आयें स्वार्थ हित गोविंद राधे।
भक्त पर-उपकार हेतु बता दे॥ 1550॥
जीव पति को मिलि गोविंद राधे।
ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच सौतें रुला दें॥ 1551॥
कलि जीते बहुमत गोविंद राधे।
पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ मन को हरा दें॥ 1552॥
पाँच सौतें एक पति गोविंद राधे।
सब खीचें अपनी ही ओर बता दे॥ 1553॥
ज्ञानेन्द्रिय विषय पाँच गोविंद राधे।
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध बता दे॥ 1554॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक एक विषय की गोविंद राधे।
अगणित वस्तु जग मन को लुभा दे॥ 1555॥

व्याध वादन ते तो गोविंद राधे।
मुग्ध हिरन निज प्राण गमा दे॥ 1556॥

दीपक लौ पै गोविंद राधे।
बैठ कर पतंग निज प्राण गमा दे॥ 1557॥

भृंग पतंग मीन गोविंद राधे।
एक ही विषय ते तनु त्यागें बता दे॥ 1558॥

कुरंग मातंग गोविंद राधे।
एक ही विषय ते तनु त्यागें बता दे॥ 1559॥

नर के तो पाँच विषय गोविंद राधे।
याते विनाश में ना संशय बता दे॥ 1560॥

जीव को बुलावे हरि गोविंद राधे।
मार्ग में जग उपवन भी लगा दे॥ 1561॥

जीव उपवन में ही गोविंद राधे।
मन को लगा दे पितु हरि को भुला दे॥ 1562॥

पाँच इन्द्रियों का पाँच गोविंद राधे।
विषय जगत पाँच भूत का बता दे॥ 1563॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्मा ने इन्द्रियों की गोविंद राधे।
बहिर्मुखी वृत्ति ही बनाया बता दे॥ 1564॥

याते सब इन्द्रियाँ तो गोविंद राधे।
शब्दादि ओर ही भागें बता दे॥ 1565॥

जीव तो चह दिव्य गोविंद राधे।
कृष्ण शब्द स्पर्श रूप आदि को बता दे॥ 1566॥

कुसंस्कार वश गोविंद राधे।
मायिक विषयों में सक्त बता दे॥ 1567 ॥
इन्द्रियों ते मन मिला गोविंद राधे।
मन ते मिली बुद्धि पतन करा दे॥ 1568 ॥
कामना तो इन्द्रिय मन गोविंद राधे।
प्राण, धर्म, धृति, मति स्मृति को नसा दे॥ 1569 ॥
शरीर शीर्ण शील गोविंद राधे।
किन्तु विषय तृष्णा तरुण हो बता दे॥ 1570 ॥
विषयों के भोग ऐसे गोविंद राधे।
अग्नि ज्वाला में घृत धार ज्यों बता दे॥ 1571 ॥
शूकर को विष्ठा ते गोविंद राधे।
जैसे प्रेम है अत्यधिक बता दे॥ 1572 ॥
वैसे ही विषयी को गोविंद राधे।
विषयों में है प्रेम अधिक बता दे॥ 1573 ॥
संतोषी ही धनी है गोविंद राधे।
तृष्णा युक्त इन्द्र भी दरिद्र बता दे॥ 1574 ॥
अध्यात्म अधिभूत गोविंद राधे।
अधिदेव हैं तीन ताप बता दे॥ 1575 ॥
आध्यात्मिक ताप गोविंद राधे।
शारीर मानस दो हैं बता दे॥ 1576 ॥
वात, पित्त, कफ जन्य गोविंद राधे।
ज्वर आदि रोग शारीर हैं बता दे॥ 1577 ॥
काम, क्रोध, लोभ आदि गोविंद राधे।
मन सम्बन्धी रोग मानस बता दे॥ 1578 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आधिभौतिक ताप गोविंद राधे।
नर पशु सर्प आदि ते हो बता दे॥ 1579॥

आधिदैविक ताप गोविंद राधे।
सर्दी गर्मी वर्षा आदि ते हो बता दे॥ 1580॥

काम वात क्रोध पित्त गोविंद राधे।
लोभ कफ तीन मुख्य दोष बता दे॥ 1581॥

वात पित्त कफ साथ गोविंद राधे।
हों जो कुपित सन्निपात बता दे॥ 1582॥

वात पित्त कफ तीनों गोविंद राधे।
सब तनु रोगों के मूल बता दे॥ 1583॥

ऐसे काम क्रोध लोभ गोविंद राधे।
सब मानसिक रोग मूल बता दे॥ 1584॥

क्रोध लोभ का भी मूल गोविंद राधे।
विविध जगत की है कामना बता दे॥ 1585॥

जग कामना का मूल गोविंद राधे।
देही को देह मान लेना बता दे॥ 1586॥

देही को देह माना गोविंद राधे।
याते मन देह सुख लक्ष्य बना दे॥ 1587॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

देह मानने का मूल गोविंद राधे।
भगवान की शक्ति माया बता दे॥ 1588॥

माया अधिकार मूल गोविंद राधे।
हरि ते विमुख हो जाना बता दे॥ 1589॥

हरि ते विमुख तो है गोविंद राधे।
जीव अनादि काल ते ही बता दे॥ 1590॥

ब्रह्म जीव दोनों उर गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म ओर पीठ किये है बता दे॥ 1591॥
हरि की विमुखता है गोविंद राधे।
सब मानसिक रोग मूल बता दे॥ 1592॥
चार कारणों ते जीव गोविंद राधे।
होता है श्रीकृष्ण विमुख बता दे॥ 1593॥
प्रथम कारण तो है गोविंद राधे।
पापाचार में प्रवृत्ति बता दे॥ 1594॥
दूसरा कारण गोविंद राधे।
मन की अधिक चंचलता बता दे॥ 1595॥
तीसरा कारण गोविंद राधे।
धन आदि का अभिमान बता दे॥ 1596॥
चौथा कारण गोविंद राधे।
हरि तत्व का अज्ञान बता दे॥ 1597॥
उपर्युक्त कारणों में गोविंद राधे।
सबते बड़ा अभिमान बता दे॥ 1598॥
परदोष दर्शन गोविंद राधे।
निज मन अभिमान और बढ़ा दे॥ 1599॥
निरभिमानता का भी गोविंद राधे।
होता है मन अभिमान बता दे॥ 1600॥
हरि की विमुखता की गोविंद राधे।
औषधि हरि सन्मुखता बता दे॥ 1601॥
हरि सन्मुखता में गोविंद राधे।
वैद्य एक गुरु अनिवार्य है बता दे॥ 1602॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गोविंद राधे।
गुरु ते ही तेरा काम बनेगा बता दे॥ 1603॥
जीव का भवरोग गोविंद राधे।
जब ते भगवान तब ते बता दे॥ 1604॥
हरि विमुखता अनादि गोविंद राधे।
हरि विस्मृति भी अनादि है बता दे॥ 1605॥
यदि कभु कृष्ण स्मृति गोविंद राधे।
होती तो विस्मृति असम्भव बता दे॥ 1606॥
श्रीकृष्ण विस्मृति गोविंद राधे।
माया ते ही होती है बता दे॥ 1607॥
स्मृति में है कारण गोविंद राधे।
योगमाया माया गति ना बता दे॥ 1608॥
तात्पर्य विस्मृति का गोविंद राधे।
स्मृति पै अधिकार हो ना बता दे॥ 1609॥
याते जीव का गोविंद राधे।
भूला कभु सोचना है भ्रम ही बता दे॥ 1610॥
हरि का विस्मरण गोविंद राधे।
अंधकार जैसा है तत्व बता दे॥ 1611॥
हरि का स्मरण तो गोविंद राधे।
सूर्य प्रकाश ज्यों है तत्व बता दे॥ 1612॥
जग का स्मरण हो तो गोविंद राधे।
हरि का हो विस्मरण बता दे॥ 1613॥
हरि स्मरण हो तो गोविंद राधे।
जग का हो विस्मरण बता दे॥ 1614॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सदा हरि स्मरण गोविंद राधे।
करे तो गृहस्थ गोलोक बना दे॥ 1615॥
संपत्ति हरि स्मरण गोविंद राधे।
विपत्ति है हरि विस्मरण बता दे॥ 1616॥
हरि को भुलाया जो गोविंद राधे।
माया को बुलाया यह सिद्ध बता दे॥ 1617॥
गृहासक्त जाने नहिं गोविंद राधे।
'हम कौन', 'कौन हमारा' बता दे॥ 1618॥
गृहासक्त जाने नहिं गोविंद राधे।
लक्ष्य हमारा सुख कहाँ है बता दे॥ 1619॥
गृहासक्त जाने नहिं गोविंद राधे।
कृष्ण ते मेरा संबंध क्या बता दे॥ 1620॥
गृहासक्त जाने नहिं गोविंद राधे।
हरि माया जाय कैसे बता दे॥ 1621॥
गृहासक्त जाने नहिं गोविंद राधे।
कृष्ण प्रेम कैसे कहाँ मिलेगा बता दे॥ 1622॥
गृहासक्त जाने नहिं गोविंद राधे।
निज लक्ष्य आनन्द, ढूँढ़े बता दे॥ 1623॥
ढूँढ़ते ढूँढ़ते गोविंद राधे।
बीत गये अगनित जन्म बता दे॥ 1624॥
जब कभु सन्त मिले गोविंद राधे।
तब ही सत्य तत्वज्ञान हो बता दे॥ 1625॥
तब नित्य सत्संग गोविंद राधे।
द्वारा जीव कृतार्थ हो बता दे॥ 1626॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

संसार

जीव कल्याण हित गोविंद राधे।
जग रचा जीव यामें मन को लगा दे॥ 1627॥
राम नाम सत्य बोले गोविंद राधे।
घर लौटते ही जग सत्य बता दे॥ 1628॥
हरि की कथा ना सुने गोविंद राधे।
ग्राम्य कथा में मन मगन करा दे॥ 1629॥
बार बार जामें सुख गोविंद राधे।
मानो मन वामें आसक्त करा दे॥ 1630॥
जामें हो आसक्ति गोविंद राधे।
वाकी कामना मन पैदा करा दे॥ 1631॥
कामना की पूर्ति में गोविंद राधे।
छिन छिन मन महँ लोभ बढ़ा दे॥ 1632॥
आग की ज्वाला में गोविंद राधे।
जितना भी घृत डालो आग बढ़ा दे॥ 1633॥
ऐसे ही जितना भी गोविंद राधे।
जग मिले उतना ही लोभ बढ़ा दे॥ 1634॥
नर चाहे सुर पद गोविंद राधे।
सुर सब चाहें मोहिं इन्द्र बना दे॥ 1635॥
इन्द्र भी मायाबद्ध गोविंद राधे।
वह चाहे ब्रह्मा का पद दिलवा दे॥ 1636॥
जग ते बड़ा है हरि गोविंद राधे।
हरि ते बड़ी है तृष्णा अन्त ना बता दे॥ 1637॥
भोग तृष्णा को ज्यों ज्यों गोविंद राधे।
भोजन मिले भूख और बढ़ा दे॥ 1638॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अब ना बनाऊँ कहे गोविंद राधे।
पुनि भूले पुनि नई कामना बना दे॥ 1639 ॥

कामना अपूर्ति में गोविंद राधे।
क्रोध तुरत उत्पन्न हो बता दे॥ 1640 ॥

इच्छाओं को मारो जनि गोविंद राधे।
हरि गुरु सेवा इच्छा और बढ़ा दे॥ 1641 ॥

बार बार सोचो सुख गोविंद राधे।
हरि ही में हरि ही में सक्त करा दे॥ 1642 ॥

हरि में ही सुख का गोविंद राधे।
बार बार चिन्तन हरि प्रेम करा दे॥ 1643 ॥

बार बार सोचो यह गोविंद राधे।
हरि ही है हरि ही है मेरा बता दे॥ 1644 ॥

बार बार सोचो यह गोविंद राधे।
जग भौतिक तनु हेतु है बता दे॥ 1645 ॥

'मैं' का विषय हरि गोविंद राधे।
तनु का विषय सारा जग है बता दे॥ 1646 ॥

नासा सूँघे देखे नहिं गोविंद राधे।
नैन सूँघे नहिं दोनों भौतिक बता दे॥ 1647 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐसे दिव्य जीव का हो गोविंद राधे।
भौतिक जग कैसे विषय बता दे॥ 1648 ॥

जग में भी रहें हरि गोविंद राधे।
याते जग को भी हरि धाम बता दे॥ 1649 ॥

लोग कहें पानी में गोविंद राधे।
डारा सिता तो लगे मीठा बता दे॥ 1650 ॥

पुनि हरि व्यापक गोविंद राधे।
जग में मिले काहे सुख ना बता दे॥ 1651॥

पित्त रोगी रसना को गोविंद राधे।
मीठी मिश्री लगे कड़ुवी बता दे॥ 1652॥

ऐसे माया रोगी को गोविंद राधे।
जग व्याप्त कृष्ण रस मिले ना बता दे॥ 1653॥

हरि में है जग अरु गोविंद राधे।
जग में है हरि दोनों सत्य बता दे॥ 1654॥

हरि के अधीन जग गोविंद राधे।
जग के अधीन हरि नाहिं बता दे॥ 1655॥

जग तो है नश्वर गोविंद राधे।
हरि नित्य अविनाशी हैं बता दे॥ 1656॥

हरि बिनु जग नहिं गोविंद राधे।
जग बिनु हरि थे हैं रहेंगे बता दे॥ 1657॥

सूत बिना वस्त्र नहिं गोविंद राधे।
ऐसे ही कृष्ण बिना जग ना बता दे॥ 1658॥

वस्त्र बिनु सूत रहे गोविंद राधे।
ऐसे जग बिनु रहें कृष्ण बता दे॥ 1659॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि जग सम्बन्ध गोविंद राधे।
ऐसा है सातों विभक्ति बता दे॥ 1660॥

जग को न कोसो कोई गोविंद राधे।
जग की दसों दिशा में हरि को बिठा दे॥ 1661॥

जग को न कोसो जग गोविंद राधे।
तनु हित तनु ही तो भजन करा दे॥ 1662॥

जग यदि होता ना तो गोविंद राधे।
हरि गुन लीला धाम पाते ना बता दे॥ 1663 ॥
जग को न तज मन गोविंद राधे।
जग में न सुख यह मन में बिठा दे॥ 1664 ॥
जग में रहो ऐसे गोविंद राधे।
धर्मशाला में यात्री रहें ज्यों बता दे॥ 1665 ॥
धर्मशाला को ही गोविंद राधे।
निज घर मान लेना मूर्खता बता दे॥ 1666 ॥
ऐसे ही जग को भी गोविंद राधे।
अपना मान लेना है मूर्खता बता दे॥ 1667 ॥
जग में रहो ऐसे गोविंद राधे।
पद्म दल पै जल रहे ज्यों बता दे॥ 1668 ॥
जग में रहो ऐसे गोविंद राधे।
तन ते हो कर्म मन हरि में लगा दे॥ 1669 ॥
जग में रहो ऐसे गोविंद राधे।
गाय घास चरे बछड़ा ना भुला दे॥ 1670 ॥
जग में रहो ऐसे गोविंद राधे।
जल में रहे माखन ज्यों बता दे॥ 1671 ॥
जग में रहो ऐसे गोविंद राधे।
नाटक में ज्यों कोई पात्र बता दे॥ 1672 ॥
जग में रहो ऐसे गोविंद राधे।
ना हो शत्रु कोई ना ही मित्र बता दे॥ 1673 ॥
जग में रहो ऐसे गोविंद राधे।
राग द्वेष ना हो अभिनय ही करा दे॥ 1674 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

संसार

राग तो है ही राग गोविंद राधे।
जगत का द्वेष भी है राग बता दे॥ 1675॥
द्वेष करने ते तो गोविंद राधे।
मन शत्रु के पास जायेगा बता दे॥ 1676॥
द्वेष आग मन काष्ठ गोविंद राधे।
आग ते काष्ठ ही तो जलेगा बता दे॥ 1677॥
बार बार चिन्तन गोविंद राधे।
प्रेम अथवा द्वेष को भी बढ़ा दे॥ 1678॥
राग द्वेष दोनों जब गोविंद राधे।
जग में न हों मन खाली हो बता दे॥ 1679॥
शोक करने ते तो गोविंद राधे।
मन भूतकाल में जायेगा बता दे॥ 1680॥
चिता तो जलावे शव गोविंद राधे।
चिन्ता जलावे जीवित को बता दे॥ 1681॥
जग में हैं हरि माया गोविंद राधे।
हरि में लगा दे मन माया ते हटा दे॥ 1682॥
हरि में लगा दे मन गोविंद राधे।
जग ते हटा दे मन जग तोहिं का दे॥ 1683॥
जग ते हटा दे मन गोविंद राधे।
श्याम मिलन व्याकुलता बढ़ा दे॥ 1684॥
हरि ही में जग लखु गोविंद राधे।
जग में ही हरि लखु काम बना दे॥ 1685॥
सारा जग मायाधाम गोविंद राधे।
कृष्ण प्रेम हो तो हरिधाम बना दे॥ 1686॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सारा जग कृष्णधाम गोविंद राधे।
क्योंकि कृष्ण जग में हैं व्याप्त बता दे॥ 1687 ॥
मायालोक गोलोक गोविंद राधे।
कृष्ण प्रेम बिनु सब सम हैं बता दे॥ 1688 ॥
हरि का जो प्रेम मिले गोविंद राधे।
इस जग को हरि रूप बना दे॥ 1689 ॥
जल मिले दूध में ते गोविंद राधे।
हंस दूध पी ले जल पृथक् बहा दे॥ 1690 ॥
ऐसे हरि उर धरु गोविंद राधे।
मायिक आसक्ति उर ते हटा दे॥ 1691 ॥
बिहार आहार गोविंद राधे।
युक्त हो तो भक्ति की साधना करा दे॥ 1692 ॥
जन्म ते मृत्यु लौं गोविंद राधे।
युक्त आहार विहार करा दे॥ 1693 ॥
अन्यथा तनु रोगी हो गोविंद राधे।
पुनि हो साधना में बाधा बता दे॥ 1694 ॥
'पश्वादिभिः' सूत्र गोविंद राधे।
ब्रह्मलीन को भी भूख प्यास बता दे॥ 1695 ॥
भूख प्यास ज्ञानी को भी गोविंद राधे।
जिसकी हो पूर्ति संसार ते बता दे॥ 1696 ॥
ब्रह्म ज्ञान होने पै भी गोविंद राधे।
जगत प्रपंच था, है, रहेगा बता दे॥ 1697 ॥
हरि कह तू है मेरा गोविंद राधे।
किन्तु मैं हूँ मेरा मेरा अनुभव बता दे॥ 1698 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि कहे तू मेरा गोविंद राधे।
जग कहे तू मेरा सच क्या बता दे॥ 1699॥
आत्मा तो हरि का है गोविंद राधे।
देह जग का है यह जग को बता दे॥ 1700॥
तनु हित जग रचा गोविंद राधे।
भोला भाला मन वामें सक्त करा दे॥ 1701॥
मलयुक्त जल सों ज्यों गोविंद राधे।
मैला वस्त्र धोये और मैला बना दे॥ 1702॥
ऐसे अशुद्ध मन गोविंद राधे।
जग में लगाये और मलिन बना दे॥ 1703॥
हरि ने बनाया जग गोविंद राधे।
तन के लिए मन हरि में लगा दे॥ 1704॥
सारा जग तनु हित गोविंद राधे।
जीव हित हरि गुरु दो हैं बता दे॥ 1705॥
साँचो नातेदार सोई गोविंद राधे।
जो जीव का नाता हरि ते जुड़ा दे॥ 1706॥
सोइ मात पिता साँचो गोविंद राधे।
जो सुत को हरिभक्त बना दे॥ 1707॥
जो मात पिता आदि गोविंद राधे।
भक्ति में बाधा डारे त्याग करा दे॥ 1708॥
अगनित माता पिता गोविंद राधे।
बने साँचे माता पिता हरि को भुला दे॥ 1709॥
अगनित सुत सुता गोविंद राधे।
बने वे कहाँ हैं कोई पता ही बता दे॥ 1710॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग नाते तनु के हैं गोविंद राधे।
तनु छूटे नाते टूटे कोउ साथ ना दे॥ 1711॥
अब जाना साँचो मीत गोविंद राधे।
साँचो मीत उर ला दे काँचो भुला दे॥ 1712॥
सुत पति बनितादि गोविंद राधे।
तेरे ना तो हैं ना तो होंगे बता दे॥ 1713॥
मेरा तू है सब कहें गोविंद राधे।
स्वार्थ ना सधे तो पूछे कौन तू बता दे॥ 1714॥
अपना बनाया जिसको गोविंद राधे।
बुद्धू बनाया उसने निज स्वार्थ साधे॥ 1715॥
किन्तु हरि का द्वार गोविंद राधे।
पतितन हित सदा खुला है बता दे॥ 1716॥
हरि तो विरोधी को भी गोविंद राधे।
अन्न, जल, वायु सब कछु दे बता दे॥ 1717॥
जग तो विरोधी को गोविंद राधे।
दे नहिं कछु सब छीन ले बता दे॥ 1718॥
जब लौं जो अनुकूल गोविंद राधे।
तब लौं सो सब को ही प्रिय है बता दे॥ 1719॥
जब हो जो प्रतिकूल गोविंद राधे।
तब सोइ वाको हो द्वेष्य बता दे॥ 1720॥
बार बार मार खा के गोविंद राधे।
रोटी दिखा दे कुत्ता पूँछ को हिला दे॥ 1721॥
ऐसे जग वालों ने गोविंद राधे।
बार बार तोहिं सताया तू भुला दे॥ 1722॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

संसार

प्रेम यदि जग ते जुड़े गोविंद राधे।
जीव को सदा मिले दुख ही बता दे॥ 1723 ॥

प्रेम यदि हरि ते जुड़े गोविंद राधे।
सदा सर्वत्र मिले सुख ही बता दे॥ 1724 ॥

प्रेम करना तो है गोविंद राधे।
प्राणीमात्र का स्वभाव बता दे॥ 1725 ॥

क्षेत्र भी दो ही हैं गोविंद राधे।
इक मायिक इक दिव्य बता दे॥ 1726 ॥

मायिक प्रेम फल गोविंद राधे।
मायिक ही मिलता है बता दे॥ 1727 ॥

हरि का तो प्रेम फल गोविंद राधे।
हरि का ज्ञान आनन्द दिला दे॥ 1728 ॥

सब कछु हरि का है गोविंद राधे।
यह मेरा यह तेरा मन ते हटा दे॥ 1729 ॥

मेरा तेरा जनि छोड़ो गोविंद राधे।
मेरा श्याम श्याम का मैं और लगा दे॥ 1730 ॥

मैं मेरा जनि छोड़ो गोविंद राधे।
दास और स्वामी वाके आगे लगा दे॥ 1731 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरा मेरा जनि तजु गोविंद राधे।
मेरा शब्द आगे हरि गुरु भी लगा दे॥ 1732 ॥

मेरा हरि भी है माना गोविंद राधे।
हरि ही है मेरा मन ते मनवा दे॥ 1733 ॥

हरि ही हैं तेरे यह गोविंद राधे।
सच तब जब मन जग ते हटा दे॥ 1734 ॥

हरि ही सों प्यार करो गोविंद राधे।
जग ते न प्यार न तो खार करा दे॥ 1735 ॥

मन मन्दिर एक गोविंद राधे।
हरि को बिठा दे चाहे जग को बिठा दे॥ 1736 ॥

हरि कह कहाँ आऊँ गोविंद राधे।
मन मन्दिर मेरा स्वच्छ करा दे॥ 1737 ॥

उर में बसाया जग गोविंद राधे।
हरि आवें भी तो कहाँ बैठें बता दे॥ 1738 ॥

सब बैठे भीतर गोविंद राधे।
नन्दलाल बैठे हैं बाहर बता दे॥ 1739 ॥

हरि को बुलाने के गोविंद राधे।
पूर्व उर के सब जग को भगा दे॥ 1740 ॥

जग में लगा है मन गोविंद राधे।
जग ते हटाने में श्रम है बता दे॥ 1741 ॥

जग ते हटे ना मन गोविंद राधे।
कारण अनादि आसक्ति बता दे॥ 1742 ॥

जग ते हटे ना मन गोविंद राधे।
जग सुख मिथ्या पूर्व बुद्धि में बिठा दे॥ 1743 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग ते हटे ना मन गोविंद राधे।
हटे तब जब जग रूप बता दे॥ 1744 ॥

जग ते हटे ना मन गोविंद राधे।
मन क्षण को न अकर्ता बता दे॥ 1745 ॥

राग ते राग हटे गोविंद राधे।
हरि राग ते जग राग हटा दे॥ 1746 ॥

संसार

जग राग नाम राग गोविंद राधे।
हरि राग नाम अनुराग बता दे॥ 1747 ॥
हीरा ते हीरा कटे गोविंद राधे।
हरि प्रेम ते जग प्रेम मिटा दे॥ 1748 ॥
जग ममता मिटे जो गोविंद राधे।
हरि गुरु के प्रति ममता बढ़ा दे॥ 1749 ॥
विषयों में चित्त तो हो गोविंद राधे।
कर्कश हरि में हो मृदुल बता दे॥ 1750 ॥
चित्त ही है संसार गोविंद राधे।
याते भक्ति ते चित्त शुद्ध करा दे॥ 1751 ॥
जितनी हो भक्ति मन गोविंद राधे।
उतना ही सहज विराग मन ला दे॥ 1752 ॥
हरि में लगे ना मन गोविंद राधे।
मन प्रत्यक्ष में ही लगता बता दे॥ 1753 ॥
हरि है परोक्ष किन्तु गोविंद राधे।
जग प्रत्यक्ष याते मन को लुभा दे॥ 1754 ॥
हरि है विजातीय गोविंद राधे।
COPYRIGHT
जग है सजातीय मन को लुभा दे॥ 1755 ॥
RADHA GOVIND SAMITI
सारा दोष बुद्धि का है गोविंद राधे।
बुद्धि जैसा चाहे वैसा मन ते करा दे॥ 1756 ॥
हरि में लगे ना मन गोविंद राधे।
मन जग में लग चुका है बता दे॥ 1757 ॥
हरि में लगे ना मन गोविंद राधे।
मन लग जाना तो सिद्धि है बता दे॥ 1758 ॥

जग ते हटाना मन गोविंद राधे।
हरि में लगाना मन साधना बता दे॥ 1759॥
हरि में लगावो मन गोविंद राधे।
बार बार पाछे आपु लगेगा बता दे॥ 1760॥
हटाने लगाने का गोविंद राधे।
नाम विराग अभ्यास बता दे॥ 1761॥
अभ्यास ते ही मन गोविंद राधे।
जग में लगा था मिला दुःख बता दे॥ 1762॥
जग में तो सुख नहिं गोविंद राधे।
तो भी मन लग गया अचरज बता दे॥ 1763॥
हरि तो आनन्दसिन्धु गोविंद राधे।
वहाँ तो मिलेगा आनन्द बता दे॥ 1764॥
ओरे मोरे मूढ़ मन! गोविंद राधे।
राधा रमन में रम न क्यों बता दे॥ 1765॥
ओरे मोरे मूढ़ मन! गोविंद राधे।
राधा रमन गुन गा ना क्यों बता दे॥ 1766॥
ओरे मोरे मूढ़ मन! गोविंद राधे।
जग सपना जाग ना क्यों बता दे॥ 1767॥
ओरे मोरे मूढ़ मन! गोविंद राधे।
जग तन का अपना ना बता दे॥ 1768॥
ओरे मोरे मूढ़ मन! गोविंद राधे।
हरि अपना अपना ना क्यों बता दे॥ 1769॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

6

महापुरुष

तू तो आत्मा है तेरा गोविंद राधे।
सब कछु है परमात्मा बता दे॥ 1770॥
गुरु है महात्मा गोविंद राधे।
आत्मा को परमात्मा ते मिला दे॥ 1771॥
'गु' का अर्थ माया तम गोविंद राधे।
'रु' का अर्थ नाश करे सब को बता दे॥ 1772॥
ईश्वरीय ज्ञान तो है गोविंद राधे।
आवश्यक सर्वप्रथम बता दे॥ 1773॥
ईश्वरीय ज्ञान हित गोविंद राधे।
मन बुद्धि को गुरु शरण करा दे॥ 1774॥
तत्वज्ञान हेतु दो हैं गोविंद राधे।
एक गुरु एक वैराग्य बता दे॥ 1775॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गुरु ते ही हरिज्ञान गोविंद राधे।
गुरु बिनु क, ख, ग, घ, ज्ञान ना बता दे॥ 1776॥
श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गोविंद राधे।
गुरु ही ईश्वरीय ज्ञान करा दे॥ 1777॥
भागवत आदि का भी गोविंद राधे।
ज्ञान ब्रह्मनिष्ठ गुरु ते हो बता दे॥ 1778॥
केवल शब्दज्ञानी गोविंद राधे।
कोरा उपदेश ही दे दिव्य प्रेम ना दे॥ 1779॥
जैसे दीप की लौ गोविंद राधे।
दे प्रकाश नीचे हो अंधेरा बता दे॥ 1780॥
ऐसे शब्द ज्ञानी भी गोविंद राधे।
ज्ञान दे आपु रहे कोरा बता दे॥ 1781॥
शास्त्रानभिज्ञ जन गोविंद राधे।
विरक्त भी ज्ञान दे ना बता दे॥ 1782॥
गुरु वेदवित हो गोविंद राधे।
दिव्य प्रेमयुक्त भी हो हरि ते मिला दे॥ 1783॥
पुण्यपुंज हरि कृपा गोविंद राधे।
COPYRIGHT
संत मिले सत्संग बिगरी बना दे॥ 1784॥
RADHA GOVIND SAMITI
प्रेम सम साध्य नहिं गोविंद राधे।
सद्गुरु सम न हितैषी बता दे॥ 1785॥
पाप ते बचावे अरु गोविंद राधे।
हरि में लगावे सो हितैषी बता दे॥ 1786॥
नदी जल पीवे नहिं गोविंद राधे।
जग को पिलावे उपकार बता दे॥ 1787॥

वृक्ष फल खाये नहिं गोविंद राधे।
जग को खिलाये उपकार बता दे॥ 1788॥
पर उपकार ही है गोविंद राधे।
सन्तों का सहज स्वभाव बता दे॥ 1789॥
पर अपकार ही है गोविंद राधे।
दुष्टों का सहज स्वभाव बता दे॥ 1790॥
खल बिनु स्वारथ गोविंद राधे।
पर अपकार करे अहि ज्यों बता दे॥ 1791॥
भोज पत्र सम सन्त गोविंद राधे।
पर हित निज सर्वस्व लुटा दे॥ 1792॥
निज परिताप ते गोविंद राधे।
पिघले उसे नवनीत बता दे॥ 1793॥
पर परिताप ते गोविंद राधे।
पिघले उसे भक्तहृदय बता दे॥ 1794॥
जीवदया हरिभक्ति गोविंद राधे।
भक्तभक्ति तीन कर्म भक्त के बता दे॥ 1795॥
स्वार्थ तजि जो कर गोविंद राधे।
पर उपकार महामानव बता दे॥ 1796॥
स्वार्थ साथ जो कर गोविंद राधे।
पर उपकार वाय मानव बता दे॥ 1797॥
स्वार्थ हित जो कर गोविंद राधे।
पर अपकार वाय असुर बता दे॥ 1798॥
कर जो निरर्थक गोविंद राधे।
पर अपकार अधमाधम बता दे॥ 1799॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्राणियों की दो सृष्टि गोविंद राधे।
एक दैव एक है आसुर बता दे॥ 1800॥
कृष्ण की भक्तियुक्त गोविंद राधे।
दैव सृष्टि वाला जानो बता दे॥ 1801॥
कृष्ण के विमुख जो है गोविंद राधे।
आसुर सृष्टि वाला जानो बता दे॥ 1802॥
खल मिलि दुःख देत गोविंद राधे।
सन्त बिछुरि दुख देत बता दे॥ 1803॥
नारियल सम सन्त गोविंद राधे।
बाहर कठोर भीतर मधुर बता दे॥ 1804॥
बेर फल सम खल गोविंद राधे।
भीतर कठोर बाहर मधुर बता दे॥ 1805॥
खलमुख पद्मदल गोविंद राधे।
वाणी मधुर उर कैंची बता दे॥ 1806॥
गुरु हरि का ही रूप गोविंद राधे।
जानो अरु मानो अरु औरों को जना दे॥ 1807॥
जाने का अर्थ माने गोविंद राधे।
माने का अर्थ क्रिया रूप दे बता दे॥ 1808॥
जाना तो अनंत बार गोविंद राधे।
माना नहिं हेतु महापाप बता दे॥ 1809॥
पापों ते मलिन मन गोविंद राधे।
वेद गुरु वचनों में शंका करा दे॥ 1810॥
भव रोग वैद्य वेद गोविंद राधे।
वेद ज्ञान गुरु ते गुरु वैद्य बता दे॥ 1811॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वैद्य कहे औषधि ले गोविंद राधे।
रोगी कहे पूर्व मोहिं स्वस्थ बना दे॥ 1812॥
गुरु कहे भक्ति करु गोविंद राधे।
जीव कहे पूर्व हरि दर्शन करा दे॥ 1813॥
दुराग्रही पापी जीव गोविंद राधे।
बड़े बड़े जगद्गुरुओं को हरा दे॥ 1814॥
सोये को जगा दें सब गोविंद राधे।
झूठ मूठ सोये को कौन जगा दे॥ 1815॥
ऐसे जिज्ञासु को गोविंद राधे।
गुरु ज्ञान दे दे हठी गुरु को हरा दे॥ 1816॥
हठी शठ निम्ब सम गोविंद राधे।
दूध घी ते सींचो सदा मीठा ना बना दे॥ 1817॥
भोला मूर्ख जिज्ञासु गोविंद राधे।
शीघ्र मन हरि गुरु शरण करा दे॥ 1818॥
मन है सुई सम गोविंद राधे।
हरि गुरु हैं चुम्बक ज्यों बता दे॥ 1819॥
सुई को शुद्ध करो गोविंद राधे।
पुनि हरि गुरु आपु खींच लें बता दे॥ 1820॥
गुरु तो है चुम्बक गोविंद राधे।
मन तो है लोहा वाय शुद्ध बना दे॥ 1821॥
गुरु शरणागति गोविंद राधे।
श्यामा श्याम भक्ति मन शुद्ध करा दे॥ 1822॥
गंगा जल शुद्ध जल गोविंद राधे।
गंगा में मिले जो जल गंगा बना दे॥ 1823॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि गुरु गंगा सम गोविंद राधे।
उनमें ही एक हो जा गंगा बना दे॥ 1824॥
प्रिय यदि शुद्ध हो तो गोविंद राधे।
प्रेमी अशुद्ध को भी शुद्ध बना दे॥ 1825॥
हरि गुरु दोनों शुद्ध गोविंद राधे।
शुद्ध ते अशुद्ध मिलि शुद्ध हो बता दे॥ 1826॥
हरि गुरु दोनों शुद्ध गोविंद राधे।
हरि गुरु प्रेम मन शुद्ध करा दे॥ 1827॥
जग है असार जामें गोविंद राधे।
हरि गुरु में ही प्यार सार बता दे॥ 1828॥
हरि गुरु एक मान गोविंद राधे।
करु निष्काम भक्ति काम बना दे॥ 1829॥
'यस्य देवे' मंत्र कहे गोविंद राधे।
हरि गुरु भक्ति एक सी हो बता दे॥ 1830॥
जैसा भाव हरि में हो गोविंद राधे।
वैसा भाव गुरु में भी वेद बता दे॥ 1831॥
हरि गुरु दोनों एक गोविंद राधे।
पिता मातापति जैसे एक बता दे॥ 1832॥
हरि कहे गुरु बड़ो गोविंद राधे।
गुरु कहे हरि बड़ो दोउ धोखा दे॥ 1833॥
हरि में हैं हरि गुरु गोविंद राधे।
गुरु में हैं हरि गुरु सबको बता दे॥ 1834॥
हरि कृपा गुरु मिले गोविंद राधे।
गुरु कृपा हरि मिले सब को बता दे॥ 1835॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गुरु ते मिलावे हरि गोविंद राधे।
हरि ते मिलावे गुरु तत्व बता दे॥ 1836॥
हरि गुरु दोनों मेरे गोविंद राधे।
प्रमुख है गुरु पता हरि का बता दे॥ 1837॥
हरि ते भी बड़ा गुरु गोविंद राधे।
गुरु प्रेमदान करे हरि प्रेम ना दे॥ 1838॥
हरि साथी बने का है गोविंद राधे।
गुरु साथी बिगरे का बिगरी बना दे॥ 1839॥
हरि शुद्ध मन माँगे गोविंद राधे।
गुरु ज्ञान दै के मन शुद्ध करा दे॥ 1840॥
हरि गुरु एक किन्तु गोविंद राधे।
गुरु मन शुद्ध करे प्रेमसुधा दे॥ 1841॥
हरि गुरु एक किन्तु गोविंद राधे।
गुरु की कृपा हो तो हरि ते मिला दे॥ 1842॥
मायाधीन मायाधीश गोविंद राधे।
दोनों दास मायातीत के बता दे॥ 1843॥
गुरु की कृपा जो होवे गोविंद राधे।
भाजे आवें श्यामा श्याम गलबँहियाँ दे॥ 1844॥
सूर्य के उदय पै गोविंद राधे।
ज्यों जग वस्तुयें दीखें बता दे॥ 1845॥
वैसे ही संत जन गोविंद राधे।
दिव्य दृष्टि दै के हरि को दिखला दे॥ 1846॥
संत ही सच्चा देव गोविंद राधे।
संत ही सच्चा स्वजन है बता दे॥ 1847॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

संत ही आत्मा है गोविंद राधे।
संत ही है भगवत्स्वरूप बता दे॥ 1848॥

गुरु मन शुद्ध करे गोविंद राधे।
शुद्ध करि वाको पुनि हरि को दिला दे॥ 1849॥

गुरु तो है माता सम गोविंद राधे।
शिशु मन मल धोके विमल बना दे॥ 1850॥

गुरु माता शिशु मन गोविंद राधे।
बिमल बना के हरि गोद बिठा दे॥ 1851॥

गुरु तो है पिता सम गोविंद राधे।
कन्या को सजा के हरि घर पहुँचा दे॥ 1852॥

दाता हैं झूठे दोऊ गोविंद राधे।
गुरु प्रेमदान करे दोनों प्रेम ना दें॥ 1853॥

दोनों हैं प्रेम-सिन्धु गोविंद राधे।
किन्तु प्रेम दे ना सकें जन ते दिला दें॥ 1854॥

दोउ पुष्प वाटिका हैं गोविंद राधे।
भक्त जन वायु बनि जग महका दें॥ 1855॥

दोउ समुद्र सम गोविंद राधे।
भक्तजन घन ब्रजरस बरसा दें॥ 1856॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि चौर्य कर्म को गोविंद राधे।
करे जो प्रकट वाय जग ते हटा दे॥ 1857॥

हरि जार कर्म को गोविंद राधे।
करे जो प्रकट वाय जग ते हटा दे॥ 1858॥

जग ते हटा दे अर्थ गोविंद राधे।
निन्दा ना करे गोलोक दिला दे॥ 1859॥

हरि तो है बुद्धि पर गोविंद राधे।
गुरु ही कृपा करि हरि को जना दे॥ 1860 ॥
बिगरी बना दे गुरु गोविंद राधे।
हरि लीला बनी को भी बिगरी करा दे॥ 1861 ॥
गुरु की कृपा बिनु गोविंद राधे।
कोटि साधन करो हरि कछु ना दे॥ 1862 ॥
गुरु जो प्रसन्न हो तो गोविंद राधे।
हरि हों प्रसन्न बिनु भक्ति बता दे॥ 1863 ॥
गुरु तो बना दे सब गोविंद राधे।
गुरु बिनु हरि लाल झण्डी दिखा दे॥ 1864 ॥
गुरु की शरण गहो गोविंद राधे।
गुरु की मुट्ठी में हरि हैं बता दे॥ 1865 ॥
जग शासक कृष्ण गोविंद राधे।
कृष्ण शासक कृष्ण भक्त है बता दे॥ 1866 ॥
हरि भक्ति सर्वश्रेष्ठ गोविंद राधे।
वाते भी श्रेष्ठ गुरु भक्ति बता दे॥ 1867 ॥
हरि कह ऊधो मेरी गोविंद राधे।
पूजा ते श्रेष्ठ गुरुपूजा बता दे॥ 1868 ॥
गुरु पाछे हरि चले गोविंद राधे।
गुरु पदरज उड़ि पावन बना दे॥ 1869 ॥
न तो हरि सम कोउ गोविंद राधे।
न तो है अधिक कोउ वेद बता दे॥ 1870 ॥
किन्तु हरिभक्त भक्ति गोविंद राधे।
हरि को भी भक्तों ते छोटा बना दे॥ 1871 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्त भगवान में तो गोविंद राधे।
जब जब होती है होड़ बता दे॥ 1872॥
तब तब भगवान गोविंद राधे।
भक्त सुखहित हार मानें बता दे॥ 1873॥
हरि रूठ जाये जो तो गोविंद राधे।
हरिभक्त ही है ऐसा क्षमा करवा दे॥ 1874॥
हरिभक्त रूठे जो तो गोविंद राधे।
कोई शक्ति ऐसी नहिं क्षमा करवा दे॥ 1875॥
गुरु यदि रूठ जाये गोविंद राधे।
कोटि करो भक्ति हरि अँगुठा दिखा दे॥ 1876॥
हरि ढिग पाप करे गोविंद राधे।
गुरु को है अधिकार वाय क्षमा दे॥ 1877॥
गुरु ढिग पाप करे गोविंद राधे।
हरि ना क्षमा करे गुरु ही क्षमा दे॥ 1878॥
पाप क्षमा होय जब गोविंद राधे।
पुनि पाप करे न प्रमाण बता दे॥ 1879॥
बार बार क्षमा माँगे गोविंद राधे।
बार बार पाप करे कैसे क्षमा दे॥ 1880॥
मन ते तो पाप करे गोविंद राधे।
मुख ते क्षमा माँगे कैसे क्षमा दे॥ 1881॥
गुरु जापै कृपा करे गोविंद राधे।
वाके पाछे हरि चलें सब को बता दे॥ 1882॥
हरि ते मिलावे गुरु गोविंद राधे।
ऐसे गुरु ते ही तू मन को मिला दे॥ 1883॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गुरु के प्रपन्न हो जा गोविंद राधे।
मन रूपी डोरी गुरु कर में थमा दे॥ 1884॥
पूर्ण प्रपन्न हो जा गोविंद राधे।
फिर हरि गुरु तेरा काम बना दें॥ 1885॥
श्री गुरु चरणों में गोविंद राधे।
सिर को ही नहिं मन को भी झुका दे॥ 1886॥
श्री गुरु चरणों में गोविंद राधे।
तन मन धन अर्पन करवा दे॥ 1887॥
जब श्रीकृष्ण ने गोविंद राधे।
कंस नृशंस को मारा बता दे॥ 1888॥
तब कारागार ते गोविंद राधे।
माता पिता को छुड़ाया बता दे॥ 1889॥
वसुदेव देवकी गोविंद राधे।
जानि गये कृष्ण ब्रह्म हैं बता दे॥ 1890॥
याते श्याम राम को गोविंद राधे।
उर ते लगाया नाहिं डर के बता दे॥ 1891॥
तब श्रीकृष्ण ने गोविंद राधे।
मोहिनी माया को बुलाया बता दे॥ 1892॥
वसुदेव देवकी गोविंद राधे।
भूलि गये कृष्ण हैं ब्रह्म बता दे॥ 1893॥
तब राम श्याम को गोविंद राधे।
उर ते लगाया दोनों ने बता दे॥ 1894॥
पुनि वसुदेव ने गोविंद राधे।
पुरोहित गर्ग बुलाया बता दे॥ 1895॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

किया राम श्याम का गोविंद राधे।
यज्ञोपवीत संस्कार बता दे॥ 1896॥
पूज्य जनों को दी गोविंद राधे।
दक्षिणा गाय आदि की भी बता दे॥ 1897॥
इमि भये राम श्याम गोविंद राधे।
प्राप्त द्विजत्व को सविधि बता दे॥ 1898॥
सारी विद्यायें गोविंद राधे।
राम श्याम ते ही निकसीं बता दे॥ 1899॥
फिर भी लीला हित गोविंद राधे।
पढ़ने गये राम श्याम बता दे॥ 1900॥
जाकी श्वास चारों वेद गोविंद राधे।
वाको गुरु फिर क, ख, ग, घ पढ़ा दे॥ 1901॥
उज्जैन में गये गोविंद राधे।
सान्दीपनि गुरु पास बता दे॥ 1902॥
गुरु की इच्छा में गोविंद राधे।
इच्छा रखि किये सेवा बता दे॥ 1903॥
शिष्य कर्तव्य को गोविंद राधे।
दोनों ने करके दिखाया बता दे॥ 1904॥
सान्दीपनि मुनि गोविंद राधे।
हुये प्रसन्न राम श्याम ते बता दे॥ 1905॥
छहों शास्त्र चारों वेद गोविंद राधे।
सांगोपांग पढ़ाया बता दे॥ 1906॥
राजनीति में भी किया गोविंद राधे।
श्याम राम को अति दक्ष बता दे॥ 1907॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वैसे तो राम कृष्ण गोविंद राधे।
सब विद्याओं के ज्ञाता बता दे॥ 1908॥
वर्तमान में वे गोविंद राधे।
नर शिशु सम पढ़ रहे थे बता दे॥ 1909॥
एक बार सुन कर गोविंद राधे।
सारी विद्यायें सीख लीं बता दे॥ 1910॥
चौंसठ दिन में ही गोविंद राधे।
चौंसठ कला विज्ञ हो गये बता दे॥ 1911॥
पुनि राम श्याम ने गोविंद राधे।
कहा अपने गुरुदेव ते बता दे॥ 1912॥
पूज्य गुरुदेव जो गोविंद राधे।
हो 'गुरु-दक्षिणा' आप बता दें॥ 1913॥
सान्दीपनि ने गोविंद राधे।
जानि लिया राम श्याम ब्रह्म बता दे॥ 1914॥
अतएव दक्षिणा गोविंद राधे।
माँगी गुरु ने उनते बता दे॥ 1915॥
प्रभास क्षेत्र में गोविंद राधे।
मेरा सुत सिन्धु में डूबा बता दे॥ 1916॥
उस मृत पुत्र को गोविंद राधे।
तुम दोनों पुनि ला दो बता दे॥ 1917॥
दोनों ने कहा अच्छा गोविंद राधे।
जो आज्ञा गुरुदेव की बता दे॥ 1918॥
पुनि गये राम श्याम गोविंद राधे।
प्रभास क्षेत्र सिन्धु तट पै बता दे॥ 1919॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सिन्धु प्रकट हुआ गोविंद राधे।
पूजा की राम श्याम की बता दे॥ 1920॥
भगवान बोले सिन्धु गोविंद राधे।
गुरु पुत्र को तुम ला दो बता दे॥ 1921॥
तुमने डुबाया है गोविंद राधे।
तुमको ही लाना होगा बता दे॥ 1922॥
सिन्धु बोला हे कृष्ण! गोविंद राधे।
मैंने डुबाया नाहिं पुत्र बता दे॥ 1923॥
मेरे जल में ही गोविंद राधे।
शंख रूप में एक दैत्य बता दे॥ 1924॥
उसने ही गुरु पुत्र गोविंद राधे।
अवशि चुराया होगा बता दे॥ 1925॥
पंचजन नामक गोविंद राधे।
वह दैत्य अति बलवान बता दे॥ 1926॥
कृष्ण घुसे सिन्धु मधि गोविंद राधे।
मार दिया शंख पंचजन को बता दे॥ 1927॥
शंख के उदर में भी गोविंद राधे।
गुरु पुत्र मिलि नहिं पाया बता दे॥ 1928॥
शंखासुर शंख लै गोविंद राधे।
लौटे पुनि राम श्याम थे बता दे॥ 1929॥
पुनि गये राम श्याम गोविंद राधे।
संयमनीपुरी यम की बता दे॥ 1930॥
शंख बजाया तहँ गोविंद राधे।
आया यम भयभीत बता दे॥ 1931॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यम ने विधियुक्त गोविंद राधे।
पूजा की राम श्याम की बता दे॥ 1932॥
पुनि बोला यमराज गोविंद राधे।
क्या सेवा करूँ आपकी बता दे॥ 1933॥
कर्म बन्धन ते गोविंद राधे।
मेरा गुरुपुत्र आया बता दे॥ 1934॥
मेरी आज्ञा ते गोविंद राधे।
मेरे पास ले आओ बता दे॥ 1935॥
यम बोले जो आज्ञा गोविंद राधे।
पुनि गुरुपुत्र को ला दिया बता दे॥ 1936॥
गुरुपुत्र संग लै गोविंद राधे।
आये राम श्याम उज्जैन बता दे॥ 1937॥
पुनि गुरुपुत्र को गोविंद राधे।
गुरु को दिया दक्षिणा में बता दे॥ 1938॥
पुनि बोले राम श्याम गोविंद राधे।
गुरुदेव और कोई आज्ञा बता दे॥ 1939॥
गुरुदेव बोले पुत्र गोविंद राधे।
अब और कछु नाहिं चाहिये बता दे॥ 1940॥
राम श्याम शिष्य जाको गोविंद राधे।
वा गुरु को कहा कमी है बता दे॥ 1941॥
अब तुम राम श्याम गोविंद राधे।
जावो माता पिता पास बता दे॥ 1942॥
मेरी पढ़ाई हुई गोविंद राधे।
सब विद्या याद रहेंगी बता दे॥ 1943॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गुरुदेव आज्ञा ते गोविंद राधे।
राम श्याम बैठे रथ पै बता दे॥ 1944॥
वायु सम वेग वाले गोविंद राधे।
घोड़े ले आये मथुरा बता दे॥ 1945॥
मथुरा की जनता गोविंद राधे।
राम श्याम बिनु थी विकल बता दे॥ 1946॥
सब ने देखा अब गोविंद राधे।
सब हुये आनन्दमग्न बता दे॥ 1947॥
एक बार दुर्वासा गोविंद राधे।
चिल्ला चिल्ला कर बोले बता दे॥ 1948॥
कोई बना लो मुझे गोविंद राधे।
गुरु अपना, शिष्य बनि के बता दे॥ 1949॥
किन्तु यदि कोई गोविंद राधे।
किया अपराध दण्ड दूँगा बता दे॥ 1950॥
ऐसे ही बोलते गोविंद राधे।
गये द्वारिका धाम कृष्ण के बता दे॥ 1951॥
कृष्ण ने बुलाया अरु गोविंद राधे।
COPYRIGHT
महल में उन्हें ठहराया बता दे॥ 1952॥
RADHA GOVIND SAMITI
पुनि दुर्वासा ने गोविंद राधे।
महल में आग लगा दी बता दे॥ 1953॥
पुनि कहा रुक्मिणी गोविंद राधे।
आज खाऊँगा मैं खीर बता दे॥ 1954॥
पुनि कहा कृष्ण ते गोविंद राधे।
खीर पूरे तन में पोत लो बता दे॥ 1955॥

पुनि दुर्वासा ने गोविंद राधे।
रुक्मिणी तन खीर पोता बता दे॥ 1956 ॥
पुनि कहा कृष्ण ते गोविंद राधे।
रथ ले आओ चलें घूमने बता दे॥ 1957 ॥
उस रथ में तुम गोविंद राधे।
अरु रुक्मिणी बनो घोड़ा बता दे॥ 1958 ॥
रुक्मिणी हो गईं गोविंद राधे।
मूर्छित कृष्ण चले इकले बता दे॥ 1959 ॥
कह दुर्वासा तब गोविंद राधे।
कृष्ण तुम मेरे शिष्य पक्के बता दे॥ 1960 ॥
किन्तु पद तलवे में गोविंद राधे।
खीर नहिं पोता अपराध बता दे॥ 1961 ॥
इस अपराध का तो गोविंद राधे।
कभी ना कभी दण्ड मिलेगा बता दे॥ 1962 ॥
कृष्ण मुस्कुराये कहा गोविंद राधे।
मैंने जानि जानि के ना पोता बता दे॥ 1963 ॥
निज धाम जाने के गोविंद राधे।
पूर्व व्याध मारेगा बाण बता दे॥ 1964 ॥
श्री गुरु चरणों में गोविंद राधे।
शरणागति हो तो हरि ते मिला दे॥ 1965 ॥
एक बार हरि मिले गोविंद राधे।
माया जाय सदा सदा को ही बता दे॥ 1966 ॥
एक बार हरि मिले गोविंद राधे।
सदा सदा को आनन्द दिला दे॥ 1967 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि दर्शन ते ही गोविंद राधे।
उर माया ग्रन्थि जाती है बता दे॥ 1968॥
हरि दर्शन ते ही गोविंद राधे।
सब संशय मिट जाते हैं बता दे॥ 1969॥
हरि दर्शन ते ही गोविंद राधे।
संचित कर्म भस्म होते हैं बता दे॥ 1970॥
श्री गुरु चरणों में गोविंद राधे।
श्रद्धा भक्ति हो तो गुरु प्रेम दिला दे॥ 1971॥
वेद गुरु वाक्य में हो गोविंद राधे।
दृढ़ विश्वास वाको श्रद्धा बता दे॥ 1972॥
श्रद्धा सत्संग ही ते गोविंद राधे।
सन्त को कोई पहिचाने बता दे॥ 1973॥
सात्विकी श्रद्धा तो है गोविंद राधे।
आध्यात्मिकी एकमात्र बता दे॥ 1974॥
राजसी श्रद्धा तो है गोविंद राधे।
कर्म धर्म में जो प्रवृत्त करा दे॥ 1975॥
तामसी श्रद्धा तो है गोविंद राधे।
पाप कर्म में जो प्रवृत्त करा दे॥ 1976॥
निर्गुण श्रद्धा तो है गोविंद राधे।
श्यामा श्याम निष्काम सेवा बता दे॥ 1977॥
सन्तों का संग यदि गोविंद राधे।
सदा मिले तो सब बिगरी बना दे॥ 1978॥
सन्तों का संग करो गोविंद राधे।
श्रद्धा रति भक्ति सब क्रम ते दिला दे॥ 1979॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रथम है श्रद्धा पुनि गोविंद राधे।
सत्संग पुनि भक्ति साधना बता दे॥ 1980॥
अनर्थ निवृत्ति पुनि गोविंद राधे।
निष्ठा पुनि रुचि हो सब को बता दे॥ 1981॥
पुनि हरि आसक्ति गोविंद राधे।
पुनि हो भाव पुनि प्रेम बता दे॥ 1982॥
हरि लीला कथा में तो गोविंद राधे।
रुचि है सबते प्रमुख बता दे॥ 1983॥
पूर्व संस्कार या गोविंद राधे।
महत्कृपा ते रुचि पैदा हो बता दे॥ 1984॥
रुचि ते हो चिन्तन गोविंद राधे।
हरि चिन्तन वासनायें नसा दे॥ 1985॥
अत्यधिक पापी की गोविंद राधे।
हरि लीला कथा में रुचि ना बता दे॥ 1986॥
श्री गुरु शरण जा गोविंद राधे।
तर्क वितर्क कुतर्क भगा दे॥ 1987॥
बुद्धि ने बिगाड़ा सब गोविंद राधे।
निज बुद्धि को गुरुबुद्धि में जुड़ा दे॥ 1988॥
गुरु में तो नर बुद्धि गोविंद राधे।
जनि करु नामापराध करा दे॥ 1989॥
हरि मिले भक्त मिले गोविंद राधे।
बार बार किन्तु तू किन्तु लगा दे॥ 1990॥
हरि गुरु विपरीत गोविंद राधे।
सोचो जनि नाम अपराध करा दे॥ 1991॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि गुरु निन्दा ऐसा गोविंद राधे।
नाम अपराध सब साधना नसा दे॥ 1992॥

हरि हरिजन कर्म गोविंद राधे।
दिव्य, दीखें मायिक जन ज्यों बता दे॥ 1993॥

हरि हरिजन कर्म गोविंद राधे।
दिव्य हरि हरिजन जानें बता दे॥ 1994॥

रसिकों की भाषा जाने गोविंद राधे।
रसिक ही या वह जिसको जना दे॥ 1995॥

हरि गुरु अनुकूल गोविंद राधे।
सदा सोचना ही तोहिं शरण करा दे॥ 1996॥

गुरु ने जो ज्ञान दिया गोविंद राधे।
माया अज्ञान द्वारा ज्ञान भुला दे॥ 1997॥

गुरु ने जनाया जाना गोविंद राधे।
माना नाहिं मन कैसे माने बता दे॥ 1998॥

बुद्धि के अधीन मन गोविंद राधे।
बुद्धि को अधीन गुरुबुद्धि के करा दे॥ 1999॥

गुरु में अनन्य हो जा गोविंद राधे।
अन्य में उदासीन भाव बना दे॥ 2000॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गुरु की शरण हो जा गोविंद राधे।
माया को उर ते विदा करवा दे॥ 2001॥

गुरु की कृपा बिनु गोविंद राधे।
कोई ऐसी शक्ति नहिं माया ते बचा दे॥ 2002॥

गुरु की कृपा है ऐसी गोविंद राधे।
त्रिगुण त्रिकर्म त्रिताप नसा दे॥ 2003॥

गुरु तो दिखावे हरि गोविंद राधे।
माया मोतिया बिन्द आँख ते भगा दे॥ 2004॥

सच्चा होय सद्गुरु गोविंद राधे।
सच्ची हो शरण जो तो बिगरी बना दे॥ 2005॥

सच्चा होय पारस गोविंद राधे।
सच्चा हो जो लोहा सोना बना दे॥ 2006॥

पारस हो असली किन्तु गोविंद राधे।
लोहा हो नकली वाय सोना ना बना दे॥ 2007॥

ऐसे गुरु शुद्ध किन्तु गोविंद राधे।
मन हो अशुद्ध यदि, गुरु प्रेम ना दे॥ 2008॥

पारस नकली हो गोविंद राधे।
लोहा हो असली, ना सोना बना दे॥ 2009॥

यदि गुरु दंभी हो गोविंद राधे।
जीव चित्त शुद्ध भी हो काम ना बना दे॥ 2010॥

गुरु भी हो सच्चा अरु गोविंद राधे।
मन शुद्ध भी हो गुरु हरि ते मिला दे॥ 2011॥

पारस बनावे सोना गोविंद राधे।
लोहे को, गुरु तोहिं गुरु ही बना दे॥ 2012॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गिरि है सुमेरु व्यर्थ गोविंद राधे।
जाके आश्रित तरु तरु है बता दे॥ 2013॥

धन्य तो मलय है जो गोविंद राधे।
आश्रित तरु को भी चंदन बना दे॥ 2014॥

आत्माराम व्यर्थ गोविंद राधे।
जो न किसी का कोई लाभ करा दे॥ 2015॥

धन्य तो है हरि भक्त गोविंद राधे।
जो और जीवों को भक्त बना दे॥ 2016 ॥
हरि गुरु अनुकम्पा गोविंद राधे।
पात्र अनुसार फल देती बता दे॥ 2017 ॥
मेघ जल बिन्दु जब गोविंद राधे।
तप्त लौह पै परे जल को जला दे॥ 2018 ॥
मेघ जल बिन्दु जब गोविंद राधे।
पद्म जल पै परे मोती सा बना दे॥ 2019 ॥
मेघ जल बिन्दु जब गोविंद राधे।
स्वाती सीप सिन्धु परे मोती बना दे॥ 2020 ॥
मध्यमोत्तमाधम गोविंद राधे।
गुण संसर्ग नरमात्र को दिला दे॥ 2021 ॥
बुरा संसर्ग ऐसा गोविंद राधे।
बड़े बड़े योगी को भोगी बना दे॥ 2022 ॥
संसर्ग दोष देखो गोविंद राधे।
मीठे नदी जल को सिन्धु खारा बना दे॥ 2023 ॥
संसर्ग गुण देखो गोविंद राधे।
मेघ सिन्धु जल को भी मीठा बना दे॥ 2024 ॥
गुरु पद सेवा करो गोविंद राधे।
गुरु पद सेवा प्रेम मेवा दिला दे॥ 2025 ॥
पा पकरो गुरु गोविंद राधे।
पा पकरे बिनु गति हरि ना दे॥ 2026 ॥
हरि ते अधिक प्रेम गोविंद राधे।
गुरु में हो गुरु प्रत्यक्ष बता दे॥ 2027 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रथम हरि मिले नाहिं गोविंद राधे।
हरिजन सेवा हरिसेवा बता दे॥ 2028 ॥
गुरु जो भी सेवा ले ले गोविंद राधे।
गर्व जनि करु आभार जना दे॥ 2029 ॥
सारा विश्व दान करो गोविंद राधे।
तो भी गुरु ऋण ते ना उऋण करा दे॥ 2030 ॥
गुरु ने जो दिया ज्ञान गोविंद राधे।
कोटि प्राण दान भी ना उऋण करा दे॥ 2031 ॥
माया ने भुलाया अरु गोविंद राधे।
गुरु ने जगाया ये भिखारी उन्हें का दे॥ 2032 ॥
ऐसे गुरु ऋण ते तो गोविंद राधे।
कोई उऋण नहिं हुआ है बता दे॥ 2033 ॥
ऋणी होने में है लाभ गोविंद राधे।
बार बार धनी आवे माँगने बता दे॥ 2034 ॥
गुरु ने सिखाया देना गोविंद राधे।
तन, मन, प्राण सब कछु ही बता दे॥ 2035 ॥
गुरु ने बताया मोहिं गोविंद राधे।
उन्हीं का दिया है सब उन्हीं को लुटा दे॥ 2036 ॥
गुरु ने पढ़ाया पाठ गोविंद राधे।
निजसुख हरिसुख को ही बना दे॥ 2037 ॥
हरिसुख तेरा सुख गोविंद राधे।
यह उर ला, और ज्ञान भुला दे॥ 2038 ॥
जब लौं मिलें ना हरि गोविंद राधे।
तब लौं करु गुरुसेवा बता दे॥ 2039 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि गुरु सेवा अर्थ गोविंद राधे।
हरि गुरु इच्छा को इच्छा बना दे॥ 2040॥
हरि गुरु सेवा अर्थ गोविंद राधे।
हरि गुरु सुख में ही सुखी हो बता दे॥ 2041॥
हरि गुरु सेवा अर्थ गोविंद राधे।
गुरु हित निज कोटि प्राण लुटा दे॥ 2042॥
हरि गुरु एक ही हैं गोविंद राधे।
याते गुरु सेवा हरि सेवा बता दे॥ 2043॥
हरि गुरु एक ही हैं गोविंद राधे।
दोनों को प्रणाम एक साथ बता दे॥ 2044॥
हरि के अधीन गुरु गोविंद राधे।
गुरु के अधीन हरि भेद ना बता दे॥ 2045॥
स्वार्थ की दृष्टि ते गोविंद राधे।
गुरु को बड़ा ही कह रसिक बता दे॥ 2046॥
गुरु प्रेमदान करे गोविंद राधे।
हरि प्रेम ना दे यह भेद बता दे॥ 2047॥
हरि की कृपा जो चह गोविंद राधे।
तन मन धन गुरुसेवा में लगा दे॥ 2048॥
तन मन धन धन्य गोविंद राधे।
जो हरि गुरु सेवा में लगा दे॥ 2049॥
उत्तम शिष्य वह गोविंद राधे।
जो बिनु आज्ञा करे सेवा बता दे॥ 2050॥
मध्यम शिष्य वह गोविंद राधे।
जो माने आज्ञा हर्ष ते बता दे॥ 2051॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अधम है शिष्य जो गोविंद राधे।
आज्ञा माने बेमनी ते बता दे॥ 2052॥
वह शिष्य शिष्य नहिं गोविंद राधे।
जो गुरु आज्ञा न माने बता दे॥ 2053॥
तन मन प्राण दै के गोविंद राधे।
हरि गुरु दोनों को लूट ले बता दे॥ 2054॥
हरि गुरु को ना दे तो गोविंद राधे।
जग वाले लूट लेंगे अवशि बता दे॥ 2055॥
जो भी हो अधिक प्रिय गोविंद राधे।
सोइ हरि गुरु को तू दान करा दे॥ 2056॥
या तो करु गुरुभक्ति गोविंद राधे।
या तो हरि गुरु भक्ति साथ करा दे॥ 2057॥
यम कह हरि गुरु गोविंद राधे।
विमुख को ही मैं दण्ड दूँ बता दे॥ 2058॥
हरि गुरु भक्तों को गोविंद राधे।
करूँ मैं विनम्र प्रणाम बता दे॥ 2059॥
ब्रह्मा शिव यम आदि गोविंद राधे।
भक्त पै शासन करें ना बता दे॥ 2060॥
यम के अधीन जग गोविंद राधे।
भक्त यमसिर पै पैर धरा दे॥ 2061॥
मायाबद्ध जीव का तो गोविंद राधे।
तनु छुड़वाया जाय कष्ट हो बता दे॥ 2062॥
मायामुक्त हरिभक्त गोविंद राधे।
तनु त्यागे निज इच्छा ते बता दे॥ 2063॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मायाबद्ध जीव करे गोविंद राधे।
मृत्यु काल में जग स्मरण बता दे॥ 2064॥
मायामुक्त भक्त करे गोविंद राधे।
मृत्यु काल में हरि स्मरण बता दे॥ 2065॥
मृत्यु पूर्व जाकी गोविंद राधे।
आसक्ति जामें वाको स्मरण करा दे॥ 2066॥
हरि को सुमिरि मरे गोविंद राधे।
वाको हरि धाम ही मिलेगा बता दे॥ 2067॥
मृत्यु पूर्व हरि ते जो गोविंद राधे।
मिले हरि सुमिरेगा सोई बता दे॥ 2068॥
सुत को सुमिरि मरा गोविंद राधे।
अजामिल नहिं गया धाम बता दे॥ 2069॥
विष्णुदूत यमदूत गोविंद राधे।
वार्ता अजामिल को ज्ञान करा दे॥ 2070॥
अजामिल मरा नहिं गोविंद राधे।
गंगाद्वार जाके मन हरि में लगा दे॥ 2071॥
भक्ति द्वारा भक्ति मिली गोविंद राधे।
तब तनु त्यागा गया धाम बता दे॥ 2072॥
अजामिल ने कहा था गोविंद राधे।
मेरी थी भक्ति पूर्वजन्म की बता दे॥ 2073॥
हरि हरिजन दिव्य गोविंद राधे।
कर्म, योगमाया माया जैसा करा दे॥ 2074॥
हर्ष शोक भय आदि गोविंद राधे।
हरि हरिजन में भी दीखें बता दे॥ 2075॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रस्सी जल जाये किन्तु गोविंद राधे।
रस्सी का स्वरूप जग देखे बता दे॥ 2076॥

ऐसे हरि हरिजन गोविंद राधे।
कर्म जग देखे किन्तु कर्म फल ना दे॥ 2077॥

कछु संन्यासी करें गोविंद राधे।
जग का स्वरूपतः त्याग बता दे॥ 2078॥

कछु संत जग रह गोविंद राधे।
जग में न हों कभु लिप्त बता दे॥ 2079॥

पाण्डवों के पाँच पिता गोविंद राधे।
नारी एक, पाण्डवों को सन्त बता दे॥ 2080॥

हरिभक्त हो के गोविंद राधे।
ध्रुव प्रह्लाद आदि राज्य करा दे॥ 2081॥

नृसिंह प्रह्लाद ते गोविंद राधे।
एक मन्वन्तर तक राज्य करा दे॥ 2082॥

हरि हरिजन कर्म गोविंद राधे।
देखने वालों को बुद्धि विभ्रम करा दे॥ 2083॥

हरि हरिजन कर्म गोविंद राधे।
देखने में प्राकृत किन्तु पावन बना दे॥ 2084॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि हरिजन जित गोविंद राधे।
रहें या लीला करें तीर्थ बना दे॥ 2085॥

तीर्थ हैं अगणित गोविंद राधे।
आगे भी भक्त नये तीर्थ बना दे॥ 2086॥

तीर्थ यात्रा फल गोविंद राधे।
श्याम में प्रेम निष्काम हो बता दे॥ 2087॥

तीर्थ में जाकर भी गोविंद राधे।
दोष देखे यह अपराध है बता दे॥ 2088॥
संतों ने समझाया गोविंद राधे।
संतों को भी मूढ़ नर मूढ़ बता दे॥ 2089॥
हरि हरिजन में हो गोविंद राधे।
नर बुद्धि नाम अपराध करा दे॥ 2090॥
सिद्ध भक्त को तो कभु गोविंद राधे।
किसी भी दशा में माया लगे ना बता दे॥ 2091॥
काम क्रोध आदि कर्म गोविंद राधे।
हरिजन का योगमाया करा दे॥ 2092॥
हरि गुरु कर्म दिव्य गोविंद राधे।
मायिक बुद्धि ते अतीत बता दे॥ 2093॥
मन बुद्धि मायिक गोविंद राधे।
हरि गुरु दोनों को मायिक बता दे॥ 2094॥
चींटी मुख लवण डली गोविंद राधे।
चढ़े चीनी गिरि गिरि लवण बता दे॥ 2095॥
पीलिया का रोग दृग गोविंद राधे।
श्वेत वस्तुओं को भी पीला बता दे॥ 2096॥
जब जब देखा श्याम गोविंद राधे।
मन ब्रह्म को भी चौर जार बता दे॥ 2097॥
गुणातीत हरि गुरु गोविंद राधे।
त्रिगुण की बुद्धि उन्हें त्रिगुणी बता दे॥ 2098॥
भक्त वाक्य क्रिया लखि गोविंद राधे।
बड़े बड़े ज्ञानी भी ज्ञान गमा दे॥ 2099॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्त के भीतर देखो गोविंद राधे।
बाहर का देखना है धोखा बता दे॥ 2100॥
गुरु तन जनि देखो गोविंद राधे।
मन देखो प्रेमधन प्रेमी बना दे॥ 2101॥
खग जाने खगभाषा गोविंद राधे।
रसिक की बात जाने रसिक बता दे॥ 2102॥
साधक सिद्ध दोनों गोविंद राधे।
अपने को महापापी बता दे॥ 2103॥
जो है महापापी सो गोविंद राधे।
आपु को आपु निष्पाप बता दे॥ 2104॥
जीव कल्याण हित गोविंद राधे।
सिद्ध भी मायाबद्ध अभिनय करा दे॥ 2105॥
हरि हरिजन का तो गोविंद राधे।
एक लक्ष्य लोककल्याण बता दे॥ 2106॥
मायाधीन लेना जाने गोविंद राधे।
हरि गुरु देना जानें तत्व बता दे॥ 2107॥
सिद्ध भक्त आचरण गोविंद राधे।
अनुकरणीय नहिं होते बता दे॥ 2108॥
उच्च साधकों के भी गोविंद राधे।
अनुकरणीय आचरण ना बता दे॥ 2109॥
गुरु आदेश ते ही गोविंद राधे।
अधिकार युक्त आचरण बता दे॥ 2110॥
गुणातीत स्थितप्रज्ञ गोविंद राधे।
वेद विधि निषेध ते परे है बता दे॥ 2111॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वेद हरि रूप किन्तु गोविंद राधे।
भक्त वेदसिर पै पैर धरा दे॥ 2112॥
‘यान्यस्माकं’ मंत्र गोविंद राधे।
कह सुचरित अनुकरण करा दे॥ 2113॥
समर्थ भक्तों में गोविंद राधे।
धर्म का व्यतिक्रम हुआ है बता दे॥ 2114॥
किन्तु अनुकरण गोविंद राधे।
मन ते भी कोई करे ना बता दे॥ 2115॥
शिव ने पिया था विष गोविंद राधे।
नीलकण्ठ की उपाधि पाके मुसका दे॥ 2116॥
अनुकरण तो बस गोविंद राधे।
निज कक्षा अनुसार हो बता दे॥ 2117॥
गुरु करे जानि के गोविंद राधे।
पानी पिये छानि के ज्ञानी बता दे॥ 2118॥
जब लौं न मिले गुरु गोविंद राधे।
रो के कहो हरि तू ही गुरु ते मिला दे॥ 2119॥
नाम में है सर्वशक्ति गोविंद राधे।
मंत्रदान दीक्षा की अपेक्षा ना बता दे॥ 2120॥
मंत्रदान लै के करे गोविंद राधे।
घोर पाप वाय नामापराध बता दे॥ 2121॥
वैधी भक्ति की गोविंद राधे।
पूजा में दीक्षा अनिवार्य बता दे॥ 2122॥
रागानुगा में तो गोविंद राधे।
दीक्षा आदि अनिवार्य ना बता दे॥ 2123॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दिव्यज्ञान दिव्यप्रेम गोविंद राधे।
जब गुरु दे तो वाय दीक्षा बता दे॥ 2124॥
प्रेमप्राप्त गुरु करो गोविंद राधे।
दम्भी गुरु तो तेरा पतन करा दे॥ 2125॥
अन्धा कहे अन्धे ते गोविंद राधे।
आजा अन्धे हौं तोहिँ घर पहुँचा दे॥ 2126॥
गुरु तो हो अन्धा अरु गोविंद राधे।
शिष्य हो बधिर दोनों गर्त में गिरा दे॥ 2127॥
सारा जग अन्धा है गोविंद राधे।
सब आपु को आँख वाला बता दे॥ 2128॥
गुरु यदि दंभी हो तो गोविंद राधे।
गुरु शिष्य साथ जायें नरक बता दे॥ 2129॥
कंठी तिलक धारे गोविंद राधे।
हरि उर धारे नहिं दम्भी बता दे॥ 2130॥
तन पूजा पाठ करे गोविंद राधे।
मन जगभक्ति करे दम्भी बता दे॥ 2131॥
कर ते करे नाम जप गोविंद राधे।
मन करे जग चिन्तन दम्भी बता दे॥ 2132॥
बात करे रसिकों की गोविंद राधे।
मन चह विषय-रस दम्भी बता दे॥ 2133॥
निन्दा सुनि क्रोध करे गोविंद राधे।
स्तुति सुनि फूला फिरे दम्भी बता दे॥ 2134॥
औरों की निन्दा करे गोविंद राधे।
अपनी प्रशंसा करे दंभी बता दे॥ 2135॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बिना भाव नाचे कूदे गोविंद राधे।
लोकरंजन करे दंभी बता दे॥ 2136 ॥
दोष छुपावे निज गोविंद राधे।
झूठा निज गुण गावे दंभी बता दे॥ 2137 ॥
कछु महापुरुषों को गोविंद राधे।
श्यामा श्याम दर्शन क्षणिक हो बता दे॥ 2138 ॥
कछु महापुरुषों को गोविंद राधे।
दीर्घकाल तक दर्शन हो बता दे॥ 2139 ॥
कछु महापुरुषों को गोविंद राधे।
श्यामा श्याम वार्तालाप प्राप्त हो बता दे॥ 2140 ॥
कछु महापुरुषों को गोविंद राधे।
श्यामा श्याम स्पर्श भी मिलता बता दे॥ 2141 ॥
कछु महापुरुषों को गोविंद राधे।
दिव्यरास दर्शन मिलता बता दे॥ 2142 ॥
कछु महापुरुषों को गोविंद राधे।
रास में भाग लेना मिलता बता दे॥ 2143 ॥
उपर्युक्त रसिकों में गोविंद राधे।
उत्तरोत्तर रस अधिक बता दे॥ 2144 ॥
पार्षद भेद दो हैं गोविंद राधे।
अनुकूल अरु प्रतिकूल बता दे॥ 2145 ॥
अनुकूल पार्षद गोविंद राधे।
मित्र बनि लीला सहायक बता दे॥ 2146 ॥
प्रतिकूल पार्षद गोविंद राधे।
शत्रु बनि लीला सहायक बता दे॥ 2147 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रतिकूल पार्षद गोविंद राधे।
गोलोक में हैं अचेतन बता दे॥ 2148 ॥
    जय विजय पार्षद गोविंद राधे।
    बनि के असुर किये सेवा बता दे॥ 2149 ॥
हरि को थी युद्ध इच्छा गोविंद राधे।
हरि इच्छा जय विजय पूरी करा दे॥ 2150 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधा गोविंद गीत

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

7

कर्म

ऊधो तो माधो के गोविंद राधे।
सदा ते हैं नित्य पार्षद बता दे॥ 2151 ॥
जीव कल्याण हित गोविंद राधे।
ऊधो पूछें माधो ते प्रश्न बता दे॥ 2152 ॥
प्रश्न था श्रेय के गोविंद राधे।
मार्ग क्यों अनेकों बन गये बता दे॥ 2153 ॥
उन मार्गों में गोविंद राधे।
कौन सत्य कौन असत्य बता दे॥ 2154 ॥
आपने भक्ति को ही गोविंद राधे।
कहा निरपेक्ष स्वतंत्र बता दे॥ 2155 ॥
भगवान श्रीकृष्ण गोविंद राधे।
बोले सुनो प्रिय ऊधो बता दे॥ 2156 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्ण ने कहा ऊधो गोविंद राधे।
मेरी वेद वाणी है दिव्य बता दे॥ 2157॥

प्रलय में वेद वाणी गोविंद राधे।
सृष्टि के साथ लुप्त हुई थी बता दे॥ 2158॥

पुनः जब मैंने गोविंद राधे।
सृष्टि की, किया वेद प्रकट बता दे॥ 2159॥

वेदों में मैंने गोविंद राधे।
भागवत धर्म श्रेय, ही कहा बता दे॥ 2160॥

भागवत धर्म ही है गोविंद राधे।
धारण करने योग्य बता दे॥ 2161॥

मैंने ही बताया गोविंद राधे।
ब्रह्मा को वेदों का अर्थ बता दे॥ 2162॥

ब्रह्मा ने निज सुत गोविंद राधे।
मनु को कराया वेदज्ञान बता दे॥ 2163॥

मनु ते भृगु आदि गोविंद राधे।
सप्तर्षियों को हुआ ज्ञान बता दे॥ 2164॥

पुनि इन पूर्वजों ते गोविंद राधे।
मिला ज्ञान सब संतान को बता दे॥ 2165॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब जाति व्यक्तियों के गोविंद राधे।
भिन्न भिन्न ही थे स्वभाव बता दे॥ 2166॥

सब के सत्व, रज, तम गोविंद राधे।
तीन गुण भी थे भिन्न भिन्न बता दे॥ 2167॥

अतएव उनकी गोविंद राधे।
चित्तवृत्ति भी थी भिन्न भिन्न बता दे॥ 2168॥

अतः मम वाणी का गोविंद राधे।
सब ने किया अर्थ भिन्न बता दे॥ 2169॥
मम वेदवाणी दिव्य गोविंद राधे।
नाना अर्थ होना स्वभाव बता दे॥ 2170॥
कछु पाखंडियों ने गोविंद राधे।
कल्पित मत भी गढ़ दिये बता दे॥ 2171॥
जो भी थे मायाबद्ध गोविंद राधे।
निज रुचियुत अर्थ कर दिये बता दे॥ 2172॥
कछु मीमांसक गोविंद राधे।
धर्म को ही श्रेष्ठ श्रेय बता दे॥ 2173॥
कछु साहित्यिक गोविंद राधे।
यश को ही श्रेष्ठ श्रेय बता दे॥ 2174॥
कछु कामशास्त्री गोविंद राधे।
काम को ही श्रेष्ठ श्रेय बता दे॥ 2175॥
कछु योगवेत्ता गोविंद राधे।
शम आदि को ही श्रेष्ठ श्रेय बता दे॥ 2176॥
कछु ऐश्वर्य कछु गोविंद राधे।
त्याग को ही श्रेष्ठ श्रेय बता दे॥ 2177॥
कछु भोग कछु स्वार्थ गोविंद राधे।
कछु यज्ञ आदि को श्रेय बता दे॥ 2178॥
ऊधो किन्तु उपर्युक्त गोविंद राधे।
सब ही हैं एकमात्र कर्म बता दे॥ 2179॥
इन सब कर्मों के गोविंद राधे।
फल हैं आदि अन्त वाले बता दे॥ 2180॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

फलभोग पश्चात् गोविंद राधे।
केवल दुख ही दुख प्राप्त हो बता दे॥ 2181॥
कर्म की अन्तिम गति गोविंद राधे।
घोर अज्ञान अन्धकार बता दे॥ 2182॥
इन सब कर्मों का गोविंद राधे।
फल है अति ही तुच्छ बता दे॥ 2183॥
फलभोग काल में भी गोविंद राधे।
स्वर्ग लोक शोक ते पूर्ण बता दे॥ 2184॥
अतएव उपर्युक्त गोविंद राधे।
मार्ग हैं असत्य अरु त्याज्य बता दे॥ 2185॥
एकमात्र भक्तियोग गोविंद राधे।
मार्ग है सर्वश्रेष्ठ श्रेय बता दे॥ 2186॥
मेरा भक्त भुक्ति मुक्ति गोविंद राधे।
वैकुण्ठ आदि नहिं चाहे बता दे॥ 2187॥
ऐसे भक्त मोको गोविंद राधे।
ऊधो प्रिय हैं ऐसे बता दे॥ 2188॥
जैसे नहिं विधि हर गोविंद राधे।
राम या रमा या आत्मा बता दे॥ 2189॥
ऐसे भक्त पाछे मैं गोविंद राधे।
चलूँ पद रज हित नित्य ही बता दे॥ 2190॥
भक्ति के अतिरिक्त गोविंद राधे।
कोई भी मार्ग नहिं श्रेय बता दे॥ 2191॥
सत्य और दया युक्त गोविंद राधे।
धर्म भी मन शुद्ध करे ना बता दे॥ 2192॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तप युक्त विद्या भी गोविंद राधे।
मन की समग्र शुद्धि करे ना बता दे॥ 2193 ॥
एकमात्र भक्ति ही गोविंद राधे।
मन की शुद्धि में शक्य बता दे॥ 2194 ॥
मम हित जिसका मन गोविंद राधे।
सात्विक भाव ते युक्त हो बता दे॥ 2195 ॥
एकमात्र उसका ही गोविंद राधे।
अंतःकरण हो शुद्ध बता दे॥ 2196 ॥
ऐसा शुद्ध भक्त मम गोविंद राधे।
जगत को पावन करि दे बता दे॥ 2197 ॥
ऐसे ही भक्तों के गोविंद राधे।
वशीभूत रहता हूँ मैं भी बता दे॥ 2198 ॥
कर्म के अनेक भेद गोविंद राधे।
कर्म विकर्म अकर्म बता दे॥ 2199 ॥
कर्ममार्ग में है पूर्व गोविंद राधे।
वेद का कर्म रूप श्रवण बता दे॥ 2200 ॥
वर्णाश्रम धर्म कर्म गोविंद राधे।
COPYRIGHT
वेदविधियुक्त हो तो स्वर्ग दिला दे॥ 2201 ॥
RADHA GOVIND SAMITI
देश काल द्रव्य श्रद्धा गोविंद राधे।
पात्र उपाय युक्त धर्म बता दे॥ 2202 ॥
वैदिक मंत्रों में तो गोविंद राधे।
एक स्वर त्रुटि वाय नरक दिला दे॥ 2203 ॥
मनु को विधिदोष ते ही गोविंद राधे।
पुत्र नहिं मिला मिली पुत्री बता दे॥ 2204 ॥

वृत्र विधिदोष ते ही गोविंद राधे।
इन्द्र का न बध कर पाया था बता दे॥ 2205 ॥
वेद विधि दोष ते ही गोविंद राधे।
काशी राज आपु मारा गया था बता दे॥ 2206 ॥
प्रह्लाद बच गया गोविंद राधे।
मरा था पुरोहित विधिदोष ते बता दे॥ 2207 ॥
वेद जाको विधि कहे गोविंद राधे।
वेद मर्मज्ञ वाको पुण्य बता दे॥ 2208 ॥
वेद में निषेध जो है गोविंद राधे।
वेद मर्मज्ञ वाको पाप बता दे॥ 2209 ॥
पुण्य पाप दोनों तजु गोविंद राधे।
श्यामा श्याम दोनों भजु काम बना दे॥ 2210 ॥
सब तजो हरि भजो गोविंद राधे।
यही वेद का निषेध विधि है बता दे॥ 2211 ॥
हरिभक्ति बिनु कर्मी गोविंद राधे।
यदि गिर जाये गया काम ते बता दे॥ 2212 ॥
भक्ति साधक ते जो गोविंद राधे।
विकर्म भी हो हरि शुद्ध करा दे॥ 2213 ॥
सुख भोग ते तो हो गोविंद राधे।
पूर्व कृत पुण्य का विनाश बता दे॥ 2214 ॥
दुःख भोग ते तो हो गोविंद राधे।
पूर्व कृत पाप का विनाश बता दे॥ 2215 ॥
जीव दुराचारी भी गोविंद राधे।
पूर्व सत्कर्म फल पावे बता दे॥ 2216 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्म

जीव सदाचारी भी गोविंद राधे।
पूर्व दुष्कर्म फल पावे बता दे॥ 2217॥
भाव दुराचारी को भी गोविंद राधे।
संसारी सुख भोग प्राप्त हो बता दे॥ 2218॥
ऐसे सदाचारी को भी गोविंद राधे।
नाना दुःख भोग प्राप्त होंगे बता दे॥ 2219॥
प्रारब्ध फल भोग गोविंद राधे।
सबको ही भोगना पड़ेगा बता दे॥ 2220॥
अन्तर इतना है गोविंद राधे।
भक्त भोगे हँसि मूढ़ रो के बता दे॥ 2221॥
पर उपकार पुण्य गोविंद राधे।
पर अपकार तो है पाप बता दे॥ 2222॥
पुण्य पाप दोनों पाप गोविंद राधे।
दोनों लख चौरासी द्वार घुमा दे॥ 2223॥
पाप पुण्य दोनों पाप गोविंद राधे।
पाप तो नरक पुण्य स्वर्ग पठा दे॥ 2224॥
स्वर्गवासियों को वेद गोविंद राधे।
मूढ़ ते भी मूढ़ प्रमूढ़ बता दे॥ 2225॥
प्राकृत स्वर्ग के तो गोविंद राधे।
सब देवी देव अनित्य बता दे॥ 2226॥
माया के तीन गुण गोविंद राधे।
सत्व, रज, तम तीन नाम बता दे॥ 2227॥
सर्वश्रेष्ठ सत्व गुण गोविंद राधे।
शुक्ल वर्ण फल याको स्वर्ग पठा दे॥ 2228॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सत्व ते निकृष्ट रज गोविंद राधे।
लाल वर्ण फल मृत्युलोक दिला दे॥ 2229॥

रज ते निकृष्ट तम गोविंद राधे।
कृष्ण वर्ण फल याको नरक पठा दे॥ 2230॥

गुणातीत हरि गुरु गोविंद राधे।
उनके प्रपन्न हो जा साध्य दिला दे॥ 2231॥

सत्वगुणी पहिचान गोविंद राधे।
मानस शान्ति जितेन्द्रिय बता दे॥ 2232॥

रजोगुणी पहिचान गोविंद राधे।
जगत की नाना कामना बता दे॥ 2233॥

तमोगुणी पहिचान गोविंद राधे।
परपीड़न क्रोध हिंसा बता दे॥ 2234॥

काष्ठ ते धुवाँ श्रेष्ठ गोविंद राधे।
धुवें ते भी श्रेष्ठ अग्नि है बता दे॥ 2235॥

ऐसे तम ते रज गोविंद राधे।
रज ते भी श्रेष्ठ सत्व गुण है बता दे॥ 2236॥

सत्व गुणी को मृत्यु गोविंद राधे।
दुःखोदर्क नश्वर स्वर्ग दिला दे॥ 2237॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रजोगुणी को मृत्यु गोविंद राधे।
मृत्युलोक में ही नरदेह दिला दे॥ 2238॥

तमोगुणी को मृत्यु गोविंद राधे।
नाना दुःखयुक्त भोग नरक करा दे॥ 2239॥

निर्गुणी को मृत्यु गोविंद राधे।
ससम्मान हरि के धाम पठा दे॥ 2240॥

कर्म

सतयुग में धर्म पाद गोविंद राधे।
सत्य, दया, तप, दान चार हैं बता दे॥ 2241॥
झूठ हिंसा तृष्णा अरु गोविंद राधे।
द्वेष, अधर्म चार पाद हैं बता दे॥ 2242॥
त्रेता में अधर्म पाद गोविंद राधे।
धर्म का चतुर्थांश क्षीण करा दे॥ 2243॥
द्वापर अधर्म पाद गोविंद राधे।
धर्म का अर्धांश क्षीण करा दे॥ 2244॥
कलि में अधर्म पाद गोविंद राधे।
धर्म का चतुर्थांश ही करवा दे॥ 2245॥
कलियुग अन्त में तो गोविंद राधे।
धर्म के चारों पाद पूर्ण मिटा दे॥ 2246॥
और जुग में तो धर्म गोविंद राधे।
यज्ञ आदि थे कलि दान बता दे॥ 2247॥
प्रजापति सुत तीन गोविंद राधे।
देव मानव अरु दानव बता दे॥ 2248॥
ब्रह्मा तो द द द ते गोविंद राधे।
दम दान दया तीनों सुत को बता दे॥ 2249॥
तीन गुण, निर्गुण गोविंद राधे।
चार पात्र चार फल, दान दिला दे॥ 2250॥
सात्विक दान फल गोविंद राधे।
मायिक नश्वर स्वर्ग दिला दे॥ 2251॥
राजस दान फल गोविंद राधे।
मायिक मानवलोक दिला दे॥ 2252॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तामस दान फल गोविंद राधे।
विविध यातना का नरक दिला दे॥ 2253 ॥
हरि हरिजन प्रति गोविंद राधे।
दान फल तो गोलोक दिला दे॥ 2254 ॥
सर्वस्व दान फल गोविंद राधे।
गुरु हरिश्चन्द्र को हरि ते मिला दे॥ 2255 ॥
तन हित धन राखे गोविंद राधे।
अधिक जो राखे वेद चोर बता दे॥ 2256 ॥
चोरी चोरी दान करे गोविंद राधे।
भूलेहुँ मन अभिमान न ला दे॥ 2257 ॥
पुण्य बताने ते ही गोविंद राधे।
ययाति का स्वर्ग छिना था बता दे॥ 2258 ॥
हरि को जो दान करु गोविंद राधे।
हरि दे अनन्त गुना फल बता दे॥ 2259 ॥
पाप न दान करु गोविंद राधे।
पाप का फल भी अनन्त हो बता दे॥ 2260 ॥
भक्तिहीन धर्म कर्म गोविंद राधे।
प्राण रहित जनु शव है बता दे॥ 2261 ॥
वर्ण आश्रम धर्म गोविंद राधे।
फल है मायिक नश्वर बता दे॥ 2262 ॥
वर्णाश्रम धर्म गोविंद राधे।
लोक यात्रा हित अपर बता दे॥ 2263 ॥
किन्तु कृष्ण भक्ति तो गोविंद राधे।
आत्म कल्याण हित पर है बता दे॥ 2264 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्म

वर्णाश्रम धर्म गोविंद राधे।
कोई माने कोई माने ना बता दे॥ 2265 ॥
किन्तु श्रीकृष्ण भक्ति गोविंद राधे।
सबको ही करनी पड़ेगी बता दे॥ 2266 ॥
चार वर्ण चार आश्रम गोविंद राधे।
सब में ही भक्ति अनिवार्य बता दे॥ 2267 ॥
ब्रह्मचारी को भी गोविंद राधे।
हरिभक्ति है अनिवार्य बता दे॥ 2268 ॥
गृहस्थ को भी है गोविंद राधे।
हरिभक्ति अति अनिवार्य बता दे॥ 2269 ॥
वानप्रस्थी को भी गोविंद राधे।
कृष्णभक्ति परमानिवार्य बता दे॥ 2270 ॥
संन्यासी को भी गोविंद राधे।
हरिभक्ति अति अनिवार्य बता दे॥ 2271 ॥
संन्यासी का धर्म गोविंद राधे।
शान्ति अहिंसा मुख्य है बता दे॥ 2272 ॥
वाणप्रस्थी धर्म गोविंद राधे।
तप अरु भगवद्भाव बता दे॥ 2273 ॥
गृहस्थ का धर्म गोविंद राधे।
प्राणियों की रक्षा यज्ञ आदि बता दे॥ 2274 ॥
ब्रह्मचारी धर्म गोविंद राधे।
आचार्य सेवा है मुख्य बता दे॥ 2275 ॥
कृष्ण उपासना तो गोविंद राधे।
सब आश्रमों में है प्रमुख बता दे॥ 2276 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

धर्म, अर्थ, काम आदि गोविंद राधे।
कृष्ण प्रीत्यर्थ करणीय बता दे॥ 2277॥

हरि के निमित्त जो हो गोविंद राधे।
कर्म वही कर्म यह कर्मी को बता दे॥ 2278॥

'यत्करोषि' गीता श्लोक गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण को कर्म अर्पण बता दे॥ 2279॥

'मदर्थमपि' गीता श्लोक गोविंद राधे।
ईश्वर निमित्त कर्म करना बता दे॥ 2280॥

'मत्कर्मकृत्' श्लोक गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण का ही कर्म करना बता दे॥ 2281॥

जिस कर्म धर्म ते हो गोविंद राधे।
श्यामा श्याम तुष्टि वही कर्म बता दे॥ 2282॥

जो कर्म करने ते गोविंद राधे।
श्याम प्रेम ना हो वाय श्रम ही बता दे॥ 2283॥

सब साधन शून्य सम गोविंद राधे।
प्रेम अंक बिनु सब शून्य बता दे॥ 2284॥

सब साधन फल गोविंद राधे।
प्रेम, प्रेम बिनु फल श्रमहिं बता दे॥ 2285॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ग्वाल बालों ने कहा गोविंद राधे।
राम श्याम तुम बलशाली हो बता दे॥ 2286॥

बड़े बड़े दैत्यों को गोविंद राधे।
तुम दोनों ने ही मारा बता दे॥ 2287॥

हम सब ग्वालों के गोविंद राधे।
पेट की भूख भी है दैत्य बता दे॥ 2288॥

अतएव तुम दोनों गोविंद राधे।
भूख मारने का करो यत्न बता दे॥ 2289॥
ग्वालों की प्रार्थना को गोविंद राधे।
श्याम ने सुना पुनि सोचा बता दे॥ 2290॥
भक्त यज्ञ-पत्नियों पै गोविंद राधे।
कृपा करने का समय आ गया बता दे॥ 2291॥
श्याम ने कहा मित्रों गोविंद राधे।
थोड़ी दूर पै याज्ञिक हैं बता दे॥ 2292॥
वे सब स्वर्ग हित गोविंद राधे।
आंगिरस यज्ञ कर रहे हैं बता दे॥ 2293॥
तुम सब एक सँग गोविंद राधे।
जावो उनकी यज्ञशाला बता दे॥ 2294॥
मेरा अरु भैया का गोविंद राधे।
नाम लेकर खाद्य माँगो बता दे॥ 2295॥
राम श्याम आज्ञा ते गोविंद राधे।
गये ग्वाल ढिग याज्ञिकों के बता दे॥ 2296॥
ग्वालों ने याज्ञिकों ते गोविंद राधे।
कहा हम सब हैं भूखे बता दे॥ 2297॥
राम श्याम आज्ञा ते गोविंद राधे।
कछु खाद्य माँगने आये हैं बता दे॥ 2298॥
ग्वालों की प्रार्थना को गोविंद राधे।
सुनकर भी किया अनसुना बता दे॥ 2299॥
यज्ञ आदि के लक्ष्य गोविंद राधे।
एकमात्र हैं श्री कृष्ण बता दे॥ 2300॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

किन्तु ये याज्ञिक गोविंद राधे।
भोले अल्पज्ञ स्वर्गकामी बता दे॥ 2301॥
श्याम अरु राम को भी गोविंद राधे।
याज्ञिकों ने माना नर शिशु ही बता दे॥ 2302॥
अतएव उन ने भी गोविंद राधे।
ना कहा हाँ ना तो ना ही बता दे॥ 2303॥
निराश ग्वाल बाल गोविंद राधे।
लौटि के बताया सब श्याम को बता दे॥ 2304॥
श्याम ने कहा मित्रों गोविंद राधे।
असफलता ते हो निराश ना बता दे॥ 2305॥
असफलता में तो गोविंद राधे।
और भी यत्न करणीय बता दे॥ 2306॥
अब तुम सब जाओ गोविंद राधे।
यज्ञ-पत्नियों के पास बता दे॥ 2307॥
उनते भी वही बात गोविंद राधे।
कहो जो कहा याज्ञिकों ते बता दे॥ 2308॥
उन यज्ञ-पत्नियों ते गोविंद राधे।
COPYRIGHT
भोजन अवश्य मिल जायगा बता दे॥ 2309॥
RADHA GOVIND SAMITI
पुनि सब ग्वाल बाल गोविंद राधे।
गये उसी यज्ञशाला में बता दे॥ 2310॥
यज्ञ-पत्नियों ते कहा गोविंद राधे।
थोड़ी दूर पै राम श्याम हैं बता दे॥ 2311॥
राम श्याम ग्वाल बाल गोविंद राधे।
सब को लगी है बड़ी भूख बता दे॥ 2312॥

अतएव प्रार्थना है गोविंद राधे।
कछु भोजन दे दीजिये बता दे॥ 2313 ॥
यज्ञ-पत्नियाँ थीं भक्त गोविंद राधे।
उनकी थी दर्शन लालसा बता दे॥ 2314 ॥
अतएव पत्नियों ने गोविंद राधे।
व्यंजन विविध संग ले लिया बता दे॥ 2315 ॥
भाई बन्धु पति पुत्र गोविंद राधे।
चाहा रोकना किन्तु रुकीं ना बता दे॥ 2316 ॥
जैसे सब नदियाँ गोविंद राधे।
भागें समुद्र की ओर बता दे॥ 2317 ॥
ऐसे ही भागीं सब गोविंद राधे।
यज्ञ-पत्नियाँ दर्शन को बता दे॥ 2318 ॥
अस्तु उन सब ने गोविंद राधे।
आके देखा श्याम राम को बता दे॥ 2319 ॥
श्याम के शरीर पै गोविंद राधे।
झिलमिलाता पीत पट था बता दे॥ 2320 ॥
गले में बनमाला गोविंद राधे।
सिर पै मोर मुकुट था बता दे॥ 2321 ॥
नटवर भेष कृष्ण गोविंद राधे।
अंग अंग कोटि अनंग लुटा दे॥ 2322 ॥
एक हाथ ग्वाल कंधे गोविंद राधे।
दूजे हाथ में था कमल बता दे॥ 2323 ॥
कानों में कुंडल गोविंद राधे।
गोल कपोलनि अलक बता दे॥ 2324 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मुख मृदु मुसकनि गोविंद राधे।
रोम रोम दिव्य आकर्षण बता दे॥ 2325॥

श्रीकृष्ण ने कहा गोविंद राधे।
क्या करें स्वागत देवियों बता दे॥ 2326॥

तत्वज्ञ नर नारी गोविंद राधे।
मोते करें प्रेम प्रिय ज्यों बता दे॥ 2327॥

उन तत्वज्ञों के गोविंद राधे।
कोई भी कामना ना उर में बता दे॥ 2328॥

स्वजन तन मन धन गोविंद राधे।
सब मेरे हेतु प्रिय हैं बता दे॥ 2329॥

याते तुम सब का ही गोविंद राधे।
आना है उचित वेद सम्मत बता दे॥ 2330॥

दर्शन तो कर चुकीं गोविंद राधे।
अब सब लौट जावो घर को बता दे॥ 2331॥

तुम सब के पति गोविंद राधे।
यज्ञ में परखते होंगे बता दे॥ 2332॥

पत्नी के साथ ही गोविंद राधे।
यज्ञ का कार्य पूर्ण होगा बता दे॥ 2333॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यज्ञ-पत्नियों ने कहा गोविंद राधे।
आप तो अन्तर्यामी बता दे॥ 2334॥

घर लौट जाने की गोविंद राधे।
बात है निष्ठुरता की बता दे॥ 2335॥

वेद कहे जो कोई गोविंद राधे।
हरि ते मिले, जाय जग ना बता दे॥ 2336॥

आप की वाणी वेद गोविंद राधे।
आप ही उसे करें सत्य बता दे॥ 2337॥
भाई बंधु पति पुत्र गोविंद राधे।
अब मुझे स्वीकार करें ना बता दे॥ 2338॥
हम सब आपकी ही गोविंद राधे।
शरण आ गई हैं त्यागो ना बता दे॥ 2339॥
कृष्ण कह देवियों गोविंद राधे।
कोई करेगा नहिं त्याग बता दे॥ 2340॥
सारा जग देगा गोविंद राधे।
मान क्योंकि तुम मेरी भक्त हो बता दे॥ 2341॥
जाकर घर में ही गोविंद राधे।
मेरी भक्ति करो सतत बता दे॥ 2342॥
कृष्ण की आज्ञा को गोविंद राधे।
मान कर देवियाँ लौटीं बता दे॥ 2343॥
यज्ञ पुरुषों ने भी गोविंद राधे।
पत्नियों को अपनाया बता दे॥ 2344॥
एक यज्ञ पत्नी को गोविंद राधे।
पति ने रोका हठात बता दे॥ 2345॥
उसने कृष्ण ध्यान करि गोविंद राधे।
तनु त्यागा गई कृष्ण पास बता दे॥ 2346॥
मथुरा के याज्ञिकों ने गोविंद राधे।
कहा उच्च कुल जन्म व्यर्थ है बता दे॥ 2347॥
वेदाध्ययन व्यर्थ गोविंद राधे।
बड़े बड़े यज्ञ आदि व्यर्थ बता दे॥ 2348॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वेद के व्रत व्यर्थ गोविंद राधे।
क्योंकि हम कृष्ण ते हैं विमुख बता दे॥ 2349 ॥
सर्व धर्म मूल कृष्ण गोविंद राधे।
कृष्ण बिनु धर्म भी अधर्म बता दे॥ 2350 ॥
वेदों पुराणों के गोविंद राधे।
आदि मध्य अंत में हैं हरि ही बता दे॥ 2351 ॥
स्कंद पुराण कह गोविंद राधे।
हरिभक्त सर्वधर्मकर्ता बता दे॥ 2352 ॥
जो हरिभक्त नहिं गोविंद राधे।
वह सर्वपापकर्ता है बता दे॥ 2353 ॥
पद्म पुराण कह गोविंद राधे।
हरि के निमित्त पाप धर्म है बता दे॥ 2354 ॥
पुनि कह हरि तजि गोविंद राधे।
वैदिक धर्म भी है पाप बता दे॥ 2355 ॥
सच्चा कर्म धर्म सोई गोविंद राधे।
हरि गुरु पद ते जो प्रेम करा दे॥ 2356 ॥
पार्थ ने दयावश गोविंद राधे।
कहा था युद्ध नहिं करूँगा बता दे॥ 2357 ॥
कृष्ण ने कहा पार्थ गोविंद राधे।
ऐसी दया अनार्यजुष्ट बता दे॥ 2358 ॥
कृष्ण ने कहा पार्थ गोविंद राधे।
ऐसी दया अस्वर्ग्य बता दे॥ 2359 ॥
कृष्ण ने कहा पार्थ गोविंद राधे।
ऐसी दया महापाप बता दे॥ 2360 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्म करते हुए गोविंद राधे।
मन ते मनन हरि कठिन बता दे॥ 2361॥
जग के कर्मों में गोविंद राधे।
सबते कठिन कर्म युद्ध है बता दे॥ 2362॥
कृष्ण ने कहा पार्थ गोविंद राधे।
मन मुझमें तन युद्ध में लगा दे॥ 2363॥
गीता का सार यही गोविंद राधे।
युद्ध कर्म कर मन हरि में लगा दे॥ 2364॥
मन का ही कर्म कर्म गोविंद राधे।
तन का किया कर्म कछु फल ना दे॥ 2365॥
इन्द्रियों ते कर्म करे गोविंद राधे।
मन ते हो भक्ति कर्मयोग बता दे॥ 2366॥
रथ की धुरी जैसे गोविंद राधे।
स्थिर हो तो रथ पहिया चला दे॥ 2367॥
ऐसे मन हरि में हो गोविंद राधे।
तन ते हो कर्म कर्मयोग बता दे॥ 2368॥
हाथ में लगा के तेल गोविंद राधे।
कटहल काटो हाथ लिप्त ना बता दे॥ 2369॥
कर्म बाँधे बंधन गोविंद राधे।
कर्मयोग कर्म-बंधन को छुड़ा दे॥ 2370॥
अनासक्त धर्म करो गोविंद राधे।
मन हरि-शरण हो साधन बता दे॥ 2371॥
कर्ममिश्र भक्ति का गोविंद राधे।
शास्त्रों में है उपदेश क्यों बता दे॥ 2372॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उत्तर है जब उसे गोविंद राधे।
भक्तिरस का लगे चसका बता दे॥ 2373॥
तब वह कर्मी भक्त गोविंद राधे।
कर्म को आपु त्याग देगा बता दे॥ 2374॥
कर्मी संस्कार वश गोविंद राधे।
पूर्व कर्म में भी रुचि राखे बता दे॥ 2375॥
ब्रह्मलोक तक के गोविंद राधे।
सुखों का त्यागी जो ज्ञानी बता दे॥ 2376॥
नवधा भक्ति में तो गोविंद राधे।
जिसका हो दृढ़ विश्वास बता दे॥ 2377॥
वैदिक कर्मों को गोविंद राधे।
वह यदि त्यागे तो उचित बता दे॥ 2378॥
वैदिक कर्म यदि गोविंद राधे।
त्यागे भक्त तो है नहिं दोष बता दे॥ 2379॥
एक भक्त उद्‌गार गोविंद राधे।
संध्या को दूर ते वंदन बता दे॥ 2380॥
हे देव! हे पितर! गोविंद राधे।
तर्पण को भी वंदन बता दे॥ 2381॥
हे कर्म, योग, ज्ञान गोविंद राधे।
सब को नमस्कार दूर ते बता दे॥ 2382॥
मेरा तो एकमात्र गोविंद राधे।
राधा कृष्ण चिन्तन काम बता दे॥ 2383॥
लोक धर्म वेद धर्म गोविंद राधे।
कुल धर्म तजि मन हरि में लगा दे॥ 2384॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्म

लोक वेद कुल धर्म गोविंद राधे।
तजि जा शरण कृष्ण प्रेमसुधा दे॥ 2385॥
हरि शरणागत को तो गोविंद राधे।
तीनों ऋणों का नहिं बंधन बता दे॥ 2386॥
एक है ऋषि ऋण गोविंद राधे।
स्वाध्याय ते ऋषि ऋण को चुका दे॥ 2387॥
एक है पितृ ऋण गोविंद राधे।
पुत्र उत्पन्न करि ऋण को चुका दे॥ 2388॥
एक है देव ऋण गोविंद राधे।
यज्ञादि कर्म द्वारा ऋण को चुका दे॥ 2389॥
देव ऋषि पितृ ऋण गोविंद राधे।
तीनों ऋणों ते भक्ति उऋण करा दे॥ 2390॥
सर्व धर्म तजि जो भी गोविंद राधे।
शरण में आये वाय मुक्त करा दे॥ 2391॥
सर्वधर्मान् में है गोविंद राधे।
संन्यास धर्म का भी त्याग बता दे॥ 2392॥
संन्यास शब्द अर्थ गोविंद राधे।
कृष्ण को सर्व समर्पण बता दे॥ 2393॥
संन्यासी साधक गोविंद राधे।
आदर्श नर नारायण बता दे॥ 2394॥
सिद्ध संन्यासी के गोविंद राधे।
आदर्श हैं ऋषभ देव बता दे॥ 2395॥
राम कर्मयोगी थे गोविंद राधे।
ऋषभ संन्यासी कृष्ण दोनों बता दे॥ 2396॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कामी, क्रोधी, लोभी को गोविंद राधे।
अनुकरणीय रामचरित बता दे॥ 2397॥
कर्मी के कर्मों का गोविंद राधे।
फल भी मिले ना बिनु भक्ति बता दे॥ 2398॥
दया अहिंसा आदि गोविंद राधे।
शास्त्र वेद सम्मत सत्य बता दे॥ 2399॥
सत्य दया युक्त धर्म गोविंद राधे।
तप युक्त ज्ञान मन शुद्ध ना करा दे॥ 2400॥
धर्म तो पाप नासे गोविंद राधे।
मन की तो शुद्धि कृष्णभक्ति करा दे॥ 2401॥
भक्ति मन शुद्ध करे गोविंद राधे।
सत्य ब्रह्मचर्य आदि गुण भी दिला दे॥ 2402॥
हरिभक्ति के बिना गोविंद राधे।
सत्य अहिंसा गुण सपना बता दे॥ 2403॥
कर्म, योग, ज्ञान ते जो गोविंद राधे।
मिले भक्ति सब कछु आपु दिला दे॥ 2404॥
भक्ति तो है कल्प वृक्ष गोविंद राधे।
जो भी जो भी चाहे भक्ति सब ही दिला दे॥ 2405॥
रिद्धि सिद्धि मोक्ष आदि गोविंद राधे।
भक्ति ते मिले आपु भक्त ठुकरा दे॥ 2406॥
शिव ने बताया यह गोविंद राधे।
नरक स्वर्ग सम अपवर्ग बता दे॥ 2407॥
कर्मी माँगे स्वर्ग ज्ञानी गोविंद राधे।
माँगे मुक्ति भक्त माँगे भक्ति बता दे॥ 2408॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्म

मेरा भक्त ब्रह्मा पद गोविंद राधे।
या इन्द्र पद नहिं चाहे बता दे॥ 2409॥
मेरा भक्त योग सिद्धि गोविंद राधे।
या अपवर्ग नहिं चाहे बता दे॥ 2410॥
जोग यज्ञ जप तप गोविंद राधे।
हरि ते मिला ना सके भक्ति मिला दे॥ 2411॥
जो भी हो अप्राप्य गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण भक्ति उसे प्राप्त करा दे॥ 2412॥
मन ते अगोचर जो गोविंद राधे।
भक्ति अगोचर को भी गोचर बना दे॥ 2413॥
पुत्रवती माता सोई गोविंद राधे।
जो जाये सुत हरिभक्त बता दे॥ 2414॥
यदि सुत भक्त ना हो गोविंद राधे।
तो माता माता नहिं बाँझ बता दे॥ 2415॥
गीता कह कर्म गुह्य गोविंद राधे।
ज्ञान गुह्यतर भक्ति गुह्यतम बता दे॥ 2416॥
कर्म की है सीमा ज्ञान गोविंद राधे।
COPYRIGHT
ज्ञान की है सीमा प्रेम सबको बता दे॥ 2417॥
RADHA GOVIND SAMITI
कर्म क्या है ज्ञान क्या है गोविंद राधे।
भक्ति क्या है तीनों का उत्तर बता दे॥ 2418॥
हरि निमित्त कर्म ज्ञान गोविंद राधे।
हरि निमित्त भक्ति तीन उत्तर बता दे॥ 2419॥
जिस कर्म धर्म ते भी गोविंद राधे।
पिय सुख पावे सोई कर्म है बता दे॥ 2420॥

जिस ज्ञान, योग ते भी गोविंद राधे।
पिय सुख पावे ज्ञान, योग है बता दे॥ 2421 ॥
हरि हित कर्म अरु गोविंद राधे।
हरि हित ज्ञान हरि प्रेम दिला दे॥ 2422 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

8

योग

योग वही योग है जो गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म का संयोग करा दे॥2423 ॥

ब्रह्म का वियोगी जीव गोविंद राधे।
साँचो योग सोई जोई योग करा दे॥ 2424॥

हरि ते मिलावे ना जो गोविंद राधे।
COPYRIGHT
ऐसा योग योग ना कुयोग बता दे॥2425॥
RADHA GOVIND SAMITI

हरि गुरु में हो प्यार गोविंद राधे।
जग में हो व्यवहार योग बता दे॥ 2426॥

ईश्वर की परिभाषा गोविंद राधे।
क्लेश रहित हो जो योग बता दे॥2427॥

क्लेश तो अविद्या है गोविंद राधे।
पाप अरु पुण्य दोनों कर्म बता दे॥ 2428॥

कर्म फल तो विपाक गोविंद राधे।
नाना वासना को योग आशय बता दे॥ 2429॥

योग है कठिन अति गोविंद राधे।
योग जोग कलि में ना कोउ बता दे॥ 2430॥

योग में हैं अष्टांग गोविंद राधे।
कलि में तो योग असम्भव बता दे॥ 2431॥

आठ में है एक अंग गोविंद राधे।
आसन वाको लोग योग बता दे॥ 2432॥

यम नियम आसन गोविंद राधे।
प्रत्याहार प्राणायाम बता दे॥ 2433॥

ध्यान धारणा समाधि गोविंद राधे।
योग मार्ग के आठ अंग बता दे॥ 2434॥

यम तो हैं बारह गोविंद राधे।
नियम भी हैं बारह ही बता दे॥ 2435॥

सत्य, अहिंसा, मौन गोविंद राधे।
अस्तेय, लज्जा, क्षमा यम हैं बता दे॥ 2436॥

ब्रह्मचर्य, आस्तिकता गोविंद राधे।
असंगता असंचय यम हैं बता दे॥ 2437॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

स्थिरता अरु अभय गोविंद राधे।
इस प्रकार यम हैं बारह बता दे॥ 2438॥

शौच, जप, तप, यज्ञ गोविंद राधे।
श्रद्धा अतिथि सेवा नियम बता दे॥ 2439॥

हरिपूजा, तीर्थयात्रा गोविंद राधे।
परोपकार चेष्टा नियम बता दे॥ 2440॥

योग

संतोष गुरुसेवा गोविंद राधे।
आदि सब ही हैं नियम बता दे॥ 2441॥
ध्यान की परिभाषा गोविंद राधे।
ध्येय में मन का लगाना बता दे॥ 2442॥
धारणा की परिभाषा गोविंद राधे।
ध्येय में मन लग जाना बता दे॥ 2443॥
समाधि परिभाषा गोविंद राधे।
ध्येय में मन लीन होना बता दे॥ 2444॥
योग ते समाधि हो गोविंद राधे।
चित्तवृत्ति का हो निरोध बता दे॥ 2445॥
किन्तु जहाँ वृत्ति नहिं गोविंद राधे।
वहाँ कछु भी व्यवहार ना बता दे॥ 2446॥
जहाँ व्यवहार नहिं गोविंद राधे।
वहाँ कछु रस भी नहीं है बता दे॥ 2447॥
अद्वैतवाद में भी गोविंद राधे।
द्वैत नहिं याते नहिं प्रेम बता दे॥ 2448॥
समाधि में कर्म नहिं गोविंद राधे।
किन्तु बाहर आते ही कर्म बता दे॥ 2449॥
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
योगी समाधि पूर्व गोविंद राधे।
जो सोचता करता था बता दे॥ 2450॥
समाधि टूटने पै गोविंद राधे।
फिर वही सोचेगा करेगा बता दे॥ 2451॥
योग की समाधि एक गोविंद राधे।
सुखाभाव की एक सुख की बता दे॥ 2452॥

सुख की समाधि तो है गोविंद राधे।
मायिक सत्वगुण की ही बता दे॥ 2453 ॥
समाधि सविकल्प गोविंद राधे।
संप्रज्ञात समाधि है बता दे॥ 2454 ॥
सात्विक दस सिद्धि गोविंद राधे।
योगियों को भी मिलती हैं बता दे॥ 2455 ॥
योगियों को योग शक्ति गोविंद राधे।
रिद्धि सिद्धि दै के वाय बुद्धू बना दे॥ 2456 ॥
सिद्धियाँ तो आठ हैं गोविंद राधे।
जो पूर्णतया हैं कृष्ण में बता दे॥ 2457 ॥
अणिमा अरु लघिमा गोविंद राधे।
महिमा ईशिता प्राप्ति सिद्धि बता दे॥ 2458 ॥
प्राकाम्या वशिता गोविंद राधे।
कामावशायिता आठ हैं बता दे॥ 2459 ॥
एक सिद्धि अणिमा है गोविंद राधे।
सिद्ध अणुवत हो क्षुद्र बता दे॥ 2460 ॥
एक सिद्धि लघिमा है गोविंद राधे।
सिद्ध हो अति लघु हलका बता दे॥ 2461 ॥
एक सिद्धि महिमा है गोविंद राधे।
सिद्ध हो भारी गिरि सदृश बता दे॥ 2462 ॥
एक सिद्धि प्राप्ति है गोविंद राधे।
सिद्ध जो चाहे करे प्राप्त बता दे॥ 2463 ॥
एक सिद्धि ईशित्व गोविंद राधे।
सिद्ध भी भौतिक सृष्टि करा दे॥ 2464 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक सिद्धि है वशित्व गोविंद राधे।
सिद्ध करे वशीभूत सृष्टि को बता दे॥ 2465॥
एक सिद्धि प्राकाम्या गोविंद राधे।
सिद्ध मिट्टी में भी डुबकी लगा दे॥ 2466॥
कामावशायिता ते गोविंद राधे।
सिद्ध हो सत्यसंकल्प बता दे॥ 2467॥
उपर्युक्त सिद्धियों की गोविंद राधे।
प्राप्ति हित योगी चित चपल बता दे॥ 2468॥
आठ सिद्धियाँ हैं व्यर्थ गोविंद राधे।
सच्ची सिद्धि है सिद्ध भक्ति बता दे॥ 2469॥
ज्ञानेश्वर योग ते गोविंद राधे।
कुँए में जाकर पानी पिये थे बता दे॥ 2470॥
नामदेव भक्ति ते गोविंद राधे।
पानी आया ऊपर पिये थे बता दे॥ 2471॥
त्रिभुवन विजयी जो गोविंद राधे।
रावणादि को भी तृप्ति हुई ना बता दे॥ 2472॥
हरि में हैं सिद्धि पूर्ण गोविंद राधे।
COPYRIGHT
सिद्धों में सिद्धि तो आंशिक बता दे॥ 2473॥
RADHA GOVIND SAMITI
रिद्धि पा ले सिद्धि पा ले गोविंद राधे।
माया कभु नहिं जाये सब को बता दे॥ 2474॥
जुग जुग योग करे गोविंद राधे।
तभू माया नहिं जाये योगी को बता दे॥ 2475॥
ब्रह्मा ने भी योगबल गोविंद राधे।
युगों खोजा ब्रह्म ना पाया बता दे॥ 2476॥

कर्मी, ज्ञानी, योगी आदि गोविंद राधे।
भक्ति बिना माया इन्हें मोह करा दे॥ 2477 ॥
निराहार नर की भी गोविंद राधे।
जाय नहिं मन की वासना बता दे॥ 2478 ॥
योगी प्राण इन्द्रिय गोविंद राधे।
वश में करे हारे मन ते बता दे॥ 2479 ॥
दुर्वासा महान तपी गोविंद राधे।
अम्बरीष जैसा भक्त उनको हरा दे॥ 2480 ॥
विश्वामित्र से तपी का गोविंद राधे।
भक्ति बिनु मेनका भी पतन करा दे॥ 2481 ॥
बड़े बड़े ज्ञानी ध्यानी गोविंद राधे।
लखि उर्वशी ध्यान मन का गवाँ दें॥ 2482 ॥
वायु जल भोजी को भी गोविंद राधे।
भक्ति बिनु, माया अग जग में घुमा दे॥ 2483 ॥
योगी का किया हुआ गोविंद राधे।
योग चित्तवृत्ति का निरोध बता दे॥ 2484 ॥
विक्षेप काल में तो गोविंद राधे।
चित्त का निरोध नहिं रहता बता दे॥ 2485 ॥
हरि का किया हुआ गोविंद राधे।
भक्ति का निरोध रहे नित्य बता दे॥ 2486 ॥
मन परमात्मा में गोविंद राधे।
जोड़ने का नाम है योग बता दे॥ 2487 ॥
योगियों के ध्यान में भी गोविंद राधे।
सात्विक भाव प्रकट हों बता दे॥ 2488 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

योगियों का ध्यान तो है गोविंद राधे।
फल प्राप्ति पर्यन्त योगी को बता दे॥ 2489॥
भक्तों का ध्यान तो है गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण का सदा सदा को बता दे॥ 2490॥
योगियों का ध्यान तो है गोविंद राधे।
परमात्मा चतुर्भुज रूप बता दे॥ 2491॥
परमात्मा तो है गोविंद राधे।
शंख, चक्र, गदा, पद्म धारी बता दे॥ 2492॥
क्षीर सागर मध्य गोविंद राधे।
चतुर्भुज रूप में मन को लगा दे॥ 2493॥
योगियों का ध्येय तो है गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण अंश परमात्मा बता दे॥ 2494॥
अतएव सिद्ध योगी गोविंद राधे।
कृष्ण सौन्दर्य लखि योग भुला दे॥ 2495॥
नव योगीश्वरों ने गोविंद राधे।
ब्रह्मा ते सुना, गुण कृष्ण के बता दे॥ 2496॥
नव योगीश्वरों ने गोविंद राधे।
शिव ते सुना, गुण कृष्ण के बता दे॥ 2497॥
नव योगीश्वरों ने गोविंद राधे।
सुना हरि गुण नारद ते बता दे॥ 2498॥
तीन पाँच नौ ग्यारह गोविंद राधे।
सब तत्व हैं अट्ठाइस बता दे॥ 2499॥
तीन तत्व माया के गोविंद राधे।
सत्व, रज, तम तीन गुण हैं बता दे॥ 2500॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पाँच तत्व ज्ञानेन्द्रिय गोविंद राधे।
श्रोत्र त्वक् नेत्र रसना नासा बता दे॥ 2501॥
पाँच तत्व पाँच विषय गोविंद राधे।
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध बता दे॥ 2502॥
नौ तत्व हैं पुरुष गोविंद राधे।
प्रकृति, महान, अहंकार बता दे॥ 2503॥
नौ तत्व में हैं पाँच गोविंद राधे।
आकाश, वायु, तेज, जल, भू बता दे॥ 2504॥
ज्ञान कर्म इन्द्रिय गोविंद राधे।
पाँच पाँच एक मन ग्यारह बता दे॥ 2505॥
वेद में आठ विद्या गोविंद राधे।
सद्विद्या, भूमा, दहर बता दे॥ 2506॥
उपकोशल विद्या गोविंद राधे।
शाण्डिल्य, वैश्वानर विद्या बता दे॥ 2507॥
आनन्दमय विद्या है गोविंद राधे।
अक्षर विद्या है आठवीं बता दे॥ 2508॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

9

ज्ञान

ज्ञान मार्ग में भी पूर्व गोविंद राधे।
ब्रह्म के स्वरूप का श्रवण बता दे॥ 2509 ॥
प्रथम शब्द ज्ञान करे गोविंद राधे।
फिर करे भक्ति भक्ति अनुभव करा दे॥ 2510 ॥
पाक शास्त्र रटने ते गोविंद राधे।
भूख नहिं जाये वाय खाना खिला दे॥ 2511 ॥
महावाक्य रटने ते गोविंद राधे।
माया नहिं जाये वाय भक्ति करा दे॥ 2512 ॥
व्यंजन ज्ञान ते ज्यों गोविंद राधे।
तुष्टि पुष्टि क्षुन्निवृत्ति ना हो बता दे॥ 2513 ॥
ऐसे ब्रह्म कृष्ण के भी गोविंद राधे।
ज्ञानमात्र ते न मिले लक्ष्य बता दे॥ 2514 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

व्यंजन बनाओ खाओ गोविंद राधे।
तब ही हो तुष्टि पुष्टि आदि बता दे॥ 2515 ॥
ऐसे श्रीकृष्ण में भी गोविंद राधे।
मन ते करो भक्ति साध्य दिला दे॥ 2516 ॥
राजा है ऐसा ऐसा गोविंद राधे।
ज्ञान होने ते लाभ कछु ना बता दे॥ 2517 ॥
राजा ते संबंध गोविंद राधे।
जोड़ो तब ही कृपा मिलेगी बता दे॥ 2518 ॥
भाव यह भक्ति बिनु गोविंद राधे।
ब्रह्मज्ञान तो अभिमान बढ़ा दे॥ 2519 ॥
अनुभवहीन ज्ञान गोविंद राधे।
लख चौरासी योनि घुमा दे॥ 2520 ॥
जानने का लाभ तब गोविंद राधे।
जब जाने माने मन हरि में लगा दे॥ 2521 ॥
शब्दज्ञान ज्ञान नहिं गोविंद राधे।
यह ज्ञान ज्ञानाभिमान बढ़ा दे॥ 2522 ॥
ज्ञानी कहे मैं ही ब्रह्म गोविंद राधे।
'तुम मूर्ख' सुनि ब्रह्म ज्ञान भुला दे॥ 2523 ॥
गधे पै चन्दन गोविंद राधे।
गधा वाय केवल बोझ बता दे॥ 2524 ॥
ऐसे ही वेद-वक्ता गोविंद राधे।
भक्तिहीन हो तो वेद बोझ बता दे॥ 2525 ॥
अज्ञों ते डरे वेद गोविंद राधे।
मो पै करेगा प्रहार बता दे॥ 2526 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

'भक्तिं मयि परां' श्लोक गोविंद राधे। '
पूर्व करु भक्ति पुनि गीता सुना दे॥ 2527 ॥
पांडित्य तजु मन गोविंद राधे।
भोला शिशु बनि मन हरि में लगा दे॥ 2528॥
उतना ही ज्ञान जानो गोविंद राधे।
जितने में गुरु तोहिं हरि ते मिला दे॥ 2529॥
ज्ञान है अनन्त किन्तु गोविंद राधे।
तू तो साध्य साधन ज्ञान करा दे॥ 2530॥
वह ज्ञान अज्ञान गोविंद राधे।
श्यामा श्याम ते जो ना प्रेम करा दे॥ 2531॥
जग में भी ज्ञान ते गोविंद राधे।
प्रेम होता है सर्वत्र बता दे॥ 2532॥
सुन्दरी स्वरूप गुण गोविंद राधे।
हाव भाव ते ही हो प्रेम बता दे॥ 2533॥
ब्रह्म ज्ञान ते भी यों गोविंद राधे।
ब्रह्म में हो प्रेम अवशि बता दे॥ 2534॥
ज्ञानी जब प्रेम पाये गोविंद राधे।
ब्रह्म को तो अब जाना सबको बता दे॥ 2535॥
प्रेम बिनु ज्ञान व्यर्थ गोविंद राधे।
ऐसा ज्ञान अज्ञान ज्ञानी को बता दे॥ 2536॥
धान की भूसी का गोविंद राधे।
कूटना है व्यर्थ केवल श्रम है बता दे॥ 2537॥
ऐसे हरिभक्ति बिनु गोविंद राधे।
ज्ञान का प्रयास केवल श्रम है बता दे॥ 2538॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति कामधेनु पय गोविंद राधे।
ज्ञान कूपजल जल माखन ना दे॥ 2539॥

ज्ञान वैराग्य दोनों गोविंद राधे।
भक्ति महरानी के पुत्र हैं बता दे॥ 2540॥

जग में भी माता बिनु गोविंद राधे।
पुत्र की प्राप्ति असम्भव बता दे॥ 2541॥

ऐसे ही भक्ति बिनु गोविंद राधे।
ज्ञान वैराग्य असम्भव बता दे॥ 2542॥

ज्ञान वैराग्य मोक्ष गोविंद राधे।
मिलें बिनु माँगे कृष्णभक्ति ते बता दे॥ 2543॥

कोटि कल्प सिर मारे गोविंद राधे।
भक्ति बिनु ब्रह्मज्ञान हो ना बता दे॥ 2544॥

भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
जलधार गहि आकाश चढ़ा दे॥ 2545॥

भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
पँगुले को भी जैसे गिरि पै चढ़ा दे॥ 2546॥

भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
तैरि सिन्धु पार जाना चाहे बता दे॥ 2547॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
हँसे भी ठठाय अरु गाल भी फुला दे॥ 2548॥

भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
लोहे के चने नाक ते चबवा दे॥ 2549॥

भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
बाँझ माँ के लड़के ते ब्याह करा दे॥ 2550॥

भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
गगन में फूलों की वाटिका लगा दे॥ 2551॥
भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
दिन में भी आँखों ते तारे दिखा दे॥ 2552॥
भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
गूँगे को जैसे वेदवक्ता बना दे॥ 2553॥
भक्ति बिनु ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
जैसे कोइ ला के शश श्रृंग दिखा दे॥ 2554॥
भक्तिहीन ज्ञान ऐसे गोविंद राधे।
जैसे बिना सींग पूँछ बैल बता दे॥ 2555॥
भक्त कह ज्ञानी ते गोविंद राधे।
ज्ञान सिर भक्ति का मुकुट पिन्हा दे॥ 2556॥
प्रेम बिनु ज्ञानी ज्ञान गोविंद राधे।
जैसे बिनु प्राण देह सबको बता दे॥ 2557॥
वेदव्यास ने कहा गोविंद राधे।
भक्ति बिनु मन भी ना शुद्ध हो बता दे॥ 2558॥
शंकराचार्य कह गोविंद राधे।
वेदव्यास नारायण हैं बता दे॥ 2559॥
ब्रह्मसूत्र भाष्य में तो गोविंद राधे।
शंकर व्यास जी को भ्रांत बता दे॥ 2560॥
शंकर कहे ज्ञान गोविंद राधे।
हरि की कृपा ते ही होगा बता दे॥ 2561॥
हरि की कृपा ते युक्त गोविंद राधे।
ज्ञान ही ज्ञानी को मोक्ष दिला दे॥ 2562॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि ज्ञान ते हो भक्ति गोविंद राधे।
भक्ति ते ब्रह्मज्ञान आप हो बता दे॥ 2563 ॥
भक्ति सहित ज्ञान गोविंद राधे।
ब्रह्मज्ञान अरु अपवर्ग दिला दे॥ 2564 ॥
भक्ति के बिना अधूरे गोविंद राधे।
ज्ञानी, ब्रह्मज्ञान वाको पतन करा दे॥ 2565 ॥
भक्तिहीन ब्रह्मज्ञान गोविंद राधे।
जीवनमुक्त का भी पतन करा दे॥ 2566 ॥
भक्तिहीन ब्रह्म ज्ञान गोविंद राधे।
जड़ भरत को भी तन हिरन दिला दे॥ 2567 ॥
ज्ञानी कहे माया मिथ्या गोविंद राधे।
भरत से ज्ञानी को भी धूल चटा दे॥ 2568 ॥
भरत ने राज्य किया गोविंद राधे।
एक करोड़ वर्ष भू पै बता दे॥ 2569 ॥
सिंह के भय ते गोविंद राधे।
एक हिरणी कूदी नदी में बता दे॥ 2570 ॥
हिरणी का बच्चा गिरा गोविंद राधे।
बहती नदी के पानी में बता दे॥ 2571 ॥
भरत को दया आई गोविंद राधे।
बच्चे को पकड़ा नदी ते बता दे॥ 2572 ॥
भरत ने पाला पोसा गोविंद राधे।
हिरणी के बच्चे को शिशु ज्यों बता दे॥ 2573 ॥
याते भरत भये गोविंद राधे।
हिरणी शावक सक्त बता दे॥ 2574 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

परिणाम मृत्यु बाद गोविंद राधे।
भरत को मिली योनि हिरन बता दे॥ 2575 ॥
फिर बने ब्राह्मण गोविंद राधे।
पागल बनि हरिभक्ति की बता दे॥ 2576 ॥
फिर गये हरिधाम गोविंद राधे।
यह कहानी ज्ञानी भरत की बता दे॥ 2577 ॥
ज्ञानी योगी हैं अधूरे गोविंद राधे।
पूरे होने को कृष्णभक्ति बता दे॥ 2578 ॥
हरि की कृपा बिनु गोविंद राधे।
माया की निवृत्ति नहिं होय बता दे॥ 2579 ॥
हरि की कृपा बिनु गोविंद राधे।
माया की निवृत्ति खपुष्पवत् बता दे॥ 2580 ॥
हरि की कृपा बिनु गोविंद राधे।
जीवन्मुक्त को भी माया नचा दे॥ 2581 ॥
'ज्ञानं क्षरति' मनु गोविंद राधे।
कह माया ज्ञानी का पतन करा दे॥ 2582 ॥
जो शिशु पिता कर गोविंद राधे।
पकरि चले वह गिरे भी बता दे॥ 2583 ॥
जो पिता शिशु कर गोविंद राधे।
पकरि चले सो निर्भय बता दे॥ 2584 ॥
ज्ञानी चले निजबल गोविंद राधे।
भक्त चले हरिबल अन्तर बता दे॥ 2585 ॥
नदी पार करने के गोविंद राधे।
साधन तीन संसार में बता दे॥ 2586 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कोई नदी पार करे गोविंद राधे।
निज भुजबल तैर कर ही बता दे॥ 2587 ॥
कोई नदी पार करे गोविंद राधे।
आपु नाव चालक बन कर बता दे॥ 2588 ॥
भक्त बस बैठा रहे गोविंद राधे।
नाव पै नाविक हरि को बना दे॥ 2589 ॥
ज्ञानी कपि शिशु सम गोविंद राधे।
भक्त बिलार शिशु सम है बता दे॥ 2590 ॥
मेरा भक्त साधक गोविंद राधे।
गिरे नहिं मैं ही सँभालूँ बता दे॥ 2591 ॥
हरि का अपक्वभक्त गोविंद राधे।
यदि गिर जाये हरि फिर ते उठा दे॥ 2592 ॥
भक्त की तो रक्षा करे गोविंद राधे।
जोगी ज्ञानी आदि को तो माया मिटा दे॥ 2593 ॥
'यमेवैष वृणुते' गोविंद राधे।
मन्त्र कह हरि कृपा हरि ते मिला दे॥ 2594 ॥
ज्ञानी का ब्रह्म तो है गोविंद राधे।
उदासीन करुणारहित बता दे॥ 2595 ॥
याते ज्ञानियों को तो गोविंद राधे।
कृष्ण कृपा की हो अपेक्षा बता दे॥ 2596 ॥
ब्रह्मज्ञानी जैसे गोविंद राधे।
गुणमयी माया ते मुक्त हो बता दे॥ 2597 ॥
ऐसे ही कृष्णभक्त गोविंद राधे।
दैवी माया ते मुक्त हो बता दे॥ 2598 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मुक्ति अतिरिक्त भक्त गोविंद राधे।
कृष्णप्रेम कृष्णसेवा पावे बता दे॥ 2599॥

ज्ञान साधन क्लिष्ट गोविंद राधे।
साध्य भी भक्ति ते निम्न बता दे॥ 2600॥

कृपा ते ज्ञानी को गोविंद राधे।
मिले जो ज्ञान कृपाभास बता दे॥ 2601॥

वास्तविक कृपा तो गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण दिव्य प्रेम प्राप्ति बता दे॥ 2602॥

ज्ञानी सी कृपा तो कृष्ण गोविंद राधे।
असुरों को मारि दें मोक्ष बता दे॥ 2603॥

ज्ञान का मार्ग क्लिष्ट गोविंद राधे।
तलवार धार पै चलना बता दे॥ 2604॥

भक्ति का मार्ग सरल गोविंद राधे।
नाव पै बैठो हरि पार करा दे॥ 2605॥

भक्ति में दोनों आँख गोविंद राधे।
बंद करो दौड़ो ना हो पतन बता दे॥ 2606॥

ज्ञानी के ज्ञान की गोविंद राधे।
भूमिका होती हैं आठ बता दे॥ 2607॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पहली भूमिका का गोविंद राधे।
नाम है शुभेच्छा सबको बता दे॥ 2608॥

भूमिका शुभेच्छा में गोविंद राधे।
भूख परमार्थ की तीव्र हो बता दे॥ 2609॥

भूमिका शुभेच्छा में गोविंद राधे।
श्रवण है सबते प्रमुख बता दे॥ 2610॥

दूसरी भूमिका का गोविंद राधे।
नाम है विचारणा सबको बता दे॥ 2611॥
दूसरी भूमिका में गोविंद राधे।
मनन है सबते प्रमुख बता दे॥ 2612॥
तीसरी भूमिका का गोविंद राधे।
नाम तनुमानसी सबको बता दे॥ 2613॥
तीसरी भूमिका में गोविंद राधे।
प्रमुख निदिध्यासन है बता दे॥ 2614॥
चौथी भूमिका का गोविंद राधे।
नाम है सत्वापत्ति बता दे॥ 2615॥
चौथी भूमिका में गोविंद राधे।
मन ते ब्रह्मदर्शन हो बता दे॥ 2616॥
पाँचवीं भूमिका का गोविंद राधे।
नाम असंसक्ति है ये बता दे॥ 2617॥
पाँचवीं भूमिका में गोविंद राधे।
होती समाधि निर्विकल्प बता दे॥ 2618॥
छठीं भूमिका का गोविंद राधे।
COPYRIGHT
नाम पदार्थाभाविनी बता दे॥ 2619॥
RADHA GOVIND SAMITI
छठीं भूमिका में गोविंद राधे।
होता अभाव संसार का बता दे॥ 2620॥
सातवीं भूमिका गोविंद राधे।
तुर्यगा नाम वाली है बता दे॥ 2621॥
सातवीं भूमिका में गोविंद राधे।
पूर्ण आनन्द में मग्न हो बता दे॥ 2622॥

आठवीं भूमिका का गोविंद राधे।
नाम है तुर्यातीत बता दे॥ 2623॥
आठवीं भूमिका में गोविंद राधे।
दशा विदेह की होती बता दे॥ 2624॥
व्रात्य परमहंस गोविंद राधे।
बाह्य लक्षण एक सा है बता दे॥ 2625॥
नास्तिक वेदों के गोविंद राधे।
विधि निषेध नहिं माने बता दे॥ 2626॥
ऐसे ही परमहंस गोविंद राधे।
विधि निषेध नहिं माने बता दे॥ 2627॥
फल में बड़ा है भेद गोविंद राधे।
व्रात्य पावे नरक यातना बता दे॥ 2628॥
पावे परमहंस गोविंद राधे।
मायातीत ब्रह्म मुक्तिधाम बता दे॥ 2629॥
एक है अँगूठा छाप गोविंद राधे।
विद्यालय कभु जाय ना बता दे॥ 2630॥
एक तो विद्यालय गोविंद राधे।
पास कर चुका याते जाय ना बता दे॥ 2631॥
ज्ञानी, भूमि, जल, तेज, गोविंद राधे।
वायु, आकाश, अहं भेदन करा दे॥ 2632॥
ज्ञानी, महान, प्रकृति गोविंद राधे।
एकमात्र भक्ति ते ही भेदन करा दे॥ 2633॥
जीव माया भेद दो हैं गोविंद राधे।
आवरण विक्षेप आत्मिका बता दे॥ 2634॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आवरणात्मिका माया गोविंद राधे।
जीव का स्वरूप विस्मरण करा दे॥ 2635॥
विक्षेपात्मिका माया गोविंद राधे।
जीवों को जग आसक्त करा दे॥ 2636॥
गुण माया के भेद दो हैं गोविंद राधे।
एक अविद्या दूजी विद्या बता दे॥ 2637॥
सत्वगुणी विद्या माया गोविंद राधे।
रज तम गुण की अविद्या बता दे॥ 2638॥
ज्ञानी अविद्या नासे गोविंद राधे।
विद्या ना नसा सके सबको बता दे॥ 2639॥
विद्या ते अविद्या जाये गोविंद राधे।
विद्या नहिं जाये विद्या ज्ञानी को हरा दे॥ 2640॥
विद्या अविद्या माया गोविंद राधे।
विद्या ते अविद्या विद्या भक्ति ते मिटादे॥ 2641॥
विद्या अविद्या माया गोविंद राधे।
जाय तब मिले शुद्ध सत्व बता दे॥ 2642॥
शुद्धसत्व दिव्यसत्व गोविंद राधे।
मायिक सत्व गुण वाला ना बता दे॥ 2643॥
सत्व गुण वाला सत्व गोविंद राधे।
विद्या माया युक्त अशुद्ध बता दे॥ 2644॥
मन शुद्ध कर भी लो गोविंद राधे।
मिलेगी स्वरूप शक्ति भक्ति ते बता दे॥ 2645॥
स्वरूप शक्ति ही गोविंद राधे।
मन दिव्य करे विद्या माया भगा दे॥ 2646॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ह्लादिनी का सार भक्ति गोविंद राधे।
उसी भक्ति ते मुक्ति होगी बता दे॥ 2647 ॥
असत्वापादक गोविंद राधे।
आवरण को वेद ज्ञान नसा दे॥ 2648 ॥
अभानापादक गोविंद राधे।
आवरण अपरोक्ष ज्ञान नसा दे॥ 2649 ॥
अनानन्दापादक गोविंद राधे।
आवरण केवल भक्ति नसा दे॥ 2650 ॥
'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' गोविंद राधे।
यह मंत्र सावरण ब्रह्म में बता दे॥ 2651 ॥
कृष्ण तो हैं निर्गुण गोविंद राधे।
निरावरण ब्रह्म शुद्ध बता दे॥ 2652 ॥
संसार सारहीन गोविंद राधे।
सावरण ब्रह्म स्वरूप बता दे॥ 2653 ॥
निरावरण ब्रह्म गोविंद राधे।
सगुण साकार श्रीकृष्ण हैं बता दे॥ 2654 ॥
सावरण ब्रह्म भक्ति गोविंद राधे।
COPYRIGHT
लख चौरासी द्वार घुमा दे॥ 2655 ॥
RADHA GOVIND SAMITI
निरावरण ब्रह्म गोविंद राधे।
भक्ति तो मुक्ति भक्ति दोनों दिला दे॥ 2656 ॥
सावरण ब्रह्म जग गोविंद राधे।
जड़ माया शक्ति ते है आवृत बता दे॥ 2657 ॥
निरावरण ब्रह्म गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण योगमाया आवृत बता दे॥ 2658 ॥

जो ज्ञानी कृष्ण तनु गोविंद राधे।
मायिक माने वाय माया नचा दे॥ 2659॥
जो ज्ञानी ब्रह्म को गोविंद राधे।
साकार नाहिं माने माया घुमा दे॥ 2660॥
जो ज्ञानी कृष्ण को गोविंद राधे।
ब्रह्म मानि भक्ति करे मुक्ति दिला दे॥ 2661॥
ज्ञान है विरक्ति पर गोविंद राधे।
भक्ति है श्यामा श्याम स्मृति पर बता दे॥ 2662॥
पूर्ण विरक्त ही है गोविंद राधे।
ज्ञान मार्ग अधिकारी ज्ञानी को बता दे॥ 2663॥
चार साधनों ते युक्त गोविंद राधे।
ज्ञान मार्ग का अधिकारी बता दे॥ 2664॥
विवेक वैराग्य गोविंद राधे।
शमादि षट् मुमुक्षु साधन बता दे॥ 2665॥
श्रवण मनन पुनि गोविंद राधे।
निदिध्यासन समाधि अंग बता दे॥ 2666॥
दुःख मृत्यु आदि ते जो गोविंद राधे।
छूटना चाहे सो मुमुक्षु बता दे॥ 2667॥
मुमुक्षु को तो बस गोविंद राधे।
भक्ति ही ग्राह्य धार्य कार्य बता दे॥ 2668॥
वैराग्य भेद दो हैं गोविंद राधे।
युक्त अरु फल्गु वैराग्य बता दे॥ 2669॥
युक्त वैराग्य ग्राह्य गोविंद राधे।
फल्गु वैराग्य त्याज्य धोखा बता दे॥ 2670॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वैराग्य साध्य ज्ञान गोविंद राधे।
ज्ञान साध्य मोक्ष कैवल्य बता दे॥ 2671 ॥
ज्ञानी की कामना है गोविंद राधे।
दुख की शाश्वती निवृत्ति बता दे॥ 2672 ॥
बहुजन्म पश्चात् गोविंद राधे।
ज्ञानी हो कृष्ण प्रपन्न बता दे॥ 2673 ॥
कोई भी ज्ञानी जब गोविंद राधे।
कृष्ण भक्ति करे मुक्त होय बता दे॥ 2674 ॥
'ददामि बुद्धियोगं' श्लोक गोविंद राधे।
कह हरिभक्त को ज्ञान दिला दे॥ 2675 ॥
ज्ञानी की विद्या माया गोविंद राधे।
कृष्णभक्ति बिनु नहिं जाये बता दे॥ 2676 ॥
शंकराचार्य कह गोविंद राधे।
निर्गुण ब्रह्म उदासीन है बता दे॥ 2677 ॥
उदासीन ब्रह्म तो गोविंद राधे।
कृपा कर ही नाहिं सकता बता दे॥ 2678 ॥
अतएव ज्ञानी को गोविंद राधे।
कृष्णकृपा हेतु भक्ति करा दे॥ 2679 ॥
भक्तिहीन शुष्क ज्ञानी गोविंद राधे।
कृष्ण अपराधी माया पतन करा दे॥ 2680 ॥
शुष्क ज्ञानी सत्वगुणी गोविंद राधे।
सुख को ही ब्रह्म सुख माने बता दे॥ 2681 ॥
मन जो भी सोचे समझे गोविंद राधे।
वेद कह सब है मायिक बता दे॥ 2682 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानी मन मायिक गोविंद राधे।
मायिक मन ध्यान मायिक बता दे॥ 2683॥

ज्ञानी का ध्यान तो है गोविंद राधे।
स्वरूप शक्ति बिना प्राकृत बता दे॥ 2684॥

भक्तों के मन को तो गोविंद राधे।
शुद्ध स्वरूप शक्ति दिव्य बना दे॥ 2685॥

मन की उपाधि पै गोविंद राधे।
ज्ञानी को हो ब्रह्म दर्शन बता दे॥ 2686॥

निरुपाधि ब्रह्म का हो गोविंद राधे।
अनुभव मरणोपरान्त बता दे॥ 2687॥

निर्विशेष ज्ञानी की गोविंद राधे।
जब हो दशा परिपक्व बता दे॥ 2688॥

तब हो प्राप्त उसे गोविंद राधे।
समाधि भी निर्विकल्प बता दे॥ 2689॥

निर्विकल्प को ही कह गोविंद राधे।
असंप्रज्ञात समाधि बता दे॥ 2690॥

ऐसी समाधि में गोविंद राधे।
ध्याता ध्येय ध्यान तीनों रहें ना बता दे॥ 2691॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्तों की समाधि में गोविंद राधे।
ध्याता ध्येय ध्यान रहें तीनों बता दे॥ 2692॥

काष्ठ की डिबिया में गोविंद राधे।
भौंरा छेद करके भागे बता दे॥ 2693॥

किन्तु पद्म पुष्प में तो गोविंद राधे।
भौंरा, न भागे भले जान गमा दे॥ 2694॥

ऐसे ही ज्ञानी की गोविंद राधे।
समाधि ते मन भागे बता दे॥ 2695॥
किन्तु भक्तियुक्त मन गोविंद राधे।
भगाने पै भी नहिं भागे बता दे॥ 2696॥
भक्ति बिनु मुक्ति नाहिं गोविंद राधे।
कोटि यतन करो बालू तेल ना दे॥ 2697॥
भक्ति बिनु मुक्ति नाहिं गोविंद राधे।
अंधकार चाहे रवि को भी नसा दे॥ 2698॥
भक्ति बिनु मुक्ति चाहे गोविंद राधे।
सो कह सूर्य बिनु दिन हो बता दे॥ 2699॥
भक्ति ते मिले मुक्ति गोविंद राधे।
कर्म, ज्ञान, योग ते ना मुक्ति बता दे॥ 2700॥
कर्म, योग, ज्ञान ते तो गोविंद राधे।
स्वर्ग रिद्धि सिद्धि मिले मुक्ति ना बता दे॥ 2701॥
भक्ति बिनु मुक्ति ऐसी गोविंद राधे।
जल बिनु जैसे थल नाव चला दे॥ 2702॥
ज्ञानियों की स्वामिनी है गोविंद राधे।
भक्तों की दासी है मुक्ति बता दे॥ 2703॥
भक्ति तो है ऐसी शक्ति गोविंद राधे।
भुक्ति मुक्ति दोनों को ही दासी बना दे॥ 2704॥
भक्ति के अधीन मुक्ति गोविंद राधे।
मुक्ति के अधीन ज्ञान ज्ञानी को बता दे॥ 2705॥
भक्ति के दास हरि गोविंद राधे।
मुक्ति है हरिदासी ज्ञानी को बता दे॥ 2706॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मुक्ति हरिदासी है गोविंद राधे।
स्वामी तजि दासी भजे मूर्खता बता दे॥ 2707॥
श्यामा दास श्याम श्याम गोविंद राधे।
दासी मुक्ति मुक्तिदास ज्ञानी बता दे॥ 2708॥
भक्ति के अधीन दोऊ गोविंद राधे।
मुक्ति बिनु माँगे मिले भक्त ठुकरा दे॥ 2709॥
हरि कह मुक्ति ले ले गोविंद राधे।
भक्त कह प्रेमबन्धन में बँधा दे॥ 2710॥
कृष्ण प्रेम बन्ध ते तो गोविंद राधे।
भक्त कभी भी मुक्ति चाहे ना बता दे॥ 2711॥
कृष्ण प्रेमबन्ध ते तो गोविंद राधे।
जगबन्धनमुक्ति आपु हो बता दे॥ 2712॥
मुक्ति ठाढ़ी कर जोरे गोविंद राधे।
भक्त आगे कहे मोहिं दासी बना दे॥ 2713॥
भक्तों ते चाहे मुक्ति गोविंद राधे।
दासीपद भक्त डाटि वाय भगा दे॥ 2714॥
मुक्ति कहे कहाँ जाऊँ गोविंद राधे।
जहाँ जाऊँ कूकरी ज्यों भक्त भगा दे॥ 2715॥
जो थे मेरे दास कभु गोविंद राधे।
शुक सनकादि मोहिं डाटि के भगा दे॥ 2716॥
गोपी कहे मुक्ति सुनु गोविंद राधे।
श्याम कुब्जा में सक्त मुक्त करा दे॥ 2717॥
भक्ति में भुक्ति मुक्ति गोविंद राधे।
दोनों हैं बाधा वाय दूर भगा दे॥ 2718॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्त वर माँगे हरि गोविंद राधे।
भुक्ति मुक्ति दोनों डाकिनी ते बचा दे॥ 2719॥
भुक्ति है अज्ञान गोविंद राधे।
मुक्ति तो महा अज्ञान बता दे॥ 2720॥
मुक्ति ते तो भुक्ति भली गोविंद राधे।
भुक्ति में आशा कोई हरि ते मिला दे॥ 2721॥
बद्ध को तो आशा है गोविंद राधे।
काउ जन्म में प्रेम मिलेगा बता दे॥ 2722॥
मुक्त का तो जन्म हो ना गोविंद राधे।
याते कभु प्रेम भी ना मिलेगा बता दे॥ 2723॥
याते मुक्त ते बद्ध गोविंद राधे।
है श्रेष्ठ चैतन्यदेव बता दे॥ 2724॥
भुक्ति डाकिनी तो कभु गोविंद राधे।
छोड़ भी दे मुक्ति कभू न छुड़ा दे॥ 2725॥
कैतवप्रधान मुक्ति गोविंद राधे।
चैतन्यदेव ने कहा है बता दे॥ 2726॥
मुक्ति को पिशाची सम गोविंद राधे।
COPYRIGHT
वेदव्यास ने कहा सबको बता दे॥ 2727॥
RADHA GOVIND SAMITI
मोक्ष नरक सम गोविंद राधे।
भक्ति बिनु, स्वर्ग भी है नरक बता दे॥ 2728॥
नरक स्वर्ग अरु गोविंद राधे।
अपवर्ग भक्ति बिनु सम हैं बता दे॥ 2729॥
पाप ते मिले नरक गोविंद राधे।
पुण्य ते मिले स्वर्ग लोक बता दे॥ 2730॥

ज्ञान ते मिले मोक्ष गोविंद राधे।
भक्ति ते मिले दिव्यप्रेम बता दे॥ 2731॥
नरक ते श्रेष्ठ स्वर्ग गोविंद राधे।
स्वर्ग ते श्रेष्ठ अपवर्ग बता दे॥ 2732॥
अपवर्ग सुख पै गोविंद राधे।
कोटि कोटि स्वर्ग के सुखों को लुटा दे॥ 2733॥
अपवर्ग ते श्रेष्ठ गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण निष्काम प्रेम बता दे॥ 2734॥
श्रीकृष्ण प्रेम पै गोविंद राधे।
कोटि कोटि अपवर्ग सुख को लुटा दे॥ 2735॥
ज्ञानी योगी मत में तो गोविंद राधे।
सायुज्य ही अपवर्ग बता दे॥ 2736॥
कृष्णभक्त मत में तो गोविंद राधे।
प्रेम भक्ति अपवर्ग व्यास बता दे॥ 2737॥
नेकु भक्ति सुख पै गोविंद राधे।
कोटि कोटि तन मन प्राण लुटा दे॥ 2738॥
भक्ति सुख लवलेश गोविंद राधे।
ब्रह्मानन्दी ही क्या ब्रह्म को नचा दे॥ 2739॥
गीतोपदेशक गोविंद राधे।
कृष्ण ने दिया पार्थ को क्या बता दे॥ 2740॥
याते ही सिद्ध होगा गोविंद राधे।
गीता का अन्तिम लक्ष्य बता दे॥ 2741॥
महाभारत में गोविंद राधे।
कहा पार्थ गया गोलोक बता दे॥ 2742॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

याते गीता का लक्ष्य गोविंद राधे।
मोक्ष नाहिं अपितु है प्रेम बता दे॥ 2743॥
गीता का अन्तिम गोविंद राधे।
अध्याय मोक्ष संन्यास बता दे॥ 2744॥
मोक्ष संन्यास अर्थ गोविंद राधे।
मोक्ष का सर्वथा त्याग है बता दे॥ 2745॥
मोक्ष काम तजे बिनु गोविंद राधे।
कृष्ण शुद्ध प्रेम प्राप्ति हो ना बता दे॥ 2746॥
मुक्ति अभाव वाची गोविंद राधे।
दुःखनिवृत्ति मात्र होती है बता दे॥ 2747॥
भक्ति है भाववाची गोविंद राधे।
प्रेमरस का आस्वादन करा दे॥ 2748॥
भाव ते ही गोपीजन गोविंद राधे।
श्रुतिमृग्यमान रस पाया बता दे॥ 2749॥
भक्ति है भुलाने वाली गोविंद राधे।
भक्ति भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ भुला दे॥ 2750॥
मुक्ति को पिशाची माने गोविंद राधे।
बैकुण्ठ सुख को भी मुँह बिचका दे॥ 2751॥
भक्तों की चार मुक्ति गोविंद राधे।
भक्तों को वैकुण्ठ वास दिला दे॥ 2752॥
भक्तों की मुक्ति सार्ष्टि गोविंद राधे।
हरि के समान ऐश्वर्य दिला दे॥ 2753॥
भक्त सालोक्य मुक्ति गोविंद राधे।
हरि ही के लोक में निवास दिला दे॥ 2754॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्त सारूप्य मुक्ति गोविंद राधे।
हरि के समान रूप भक्त को दिला दे॥ 2755॥

भक्त की सामीप्य मुक्ति गोविंद राधे।
हरि के ही पास में निवास दिला दे॥ 2756॥

पाँचों अपवर्ग को तो गोविंद राधे।
एकमात्र श्रीकृष्ण भक्ति दिला दे॥ 2757॥

मुक्ति मिल जाये भी तो गोविंद राधे।
कृष्ण प्रेम सेवा मिले ना बता दे ॥ 2758॥

पाँचों मुक्तियों ते गोविंद राधे।
श्रेष्ठ है निष्काम प्रेम बता दे॥ 2759॥

निष्काम भक्त जो सो गोविंद राधे।
पाँचों मुक्ति नहिं माँगे माँगे सेवा दे॥ 2760॥

मैं हूँ निष्काम प्रेमी गोविंद राधे।
पाँचों मुक्तियों को कोई द्वार ते भगा दे॥ 2761॥

पाँचों मुक्ति आई हैं गोविंद राधे।
दासी बनने निष्कामता मिटा दें॥ 2762॥

मेरा है लक्ष्य एक गोविंद राधे।
श्यामा श्याम निष्काम प्रेम बता दे॥ 2763॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोक्ष कामना में छुपी गोविंद राधे।
अहं की मंगल कामना बता दे॥ 2764॥

श्याम सुख कामना में गोविंद राधे।
अहं का सर्वथा अभाव हो बता दे॥ 2765॥

अहं के अभाव ते ही गोविंद राधे।
ज्ञानी नहिं भक्त निष्काम बता दे॥ 2766॥

निर्गुण भक्ति आदि गोविंद राधे।
वेदों का महावाक्य श्रवण बता दे॥ 2767॥
सगुण कृष्ण भक्ति आदि गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण का तत्व श्रवण बता दे॥ 2768॥
भक्त ज्ञानी भेद यह गोविंद राधे।
एक रस पिये एक रस ही बना दे॥ 2769॥
ज्ञानी भक्त भेद यह गोविंद राधे।
ज्ञानी मन मरे भक्त दिव्य बना दे॥ 2770॥
ज्ञानी कहे सोऽहं सोऽहं गोविंद राधे।
प्रेमी कहे सोऽहं के पूर्व 'दा' लगा दे॥ 2771॥
ज्ञानी कहे 'मैं ही ब्रह्म' गोविंद राधे।
भक्त कहे 'मेरा ब्रह्म' अन्तर बता दे॥ 2772॥
जग द्वैत निंदनीय गोविंद राधे।
कृष्ण प्रेम द्वैत वंदनीय है बता दे॥ 2773॥
'मैं' रखु 'मेरा' रखु गोविंद राधे।
'मैं दास' 'मेरा स्वामी श्याम' है बता दे॥ 2774॥
मैं दास मेरा स्वामी गोविंद राधे।
COPYRIGHT
शेष मैं मेरा जो हो वाको मिटा दे॥ 2775॥
RADHA GOVIND SAMITI
मैं रखु मेरा रखु गोविंद राधे।
मैं अंश मेरा अंशी श्याम है बता दे॥ 2776॥
मेरा रखु तेरा रखु गोविंद राधे।
मेरा तू है तेरा मैं हूँ श्याम बता दे॥ 2777॥
शंकराचार्य कह गोविंद राधे।
हरि मैं तेरा तू ना मेरा बता दे॥ 2778॥

सिन्धु की तो है तरंग गोविंद राधे।
तरंग का नहिं सिन्धु बता दे॥ 2779॥
शंकर तात्पर्य गोविंद राधे।
हम में तुम में है भेद बता दे॥ 2780॥
भेद बुद्धि माने बिनु गोविंद राधे।
कृष्ण रस भोग असम्भव बता दे॥ 2781॥
ज्ञानी को मृत्यु तक गोविंद राधे।
वेदान्त हरि गुरु वंद्य हैं बता दे॥ 2782॥
ज्ञानी कहे जग मिथ्या गोविंद राधे।
किन्तु संसार तो रहेगा बता दे॥ 2783॥
भक्त कहे सब श्याम गोविंद राधे।
किन्तु संसार तो रहेगा बता दे॥ 2784॥
भक्तों को यह जग गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण युक्त ही दीखे बता दे॥ 2785॥
भक्तिरहित को तो गोविंद राधे।
कृष्ण भी दीखें दुखरूप बता दे॥ 2786॥
भक्तिहीन सब मिथ्या गोविंद राधे।
COPYRIGHT
भक्तियुक्त जग गोलोक बना दे॥ 2787॥
RADHA GOVIND SAMITI
भक्त को भवसिन्धु गोविंद राधे।
अरु गोलोक समान हैं बता दे॥ 2788॥
कछु भोले कह गोविंद राधे।
भक्त को मिले ब्रह्मलोक बता दे॥ 2789॥
ब्रह्मलोक गोलोक गोविंद राधे।
दोनों हैं पर्यायवाची बता दे॥ 2790॥

ज्ञानी भी कर्म त्यागी गोविंद राधे।
भक्त भी वैदिक कर्म त्यागी बता दे॥ 2791 ॥

निराकार ब्रह्मज्ञान गोविंद राधे।
वैदिक धर्म कर्म आपु छुड़ा दे॥ 2792 ॥

साकार कृष्ण प्रेम गोविंद राधे।
निराकार ब्रह्म ज्ञान आपु छुड़ा दे॥ 2793 ॥

दिव्यप्रेम बन्धन गोविंद राधे।
माया मुक्त ज्ञानी को फिर ते बँधा दे॥ 2794 ॥

दिव्यप्रेम बन्धन गोविंद राधे।
ज्ञानी की बिसात क्या है ब्रह्म को बँधा दे॥ 2795 ॥

ज्ञानी है अज्ञानी गोविंद राधे।
ब्रह्म सर्वथा अग्राह्य बता दे॥ 2796 ॥

भक्त कह झूठ यह गोविंद राधे।
आओ ब्रज ऊखल बँधा है दिखा दे॥ 2797 ॥

निगमागमों में यदि गोविंद राधे।
ब्रह्म को ढूँढ़ि थकि गये हो बता दे॥ 2798 ॥

तो आ जावो ब्रज गोविंद राधे।
दिखा दूँ ऊखल बँधा ब्रह्म बता दे॥ 2799 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानी कहे ब्रह्म व्यापी गोविंद राधे।
आओ ब्रज नन्दगाँव घर दिखला दे॥ 2800 ॥

ज्ञानी है अज्ञानी गोविंद राधे।
ब्रह्म अगोचर अलख बता दे॥ 2801 ॥

भक्त कह गोचर गोविंद राधे।
आ लख नन्द घर नाचता दिखा दे॥ 2802 ॥

नंद के आँगन में गोविंद राधे।
वेदान्त सिद्धान्त नृत्य दिखा दे॥ 2803 ॥
ज्ञानी ब्रह्म अलक्षण गोविंद राधे।
प्रेमी कहे ब्रज आ लक्षण बता दे॥ 2804 ॥
गायों के पाछे ब्रह्म गोविंद राधे।
गोधूलि धूसरित वंशी बजा दे॥ 2805 ॥
ज्ञानी ढूँढ़े ब्रह्म वेद गोविंद राधे।
ब्रह्म ढूँढ़े ब्रज श्यामा ज्ञानी को दिखा दे॥ 2806 ॥
दसों दिशाओं में गोविंद राधे।
श्यामा ही दीखें अद्वैत बता दे॥ 2807 ॥
दिव्य प्रेम सिन्धु ऐसा गोविंद राधे।
ज्ञानी को ही नहिं ब्रह्म को भी डुबा दे॥ 2808 ॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
निराकार ब्रह्म नराकार दिखा दे॥ 2809 ॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
घुटुवनि बल ब्रह्म चलता दिखा दे॥ 2810 ॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
मैया को राई नोन वारते दिखा दे॥ 2811 ॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ब्रह्म सिर धूरि लगाते दिखा दे॥ 2812 ॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ब्रह्म तनु पंक लगाते दिखा दे॥ 2813 ॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
मैया को अइया बुलाते दिखा दे॥ 2814 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गोद हित ब्रह्म भू पै लोटता दिखा दे॥ 2815॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
मैया करताल ब्रह्म नाचता दिखा दे॥ 2816॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
मैया के भय ब्रह्म भागता दिखा दे॥ 2817॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
चोरी चोरी माटी खाता ब्रह्म को दिखा दे॥ 2818॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
घर घर नवनि चुराते दिखा दे॥ 2819॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
नवनि चुरा के नंगा भागता दिखा दे॥ 2820॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
साँटी लखि ब्रह्म भागता दिखा दे॥ 2821॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
मैया के डर ते काँपता दिखा दे॥ 2822॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
मैया डर ब्रह्म झूठ बोलता दिखा दे॥ 2823॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ऊखल बँधा मुक्ति माँगता दिखा दे॥ 2824॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ब्रह्म बछरन बतराते दिखा दे॥ 2825॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ग्वारिया का भेष किये ब्रह्म को दिखा दे॥ 2826॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ग्वाल संग गुल्ली डण्डा खेलते दिखा दे ॥ 2827 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
कालिया के फण ब्रह्म नाचता दिखा दे ॥ 2828 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
नंगे पाँव गैया चराते दिखा दे ॥ 2829 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ग्वाल मुख छोरि जूठा खाता दिखा दे ॥ 2830 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
घोड़ा बना ब्रह्म ग्वालों का दिखा दे ॥ 2831 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गली गली ब्रह्म छाछ माँगता दिखा दे ॥ 2832 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गोबर का टीका ब्रह्म मुख में दिखा दे ॥ 2833 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गोपियों के पाछे पाछे डोलता दिखा दे ॥ 2834 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गोपी सिर घट को उठाता दिखा दे ॥ 2835 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
लूटि लूटि दधि खाते ब्रह्म को दिखा दे ॥ 2836 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गोपियों की गारी खाते ब्रह्म को दिखा दे ॥ 2837 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गोपिन चीर चुराते दिखा दे ॥ 2838 ॥

ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गोपी सँग रास रचाते दिखा दे॥ 2839॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
रास में अनन्त रूप ब्रह्म के दिखा दे॥ 2840॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
पग चापता ब्रह्म राधा के दिखा दे॥ 2841॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
'हा राधे' कहि रोता दिखा दे॥ 2842॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
रोता ब्रह्म राधा को मनाता दिखा दे॥ 2843॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
गोपी आगे 'हा हा' खाते ब्रह्म को दिखा दे॥ 2844॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
उज्जैन क, ख, ग, घ पढ़ते दिखा दे॥ 2845॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
अर्जुन रथ ब्रह्म हाँकता दिखा दे॥ 2846॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
रूप विराट दिखाते दिखा दे॥ 2847॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ज्ञानी आदिगुरु तरु बने हैं दिखा दे॥ 2848॥
ज्ञानी यदि माने नाहिं गोविंद राधे।
ब्रह्मा की बुधि भरमाते दिखा दे॥ 2849॥
एक बार श्रीकृष्ण गोविंद राधे।
गोचारण को गये थे बता दे॥ 2850॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यमुना के तट पै गोविंद राधे।
गायों को छोड़ दिया चरने बता दे॥ 2851॥
कृष्ण ने कहा मित्रों गोविंद राधे।
अब हम सब खा पी लें बता दे॥ 2852॥
ग्वालों ने भी कहा गोविंद राधे।
ठीक है चलो सब खा लें बता दे॥ 2853॥
सब ग्वाल निज निज गोविंद राधे।
खाद्य खोलि खोलि लगे खाने बता दे॥ 2854॥
ग्वालों के बीचों बीच गोविंद राधे।
बैठे थे बाल गोपाल बता दे॥ 2855॥
सब ग्वालों के मुख गोविंद राधे।
थे गोपाल की ओर बता दे॥ 2856॥
सब की आँखों में गोविंद राधे।
दर्शन जन्य आनन्द था बता दे॥ 2857॥
ग्वाल परस्पर आपु ही गोविंद राधे।
एक दूसरे को हँसाते बता दे॥ 2858॥
कोई ग्वाल आपु ही गोविंद राधे।
हँसि हँसि लोट पोट होता बता दे॥ 2859॥
उस समय कृष्ण की गोविंद राधे।
झाँकी थी देखने योग्य बता दे॥ 2860॥
कृष्ण ने मुरली को गोविंद राधे।
कमर की फेंट में खोंसा बता दे॥ 2861॥
सींग अरु बेंत को गोविंद राधे।
बगल में दबाकर रक्खा बता दे॥ 2862॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बाँये हाथ में मधुर गोविंद राधे।
घृत मिश्रित दही भात था बता दे॥ 2863॥
अदरक नींबू आदि गोविंद राधे।
अचार भी हाथ में ही था बता दे॥ 2864॥
चटपटी बातों ते गोविंद राधे।
कृष्ण हँसाते थे गोप को बता दे॥ 2865॥
भूख अरु प्यास रहित गोविंद राधे।
कृष्ण ब्रह्म हैं ग्वाल जानें ना बता दे॥ 2866॥
इतने में गायें भी गोविंद राधे।
घास चरते गईं दूर बता दे॥ 2867॥
कृष्ण ने कहा मित्रों गोविंद राधे।
भोजन करो डरो नेकु ना बता दे॥ 2868॥
मैं ही अभी जाके गोविंद राधे।
गायों को ले आता हूँ बता दे॥ 2869॥
ब्रह्मा तो पहले ही गोविंद राधे।
आकाश में विद्यमान थे बता दे॥ 2870॥
ब्रह्मा ग्वाल गाय वत्स गोविंद राधे।
ले गये उठा के माया ते बता दे॥ 2871॥
कृष्ण जब लौटे देखा गोविंद राधे।
खाते हुए ग्वाल भी नहीं थे बता दे॥ 2872॥
कृष्ण ने जान लिया गोविंद राधे।
यह करतूत है ब्रह्मा की बता दे॥ 2873॥
कृष्ण ही ग्वाल गाय गोविंद राधे।
बछड़े आदि सब बन गये बता दे॥ 2874॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ग्वाल गाय आदि थे गोविंद राधे।
संख्या में जितने बने उतने बता दे॥ 2875 ॥
ग्वाल गाय आदि का गोविंद राधे।
जैसा रूप रंग बने वैसा बता दे॥ 2876 ॥
उनकी छड़ी सींग गोविंद राधे।
मुरली आदि बने कृष्ण बता दे॥ 2877 ॥
उनके भूषण वस्त्र गोविंद राधे।
जैसे थे वैसे बने कृष्ण बता दे॥ 2878 ॥
उनके स्वभाव गुण गोविंद राधे।
जैसे थे वैसे बने कृष्ण बता दे॥ 2879 ॥
उनके नाम रूप गोविंद राधे।
जैसे थे वैसे बने कृष्ण बता दे॥ 2880 ॥
उनका खाना पीना गोविंद राधे।
चलना आदि भी था पूर्ववत् बता दे॥ 2881 ॥
आपु ग्वाल आपु गाय गोविंद राधे।
खेले भी आपु आपु संग बता दे॥ 2882 ॥
ग्वाल गाय वत्स आदि गोविंद राधे।
बन कर कृष्ण गये घर को बता दे॥ 2883 ॥
ग्वाल गाय आदि का गोविंद राधे।
पूर्ववत् ही व्यवहार था बता दे॥ 2884 ॥
मुरली की धुनि सुनि गोविंद राधे।
गोप मातायें दौड़ आईं बता दे॥ 2885 ॥
ग्वाल बने कृष्ण ही को गोविंद राधे।
गोद में उठा कर चूमा बता दे॥ 2886 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बार बार चिपटाया गोविंद राधे।
पुनि निज दूध पिलाया बता दे॥ 2887॥
प्रतिदिन ऐसे ही गोविंद राधे।
ग्वाल बनि लौटे श्रीकृष्ण बता दे॥ 2888॥
पूर्व बालकों का सा गोविंद राधे।
सब व्यवहार करें कृष्ण बता दे॥ 2889॥
ग्वाल मातायें भी गोविंद राधे।
निज सुत जानि करें प्रेम बता दे॥ 2890॥
उबटन लगावें अरु गोविंद राधे।
नहलावें और धुलावें बता दे॥ 2891॥
वस्त्र पहिनावें अरु गोविंद राधे।
भाल में लगावें दिठौना बता दे॥ 2892॥
भोजन करावें अरु गोविंद राधे।
भाँति भाँति लाड़ लड़ावें बता दे॥ 2893॥
गायें भी बछड़ों को गोविंद राधे।
पूर्ववत् करें लाड़ प्यार बता दे॥ 2894॥
बछड़ों को जीभ ते गोविंद राधे।
चाटें अरु दूध पिलावें बता दे॥ 2895॥
ग्वालिनों गोपों का गोविंद राधे।
मातृ भाव पूर्ववत् ही था बता दे॥ 2896॥
ग्वालिनों गायों का गोविंद राधे।
निज सुत पै प्रेम अधिक था बता दे॥ 2897॥
प्रेम अधिक क्यों है गोविंद राधे।
ग्वालिनें गाय नाहिं जानीं बता दे॥ 2898॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्ण भी उन जैसा गोविंद राधे।
पुत्र भाव दिखला रहे थे बता दे॥ 2899॥
दिन प्रतिदिन ऐसे गोविंद राधे।
ब्रजवासियों का प्रेम बढ़ा था बता दे॥ 2900॥
एक वर्ष बीत गया गोविंद राधे।
कृष्ण की योगमाया लीला में बता दे॥ 2901॥
जब एक वर्ष में गोविंद राधे।
पाँच छे रातें थीं शेष बता दे॥ 2902॥
तब एक दिन श्याम गोविंद राधे।
राम संग गये गो चराने बता दे॥ 2903॥
गायें गोवर्धन की गोविंद राधे।
घास हरी हरी चर रही थीं बता दे॥ 2904॥
गायों ने गिरि ते ही गोविंद राधे।
निज निज बछड़ों को देखा बता दे॥ 2905॥
पुनि उन गायों के गोविंद राधे।
उर वात्सल्य प्रेम उमड़ा बता दे॥ 2906॥
सब गायें सुध बुध गोविंद राधे।
खो बैठीं भागीं जोर ते बता दे॥ 2907॥
ग्वालों के रोकने ते गोविंद राधे।
रुकी नाहिं और तेज भागीं बता दे॥ 2908॥
गायों के थनों ते तो गोविंद राधे।
दूध की धार थी बहती बता दे॥ 2909॥
पूँछ अरु निज सिर गोविंद राधे।
ऊपर उठा गाय भागीं बता दे॥ 2910॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐसा लग रहा था गोविंद राधे।
मानो गायों के पैर दो बता दे॥ 2911॥
बछड़ों के पास आईं गोविंद राधे।
बड़े चाव ते लगीं चाटने बता दे॥ 2912॥
बूढ़े ग्वाल क्रुद्ध हुए गोविंद राधे।
नीचे देखा निज निज ग्वाल भी बता दे॥ 2913॥
तब क्रोध भाग गया गोविंद राधे।
निज सुत को लगाया उर ते बता दे॥ 2914॥
ग्वाल गाय ग्वालिनों का गोविंद राधे।
देखा वर्धमान प्रेम राम ने बता दे॥ 2915॥
राम को अचम्भा लगा गोविंद राधे।
क्योंकि यह लीला राम जानें ना बता दे॥ 2916॥
बलराम सोचें मन गोविंद राधे।
यह माया देव या दैत्य की बता दे॥ 2917॥
नहीं नहीं यह तो है गोविंद राधे।
मेरे ही कन्हैया की माया बता दे॥ 2918॥
जब दिव्य दृष्टि ते गोविंद राधे।
राम ने देखा सब कृष्ण हैं बता दे॥ 2919॥
राम ने कहा श्याम गोविंद राधे।
तुम ग्वाल गाय रूप क्यों हो बता दे॥ 2920॥
श्याम ने कहा राम गोविंद राधे।
ब्रह्मा का मद मारना है बता दे॥ 2921॥
अब आये ब्रह्मा जी गोविंद राधे।
एक वर्ष बाद पुनि ब्रज में बता दे॥ 2922॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्मा ने देखा सब गोविंद राधे।
एक वर्ष पूर्व की ही दशा है बता दे॥ 2923 ॥
ब्रह्मा ने सोचा मन गोविंद राधे।
यह कौन सी है माया बता दे॥ 2924 ॥
ब्रज के सब ग्वाल गाय गोविंद राधे।
आदि मेरी माया ते सोये हैं बता दे॥ 2925 ॥
वे तो सब सोये हैं गोविंद राधे।
पुनि इत कैसे वैसे दीखें बता दे॥ 2926 ॥
ब्रह्मा ने दोनों ही गोविंद राधे।
स्थानों में देखा दोनों को बता दे॥ 2927 ॥
ज्ञान दृष्टि ते भी गोविंद राधे।
ब्रह्मा नहिं जान पाये मर्म क्या बता दे॥ 2928 ॥
दोनों में पुराने कौन गोविंद राधे।
कौन हैं नये जो बनाये बता दे॥ 2929 ॥
कौन हैं सच्चे अरु गोविंद राधे।
कौन हैं नकली बनावटी बता दे॥ 2930 ॥
जिसकी माया ते गोविंद राधे।
हरि हर सब ही मोहे बता दे॥ 2931 ॥
उनको ही बूढ़े ब्रह्मा गोविंद राधे।
चले थे मोहित करने बता दे॥ 2932 ॥
किन्तु ब्रह्मा अपनी ही गोविंद राधे।
माया ते हुये मोहित बता दे॥ 2933 ॥
सूर्य के प्रकाश में गोविंद राधे।
जुगनू प्रकाश ज्यों खोये बता दे॥ 2934 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐसे ही कृष्ण आगे गोविंद राधे।
ब्रह्मा का हाल बुरा हो गया बता दे॥ 2935॥
ब्रह्मा के सोचते ही गोविंद राधे।
सोचते हुई नई लीला बता दे॥ 2936॥
सब ग्वाल गाय वत्स गोविंद राधे।
ब्रह्मा को दीखे कृष्ण रूप ही बता दे॥ 2937॥
कृष्ण के समान सब गोविंद राधे।
शंख चक्र गदा पद्मयुक्त बता दे॥ 2938॥
सब का था श्याम वर्ण गोविंद राधे।
सब ही थे पीत पट धारी बता दे॥ 2939॥
सबके सिर मोर पंख गोविंद राधे।
कान कुण्डल गल हार बता दे॥ 2940॥
वक्ष में श्री वत्स गोविंद राधे।
बाजुओं में बाजूबंद बता दे॥ 2941॥
कमर में करधनी गोविंद राधे।
पग में नूपुर सुघर बता दे॥ 2942॥
नख ते शिख तक गोविंद राधे।
सब शृंगार था कृष्ण का बता दे॥ 2943॥
मुख मृदु मुसकनि गोविंद राधे।
तिरछी चितवनि सब की बता दे॥ 2944॥
ब्रह्मा ने देखा अन्य गोविंद राधे।
ब्रह्मा विष्णु कर रहे पूजा बता दे॥ 2945॥
अणिमादि आठ सिद्धि गोविंद राधे।
माया विद्या महत् घेरे हैं बता दे॥ 2946॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

काल स्वभाव आदि गोविंद राधे।
कर रहे कृष्ण उपासना बता दे॥ 2947 ॥
सब थे स्वयं प्रकाश गोविंद राधे।
सब अनन्त आनन्दरूप बता दे॥ 2948 ॥
ब्रह्मा ने अब जाना गोविंद राधे।
कृष्ण ही बने हैं सब रूप बता दे॥ 2949 ॥
ब्रह्मा की दशा ऐसी गोविंद राधे।
जैसे हो कोई शिलामूर्ति बता दे॥ 2950 ॥
कृष्ण ने हटाया माया गोविंद राधे।
तब ब्रह्मा को भई चेतना बता दे॥ 2951 ॥
दही भात हाथ लिये गोविंद राधे।
कृष्ण को देखा पुनि पूर्ववत् बता दे॥ 2952 ॥
पुनि ब्रह्माहंस ते गोविंद राधे।
कूदि परे गिरे पद कृष्ण के बता दे॥ 2953 ॥
निज चार मुकुटों ते गोविंद राधे।
कृष्ण पद का किया स्पर्श बता दे॥ 2954 ॥
ऐसे ही देर तक गोविंद राधे।
कृष्ण चरणों में गिरे पड़े थे बता दे॥ 2955 ॥
धीरे धीरे ब्रह्मा उठे गोविंद राधे।
आँसू पोछा अरु किये अस्तुति बता दे॥ 2956 ॥
जब हुआ ब्रह्मा का गोविंद राधे।
मोह भंग, हुआ कृष्णज्ञान बता दे॥ 2957 ॥
तब किया ब्रह्मा ने गोविंद राधे।
कृष्ण भगवान की अस्तुति बता दे॥ 2958 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्मा ने कहा कृष्ण गोविंद राधे।
आप ही एकमात्र सत्य बता दे॥ 2959॥
पुनि मैं हूँ रजोगुणी गोविंद राधे।
आपके स्वरूप को न जानूँ बता दे॥ 2960॥
अपने आप को ही गोविंद राधे।
जग का स्वामी मान बैठा बता दे॥ 2961॥
जग का विधाता मैं गोविंद राधे।
पुनि हूँ अजन्मा यह गर्व था बता दे॥ 2962॥
आपने कृपा किया गोविंद राधे।
मेरा गर्व नष्ट कर दिया है बता दे॥ 2963॥
हे श्रीकृष्ण! अब गोविंद राधे।
मेरा अपराध क्षमा कीजिये बता दे॥ 2964॥
बच्चा माँ के पेट गोविंद राधे।
बार बार हाथ पैर मारे बता दे॥ 2965॥
किन्तु माँ उसको गोविंद राधे।
अपराध माने ना, सुखी हो बता दे॥ 2966॥
ऐसे अज्ञानवश गोविंद राधे।
COPYRIGHT
मेरा अपराध हो क्षम्य बता दे॥ 2967॥
RADHA GOVIND SAMITI
आप तो हैं आत्मा गोविंद राधे।
सब जीवात्माओं की बता दे॥ 2968॥
जीव अरु जगत के गोविंद राधे।
आप ही एकमात्र स्वामी बता दे॥ 2969॥
समस्त लोकों के गोविंद राधे।
आप ही एकमात्र साक्षी बता दे॥ 2970॥

आप की लीला को गोविंद राधे।
केवल आप ही जानें बता दे॥ 2971॥

अजन्मा होके भी गोविंद राधे।
नाना रूप धरें दिव्य बता दे॥ 2972॥

जब योगमाया ते गोविंद राधे।
आप करें जग में लीला बता दे॥ 2973॥

कौन है ऐसा जो गोविंद राधे।
जानि सके लीला रहस्य बता दे॥ 2974॥

आप रहें सब उर गोविंद राधे।
सब के कर्मों के साक्षी बता दे॥ 2975॥

आप की कृपा बिनु गोविंद राधे।
योग ज्ञान जप सब व्यर्थ बता दे॥ 2976॥

ऐसी कृपा करो गोविंद राधे।
सदा रहुँ शरण चरण की बता दे॥ 2977॥

चार हैं अभेद भक्ति गोविंद राधे।
जगत भी ब्रह्म ही है पहली बता दे॥ 2978॥

दूसरी अभेद भक्ति गोविंद राधे।
COPYRIGHT
जग ते परे है ब्रह्म ज्ञानी को बता दे॥ 2979॥
RADHA GOVIND SAMITI

तीसरी अभेद भक्ति गोविंद राधे।
जगत है ब्रह्म वह मैं हूँ बता दे॥ 2980॥

चौथी अभेद भक्ति गोविंद राधे।
जग ते परे है ब्रह्म वह मैं बता दे॥ 2981॥

ज्ञानी कह आत्मा ब्रह्म गोविंद राधे।
भक्त आत्मा की आत्मा ब्रह्म बता दे॥ 2982॥

वेद में आत्मा शब्द गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म दोनों अर्थ में है बता दे॥ 2983॥
वेदों में ब्रह्मवाची गोविंद राधे।
प्राण अरु आकाश शब्द हैं बता दे॥ 2984॥
ब्रह्म पर्यायवाची गोविंद राधे।
तेज आप आदि शब्द भी हैं बता दे॥ 2985॥
ब्रह्म पर्यायवाची गोविंद राधे।
जीव कारण अरु प्रकृति बता दे॥ 2986॥
ब्रह्म पर्यायवाची गोविंद राधे।
परमाणु शब्द अरु विद्या बता दे॥ 2987॥
जीव ज्ञाता ज्ञान रूप गोविंद राधे।
माया ने बनाया अज्ञानी बता दे॥ 2988॥
उत्क्रांति गत्यागति गोविंद राधे।
जीव की, वेद वेदान्त बता दे॥ 2989॥
'स यदा अस्मात्' गोविंद राधे।
मंत्र जीव की उत्क्रान्ति बता दे॥ 2990॥
'ये वै के च' वेद मंत्र गोविंद राधे।
जीव की चन्द्रलोक गति को बता दे॥ 2991॥
'तस्मात् लोकात्' गोविंद राधे।
मंत्र जीव की पुनरागति बता दे॥ 2992॥
वेदान्त का है सूत्र गोविंद राधे।
'उत्क्रांतिगत्यागतीनां' बता दे॥ 2993॥
उत्क्रांति गत्यागति गोविंद राधे।
जीव की विभुता असिद्ध करा दे॥ 2994॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

'एषोणुरात्मा' मंत्र गोविंद राधे।
जीव को विभु नहिं अणु है बता दे॥ 2995॥
'अणु प्रमाणात्' मंत्र गोविंद राधे।
जीव को विभु नहिं अणु है बता दे॥ 2996॥
'बालाग्रशतभागस्य' गोविंद राधे।
जीव को विभु नहिं अणु है बता दे॥ 2997॥
'आराग्रमात्रो ह्यवरः' गोविंद राधे।
मंत्र भी जीव की अणुता बता दे॥ 2998॥
'स वा एष आत्मा' मंत्र गोविंद राधे।
जीव का वास है हृदय में बता दे॥ 2999॥
'अभ्युपगमात्' सूत्र गोविंद राधे।
जीव का निवास है हृदय बता दे॥ 3000॥
गीता पुराण आदि गोविंद राधे।
जीव को अणु हृदयस्थ बता दे॥ 3001॥
कछु ज्ञानी कह जीव गोविंद राधे।
है अनादि नित्य याते अणु ना बता दे॥ 3002॥
विश्व तनु उत्पन्न गोविंद राधे।
क्या दोनों उत्पन्न अणु हैं बता दे॥ 3003॥
यदि अनुत्पन्न तत्व गोविंद राधे।
विभु है तो माया क्या विभु है बता दे॥ 3004॥
'पादोस्य विश्वा' मंत्र गोविंद राधे।
जीव को ब्रह्म का अंश बता दे॥ 3005॥
'अंशो नाना' ब्रह्म सूत्र गोविंद राधे।
जीव को ब्रह्म का अंश बता दे॥ 3006॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

'मंत्र वर्णात्' सूत्र गोविंद राधे।
जीव को ब्रह्म का अंश बता दे॥ 3007॥
कनक मुकुट जैसे गोविंद राधे।
कहे कनक कोई वस्तु ना बता दे॥ 3008॥
ऐसे ब्रह्म अंश जीव गोविंद राधे।
कहे ब्रह्म कोई वस्तु ना बता दे॥ 3009॥
'प्राज्ञेनात्मना' मंत्र गोविंद राधे।
जीव अरु ब्रह्म को पृथक बता दे॥ 3010॥
जीव ब्रह्म भिन्न मंत्र गोविंद राधे।
'प्राज्ञेनात्मनान्वारूढ़:' बता दे॥ 3011॥
'यस्यात्मा शरीरं' गोविंद राधे।
मंत्र जीव ब्रह्म दोनों पृथक बता दे॥ 3012॥
'सोऽश्नुते सर्वान् कामान्' गोविंद राधे।
मंत्र जीव अरु ब्रह्म पृथक बता दे॥ 3013॥
'द्वा सुपर्णा सयुजा' मंत्र गोविंद राधे।
जीव अरु ब्रह्म दोनों पृथक बता दे॥ 3014॥
'समाने वृक्षे' मंत्र गोविंद राधे।
जीव अरु ब्रह्म दो तत्व हैं बता दे॥ 3015॥
'ज्ञाज्ञौ द्वावजा' मंत्र गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म दोनों को पृथक बता दे॥ 3016॥
'क्षरं प्रधानं' मंत्र गोविंद राधे।
जीव अरु ब्रह्म हैं पृथक बता दे॥ 3017॥
'ऋतं पिबंतौ' मंत्र गोविंद राधे।
ब्रह्म है प्रेरक याते भोक्ता बता दे॥ 3018॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

'सर्वाजीवे' वेद मंत्र गोविंद राधे।
जीव अरु ब्रह्म को पृथक बता दे॥ 3019॥

'रसो वै सः' मंत्र गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म दोनों को पृथक बता दे॥ 3020॥

'तमेव विदित्वा' मंत्र गोविंद राधे।
जीव अरु ब्रह्म हैं पृथक बता दे॥ 3021॥

'अथ यदिदमस्मिन्' मंत्र गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म दो तत्व पृथक बता दे॥ 3022॥

'भेदव्यपदेशात्' गोविंद राधे।
सूत्र जीव ते ब्रह्म पृथक बता दे॥ 3023॥

जीव ब्रह्म दो तत्व गोविंद राधे।
'भेदव्यपदेशाच्चान्यः' बता दे॥ 3024॥

'अधिकोपदेशात्' गोविंद राधे।
सूत्र ब्रह्म जीव को तो भिन्न बता दे॥ 3025॥

जीव ब्रह्म भिन्न सूत्र गोविंद राधे।
'अधिकं तु भेदनिर्देशात्' बता दे॥ 3026॥

'मुक्तोपसृप्य व्यपदेशात्' गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म पृथक पृथक ही बता दे॥ 3027॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

'न अणुः अतच्छुतेः' गोविंद राधे।
ब्रह्म सूत्र ब्रह्म का स्वरूप बता दे॥ 3028॥

'स्थित्यदनाभ्यां' गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म दोनों हैं पृथक बता दे॥ 3029॥

'गति शब्दाभ्यां' गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म दोनों को पृथक बता दे॥ 3030॥

यदि जीव ब्रह्म ही है गोविंद राधे।
तो कैसे मायाधीन हुआ है बता दे॥ 3031॥
ब्रह्म प्रकाश नाश गोविंद राधे।
अज्ञान ते ब्रह्म नाश बता दे॥ 3032॥
कोई कह ब्रह्म में गोविंद राधे।
हो गया प्रविष्ट अज्ञान बता दे॥ 3033॥
कोई कह ब्रह्म ही गोविंद राधे।
हो गया प्रविष्ट अज्ञान में बता दे॥ 3034॥
उपर्युक्त दोनों ही गोविंद राधे।
सर्वथा असंभव ही हैं बता दे॥ 3035॥
ब्रह्म प्रकाश रूप गोविंद राधे।
अज्ञान तम रूप वेद बता दे॥ 3036॥
'वेदाहमेतं' मंत्र गोविंद राधे।
तम ते परे प्रकाश ब्रह्म बता दे॥ 3037॥
ब्रह्म अरु अज्ञान गोविंद राधे।
दोनों परस्पर विरोधी बता दे॥ 3038॥
तम ते हो रस्सी में गोविंद राधे।
द्रष्टा को ही भय सर्प का बता दे॥ 3039॥
द्रष्टा न माने सर्प गोविंद राधे।
आपु को ही जग में कबहूँ बता दे॥ 3040॥
नवजात शिशु जग गोविंद राधे।
माता पिता को नहिं जाने बता दे॥ 3041॥
याते न नर शिशु गोविंद राधे।
पशु पक्षी बनि जाये बता दे॥ 3042॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आग को न जाने शिशु गोविंद राधे।
याते न शीतल आग हो बता दे॥ 3043 ॥
यदि अज्ञान नित्य गोविंद राधे।
हो अद्वैत की सिद्धि ना बता दे॥ 3044 ॥
यदि अज्ञान सादि गोविंद राधे।
सांत तो पुनि आ जाये बता दे॥ 3045 ॥
यदि साद्यनंत कह गोविंद राधे।
अज्ञान तो कभु जाये ना बता दे॥ 3046 ॥
जो अनादि सांत कह गोविंद राधे।
ब्रह्म ते प्रकट जग नित्य बता दे॥ 3047 ॥
तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
तुझमें षडैश्वर्य कहाँ है बता दे॥ 3048 ॥
तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
तू सर्व व्यापक कहाँ है बता दे॥ 3049 ॥
तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
सर्वज्ञता तेरी कहाँ है बता दे॥ 3050 ॥
तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
तू जग स्रष्टा आदि कहाँ है बता दे॥ 3051 ॥
तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
तू भी मायाधीश है क्या बता दे॥ 3052 ॥
तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
ब्रह्म को भी भ्रम हुआ कैसे बता दे॥ 3053 ॥
तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
ज्ञान को भी अज्ञान कैसे मिटा दे॥ 3054 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
सर्वनियन्ता तू कहाँ है बता दे॥ 3055॥
तू ब्रह्म कैसे है गोविंद राधे।
वेद तो जीव ब्रह्म पृथक बता दे॥ 3056॥
आत्मा तो नित्य शुद्ध गोविंद राधे।
अव्यय क्षेत्रज्ञ आश्रय बता दे॥ 3057॥
आत्मा तो अविकारी गोविंद राधे।
अनावृत हेतु तनु व्यापी बता दे॥ 3058॥
जीव ज्ञानाश्रय गोविंद राधे।
ज्ञान गुण अरु चेतन है बता दे॥ 3059॥
नर, पशु, पक्षी आदि गोविंद राधे।
तब लौं जीव जब लौं चेतना बता दे॥ 3060॥
चेतना के जाते ही गोविंद राधे।
जग उसे जीव नहिं मृतक बता दे॥ 3061॥
याते जीव के साथ गोविंद राधे।
चेतना का सम्बन्ध नित्य है बता दे॥ 3062॥
जीव का चेतन ते है गोविंद राधे।
सम्बन्ध जड़ ते नहीं है बता दे॥ 3063॥
महाप्रलय में तो गोविंद राधे।
जीव ही रहे जड़ देह ना बता दे॥ 3064॥
जीव अजन्मा है गोविंद राधे।
एक रूप, प्रकृति ते परे है बता दे॥ 3065॥
कछु अद्वैती कह गोविंद राधे।
नाना जीव कछु एक जीव है बता दे॥ 3066॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जीव तो हैं अनंत गोविंद राधे।
एक मरे तो सब मरें ना बता दे॥ 3067॥

जीव ईश्वराधीन गोविंद राधे।
जीवों की संख्या असंख्य बता दे॥ 3068॥

कछु अद्वैती कह गोविंद राधे।
जीव तो है सर्वव्यापी बता दे॥ 3069॥

जीव सर्वव्यापक गोविंद राधे।
तो ईश्वराधीन कैसे बता दे॥ 3070॥

कछु ज्ञानी ब्रह्म का ही गोविंद राधे।
प्रवेश अरु तादात्म्य बता दे॥ 3071॥

'स एवायं' वेदमंत्र गोविंद राधे।
जीव तनु प्रवेश तादात्म्य बता दे॥ 3072॥

'यतो वा इमानि' मंत्र गोविंद राधे।
कह ईश्वरजात जीव है बता दे॥ 3073॥

ईश्वर है कारण गोविंद राधे।
जीव है उसका कार्य बता दे॥ 3074॥

कारण तो कार्य का गोविंद राधे।
सदा ही नियामक होय बता दे॥ 3075॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

याते ईश्वर ही गोविंद राधे।
जीव का नियामक सिद्ध है बता दे॥ 3076॥

जीव यदि व्यापक गोविंद राधे।
ईश्वर शासक हो ना बता दे॥ 3077॥

ईश्वर शासक है गोविंद राधे।
जीव है ईश्वर शास्य बता दे॥ 3078॥

न्याय, सांख्य, अद्वैती गोविंद राधे।
आत्मा को विभु, भक्त अणु है बता दे॥ 3079॥
जीव अणु चित्कण गोविंद राधे।
अच्छेद्य अरु अक्लेद्य बता दे॥ 3080॥
जीव ज्ञाता कर्ता भोक्ता गोविंद राधे।
दह्य शोष्य भी ना अक्षर है बता दे॥ 3081॥
आत्मा जो कर्ता नहिं गोविंद राधे।
तो वेदान्त ज्ञान किसको बता दे॥ 3082॥
आत्मा है कर्ता मंत्र गोविंद राधे।
'मुमुक्षुर्ब्रह्मोपासीत' बता दे॥ 3083॥
'यजेत स्वर्गकामः' गोविंद राधे।
मंत्र कह आत्मा कर्ता बता दे॥ 3084॥
'कर्ता शास्त्रार्थवत्' गोविंद राधे।
ब्रह्म सूत्र कह जीव कर्ता बता दे॥ 3085॥
जीव अकर्ता तो गोविंद राधे।
वेदादि उपदेश क्यों हैं बता दे॥ 3086॥
जीव को शास्त्र वेद गोविंद राधे।
ज्ञाता अरु ज्ञान स्वरूप बता दे॥ 3087॥
'एष हि द्रष्टा' मंत्र गोविंद राधे।
जीव को द्रष्टा, ज्ञाता, कर्ता बता दे॥ 3088॥
मायायुक्त जीव कर्ता गोविंद राधे।
केवल जीव तो अकर्ता बता दे॥ 3089॥
अद्वैत मत ते तो गोविंद राधे।
ब्रह्म प्रतिबिम्ब ईश्वर है बता दे॥ 3090॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म तो है निष्क्रिय गोविंद राधे।
प्रतिबिम्ब ईश्वर स्रष्टा क्यों बता दे॥ 3091॥

ब्रह्म में अनंत शक्ति गोविंद राधे।
अद्वैती निःशक्तिक बता दे॥ 3092॥

ब्रह्म यदि प्रकाशमात्र गोविंद राधे।
आनन्द उसमें कैसे हो बता दे॥ 3093॥

अनुकूल अनुभूति गोविंद राधे।
आनन्द कहलाता है बता दे॥ 3094॥

प्रकाश की तो नहिं गोविंद राधे।
अनुकूल अनुभूति होती बता दे॥ 3095॥

ब्रह्म अव्यक्त शक्तिक गोविंद राधे।
स्वरूप शक्ति व्यक्त ना हो बता दे॥ 3096॥

सत्ता अरु आनन्द गोविंद राधे।
रक्षा के हेतु शक्ति ब्रह्म में बता दे॥ 3097॥

षडैश्वर्य पूर्ण ब्रह्म गोविंद राधे।
अद्वैती निराकार ही बता दे॥ 3098॥

कल्पित अर्थ द्वारा गोविंद राधे।
कछु अद्वैती जग भ्रम फैला दे॥ 3099॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म सूत्र मुख्य अर्थ गोविंद राधे।
तजि अद्वैती गौण अर्थ बता दे॥ 3100॥

ब्रह्मसूत्र सूर्य सम गोविंद राधे।
अद्वैत अर्थ मेघाच्छन्न करा दे॥ 3101॥

अभिधा वृत्ति तजि गोविंद राधे।
लक्षणा वृत्ति ते अर्थ करा दे॥ 3102॥

प्रमुख प्रमाण वेद गोविंद राधे।
कछु अद्वैती व्यावहारिक बता दे॥ 3103॥
स्वतःप्रमाण वेद गोविंद राधे।
लक्षणावृत्ति वेद अर्थ नसा दे॥ 3104॥
केवलाद्वैतवादी गोविंद राधे।
सिद्धान्त ब्रह्म निःशक्तिक बता दे॥ 3105॥
यदि ब्रह्म निःशक्तिक गोविंद राधे।
संकल्प करने में अक्षम बता दे॥ 3106॥
ब्रह्म संकल्पहीन गोविंद राधे।
सृष्टि कर्म में हो अक्षम बता दे॥ 3107॥
विधि हरि हर तीनों गोविंद राधे।
जगत की सृष्टि रक्षा प्रलय करा दे॥ 3108॥
विधि हरि हर में तो गोविंद राधे।
व्याप्त कृष्ण ही तीनों कर्म करा दे॥ 3109॥
तनु चालक आत्मा ज्यों गोविंद राधे।
जग चालक त्यों हरि हैं बता दे॥ 3110॥
'तस्य त्वं' उसका तू गोविंद राधे।
'तत्वमसि' मंत्र का अर्थ बता दे॥ 3111॥
'तस्मात् त्वं' उससे तू गोविंद राधे।
'तत्वमसि' मंत्र का अर्थ बता दे॥ 3112॥
कारणावस्थ तत् गोविंद राधे।
कार्यावस्थ ब्रह्म त्वं है बता दे॥ 3113॥
'तत्त्वमसि' मंत्र में तो गोविंद राधे।
'तत्' श्रीकृष्ण 'त्वं' है जीव बता दे॥ 3114॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म तो है मायाधीश गोविंद राधे।
जीव मायाधीन कैसे अंश बता दे॥ 3115॥

ब्रह्म तो अखण्ड रूप गोविंद राधे।
उसका खण्ड अंश जीव कैसे बता दे॥ 3116॥

ब्रह्म शक्ति परा जीव गोविंद राधे।
याते ब्रह्म अंश जीव कहा है बता दे॥ 3117॥

हरि के बिना नाहिं गोविंद राधे।
जीव की कोई सत्ता बता दे॥ 3118॥

अग्नि न हो जो तो गोविंद राधे।
चिनगारी की सत्ता क्या है बता दे॥ 3119॥

सिन्धु न हो जो तो गोविंद राधे।
तरंग की है क्या सत्ता बता दे॥ 3120॥

जलनिधि एक है गोविंद राधे।
उसकी तरंगें अनंत बता दे॥ 3121॥

ऐसे हरि एक ही हैं गोविंद राधे।
उनके हैं जीव अनन्त बता दे॥ 3122॥

नाता तो तरंगों का गोविंद राधे।
जलनिधि ते ही होता नित्य बता दे॥ 3123॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐसे ही जीवों का गोविंद राधे।
नाता हरि ही ते है रहेगा बता दे॥ 3124॥

क्षर ब्रह्म को गुह्य गोविंद राधे।
अक्षर गुह्यतर गीता बता दे॥ 3125॥

क्षर ते अतीत अरु गोविंद राधे।
अक्षर अतीत पुरुषोत्तम बता दे॥ 3126॥

पुरुषोत्तम ब्रह्म गोविंद राधे।
गुह्यतम सर्वश्रेष्ठ गीता बता दे॥ 3127॥

ब्रह्म मन बुद्धि पर गोविंद राधे।
याते है अनिर्वचनीय बता दे॥ 3128॥

चर्म चक्षु ग्राह्य नहिं गोविंद राधे।
याते वेद कृष्ण को अरूप बता दे॥ 3129॥

'यः सर्वज्ञः' मंत्र गोविंद राधे।
ब्रह्म को सगुण साकार बता दे॥ 3130॥

वेदान्त सूत्र कह गोविंद राधे।
'ज्ञोऽतएव' ब्रह्म सर्वज्ञ बता दे॥ 3131॥

शंकर कह पूर्व ते गोविंद राधे।।
पर मंत्र हो बलवान बता दे॥ 3132॥

'अपहृतपाप्मा' मंत्र गोविंद राधे।
ब्रह्म को सत्य संकल्प बता दे॥ 3133॥

यदि पर बलवान गोविंद राधे।
ब्रह्म सत्य संकल्प मान लो बता दे॥ 3134॥

ब्रह्म की सत्ता है गोविंद राधे।
COPYRIGHT
सत्ता युक्त ब्रह्म सविशेष है बता दे॥ 3135॥
RADHA GOVIND SAMITI

'परास्य शक्तिः' मंत्र गोविंद राधे।
ब्रह्म में ज्ञान बल क्रिया है बता दे॥ 3136॥

हरि की अनन्त शक्ति गोविंद राधे।
ज्ञान इच्छा क्रिया तीन मुख्य बता दे॥ 3137॥

ज्ञान शक्ति संवित् है गोविंद राधे।
बल संधिनी क्रिया ह्लादिनी बता दे॥ 3138॥

'सोऽकामयत' मंत्र गोविंद राधे।
कह प्रकृति सृष्टि का हेतु ना बता दे॥ 3139॥
यदि तत् सशक्तिक न गोविंद राधे।
सृष्टि संकल्प कैसे करेगा बता दे॥ 3140॥
प्रकाश रूप ब्रह्म गोविंद राधे।
अविद्या अधीन ब्रह्म नाश बता दे॥ 3141॥
'भोगमात्रसाम्य' सूत्र गोविंद राधे।
ब्रह्म जीव सुख में ही समता बता दे॥ 3142॥
'जगद्व्यापार' सूत्र गोविंद राधे।
ब्रह्म को ही सृष्टि अधिकार बता दे॥ 3143॥
सृष्टि कर्म आपु करे गोविंद राधे।
आनन्द मात्र भोग जीव को करा दे॥ 3144॥
ब्रह्म में हैं आठ गुण गोविंद राधे।
याते ब्रह्म निर्गुण सगुण बता दे॥ 3145॥
ब्रह्म में आठ गुण गोविंद राधे।
स्वभावतः रहते नित्य बता दे॥ 3146॥
भक्तों को आठ गुण गोविंद राधे।
भगवत्कृपा ते ही मिलते बता दे॥ 3147॥
मुक्त के आठ गुण गोविंद राधे।
परमात्मा आधीन बता दे॥ 3148॥
अगणित दिव्य गुण गोविंद राधे।
हरि में हैं याते हरि सगुण बता दे॥ 3149॥
माया के तीन गुण गोविंद राधे।
हरि में नहीं हैं याते निर्गुण बता दे॥ 3150॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

'अथ यदिदं' मंत्र में गोविंद राधे।
दहराकाश गुण ही ब्रह्म बता दे॥ 3151॥
शरीर ब्रह्मपुर गोविंद राधे।
हृदय ही है ब्रह्म का निज घर बता दे॥ 3152॥
हृदय में दहराकाश गोविंद राधे।
वही है ब्रह्म गुण आठ बता दे॥ 3153॥
ब्रह्म सत्यसंकल्प गोविंद राधे।
याते निराकार साकार बता दे॥ 3154॥
ब्रह्म सत्यसंकल्प गोविंद राधे।
याते निर्विशेष सविशेष बता दे॥ 3155॥
ब्रह्म है सविशेष गोविंद राधे।
निर्दोष नित्य परमेश्वर बता दे॥ 3156॥
ब्रह्म सत्य संकल्प गोविंद राधे।
याते सगुण निर्गुण भी बता दे॥ 3157॥
ब्रह्म की स्वरूप शक्ति गोविंद राधे।
ब्रह्म को सगुण साकार बना दे॥ 3158॥
भक्तों की वृत्ति ते गोविंद राधे।
निर्गुण ब्रह्म भी हो सगुण बता दे॥ 3159॥
सर्वकल्याण गुणी गोविंद राधे।
स्रष्टा सर्वान्तर्यामी बता दे॥ 3160॥
ब्रह्म है मोक्षप्रद गोविंद राधे।
व्यापक उपास्य दिव्य रूप बता दे॥ 3161॥
अति दुःखमय जग गोविंद राधे।
हरि व्याप्त कैसे रहते बता दे॥ 3162॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग में हैं व्याप्त हरि गोविंद राधे।
हरि को न व्यापै जग काहे बता दे॥ 3163॥
जग में हैं व्यापक गोविंद राधे।
फिर भी योगमाया निर्लेप बना दे॥ 3164॥
ब्रह्म स्वरूप शक्ति गोविंद राधे।
असम्भव को भी सम्भव बना दे॥ 3165॥
स्वरूप शक्ति ते ही गोविंद राधे।
बहिरंगा माया करे सृष्टि बता दे॥ 3166॥
स्वरूप शक्ति ते ही गोविंद राधे।
हरि के असंख्य अवतार बता दे॥ 3167॥
हरि है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते हैं विरोधी धर्म वेद में बता दे॥ 3168॥
हरि विश्व विश्वेश गोविंद राधे।
विश्वेश्वरेश विश्व कारण बता दे॥ 3169॥
विश्वाधार विश्वस्थ गोविंद राधे।
विश्व के कारण का कारण बता दे॥ 3170॥
विश्व के जनक हरि गोविंद राधे।
विश्व रक्षक विश्वघ्न बता दे॥ 3171॥
नित्य का नित्य हरि गोविंद राधे।
सब चेतनों का चेतन बता दे॥ 3172॥
वेद में सच्च त्यच्च गोविंद राधे।
परोक्ष अरु प्रत्यक्ष को बता दे॥ 3173॥
निरुक्त अनिरुक्त गोविंद राधे।
वेद में वाच्य अनिर्वाच्य बता दे॥ 3174॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निलयन अनिलयन गोविंद राधे।
वेद में आश्रित अनाश्रित बता दे॥ 3175॥

विज्ञान अविज्ञान गोविंद राधे।
वेद में चेतन अरु जड़ को बता दे॥ 3176॥

अदृष्ट दृष्ट भी है गोविंद राधे।
अव्यवहार्य व्यवहार्य भी बता दे॥ 3177॥

अचिन्त्य भी चिन्त्य भी गोविंद राधे।
अग्राह्य ग्राह्य भी है ब्रह्म बता दे॥ 3178॥

हरि है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
कर्ता होकर भी अकर्ता बता दे॥ 3179॥

हरि है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
होके अकर्ता भी कर्ता बता दे॥ 3180॥

ब्रह्म है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते अणु और महान बता दे॥ 3181॥

ब्रह्म है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते है अनीह कर्मकर्ता भी बता दे॥ 3182॥

ब्रह्म है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते है अजन्मा जन्म भी है बता दे॥ 3183॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते नर वपु व्यापक भी बता दे॥ 3184॥

ब्रह्म है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते है न्यायी भी कृपालु भी बता दे॥ 3185॥

ब्रह्म है विरुद्ध धर्मी गोविंद राधे।
याते आत्माराम रास कर्ता भी बता दे॥ 3186॥

वसुदेव देवकी तो गोविंद राधे।
थे कंस कारागार में बता दे॥ 3187॥
आपु करे रास लीला गोविंद राधे।
हरि गति अपरम्पार बता दे॥ 3188॥
वेद कहे हरि तो हैं गोविंद राधे।
काल के भी काल महाकाल बता दे॥ 3189॥
सोई मैया बाबा तजि गोविंद राधे।
रातों रात भाजे गोकुल को बता दे॥ 3190॥
गोकुल तजि भाजे गोविंद राधे।
असुरन डर नँदगाँव को बता दे॥ 3191॥
जाते डरे डर वाको गोविंद राधे।
मैया की पतरी सी साँटी रुला दे॥ 3192॥
हरि तो अजित जित गोविंद राधे।
रणछोर नाम कैसे पड़ा ये बता दे॥ 3193॥
जाते डरे डर सोई गोविंद राधे।
जरासन्ध भय भागे द्वारिका बता दे॥ 3194॥
बड़े ते बड़े कृष्ण गोविंद राधे।
अणु ते भी अणु बन जायें बता दे॥ 3195॥
विज्ञ सर्वज्ञ कृष्ण गोविंद राधे।
अज्ञ अल्पज्ञ बन जायें बता दे॥ 3196॥
यह माधुर्य रस गोविंद राधे।
रसिक हि जाने जाने ज्ञानी ना बता दे॥ 3197॥
हरि कर्म दिव्य सब गोविंद राधे।
जीव बुद्धि प्राकृत कर्म प्राकृत बता दे॥ 3198॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जीव कर्म माया ते हो गोविंद राधे।
हरि कर्म दिव्य योगमाया करा दे॥ 3199॥
हरि तो है चिदानंद गोविंद राधे।
जीव मायाधीन वाको दोष बता दे॥ 3200॥
बुद्धि यदि जाने हरि गोविंद राधे।
ज्ञानी जन बुधि को ही ब्रह्म बता दे॥ 3201॥
हरि को को जानि सके गोविंद राधे।
ब्रह्मा सा ज्ञानी जब ज्ञान गमा दे॥ 3202॥
नेति कह श्रुति छन्द गोविंद राधे।
वाणी की हो वाणी बन्द हरि ही जना दे॥ 3203॥
इन्द्रिय पर मन गोविंद राधे।
मन बुधि ते परे हरि है बता दे॥ 3204॥
बुद्धि का प्रकाशक गोविंद राधे।
बुद्धि है प्रकाश्य कैसे ज्ञान करा दे॥ 3205॥
शारदा न जाने वाको गोविंद राधे।
जाने भगवान भगवान को बता दे॥ 3206॥
कागभुशुंडी गरुड़ गोविंद राधे।
पक्षी भी जाने यदि हरि ही जना दे॥ 3207॥
पाया न अंत कोई गोविंद राधे।
कृष्ण का कृष्ण ने भी वेद बता दे॥ 3208॥
सगुण साकार रूप गोविंद राधे।
ज्ञान अनिवार्य ज्ञान प्रेम करा दे॥ 3209॥
हरि ज्ञान ते हो प्रेम गोविंद राधे।
प्रेम मन शुद्ध करि प्रेम दिला दे॥ 3210॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञान ते हो परतीति गोविंद राधे।
परतीति ते प्रीति याते जना दे॥ 3211॥

साकार नित्यानित्य गोविंद राधे।
क्योंकि हरि दो विरोधी धर्मी बता दे॥ 3212॥

साकार दो प्रकार गोविंद राधे।
एक उपाधि युक्त जगत बता दे॥ 3213॥

साकार दूसरा है गोविंद राधे।
निरुपाधि हरि का स्वरूप बता दे॥ 3214॥

सृष्टिपूर्व ब्रह्म ने गोविंद राधे।
सोचा भी देखा भी कैसे बता दे॥ 3215॥

सृष्टिपूर्व मन नेत्र गोविंद राधे।
प्राकृत बने ही नहीं थे समझा दे॥ 3216॥

याते हरि मन नेत्र गोविंद राधे।
दिव्य चिन्मय ही रहे होंगे बता दे॥ 3217॥

शरीरेन्द्रिय मन गोविंद राधे।
हरि के हैं दिव्य याते रहित बता दे॥ 3218॥

पुराण इतिहास गोविंद राधे।
COPYRIGHT
हरि को सगुण साकार बता दे॥ 3219॥
RADHA GOVIND SAMITI

'अपाणिपादो' अर्थ गोविंद राधे।
प्राकृत इन्द्रिय ना दिव्य हैं बता दे॥ 3220॥

वेद कहे सृष्टिपूर्व गोविंद राधे।
ब्रह्म ने देखा याते तनु है बता दे॥ 3221॥

वेद कहे सृष्टिपूर्व गोविंद राधे।
ब्रह्म मुस्कुराया याते तनु है बता दे॥ 3222॥

वेद कहे सृष्टिपूर्व गोविंद राधे।
ब्रह्म निःश्वसित याते तनु है बता दे॥ 3223॥
वेद कहे सृष्टिपूर्व गोविंद राधे।
ब्रह्म सोया था याते तनु है बता दे॥ 3224॥
वेद कहे सृष्टिपूर्व गोविंद राधे।
ब्रह्म ने की इच्छा तनु है बता दे॥ 3225॥
वेद कहे यक्ष रूप गोविंद राधे।
देवों ने देखा याते तनु है बता दे॥ 3226॥
वेद कहे यक्ष रूप गोविंद राधे।
हरि ने की बात याते तनु है बता दे॥ 3227॥
वेद कहे यक्ष रूप गोविंद राधे।
उमा ने बताया ब्रह्म ही था बता दे॥ 3228॥
ब्रह्म एक रूप दो हैं गोविंद राधे।
मूर्त अरु अमूर्त ज्ञानियों को बता दे॥ 3229॥
ब्रह्म निराकार ही या गोविंद राधे।
साकार ही दोनों भोले बता दे॥ 3230॥
ब्रह्म निराकार भी है गोविंद राधे।
ब्रह्म साकार भी है तत्व बता दे॥ 3231॥
निराकार तो अकर्ता गोविंद राधे।
साकार कर्ता निज जन को कृपा दे॥ 3232॥
कोउ कहे ब्रह्म तो है गोविंद राधे।
निर्गुण अरु निराकार बता दे॥ 3233॥
कोउ कहे ब्रह्म तो है गोविंद राधे।
सगुण अरु निराकार बता दे॥ 3234॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कोउ कहे ब्रह्म तो है गोविंद राधे।
सगुण अरु साकार बता दे॥ 3235 ॥
उपर्युक्त तीनों मत गोविंद राधे।
सत्य हैं ब्रह्म स्वरूप हैं बता दे॥ 3236 ॥
ब्रह्म बहुरूपिया है गोविंद राधे।
जब जैसा चाहे वैसा रूप बना दे॥ 3237 ॥
एक रूप होके भी गोविंद राधे।
बहु रूप रूप सब पूर्ण बता दे॥ 3238 ॥
ब्रह्म की तो कौन कहे गोविंद राधे।
जीव लख चौरासी रूप बना दे॥ 3239 ॥
ब्रह्म का शरीर नहिं गोविंद राधे।
ब्रह्म का शरीर ब्रह्म ही है बता दे॥ 3240 ॥
निर्गुण शुद्ध ब्रह्म गोविंद राधे।
आनन्द रूप है ज्ञानी को बता दे॥ 3241 ॥
सगुण श्रीकृष्ण ब्रह्म गोविंद राधे।
आनँदकंद स्वरूप है बता दे॥ 3242 ॥
याही ते श्रीकृष्ण रस गोविंद राधे।
निराकार ब्रह्म ते भी सरस बता दे॥ 3243 ॥
साधारण मिट्टी सम गोविंद राधे।
निर्गुण निराकार ब्रह्म बता दे॥ 3244 ॥
विशिष्ट हीरा सम गोविंद राधे।
सगुण साकार श्री कृष्ण बता दे॥ 3245 ॥
आँख ते दीखे जैसे गोविंद राधे।
सूर्य ज्ञानी को वैसे ब्रह्म बता दे॥ 3246 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दूरबीन ते ज्यों सूर्य गोविंद राधे।
दीखे त्यों भक्त हरि रूप दिखा दे॥ 3247 ॥
सूर्य का स्वरूप जैसे गोविंद राधे।
दूरवीक्षण यंत्र स्पष्ट दिखा दे॥ 3248 ॥
ऐसे ही योगमाया गोविंद राधे।
ब्रह्म ते मधुर कृष्णरूप दिखा दे॥ 3249 ॥
याते ब्रह्मलीन जन गोविंद राधे।
कृष्णरूप में आपु मुग्ध हों बता दे॥ 3250 ॥
ब्रह्म के हैं तीन रूप गोविंद राधे।
ब्रह्म परमात्मा भगवान बता दे॥ 3251 ॥
ब्रह्म के स्वरूप तीन गोविंद राधे।
तीनों एक किन्तु कर्म पृथक बता दे॥ 3252 ॥
जल, वारि, सलिल तो गोविंद राधे।
एक ही के पर्यायवाची बता दे॥ 3253 ॥
जल, बर्फ, भाप में तो गोविंद राधे।
भेद है लक्षण विशेष का बता दे॥ 3254 ॥
वस्तु का परिचय तो गोविंद राधे।
होता है विशेष लक्षण ते बता दे॥ 3255 ॥
ब्रह्म के तीन रूप गोविंद राधे।
जैसे आम देखा सूँघा चूसा बता दे॥ 3256 ॥
ब्रह्म के तीन रूप गोविंद राधे।
जैसे दूध देखा छुआ पिया भी बता दे॥ 3257 ॥
ब्रह्म स्वरूप मधुर गोविंद राधे।
परमात्मा स्वरूप मधुरतर बता दे॥ 3258 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

केवल ऐश्वर्य गोविंद राधे।
भगवत्स्वरूप कोई होता ना बता दे॥ 3259॥

परमात्मा साकार गोविंद राधे।
उनके न लीला है न परिकर बता दे॥ 3260॥

मधुरतम स्वरूप तो है गोविंद राधे।
भगवान श्रीकृष्ण का ही बता दे॥ 3261॥

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
भोले भाले भव को भवानी बना दे॥ 3262॥

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
अचर को चर चर अचर बना दे॥ 3263॥

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
जैसा हरि का ही स्वरूप बता दे॥ 3264॥

हरि के स्वरूप जैसा गोविंद राधे।
कोई हुआ ना है ना होगा बता दे॥ 3265॥

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
निज प्रतिबिम्ब लखि आपा भुला दे॥ 3266॥

द्वारिका की मणि भित्ति गोविंद राधे।
लखि प्रतिबिम्ब हरि मुग्ध करा दे॥ 3267॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
जाको हरि ही चाहे वाको दिखा दे॥ 3268॥

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
ब्रह्मा भी ब्रह्मज्ञान ब्रज में भुला दे॥ 3269॥

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
सुरपति पूजा ब्रज बन्द करा दे॥ 3270॥

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
विश्व विमोहन काम को हरा दे॥ 3271॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
खड़े खड़े देखे जो भी धरा पै गिरा दे॥ 3272॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
ब्रह्मलीन को भी प्रेमसिन्धु में डुबा दे॥ 3273॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
ब्रह्मलीन को भी ब्रज वृक्ष बना दे॥ 3274॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
जाकी भावना हो जैसी वैसा दिखा दे॥ 3275॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
जाकी कोइ माधुर्य सीमा न बता दे॥ 3276॥
बार बार देखने ते गोविंद राधे।
जग रूप रस घटि जात बता दे॥ 3277॥
बार बार देखने ते गोविंद राधे।
हरि रूप रस बढ़ि जात बता दे॥ 3278॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
राधा जाने किन्तु मुख ते ना बता दे॥ 3279॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
आत्मज्ञानी को ब्रह्मज्ञानी बना दे॥ 3280॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
जनक विदेह को सदेह बना दे॥ 3281॥
हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
शुक सनकादि समाधि भुला दे॥ 3282॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि का स्वरूप ऐसा गोविंद राधे।
श्री परमहंस परमहंस को बना दे॥ 3283॥

हरि के चरित्र सुनि गोविंद राधे।
मुक्त को मिले हरिभक्ति बता दे॥ 3284॥

'मुक्ता अपि हि' मंत्र गोविंद राधे।
मुक्त तनु धरि करे भक्ति बता दे॥ 3285॥

'मुक्तोपसृप्य' सूत्र गोविंद राधे।
कह मुक्त भी करे भक्ति बता दे॥ 3286॥

'मुक्ता अपि लीलया' गोविंद राधे।
शंकराचार्य की है उक्ति बता दे॥ 3287॥

भाव यह मुक्त भी गोविंद राधे।
तनु धरि करे हरि भक्ति बता दे॥ 3288॥

मुक्तों के शरीर नहिं गोविंद राधे।
है भी शरीर दोनों व्यास बता दे॥ 3289॥

मुक्त तो ब्रह्मलीन गोविंद राधे।
मन ते रहित इच्छा कैसे बता दे॥ 3290॥

पुनि निज इच्छा ते गोविंद राधे।
तनु धारण करे कैसे बता दे॥ 3291॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति या भक्त की गोविंद राधे।
कृपा ते भक्त देह प्राप्त हो बता दे॥ 3292॥

हरि कृपा वाला गुण गोविंद राधे।
ब्रह्मलीन ज्ञानी को भी प्रेमी बना दे॥ 3293॥

शुक सनकादि मुक्त गोविंद राधे।
हरि कथा के हुये हैं रसिक बता दे॥ 3294॥

हरि के चरित्र सुनि गोविंद राधे।
मुमुक्षु को मिले मुक्ति बता दे॥ 3295॥
दो हैं मुमुक्षु जन गोविंद राधे।
एक मन शुद्धि हेतु भक्ति करा दे॥ 3296॥
दूसरा मुमुक्षु है गोविंद राधे।
शुद्ध मन ते लक्ष्य प्राप्त करा दे॥ 3297॥
हरि के चरित्र सुनि गोविंद राधे।
विषयी को मिले मुक्ति बता दे॥ 3298॥
कृष्ण कथा मुक्त बद्ध गोविंद राधे।
और मुमुक्षु को लक्ष्य दिला दे॥ 3299॥
निर्गुण ब्रह्म की हैं गोविंद राधे।
कृष्ण ही प्रतिष्ठा यह गीता बता दे॥ 3300॥
कृष्ण तो हैं सूर्य सम गोविंद राधे।
आतप निराकार ब्रह्म है बता दे॥ 3301॥
'ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठा' गोविंद राधे।
भाव घनीभूत ब्रह्म कृष्ण हैं बता दे॥ 3302॥
शक्ति का विकास पूर्ण गोविंद राधे।
भगवान श्रीकृष्ण में है बता दे॥ 3303॥
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
कल्पवृक्ष कामधेनु गोविंद राधे।
चिंतामणि सब दै के पूर्ण रह बता दे॥ 3304॥
ऐसे ही श्रीकृष्ण गोविंद राधे।
सब कछु दै के रह अच्युत बता दे॥ 3305॥
ब्रह्म का स्वरूप पूर्ण गोविंद राधे।
शक्ति का विकास न्यूनतम है बता दे॥ 3306॥

ब्रह्म को भी प्रणाम गोविंद राधे।
परमात्मा को प्रणाम बता दे॥ 3307॥
ब्रह्म का है भक्त ज्ञानी गोविंद राधे।
परमात्मा भक्त योगी बता दे॥ 3308॥
कृष्ण भगवान का गोविंद राधे।
भक्त कहलाये भक्त बता दे॥ 3309॥
एक रूप निष्क्रिय गोविंद राधे।
दूजो न्याय कर्ता तीजो भक्तों को कृपा दे॥ 3310॥
ब्रह्म तो अकर्ता रहे गोविंद राधे।
परमात्मा न्यायी भगवान कृपा दे॥ 3311॥
ब्रह्म के स्वरूप तीन गोविंद राधे।
किन्तु मेरे काम का भगवान बता दे॥ 3312॥
सबते है छोटी पृथिवी गोविंद राधे।
सबते बड़ा आकाश बता दे॥ 3313॥
आकाश ते भी बड़ा गोविंद राधे।
पूर्णतम ब्रह्म है अनन्त बता दे॥ 3314॥
ब्रह्म ते बड़ा कोई गोविंद राधे।
था न तो है न तो होगा बता दे॥ 3315॥
जिसके समान ना हो गोविंद राधे।
बड़ा भी न हो कोई ब्रह्म बता दे॥ 3316॥
'सत्यं ज्ञानमनंतं' गोविंद राधे।
याते ब्रह्म बड़ा है अनन्त बता दे॥ 3317॥
ब्रह्म अर्थ सबते बड़ा गोविंद राधे।
दूजो अर्थ आपु जैसा बड़ा भी बना दे॥ 3318॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो ब्रह्म बड़ा रहे गोविंद राधे।
सो ब्रह्म किसी के न काम का बता दे॥ 3319॥
जो ब्रह्म बड़ा करे गोविंद राधे।
सो ब्रह्म भगवान प्रेमसुधा दे॥ 3320॥
ऐश्वर्य धर्म यश गोविंद राधे।
श्री ज्ञान वैराग्य भग हैं बता दे॥ 3321॥
ऐश्वर्य आदि छे हों गोविंद राधे।
जिसमें अनन्त भगवान बता दे॥ 3322॥
ऐश्वर्य आदि छे गोविंद राधे।
गुण जीवों में हों अल्प बता दे॥ 3323॥
भगवान का भग गोविंद राधे।
नित्य भी निरतिशय भी है बता दे॥ 3324॥
कृष्ण में है ऐश्वर्य गोविंद राधे।
स्वेतर सकल स्वामित्व बता दे॥ 3325॥
कृष्ण में है माधुर्य गोविंद राधे।
सब ही अवस्था में मधुर बता दे॥ 3326॥
कृष्ण में है तेज भी गोविंद राधे।
COPYRIGHT
काल माया आदि पै शासन बता दे॥ 3327॥
RADHA GOVIND SAMITI
कृष्ण में अनन्त ज्ञान गोविंद राधे।
याते सर्वज्ञ सर्ववित् हैं बता दे॥ 3328॥
भक्तवत्सलता गोविंद राधे।
कृपालुता गुण कृष्ण में बता दे॥ 3329॥
भक्तवश्यता गोविंद राधे।
कृतज्ञता गुण कृष्ण में बता दे॥ 3330॥

कृष्ण का रोना अरु गोविंद राधे।
क्रोध आदि प्राकृत नहीं है बता दे॥ 3331॥
कृष्ण का रोना आदि गोविंद राधे।
काल्पनिक भी नहीं है सत्य बता दे॥ 3332॥
कृष्ण का रोना आदि गोविंद राधे।
भक्तवश्यता का प्रमाण है बता दे॥ 3333॥
भक्त योगक्षेम का गोविंद राधे।
वहन करण गुण कृष्ण में बता दे॥ 3334॥
उपर्युक्त गुण ते ही गोविंद राधे।
ब्रह्म भगवान कहा जाता है बता दे॥ 3335॥
दिव्य गुणयुक्त भी हैं गोविंद राधे।
प्राकृत गुणरहित कृष्ण हैं बता दे॥ 3336॥
निर्विशेष ब्रह्म में तो गोविंद राधे।
आनन्द है ऐश्वर्य ना बता दे॥ 3337॥
एक ऐश्वर्यानन्द गोविंद राधे।
ऐश्वर्य माधुर्य पूर्ण बता दे॥ 3338॥
एक मानसानन्द गोविंद राधे।
ऐश्वर्य ते भी मधुर बता दे॥ 3339॥
मानसानन्द में तो गोविंद राधे।
ऐश्वर्यानन्द दास है बता दे॥ 3340॥
ज्ञानी को स्वरूपानंद गोविंद राधे।
योगी को अनुभवानंद बता दे॥ 3341॥
भक्तों को प्रेमानंद गोविंद राधे।
श्यामा श्याम लीलानंद रस भी दिला दे॥ 3342॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेमानन्द पाया जो भी गोविंद राधे।
ब्रह्मलीन ब्रह्मानंद भुला दे॥ 3343॥
इक्षु वृक्ष ही है मधुर गोविंद राधे।
उसमें हो फल तो मधुरतम बता दे॥ 3344॥
ऐसे निराकार ब्रह्म गोविंद राधे।
मधुर है किन्तु कृष्ण मधुरतम बता दे॥ 3345॥
चंदन तरु सुगंध गोविंद राधे।
फूल होता तो सुगंध कितनी बता दे॥ 3346॥
ऐसे ही ब्रह्म ते भी गोविंद राधे।
कृष्ण में रस है विलक्षण बता दे॥ 3347॥
ज्ञानानंद गन्ना ज्यौं गोविंद राधे।
प्रेमानंद मिश्री ज्यों भेद यों जना दे॥ 3348॥
ब्रह्मानंद आम वृक्ष गोविंद राधे।
प्रेम आम फल भेद इतना बता दे॥ 3349॥
कोटि कोटि ब्रह्मानन्द गोविंद राधे।
गोविन्दानँद पै तू लुटा दे॥ 3350॥
ब्रह्मानंद प्रेमानंद गोविंद राधे।
दोनों एक भेद माधुर्य का बता दे॥ 3351॥
ज्ञानानन्द प्रेमानन्द गोविंद राधे।
एक ब्रह्म के ही दो रूप बता दे॥ 3352॥
गर्भस्थ शिशु सुख गोविंद राधे।
शिशु लीला सुख जैसा भेद बता दे॥ 3353॥
गर्भ शिशु सुख ब्रह्म गोविंद राधे।
शिशु सुख प्रेमानंद कृष्ण का बता दे॥ 3354॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेमानन्दानन्दकन्द गोविंद राधे।
ज्ञानानन्द आनन्द भेद बता दे॥ 3355 ॥
ज्ञानानन्द प्रेमानन्द गोविंद राधे।
दाता एक श्याम ज्ञानियों को बता दे॥ 3356 ॥
आत्माराम आप्तकाम गोविंद राधे।
पूर्णकाम भी भजें श्याम को बता दे॥ 3357 ॥
ब्रह्म रस छोड़ो जनि गोविंद राधे।
आपु छुटि जाय प्रेम बिंदु पिला दे॥ 3358 ॥
ज्ञानी प्रेम पाये भाये गोविंद राधे।
प्रेमी ब्रह्मानंद पाय मुँह बिचका दे॥ 3359 ॥
ज्ञानी तो बने हैं प्रेमी गोविंद राधे।
कोइ प्रेमी ज्ञानी बना हो तो बता दे॥ 3360 ॥
ब्रह्मज्ञानी बने प्रेमी गोविंद राधे।
शिव शुक सनकादि नाम गिना दे॥ 3361 ॥
भोले भाले भोले नाथ गोविंद राधे।
भक्ति सुख उनको भी गोपी बना दे॥ 3362 ॥
शिव हूँ शिवानी सखि गोविंद राधे।
उनते कहो वे श्याम ते मिला दें॥ 3363 ॥
शिव तो हैं श्याम वंशी गोविंद राधे।
उनते कहो श्याम वंशी बजा दें॥ 3364 ॥
प्रवृत्तिवादी ज्ञानी गोविंद राधे।
जनक भी मोहे राम रूप ते बता दे॥ 3365 ॥
निवृत्तिवादी ज्ञानी गोविंद राधे।
सनकादि भी मोहे हरि ते बता दे॥ 3366 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानी सनकादि लखि गोविंद राधे।
अपनी समाधि उपाधि भुला दे॥ 3367॥
ज्ञानी सनकादि माँगें गोविंद राधे।
वास नरक किन्तु प्रेम दिला दे॥ 3368॥
ब्रह्मज्ञानी जो भी देखे गोविंद राधे।
ज्ञान भूले मन प्रेमसिन्धु में डुबा दे॥ 3369॥
ऊधो गये ब्रज में गोविंद राधे।
गोपियों को ब्रह्मज्ञान देने बता दे॥ 3370॥
कहा एक गोपी ते गोविंद राधे।
कृष्ण बिनु तुमको है दुःख बता दे॥ 3371॥
दुःखनिवृत्ति हेतु गोविंद राधे।
करु कछु दिन ब्रह्म चिन्तन बता दे॥ 3372॥
गोपी कह ऊधो जी गोविंद राधे।
उर नाहिं ठौर भरे श्याम हैं बता दे॥ 3373॥
पुनि एक गोपी ते गोविंद राधे।
ऊधो ने कहा तुम दुखी हो बता दे॥ 3374॥
याको उपाय यह गोविंद राधे।
करु ब्रह्मज्ञान मन धारणा बता दे॥ 3375॥
गोपी ने कहा ऊधो गोविंद राधे।
मेरा मन श्याम के है पास बता दे॥ 3376॥
पुनि एक गोपी ते गोविंद राधे।
ऊधो कह तोहिं दुख विरह का बता दे॥ 3377॥
गोपी ने कहा ऊधो गोविंद राधे।
तुमको है बुद्धि विपर्यय बता दे॥ 3378॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोको ब्रज कन कन में गोविंद राधे।
छन छन घनश्याम दीखें बता दे॥ 3379॥
जब हो वियोग ऊधो गोविंद राधे।
तब योग की बात सोचे बता दे॥ 3380॥
मेरा तो श्याम ते ही गोविंद राधे।
नित्य संयोग है रहेगा बता दे॥ 3381॥
योग जोग हम नाहीं गोविंद राधे।
ऊधो भोगी माधव को योग सिखा दे॥ 3382॥
कुबरी के यार माधो गोविंद राधे।
उनको ही ऊधो ब्रह्मज्ञान सिखा दे॥ 3383॥
ब्रह्म बन जाऊँ मैं जो गोविंद राधे।
मेरे पति सुत कहाँ जायेंगे बता दे॥ 3384॥
ऊधो तुम कैसे ज्ञानी गोविंद राधे।
ज्ञान अधिकारी हम कैसे बता दे॥ 3385॥
ज्ञान संन्यासियों का गोविंद राधे।
हम तो गृहस्थी गोपी हमें ज्ञान का दे॥ 3386॥
ज्ञान तो विरक्तों का है गोविंद राधे।
मेरा मन श्यामासक्त ब्रह्मज्ञान का दे॥ 3387॥
ज्ञान अधिकारी को गोविंद राधे।
हम तो गमारी गोपी हमें ज्ञान का दे॥ 3388॥
मन माधव ढिग गोविंद राधे।
ऊधो ब्रह्म ध्यान किस मन ते करा दे॥ 3389॥
मन ना अनेक ऊधो गोविंद राधे।
एक मन हरि ढिग दूजो और ला दे॥ 3390॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तुम भी ब्रह्म हम भी ब्रह्म गोविंद राधे।
ब्रह्म ब्रह्म को ब्रह्मज्ञान भला का दे॥ 3391॥
ऊधो अधकचरे ज्ञानी गोविंद राधे।
आओ मो ढिग पूर्ण ज्ञानी बना दे॥ 3392॥
ज्ञानी सब ब्रह्म देखे गोविंद राधे।
तुम मोहिं अज्ञ कैसे देखो बता दे॥ 3393॥
जितना हो ब्रह्मज्ञान गोविंद राधे।
उतना हो ब्रह्म प्रेम ऊधो ज्ञान का दे॥ 3394॥
ज्ञान देने आये ऊधो गोविंद राधे।
प्रेम ले ले ब्रह्मज्ञान दान करा दे॥ 3395॥
जासों तुम ज्ञानी बने गोविंद राधे।
दासी हैं ऋचाएँ मेरी मोहिं ज्ञान का दे॥ 3396॥
तेरा ब्रह्म ऊधो मेरे गोविंद राधे।
पाछे पाछे डोले ब्रह्मज्ञान मोहिं का दे॥ 3397॥
भक्ति बिनु ज्ञान ऊधो गोविंद राधे।
लख चौरासी द्वार घुमा दे॥ 3398॥
भक्ति तो बिनु माँगे गोविंद राधे।
ऊधो ब्रह्मज्ञान अरु मुक्ति दिला दे॥ 3399॥
ज्ञान ते मिले जो मुक्ति गोविंद राधे।
दासी पद माँगे दास पैरों ठुकरा दे॥ 3400॥
भक्तिदास ब्रह्म ब्रह्म गोविंद राधे।
दासी मुक्ति मुक्ति दास ज्ञान बता दे॥ 3401॥
ऊधो ज्ञान अज्ञान गोविंद राधे।
ले ले प्रेमदान ज्ञान यमुना बहा दे॥ 3402॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गोपी प्रेम लखि ऊधो गोविंद राधे।
निज ज्ञान प्रेमसिंधु माहिं बहा दे॥ 3403 ॥
ऊधो से ज्ञानी माँगें गोविंद राधे।
ब्रज में लता पता मोहिं बना दे॥ 3404 ॥
श्रीकृष्ण ने कहा था गोविंद राधे।
ऊधो मोते नेकु न्यून ना बता दे॥ 3405 ॥
ऊधो के समान नहिं गोविंद राधे।
प्रिय बलराम अरु लक्ष्मी बता दे॥ 3406 ॥
उन ऊधो की भी गोविंद राधे।
कामना थी कैसी विचित्र बता दे॥ 3407 ॥
वृन्दावन में मैं गोविंद राधे।
लता गुल्म बनूँ मानूँ धन्य बता दे॥ 3408 ॥
प्रेम के भिखारी नहिं गोविंद राधे।
ब्रजवासी तो प्रेमधनी हैं बता दे॥ 3409 ॥
शुकदेव सनकादि गोविंद राधे।
जन्म ते ही थे ब्रह्मज्ञानी बता दे॥ 3410 ॥
व्याससुत शुकदेव गोविंद राधे।
COPYRIGHT
समदर्शी महायोगी बता दे॥ 3411 ॥
RADHA GOVIND SAMITI
भेदभाव ते रहित गोविंद राधे।
मोह निद्रा ते जागे बता दे॥ 3412 ॥
एकमात्र ब्रह्म में ही गोविंद राधे।
रहते थे नित्य युक्त बता दे॥ 3413 ॥
स्वयं को छुपाते थे गोविंद राधे।
याते लगें महामूढ़ थे बता दे॥ 3414 ॥

शुकदेव आत्माराम गोविंद राधे।
जब बन को जा रहे थे बता दे॥ 3415॥
उस समय वेदव्यास गोविंद राधे।
कर रहे थे पुत्र पीछा बता दे॥ 3416॥
उसी समय जल में गोविंद राधे।
स्नान कर रही थीं देवियाँ बता दे॥ 3417॥
नंगी देवियों ने गोविंद राधे।
नंगे शुक को देखा बता दे॥ 3418॥
किन्तु देवियों ने गोविंद राधे।
वस्त्र नाहिं पहना तन पै बता दे॥ 3419॥
व्यास को वस्त्रयुत गोविंद राधे।
देखि के पहना वस्त्र बता दे॥ 3420॥
यह आश्चर्य लखि गोविंद राधे।
व्यास ने कारण पूछा बता दे॥ 3421॥
देवियाँ बोलीं व्यास गोविंद राधे।
आप की दृष्टि में द्वैत है बता दे॥ 3422॥
आप की बुद्धि में गोविंद राधे।
नर अरु नारी भेद है बता दे॥ 3423॥
आपका पुत्र शुक गोविंद राधे।
समदर्शी भेदहीन बता दे॥ 3424॥
याते आप हंस गोविंद राधे।
शुकदेव हैं परमहंस बता दे॥ 3425॥
आत्माराम शुकदेव गोविंद राधे।
मोहे ऐसे हैं हरि गुण ही बता दे॥ 3426॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निर्ग्रन्थ शुकदेव गोविंद राधे।
मोहे ऐसे हैं हरि गुण ही बता दे॥ 3427॥
‘वर्हापीडं’ श्लोक गोविंद राधे।
शुक को समाधि निर्विकल्प ते जगा दे॥ 3428॥
ग्वाल संग गोपाल गोविंद राधे।
वृन्दावन धाम आ रहे बता दे॥ 3429॥
श्याम के सिर पै गोविंद राधे।
दिव्य मयूर पुच्छ शोभित बता दे॥ 3430॥
कानों में कनेर के गोविंद राधे।
पीले पुष्प कान की शोभा बढ़ा दे॥ 3431॥
श्याम के शरीर पै गोविंद राधे।
दिव्य पीताम्बर चमक दिखा दे॥ 3432॥
पंच विध पुष्पों की गोविंद राधे।
गल विलुलित वनमाला बता दे॥ 3433॥
जैसे रंगमंच पै गोविंद राधे।
अभिनय करता नट हो बता दे॥ 3434॥
मुरली के छिद्रों में गोविंद राधे।
अधरामृत भर रहे हैं बता दे॥ 3435॥
पाछे पाछे ग्वाल बाल गोविंद राधे।
श्याम गुणगान कर रहे हैं बता दे॥ 3436॥
वैकुण्ठ ते श्रेष्ठ गोविंद राधे।
वृन्दावन धाम बन गया बता दे॥ 3437॥
श्याम पद चिह्नों ते गोविंद राधे।
वृन्दावन अति रमणीय बता दे॥ 3438॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शुक सोचें ऐसे श्याम गोविंद राधे।
मोहिं अपनायेंगे कैसे बता दे॥ 3439॥
व्यास ने समाधि द्वारा गोविंद राधे।
देखा शुकदेव हैं निराश बता दे॥ 3440॥
व्यास निज शिष्यों ते गोविंद राधे।
'अहो बकीयं' श्लोक पुनः सुनवा दे॥ 3441॥
'अहो बकीयं' अर्थ गोविंद राधे।
पूतना को हरि हरिधाम दिला दे॥ 3442॥
पूतना ने श्याम को गोविंद राधे।
मृत्युप्रद विष था पिलाया बता दे॥ 3443॥
यह श्लोक सुनि शुक गोविंद राधे।
साहस करि आये व्यास ढिग बता दे॥ 3444॥
व्यास ते सुना पुनि गोविंद राधे।
शुक ने भागवत पुराण बता दे॥ 3445॥
शुक ने परीक्षित को गोविंद राधे।
भागवत सुना के माया मुक्त करा दे॥ 3446॥
शुक सा वक्ता हो गोविंद राधे।
परीक्षित सा हो श्रोता हरि ते मिला दे॥ 3447॥
भागवत सुनि करे गोविंद राधे।
कृष्ण भक्ति तो कृष्ण साध्य दिला दे॥ 3448॥
श्रीकृष्ण भक्ति ते गोविंद राधे।
जीव का लक्ष्य पूर्ण होगा बता दे॥ 3449॥
श्रीकृष्ण भक्ति मुख्य गोविंद राधे।
श्रवण स्मरण कीर्तन हैं बता दे॥ 3450॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भागवत अंत कह गोविंद राधे।
'भक्त्या विमुच्येन्नरः' बता दे॥ 3451॥
याको अर्थ भागवत गोविंद राधे।
पढ़ि सुनि करे भक्ति मुक्ति दिला दे॥ 3452॥
गर्भ में थे शुक मुक्त गोविंद राधे।
गर्भ में परीक्षित मुक्त थे बता दे॥ 3453॥
गर्भ में परीक्षित ने गोविंद राधे।
कृष्ण का दिव्यरूप देखा बता दे॥ 3454॥
गर्भ ते बाहर आके गोविंद राधे।
इधर उधर देखें कृष्ण कहाँ हैं बता दे॥ 3455॥
'सर्वभूत हृदय' अर्थ गोविंद राधे।
शुकदेव अन्तर्यामी बता दे॥ 3456॥
'सर्वभूत हृदय' अर्थ गोविंद राधे।
शुक जीवों के नियामक बता दे॥ 3457॥
परीक्षित सौभाग्य गोविंद राधे।
शुक ने सुनाया भागवत बता दे॥ 3458॥
हरि गुण मुग्ध शुक गोविंद राधे।
भागवत पढ़ा औ सुनाया बता दे॥ 3459॥
'हरते इति हरिः' भाव गोविंद राधे।
ब्रह्मलीन का भी मन हर ले बता दे॥ 3460॥
याही ते शुक कहें गोविंद राधे।
सर्व वेदान्त सार भागवत बता दे॥ 3461॥
भक्ति सुख लवलेश गोविंद राधे।
पै कोटि कोटि ब्रह्मानन्द लुटा दे॥ 3462॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जीवनमुक्त ज्ञानी गोविंद राधे।
भक्तिसुख में ब्रह्म सुख को डुबा दे॥ 3463॥
ज्ञानी परमहंस गोविंद राधे।
ब्रह्मध्यान तजि दृग आँसू बहा दे॥ 3464॥
शौनक बोले सूत गोविंद राधे।
आप हैं वक्ता महान बता दे॥ 3465॥
शुक ने सुनाई जो गोविंद राधे।
कृष्ण कथा सोई मोहिं सुना दे॥ 3466॥
वह श्रीकृष्ण कथा गोविंद राधे।
किस युग में कहाँ हुई थी बता दे॥ 3467॥
वह श्रीकृष्ण कथा गोविंद राधे।
किस कारण ते हुई थी बता दे॥ 3468॥
किसकी प्रेरणा ते गोविंद राधे।
परमहंस संहिता बनाई बता दे॥ 3469॥
क्यों यह भागवत गोविंद राधे।
संहिता सुनाई गई सूत बता दे॥ 3470॥
नागरिकों ने गोविंद राधे।
कैसे पहिचाना शुक को बता दे॥ 3471॥
पागल गूँगे जड़ गोविंद राधे।
बन कर विचरे शुक थे बता दे॥ 3472॥
शुक तो गृहस्थी घर गोविंद राधे।
गो दोहन काल रुकें थे बता दे॥ 3473॥
सूत जी बोले सुनु गोविंद राधे।
तीसरे युग द्वापर में बता दे॥ 3474॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सत्यवती गर्भ ते गोविंद राधे।
पराशरपुत्र हुये व्यास बता दे॥ 3475॥

वेदव्यास चार नाम गोविंद राधे।
पराशरसुत याते पाराशर बता दे॥ 3476॥

वास बद्रिकाश्रम में गोविंद राधे।
याते नाम था बादरायण बता दे॥ 3477॥

कृष्णवर्ण द्वीपजन्म गोविंद राधे।
याते नाम कृष्ण द्वैपायन बता दे॥ 3478॥

कृष्ण द्वैपायन गोविंद राधे।
भागवत निर्माता हैं बता दे॥ 3479॥

एक दिन बैठे बैठे गोविंद राधे।
सोचे भगवान व्यास बता दे॥ 3480॥

कलि में अज्ञ सब गोविंद राधे।
कल्याण कैसे होगा बता दे॥ 3481॥

यह सोचि व्यास ने गोविंद राधे।
रचा महाभारत को बता दे॥ 3482॥

फिर भी मन खिन्न रहा गोविंद राधे।
हुआ नाहिं संतोष बता दे॥ 3483॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

महाभारत में गोविंद राधे।
वेद अर्थ दिया खोल बता दे॥ 3484॥

जाते स्त्री शूद्र आदि गोविंद राधे।
धर्म कर्म का ज्ञान पा लें बता दे॥ 3485॥

फिर भी हृदय मेरा गोविंद राधे।
अभी अशान्त सा क्यों है बता दे॥ 3486॥

व्यास खिन्न बैठे थे गोविंद राधे।
तभी आये मुनि नारद बता दे॥ 3487॥
नारद आये लखि गोविंद राधे।
व्यास हो गये खरे तुरत बता दे॥ 3488॥
पुनि किया व्यास जी ने गोविंद राधे।
नारद मुनि की पूजा बता दे॥ 3489॥
नारद बोले व्यास गोविंद राधे।
आपने रचा महाभारत बता दे॥ 3490॥
पुनि अकृतार्थ सम गोविंद राधे।
खिन्न शोकयुक्त क्यों दीखें बता दे॥ 3491॥
व्यास बोले मुनि गोविंद राधे।
आपने कहा ठीक ही है बता दे॥ 3492॥
मेरा हृदय अभी गोविंद राधे।
रचना ते तुष्ट नहीं है बता दे॥ 3493॥
आप हैं ब्रह्मा के गोविंद राधे।
मानसपुत्र महर्षि बता दे॥ 3494॥
बता दें आप ही गोविंद राधे।
क्यों है असन्तोष मोको बता दे॥ 3495॥
नारद बोले व्यास गोविंद राधे।
आपने कृष्णकथा लिखी ना बता दे॥ 3496॥
जाते कृष्ण तुष्ट ना हों गोविंद राधे।
वह शास्त्रज्ञान है अधूरा बता दे॥ 3497॥
धर्म अर्थ काम का गोविंद राधे।
आपने निरूपण किया है बता दे॥ 3498॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्ण महिमा का गोविंद राधे।
विशद निरूपण किया ना बता दे॥ 3499॥
भागवत धर्मों का गोविंद राधे।
विशद निरूपण किया ना बता दे॥ 3500॥
परमहंसों को गोविंद राधे।
वही प्रिय कथा श्रीकृष्ण की बता दे॥ 3501॥
जिस भी वाणी में गोविंद राधे।
कृष्णलीलाकथा ना हो व्यर्थ बता दे॥ 3502॥
जिस वाणी ते भी गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण गुणगान हो ना बता दे॥ 3503॥
वह वाणी तो है गोविंद राधे।
अपवित्र अति निंदनीय बता दे॥ 3504॥
शब्दब्रह्म वेदवाणी गोविंद राधे।
कृष्ण लीला बिनु व्यर्थ है बता दे॥ 3505॥
श्रीकृष्ण गुणहीन गोविंद राधे।
वेद वाणी भी बंध्या वाणी है बता दे॥ 3506॥
श्रीकृष्णभक्त तो गोविंद राधे।
उस वाणी ते रहे दूर बता दे॥ 3507॥
जिसका प्रत्येक श्लोक गोविंद राधे।
कृष्ण गुणगान ते युक्त हो बता दे॥ 3508॥
वह दिव्य वाणी तो गोविंद राधे।
समस्त पापों को ही नसा दे॥ 3509॥
विशुद्ध ज्ञान भी गोविंद राधे।
भक्तिरहित है व्यर्थ बता दे॥ 3510॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

महाभाग व्यास जी गोविंद राधे।
आप की दृष्टि अमोघ बता दे॥ 3511 ॥
सत्यपरायण गोविंद राधे।
आप हैं पवित्रकीर्ति व्यास बता दे॥ 3512 ॥
भगवान कृष्ण की गोविंद राधे।
लीलायें स्मरण कीजिये बता दे॥ 3513 ॥
केवल कृष्ण की ही गोविंद राधे।
लीलाकथा को लिखिये बता दे॥ 3514 ॥
जो धर्म कर्म तजि गोविंद राधे।
करें एकमात्र कृष्णभक्ति बता दे॥ 3515 ॥
उनका योगक्षेम गोविंद राधे।
कृष्ण ही वहन करें नित्य बता दे॥ 3516 ॥
उनका पतन नाहिं गोविंद राधे।
होने दें कृष्ण कबहूँ बता दे॥ 3517 ॥
आप तो व्यास जी गोविंद राधे।
भगवान के अवतार बता दे॥ 3518 ॥
आप तो अजन्मा हैं गोविंद राधे।
जीव कल्याण हित आये बता दे॥ 3519 ॥
अतएव आप अब गोविंद राधे।
भक्ति की महिमा लिखिए बता दे॥ 3520 ॥
शंकर थे कृष्णभक्त गोविंद राधे।
उनकी कृतियाँ प्रमाण बता दे॥ 3521 ॥
शंकराचार्य कह गोविंद राधे।
कोइ करे भक्ति सकाम बता दे॥ 3522 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कोइ कर्म धर्म द्वारा गोविंद राधे।
चाहता है स्वर्ग का सुख ही बता दे॥ 3523॥
कोइ ज्ञान योग द्वारा गोविंद राधे।
चाहता है सायुज्य मोक्ष बता दे॥ 3524॥
हम श्रीकृष्ण पाद गोविंद राधे।
पंकज की चहँ भक्ति बता दे॥ 3525॥
हमें लोक परलोक गोविंद राधे।
अपवर्ग ते क्या है काम बता दे॥ 3526॥
शंकराचार्य कह गोविंद राधे।
विधि हरि हर पर कृष्ण हैं बता दे॥ 3527॥
शंकर कहें कृष्ण गोविंद राधे।
विधि हरि हर के भी स्वामी बता दे॥ 3528॥
गोपी प्रेम सार हैं या गोविंद राधे।
श्रुतियों का गुप्त धन कृष्ण हैं बता दे॥ 3529॥
जिसने भी कृष्ण को गोविंद राधे।
देखा नहिं सो है आत्मघाती बता दे॥ 3530॥
शंकर ने हरि की ही गोविंद राधे।
मूर्ति की स्थापना की थी बता दे॥ 3531॥
मधुसूदन कह गोविंद राधे।
मेरे आराध्य तत्व कृष्ण हैं बता दे॥ 3532॥
मधुसूदन कह गोविंद राधे।
ज्ञानी का स्वभाव कृष्णभक्ति है बता दे॥ 3533॥
भूत ब्रह्मज्ञानियों ने गोविंद राधे।
श्री कृष्ण भक्ति की है ज्ञानी को बता दे॥ 3534॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानी की बिसात क्या है गोविंद राधे।
ब्रह्मविद्या भी चाहे प्रेम बता दे॥ 3535॥
ब्रह्मविद्या ते ही गोविंद राधे।
ज्ञानियों को हो ब्रह्मज्ञान बता दे॥ 3536॥
ब्रह्मविद्या तप करे गोविंद राधे।
श्यामा श्याम प्रेम हित ज्ञानी को बता दे॥ 3537॥
ब्रह्मविद्या कह गोविंद राधे।
कृष्णप्रेम बिनु हम शून्य बता दे॥ 3538॥
एक थे जाबालि गोविंद राधे।
जीवन्मुक्त ब्रह्मलीन बता दे॥ 3539॥
एक बार वन में वे गोविंद राधे।
गये तहँ देखा एक बावड़ी बता दे॥ 3540॥
बावड़ी निकट एक गोविंद राधे।
बैठी थी तेज युक्त युवती बता दे॥ 3541॥
पूछा जाबालि ने गोविंद राधे।
कौन तुम तप क्यों करती बता दे॥ 3542॥
युवती ने कहा मैं हूँ गोविंद राधे।
ब्रह्मविद्या जानें ज्ञानी बता दे॥ 3543॥
यद्यपि ज्ञानियों को गोविंद राधे।
मैं ब्रह्म-ज्ञानानंद देउँ बता दे॥ 3544॥
किन्तु कृष्णप्रेमहीन गोविंद राधे।
मेरा आनन्द है शून्य बता दे॥ 3545॥
उसी कृष्णप्रेम हित गोविंद राधे।
जाबालि हौं तप करौं हौं बता दे॥ 3546॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यह सुनि जाबालि गोविंद राधे।
बने ब्रह्मविद्या शिष्य बता दे॥ 3547॥
प्रत्यक्ष अनुमान गोविंद राधे।
दोनों प्रमाण गति जग में बता दे॥ 3548॥
ईश्वरीय क्षेत्र में तो गोविंद राधे।
शब्द प्रमाण ही प्रमाण है बता दे॥ 3549॥
शब्द प्रमाण अर्थ गोविंद राधे।
नित्य अनादि वेदवाक्य है बता दे॥ 3550॥
त्रिविध हैं ग्रन्थ सब गोविंद राधे।
कृत, स्मृत तीसरा विनिर्गत बता दे॥ 3551॥
मायिक मतिकृत गोविंद राधे।
ग्रन्थ हैं अमान्य कृत ग्रन्थ बता दे॥ 3552॥
आप्त प्रणीत ग्रन्थ गोविंद राधे।
निज शब्दयुक्त स्मृत ग्रन्थ बता दे॥ 3553॥
ग्रन्थ विनिर्गत गोविंद राधे।
वेद, शब्द नित्य एक सा ही बता दे॥ 3554॥
स्वतः प्रामाण्य वेद गोविंद राधे।
अन्य शास्त्र वेद मूलक हैं बता दे॥ 3555॥
पौरुषेय भी है वेद गोविंद राधे।
अपौरुषेय भी है वेद सबको बता दे॥ 3556॥
वेद अपौरुषेय गोविंद राधे।
याते पुं दोष ते रहित बता दे॥ 3557॥
भगवन्निःश्वास तो गोविंद राधे।
नित्य अनादि वेद प्रकट करा दे॥ 3558॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चार प्रकार की हैं गोविंद राधे।
वेद में श्रुतियाँ विरोधी बता दे॥ 3559॥
कोइ श्रुति निर्गुण गोविंद राधे।
कोइ है सगुण कोई दोनों बता दे॥ 3560॥
अभेदवादिनी कोई गोविंद राधे।
कोई है भेदवादिनी बता दे॥ 3561॥
तत्व वस्तु ज्ञान में तो गोविंद राधे।
वेद ही प्रमुख प्रमाण बता दे॥ 3562॥
वेद मन बुद्धि पर गोविंद राधे।
विधि हूँ बुधि ते ना समझा बता दे॥ 3563॥
हरि ही हैं वेदकर्ता गोविंद राधे।
हरि ही वेदवित् वेदवेद्य बता दे॥ 3564॥
कोउ कहे मिथ्या वेद गोविंद राधे।
मिथ्या वेद ब्रह्म को भी मिथ्या बना दे॥ 3565॥
वेदों का भाष्य तो है गोविंद राधे।
पंचम वेद भागवत बता दे॥ 3566॥
इतिहास पुराणों ते गोविंद राधे।
वेदों का अर्थ ज्ञात होता है बता दे॥ 3567॥
पूरयति इति पुराण गोविंद राधे।
वेद अर्थ जो बतलाये बता दे॥ 3568॥
पुराण इतिहास को गोविंद राधे।
भागवत पंचम वेद बता दे॥ 3569॥
ब्रह्मा ने पूर्व में गोविंद राधे।
पुराण को ही प्रकट किया था बता दे॥ 3570॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुराण अट्ठारह गोविंद राधे।
ब्रह्म पद्म विष्णु पुराण बता दे॥ 3571॥
शिव लिंग नारद गोविंद राधे।
गरुड़ भागवत पुराण बता दे॥ 3572॥
अग्नि भविष्य कूर्म गोविंद राधे।
स्कन्द वामन पुराण बता दे॥ 3573॥
मत्स्य, वराह अरु गोविंद राधे।
ब्रह्मवैवर्त पुराण बता दे॥ 3574॥
मार्कण्डेय अरु गोविंद राधे।
हैं ब्रह्माण्ड पुराण बता दे॥ 3575॥
तीन वर्ष में गणेश गोविंद राधे।
चार लाख श्लोक लिखे व्यास के बता दे॥ 3576॥
चार लाख श्लोक में हैं गोविंद राधे।
आठ हजार आठ सौ कूट बता दे॥ 3577॥
पुराणों में श्रेष्ठ गोविंद राधे।
श्रीमद्भागवत पुराण बता दे॥ 3578॥
ब्रह्म सूत्रों का अर्थ गोविंद राधे।
श्रीमद्भागवत पुराण बता दे॥ 3579॥
नारद ने व्यास ते गोविंद राधे।
कहा था भागवत ऐसी बना दे॥ 3580॥
जाते हो हरिभक्ति गोविंद राधे।
सोइ सर्व वेदान्त सार बता दे॥ 3581॥
उपनिषदों का अर्थ गोविंद राधे।
श्रीमद् भागवत पुराण बता दे॥ 3582॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानोपासना भाग गोविंद राधे।
वेद का सोइ उपनिषत् बता दे॥ 3583॥
छान्दोग्य तैत्तिरीय गोविंद राधे।
वृहदारण्यक हैं गद्य में बता दे॥ 3584॥
ऐतरेय उपनिषत गोविंद राधे।
कौषीतकि भी हैं गद्य में बता दे॥ 3585॥
कठ ईश उपनिषत गोविंद राधे।
श्वेताश्वतर हैं पद्य में बता दे॥ 3586॥
मुण्डक उपनिषत गोविंद राधे।
महानारायण भी पद्य में बता दे॥ 3587॥
केन उपनिषत ऐसा गोविंद राधे।
जो है गद्य पद्य दोनों में बता दे॥ 3588॥
श्रुति प्रस्थान तो है गोविंद राधे।
वेदों का उपनिषत सार बता दे॥ 3589॥
न्याय प्रस्थान तो है गोविंद राधे।
ब्रह्मसूत्र वेदव्यास रचित बता दे॥ 3590॥
स्मृति प्रस्थान तो है गोविंद राधे।
COPYRIGHT
श्रीमद् भगवद्गीता बता दे॥ 3591॥
RADHA GOVIND SAMITI
कृष्ण के वचनों का गोविंद राधे।
व्यास ने किया था स्मरण बता दे॥ 3592॥
अतएव गीता को गोविंद राधे।
स्मृति ग्रन्थ बतलाया है बता दे॥ 3593॥
व्यास ने प्रथम तो गोविंद राधे।
गीता ग्रन्थ ही लिखा था बता दे॥ 3594॥

पुनि महाभारत गोविंद राधे।
पश्चात् सत्रह पुराण बता दे॥ 3595 ॥
अंत में व्यास ने गोविंद राधे।
भागवत ग्रन्थ लिखा था बता दे॥ 3596 ॥
भागवत पुराण तो है गोविंद राधे।
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रहित बता दे॥ 3597 ॥
'प्रोज्झित कैतव' गोविंद राधे।
श्रीधर कह मुक्तिरहित बता दे॥ 3598 ॥
भागवत में तो है गोविंद राधे।
पंचम पुरुषार्थ प्रेम तत्व ही बता दे॥ 3599 ॥
'आर्तो जिज्ञासु' श्लोक गोविंद राधे।
निहित 'च' शब्द गोपी प्रेम बता दे॥ 3600 ॥
गीता में कर्म भक्ति गोविंद राधे।
भागवत केवल भक्ति बता दे॥ 3601 ॥
गीता ते मुक्ति मिले गोविंद राधे।
भागवत मुक्त को ब्रज रस पिला दे॥ 3602 ॥
महाभारत में तो गोविंद राधे।
सकाम कर्मों का निरूपण बता दे॥ 3603 ॥
महाभारत युद्ध गोविंद राधे।
मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को बता दे॥ 3604 ॥
गीता उपदेश भी गोविंद राधे।
मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को बता दे॥ 3605 ॥
भगवद् गीता तो गोविंद राधे।
उपनिषत् गो का है दूध बता दे॥ 3606 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रीमद् भागवत गोविंद राधे।
शब्दब्रह्म वेदवृक्ष फल है बता दे॥ 3607॥
यह वेदवृक्ष फल गोविंद राधे।
पक कर आपु ही गिरा है बता दे॥ 3608॥
इस फल में तो शुक गोविंद राधे।
चोंच मारि और भी सरस बना दे॥ 3609॥
जग में सभी फल गोविंद राधे।
पिये नहिं जायें खाये जायें बता दे॥ 3610॥
भागवत फल रस गोविंद राधे।
छिलका या गुठली नहीं है बता दे॥ 3611॥
कब तक पान करे गोविंद राधे।
भागवत रस का यह भी बता दे॥ 3612॥
मुक्ति पश्चात् भी गोविंद राधे।
तैलधारावत् पीना है बता दे॥ 3613॥
व्यास ने प्रथम किया गोविंद राधे।
तीन वेदों का चार भाग बता दे॥ 3614॥
वेद उत्तर काण्ड गोविंद राधे।
COPYRIGHT
नाम है वेदान्त दर्शन बता दे॥ 3615॥
RADHA GOVIND SAMITI
व्यास ने व्यक्त किया गोविंद राधे।
उसी को ब्रह्मसूत्र ग्रंथ में बता दे॥ 3616॥
ब्रह्मसूत्र अर्थ गूढ़ गोविंद राधे।
याते इतिहास पुराण बना दे॥ 3617॥
फिर भी मिली न शान्ति गोविंद राधे।
मन रहा व्यास का अशान्त बता दे॥ 3618॥

तब कहा नारद ने गोविंद राधे।
भक्ति प्रमुख भागवत बना दे॥ 3619॥
किसी भी विषय का गोविंद राधे।
निर्णय हो छे प्रकार ते बता दे॥ 3620॥
प्रथम उपक्रम गोविंद राधे।
दूसरा उपसंहार बता दे॥ 3621॥
तीसरा अभ्यास गोविंद राधे।
चौथा अपूर्वफल शास्त्र बता दे॥ 3622॥
पाँचवा अर्थवाद गोविंद राधे।
छठा तो है उपपत्ति बता दे॥ 3623॥
उपर्युक्त छे लक्षण गोविंद राधे।
युक्त है श्री भागवत बता दे॥ 3624॥
'जन्माद्यस्य यतः' गोविंद राधे।
उपक्रम है प्रथम श्लोक बता दे॥ 3625॥
प्रथम श्लोक में ही गोविंद राधे।
कृष्ण का ध्यान बताया बता दे॥ 3626॥
उपसंहार में भी गोविंद राधे।
कृष्ण का ध्यान ही बताया बता दे॥ 3627॥
एक ही विषय का गोविंद राधे।
बार बार कथन अभ्यास बता दे॥ 3628॥
भागवत ग्रन्थ में गोविंद राधे।
बार बार भक्ति का निरूपण बता दे॥ 3629॥
अपूर्व फल अर्थ गोविंद राधे।
वैसा फल अन्य कोई ना बता दे॥ 3630॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अपूर्व फल अर्थ गोविंद राधे।
वाते उत्कृष्ट फल हो ना बता दे॥ 3631॥
व्यास ने समाधि में गोविंद राधे।
भक्ति का अनुभव किया था बता दे॥ 3632॥
अतएव भागवत गोविंद राधे।
अपूर्व फल संयुक्त बता दे॥ 3633॥
अर्थवाद का अर्थ गोविंद राधे।
भक्ति की अति ही प्रशंसा बता दे॥ 3634॥
भागवत में तो गोविंद राधे।
बार बार भक्ति गुणगान है बता दे॥ 3635॥
उपपत्ति अर्थ यह गोविंद राधे।
युक्तियों ते भी विषय सिद्ध हो बता दे॥ 3636॥
श्री भागवत में भी गोविंद राधे।
युक्ति ते भी भक्ति सिद्ध है बता दे॥ 3637॥
एक बार नारद गोविंद राधे।
ब्रह्मा की की भक्ति बता दे॥ 3638॥
ब्रह्मा प्रसन्न हुये गोविंद राधे।
नारद ते उस समय बता दे॥ 3639॥
ब्रह्मा ने मुनि को गोविंद राधे।
श्री भागवत था सुनाया बता दे॥ 3640॥
पुनि वह भागवत गोविंद राधे।
व्यास को सुनाया मुनि ने बता दे॥ 3641॥
समस्त प्रश्नों का गोविंद राधे।
उत्तर भागवत में है बता दे॥ 3642॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दस लक्षण युक्त गोविंद राधे।
श्री मद्भागवत पुराण बता दे॥ 3643॥
यही भागवत गोविंद राधे।
सब ही पुराणों का मुकुट बता दे॥ 3644॥
चैतन्य देव कह गोविंद राधे।
भागवत ब्रह्मसूत्र भाष्य है बता दे॥ 3645॥
भागवत सिद्धान्त गोविंद राधे।
अचिन्त्य भेदाभेदवाद बता दे॥ 3646॥
दर्शन के भेद दो हैं गोविंद राधे।
वैदिक और अवैदिक बता दे॥ 3647॥
वैदिक भेद दो हैं गोविंद राधे।
ईश्वर, अनीश्वरवादी बता दे॥ 3648॥
भेद अवैदिक दो गोविंद राधे।
ईश्वर, अनीश्वरवादी बता दे॥ 3649॥
ईश्वरीय वैदिक छे गोविंद राधे।
उनमें है मुख्य वेदान्त बता दे॥ 3650॥
वेदान्त भी हैं दो गोविंद राधे।
निर्विशेष सविशेष वादी बता दे॥ 3651॥
सविशेष वादी पाँच गोविंद राधे।
विष्णु, शिव, गणेश, दुर्गा, सूर्य बता दे॥ 3652॥
सविशेष विष्णुवादी गोविंद राधे।
द्वैताद्वैत आदि भेद विविध बता दे॥ 3653॥
शास्त्रों की तीन श्रेणी गोविंद राधे।
व्यास का मत्स्य पुराण बता दे॥ 3654॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कछु शास्त्र सात्विक गोविंद राधे।
उनमें हैं हरि की कथायें बता दे॥ 3655॥

कछु शास्त्र राजस गोविंद राधे।
उनमें हैं ब्रह्मा की कथायें बता दे॥ 3656॥

कछु शास्त्र तामस गोविंद राधे।
उनमें हैं शिव की कथायें बता दे॥ 3657॥

कर्म के हेतु ग्रंथ गोविंद राधे।
कर्म मीमांसा भरद्वाज का बता दे॥ 3658॥

कर्म के हेतु तो है गोविंद राधे।
जैमिनि का पूर्व मीमांसा बता दे॥ 3659॥

पूर्व मीमांसक गोविंद राधे।
शास्त्र का सही अर्थ वेद बता दे॥ 3660॥

'शास्त्र योनित्वात्' गोविंद राधे।
सूत्र शास्त्र अर्थ सब वेद बता दे॥ 3661॥

वेदान्त शब्द का तो गोविंद राधे।
मुख्य अर्थ है उपनिषत बता दे॥ 3662॥

दर्शन स्मृति गीता गोविंद राधे।
स्वतः प्रामाण्य नहिं वैदिक बता दे॥ 3663॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दर्शनादि प्रामाण्य गोविंद राधे।
हेतु वेदमूलक होना बता दे॥ 3664॥

वेदमूलक ग्रन्थ गोविंद राधे।
जो भी हों सब हैं मान्य बता दे॥ 3665॥

ज्ञान के हेतु तो है गोविंद राधे।
वेदव्यास का ब्रह्मसूत्र बता दे॥ 3666॥

ज्ञान के हेतु ग्रन्थ गोविंद राधे।
सिद्धान्त दर्शन व्यास का बता दे॥ 3667 ॥
भक्ति के हेतु ग्रन्थ गोविंद राधे।
वेद ते रामायण तक हैं बता दे॥ 3668 ॥
भक्ति के हेतु ग्रन्थ गोविंद राधे।
शांडिल्य भक्ति दर्शन है बता दे॥ 3669 ॥
भक्ति के हेतु ग्रन्थ गोविंद राधे।
नारदभक्ति सूत्रदर्शन बता दे॥ 3670 ॥
नारद ने रचा पूर्व गोविंद राधे।
नारद स्मृति कर्मप्रमुख बता दे॥ 3671 ॥
फिर रचा पाञ्चरात्र गोविंद राधे।
कर्म के साथ हरि भक्ति करा दे॥ 3672 ॥
अन्त में भक्तिमुख्य गोविंद राधे।
रचा नारद भक्ति सूत्र बता दे॥ 3673 ॥

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

RA MITI

10

भक्ति

ब्रह्मा ने तीन बार गोविंद राधे।
वेदों को मथा सार भक्ति बता दे॥ 3674॥
श्रुति रूपा माता भी गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण भक्ति ही सार बता दे॥ 3675॥
भगिनी गीता आदि गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण भक्ति ही सार बता दे॥ 3676॥
भ्राता पुराण आदि गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण शरण ही सार बता दे॥ 3677॥
सर्व वेदान्तसार गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण भक्ति वेदव्यास बता दे॥ 3678॥
छहों शास्त्र सार यह गोविंद राधे।
आठों याम मन हरि गुरु में लगा दे॥ 3679॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सर्व वेद शास्त्र सार गोविंद राधे।
श्यामा श्याम प्रेम निष्काम बता दे॥ 3680॥
वेदों में तीन मार्ग गोविंद राधे।
कर्म अरु ज्ञान अरु भक्ति बता दे॥ 3681॥
कर्म, योग, ज्ञान सत्य गोविंद राधे।
किन्तु ऐसा कोई नहिं हरि ते मिला दे॥ 3682॥
जीव का कृष्ण ते जो गोविंद राधे।
मिलन करा दे सोई भक्ति बता दे॥ 3683॥
कर्म ते श्रेष्ठ ज्ञान गोविंद राधे।
ज्ञान ते श्रेष्ठ है भक्ति बता दे॥ 3684॥
अनंत जीवों के गोविंद राधे।
भेद दो हैं चर अरु अचर बता दे॥ 3685॥
उनमें भी जग में है गोविंद राधे।
अति अल्प मानव जाति बता दे॥ 3686॥
मानव जाति में भी गोविंद राधे।
अति अल्प जन वेद मानें बता दे॥ 3687॥
मानने वालों में गोविंद राधे।
अति अल्प वेदधर्मवेत्ता बता दे॥ 3688॥
धर्मवेत्ताओं में गोविंद राधे।
अति अल्प हैं धर्मनिष्ठ बता दे॥ 3689॥
उन धर्मनिष्ठों ते गोविंद राधे।
श्रेष्ठतर है ज्ञाननिष्ठ बता दे॥ 3690॥
कोटि ज्ञाननिष्ठों में गोविंद राधे।
विरला है कोई कृष्णभक्त बता दे॥ 3691॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानी अरु योगी ते गोविंद राधे।
श्रेष्ठ है भक्त सद्ग्रन्थ बता दे॥ 3692॥
गीता में कृष्ण कहें गोविंद राधे।
तपस्वी ते श्रेष्ठ ज्ञानी बता दे॥ 3693॥
ज्ञानी अरु कर्मी ते गोविंद राधे।
श्रेष्ठ है सच्चा योगी बता दे॥ 3694॥
योगियों ते भी है गोविंद राधे।
सर्वश्रेष्ठ श्रीकृष्णभक्त बता दे॥ 3695॥
कर्मी भुक्ति कामी है गोविंद राधे।
ज्ञानी भी है मुक्ति कामी बता दे॥ 3696॥
योगी सिद्धि कामी है गोविंद राधे।
भक्त ही एक निष्काम बता दे॥ 3697॥
याते भक्त नित्य शान्त गोविंद राधे।
और सब नित्य अशान्त बता दे॥ 3698॥
भक्त चाहे कृष्णसुख गोविंद राधे।
कर्मी आदि चाहें आत्म सुख को बता दे॥ 3699॥
कर्मी ज्ञानी योगी आदि गोविंद राधे।
चाहते हैं बस आत्महित ही बता दे॥ 3700॥
सच्चा कृष्णभक्त तो गोविंद राधे।
चाहे एकमात्र कृष्ण हित ही बता दे॥ 3701॥
भव रोग वैद्य तो गोविंद राधे।
वेद शास्त्र अरु सद्गुरु हैं बता दे॥ 3702॥
भवरोग कारण गोविंद राधे।
भगवद् बहिर्मुखता है बता दे॥ 3703॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भवरोग औषधि गोविंद राधे।
भगवान की सन्मुखता बता दे॥ 3704॥
सन्मुखता हित गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण भक्ति निष्काम बता दे॥ 3705॥
निष्काम कर्म ते भी गोविंद राधे।
कृष्ण सन्मुखता कछु हो बता दे॥ 3706॥
निष्कर्म ज्ञान ते भी गोविंद राधे।
कृष्ण सन्मुखता कछु हो बता दे॥ 3707॥
ज्ञान की उपाधि तीन गोविंद राधे।
ज्ञाता अरु ज्ञान अरु ज्ञेय बता दे॥ 3708॥
तीनों ते रहित ज्ञान गोविंद राधे।
ब्रह्म ते ऐक्य निरंजन बता दे॥ 3709॥
अष्टांग योग ते भी गोविंद राधे।
कृष्ण सन्मुखता कछु हो बता दे॥ 3710॥
ऐसे सांख्य आदि भी गोविंद राधे।
कछु सन्मुखता करा दें बता दे॥ 3711॥
किन्तु कृष्णभक्ति बिनु गोविंद राधे।
पूर्ण सन्मुखता हो ना बता दे॥ 3712॥
भक्ति आरोपसिद्धा गोविंद राधे।
सर्व कर्म अर्पण रूपा बता दे॥ 3713॥
भक्ति जो संगसिद्धा गोविंद राधे।
कर्म ज्ञान योगादि मिश्रित बता दे॥ 3714॥
भक्ति स्वरूपसिद्धा गोविंद राधे।
सर्वश्रेष्ठ निष्काम रूपा बता दे॥ 3715॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्म योग ज्ञान ते भी गोविंद राधे।
आंशिक हरि सन्मुखता बता दे॥ 3716॥
पूर्ण सन्मुखता तो गोविंद राधे।
स्वरूपसिद्धा भक्ति ते हो बता दे॥ 3717॥
याते कृष्ण भक्ति बिनु गोविंद राधे।
माया की निवृत्ति हो ना बता दे॥ 3718॥
शंकराचार्य पूर्व गोविंद राधे।
भक्ति का ही प्रमुख प्रचार था बता दे॥ 3719॥
शंकर के पश्चात् गोविंद राधे।
भक्ति का ही प्रमुख प्रचार था बता दे॥ 3720॥
श्रीकृष्ण भक्ति बिनु गोविंद राधे।
तीव्र वैराग्य भी मिथ्या बता दे॥ 3721॥
श्रीकृष्ण भक्ति हित गोविंद राधे।
साधु संग साधु की शरण बता दे॥ 3722॥
'भजनं भक्तिरिति' गोविंद राधे।
भाव मन ते नित मनन बता दे॥ 3723॥
'भागो भक्तिरिति' गोविंद राधे।
भाव मैं हूँ हरि का ही भाग बता दे॥ 3724॥
'भंजनं भक्तिरिति' गोविंद राधे।
भाव यह भक्ति पंचकोश को जला दे॥ 3725॥
'भज्यते भक्तिरिति' गोविंद राधे।
भाव मन हरि का ही ध्यान करा दे॥ 3726॥
भज् धातु अर्थ सेवा गोविंद राधे।
याते भक्ति शब्द अर्थ सेवा बता दे॥ 3727॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सेव्य की इच्छा में गोविंद राधे।
इच्छा रखना ही सेवा बता दे॥ 3728॥
कामना आते ही गोविंद राधे।
हरि सेवा भावना समाप्त हो बता दे॥ 3729॥
प्रेमी की प्रति चेष्टा गोविंद राधे।
प्रिय की सेवा के लिए हो बता दे॥ 3730॥
प्राण जब जाये हरि गोविंद राधे।
तनु पंच महाभूत सेवा में लगा दे॥ 3731॥
जल मिले सोई जल गोविंद राधे।
जेहि जल हरि अस्नान करा दे॥ 3732॥
तेज मिले दर्पण गोविंद राधे।
सोइ जामें हरि मुख देखें बता दे॥ 3733॥
व्योम मिले सेवा कुंज गोविंद राधे।
जहँ श्यामा श्याम सँग रास रचा दे॥ 3734॥
भूमि मिले सोई पथ गोविंद राधे।
जेहि पथ चलें श्यामा श्याम बता दे॥ 3735॥
पवन व्यजन मिले गोविंद राधे।
सोइ, सखि जासों श्यामा श्याम को हवा दे॥ 3736॥
श्रीकृष्ण सेवा लक्ष्य गोविंद राधे।
जानने ते ही लक्ष्य मिले ना बता दे॥ 3737॥
तदर्थ गुरु द्वारा गोविंद राधे।
निर्दिष्ट कृष्णभक्ति मन ते करा दे॥ 3738॥
घर में गड़ा है धन गोविंद राधे।
गुरु जहाँ जैसे कहे खोदो बता दे॥ 3739॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दक्षिण पश्चिम गोविंद राधे।
उत्तर खोदो धन मिले ना बता दे॥ 3740॥
पूर्व दिशा में खोदो गोविंद राधे।
धन का भण्डार मिलेगा बता दे॥ 3741॥
कर्म, ज्ञान, योग ते तो गोविंद राधे।
हरि सेवा लक्ष्य मिले नाहिं बता दे॥ 3742॥
केवल भक्ति ही ते गोविंद राधे।
हरि सेवा लक्ष्य प्राप्त होगा बता दे॥ 3743॥
अभिधीयतेऽनेन गोविंद राधे।
इति शब्द है अभिधेय बता दे॥ 3744॥
भाव यह जाते गोविंद राधे।
साधना ज्ञान हो जाये बता दे॥ 3745॥
साधन विज्ञान हित गोविंद राधे।
पाँच हैं उपाय निम्न भक्त को बता दे॥ 3746॥
प्रथम है उपाय अन्वय गोविंद राधे।
उस मार्ग ते लक्ष्य प्राप्त हो बता दे॥ 3747॥
दूसरा व्यतिरेक गोविंद राधे।
उस मार्ग बिनु लक्ष्य मिले ना बता दे॥ 3748॥
तीसरा है वह मार्ग गोविंद राधे।
अन्य की अपेक्षा करे ना बता दे॥ 3749॥
चौथा उस मार्ग में गोविंद राधे।
सार्वत्रकिता भी हो बता दे॥ 3750॥
पंचम उस मार्ग में गोविंद राधे।
सदातनत्व भी हो यह बता दे॥ 3751॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उपर्युक्त सब बातें गोविंद राधे।
केवल भक्तिमार्ग में हैं बता दे॥ 3752॥
मुख्या गौणी वृत्ति ते गोविंद राधे।
वेद करें हरि निर्वचन बता दे॥ 3753॥
अन्वय व्यतिरेक ते गोविंद राधे।
वेद करें हरि निर्वचन बता दे॥ 3754॥
प्रमाता बल ते हो गोविंद राधे।
कर्मयोग साधन सिद्ध बता दे॥ 3755॥
प्रमाण बल ते हो गोविंद राधे।
ज्ञान साधन की सिद्धि बता दे॥ 3756॥
प्रमेय बल ते तो गोविंद राधे।
भक्ति की सिद्धि भगवान करा दे॥ 3757॥
दूर ते भी दूर है गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म दूरी वाय भक्ति मिटा दे॥ 3758॥
वेद कहे भक्ति ही गोविंद राधे।
हरि के समीप ले जाये बता दे॥ 3759॥
वेद कहे भक्ति ही गोविंद राधे।
अदृष्ट हरि का भी रूप दिखा दे॥ 3760॥
वेद कहे भक्ति ही गोविंद राधे।
भगवान का दिव्य ज्ञान करा दे॥ 3761॥
वेद कहे भक्ति ही गोविंद राधे।
स्वाधीन हरि को अधीन बना दे॥ 3762॥
भगवान तो समर्थ गोविंद राधे।
अन्यथा करने में भी हैं बता दे॥ 3763॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

समर्थ हो के भी गोविंद राधे।
भक्त हित हों असमर्थ बता दे॥ 3764 ॥
काल कर्म गुणातीत गोविंद राधे।
कृष्ण हैं पूर्ण स्वतन्त्र बता दे॥ 3765 ॥
काल कर्म गुणाधीन गोविंद राधे।
जीव है पूर्ण परतन्त्र बता दे॥ 3766 ॥
भक्ति जीव को स्वतन्त्र गोविंद राधे।
कृष्ण को पूर्ण परतन्त्र बना दे॥ 3767 ॥
ब्रह्मा है वेदों का गोविंद राधे।
आदि वक्ता विज्ञाता बता दे॥ 3768 ॥
कृष्ण ने ब्रह्मा को गोविंद राधे।
वेदों का ज्ञान कराया बता दे॥ 3769 ॥
उस ब्रह्मा ने कहा गोविंद राधे।
वेदों में तो एक भक्ति बता दे॥ 3770 ॥
अन्य धर्म कर्म आदि गोविंद राधे।
सब हैं कृष्ण प्रीत्यर्थ बता दे॥ 3771 ॥
दान, व्रत, तप, यज्ञ गोविंद राधे।
जप आदि फल कृष्णभक्ति बता दे॥ 3772 ॥
यदि भक्ति मिली नहीं गोविंद राधे।
तो जप तप आदि व्यर्थ बता दे॥ 3773 ॥
योग, सांख्य, संन्यास गोविंद राधे।
हरिभक्ति बिनु सब व्यर्थ हैं बता दे॥ 3774 ॥
सब साधनों का फल गोविंद राधे।
एकमात्र श्रीकृष्ण भक्ति बता दे॥ 3775 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेमहीन साधना है गोविंद राधे।
लवण बिनु जनु व्यंजन हो बता दे॥ 3776॥
पूर्व में अनेक योगी गोविंद राधे।
योग ते पाये नहिं कृष्ण को बता दे॥ 3777॥
तब उन योगियों ने गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण की भक्ति की थी बता दे॥ 3778॥
चाहे निष्काम ही हो गोविंद राधे।
या हो सकाम कृष्ण भक्ति करा दे॥ 3779॥
कोई काम कामी हो गोविंद राधे।
कृष्णभक्ति सब का लक्ष्य दिला दे॥ 3780॥
याते सकामी को भी गोविंद राधे।
देवताओं की भक्ति त्याज्य बता दे॥ 3781॥
सकाम कृष्ण भक्त गोविंद राधे।
भक्त संग ते हो निष्काम बता दे॥ 3782॥
कर्मी अरु ज्ञानी को गोविंद राधे।
हरि भक्ति की है अपेक्षा बता दे॥ 3783॥
जपी, तपी, ज्ञानी, योगी गोविंद राधे।
भक्ति के आगे सब सिर को झुका दें॥ 3784॥
कर्म, ज्ञान, योग तीनों गोविंद राधे।
भक्ति का मुँह ताकें मेरा फल दिला दे॥ 3785॥
किन्तु हरि भक्ति तो है गोविंद राधे।
सदा सर्वत्र निरपेक्ष बता दे॥ 3786॥
भक्ति स्वयं प्रकाश गोविंद राधे।
याको प्रमाण जड़ भरत बता दे॥ 3787॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भरत ने मृग तनु गोविंद राधे।
हरि स्तुति करके छोड़ा बता दे॥ 3788॥
मृग का शरीर पुनि गोविंद राधे।
मृत्युकाल हरिस्तुति अचरज बता दे॥ 3789॥
सर्व धर्म-त्रुटियों के गोविंद राधे।
शमनार्थ श्रीकृष्ण भक्ति बता दे॥ 3790॥
जैसे सब प्राणियों का गोविंद राधे।
जीवन सब जानें सलिल बता दे॥ 3791॥
ऐसे सब सिद्धियों का गोविंद राधे।
जीवन एकमात्र भक्ति बता दे॥ 3792॥
धर्म अर्थ काम मोक्ष गोविंद राधे।
सब फल श्रीकृष्ण भक्ति दे बता दे॥ 3793॥
भक्ति है स्वतंत्र अति गोविंद राधे।
ज्ञान वैराग्य भक्ति अंग ना बता दे॥ 3794॥
भक्ति ते मिलें तीनों गोविंद राधे।
ज्ञान वैराग्य अरु भक्ति बता दे॥ 3795॥
भोगी या योगी हो गोविंद राधे।
कृष्ण भक्ति बिनु दोनों निंद्य हैं बता दे॥ 3796॥
भक्ति है सरल अति गोविंद राधे।
योग यज्ञ जप तप व्रत ना बता दे॥ 3797॥
धर्मानुष्ठान में तो गोविंद राधे।
छे नियम पालन क्लेश है बता दे॥ 3798॥
योग के मार्ग में भी गोविंद राधे।
यम नियम आदि आठ हैं बता दे॥ 3799॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञान के मार्ग में भी गोविंद राधे।
शम दम आदि आठ क्लेश बता दे॥ 3800॥
भक्ति तो सरल अति गोविंद राधे।
अधिकारी विचार ना क्लेश ना बता दे॥ 3801॥
चराचर सब जीव गोविंद राधे।
भक्ति पथ के अधिकारी बता दे॥ 3802॥
भक्ति में स्वतंत्र सब गोविंद राधे।
याते हरि का न पक्षपात है बता दे॥ 3803॥
सब साधनों में सब गोविंद राधे।
अधिकारी नहिं सब को बता दे॥ 3804॥
भक्ति के अधिकारी गोविंद राधे।
पतितों ते ब्रह्मा तक सब हैं बता दे॥ 3805॥
सदाचारी दुराचारी गोविंद राधे।
दोनों अधिकारी भक्ति पथ के बता दे॥ 3806॥
कुसंस्कारवश गोविंद राधे।
घोर दुराचारी भी जो हो बता दे॥ 3807॥
किन्तु अनन्य बनि गोविंद राधे।
करे कृष्णभक्ति सो भक्त बता दे॥ 3808॥
सुदुराचारी को गोविंद राधे।
अनन्य भक्ति तो भक्त बना दे॥ 3809॥
परम अपवित्र भी हो गोविंद राधे।
भक्ति करे भक्ति पवित्र बना दे॥ 3810॥
मायाबद्ध मायामुक्त गोविंद राधे।
दोनों अधिकारी भक्ति पथ के बता दे॥ 3811॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राागी हो विरागी हो गोविंद राधे।
दोनों अधिकारी भक्ति पथ के बता दे॥ 3812 ॥
अज्ञानी हो या ज्ञानी गोविंद राधे।
दोनों अधिकारी भक्ति पथ के बता दे॥ 3813 ॥
साधक हो या सिद्ध गोविंद राधे।
दोनों अधिकारी भक्ति पथ के बता दे॥ 3814 ॥
योगी हो भोगी हो गोविंद राधे।
दोनों अधिकारी भक्ति पथ के बता दे॥ 3815 ॥
व्याधाचरण क्या था गोविंद राधे।
भक्ति उसे बाल्मीकि सिद्ध बना दे॥ 3816 ॥
गज का ज्ञान क्या था गोविंद राधे।
भक्ति उसको भी वैकुण्ठ पहुँचा दे॥ 3817 ॥
कुब्जा का रूप क्या था गोविंद राधे।
भक्ति उसे कमला सा प्यार दिला दे॥ 3818 ॥
सुदामा धन क्या था गोविंद राधे।
भक्ति द्वारिका सा ऐश्वर्य दिला दे॥ 3819 ॥
विदुर का कुल क्या था गोविंद राधे।
भक्ति विदुरानी केला छिलका खिला दे॥ 3820 ॥
तजि छप्पन भोग गोविंद राधे।
केले के छिलके में स्वाद बता दे॥ 3821 ॥
उग्रसेन बल क्या था गोविंद राधे।
भक्ति उसे मथुरा का राज्य दिला दे॥ 3822 ॥
शबरी की जाति क्या थी गोविंद राधे।
भक्ति राम को भी जूठे बेर खिला दे॥ 3823 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पाण्डव करनी क्या थी गोविंद राधे।
भक्ति उन्हें कृष्णप्राणप्यारा बना दे॥ 3824॥
विभीषण शक्ति क्या थी गोविंद राधे।
भक्ति उसे लंका का राजा बना दे॥ 3825॥
ध्रुव की आयु क्या थी गोविंद राधे।
भक्ति उसको ध्रुव लोक दिला दे॥ 3826॥
महरानी शतरूपा गोविंद राधे।
जिनके पति राजा मनु थे बता दे॥ 3827॥
उनके थे दो सुत गोविंद राधे।
प्रियव्रत उत्तानपाद बता दे॥ 3828॥
उत्तानपाद के तो गोविंद राधे।
सुनीति सुरुचि दो पत्नियाँ बता दे॥ 3829॥
दोनों ही पत्नियों में गोविंद राधे।
राजा को प्रिय थी सुरुचि बता दे॥ 3830॥
सुनीति पुत्र ध्रुव गोविंद राधे।
सुरुचि पुत्र उत्तम था बता दे॥ 3831॥
एक दिन महाराज गोविंद राधे।
उत्तम को गोद लिए थे बता दे॥ 3832॥
उसी समय ध्रुव भी गोविंद राधे।
राजा की गोद लगे बैठने बता दे॥ 3833॥
उत्तानपाद ने गोविंद राधे।
ध्रुव को उतार दिया गोद ते बता दे॥ 3834॥
इतने में सुरुचि भी गोविंद राधे।
आई सुनाई खरी खोटी बता दे॥ 3835॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सुरुचि ने कहा ध्रुव गोविंद राधे।
पहले करो कृष्णभक्ति बता दे॥ 3836 ॥
कृष्ण ते वर लै के गोविंद राधे।
मेरे उदर ते लो जन्म बता दे॥ 3837 ॥
तब राज्य सिंहासन गोविंद राधे।
तुम प्राप्त कर पावोगे बता दे॥ 3838 ॥
सुरुचि के वचनों ने गोविंद राधे।
ध्रुव को कर दिया घायल बता दे॥ 3839 ॥
ध्रुव रोते हुए ही गोविंद राधे।
गये निज माता पास बता दे॥ 3840 ॥
माता को सुनाया सब गोविंद राधे।
सुरुचि के कटु वचन बता दे॥ 3841 ॥
माता ने कहा पुत्र गोविंद राधे।
सुरुचि ने ठीक कहा है बता दे॥ 3842 ॥
तू हरि भक्ति द्वारा गोविंद राधे।
हरि ते माँग वरदान बता दे॥ 3843 ॥
किसी पै दुर्भाव गोविंद राधे।
करना नहीं समीचीन बता दे॥ 3844 ॥
तेरे परदादा अरु गोविंद राधे।
दादा ने की कृष्णभक्ति बता दे॥ 3845 ॥
महालक्ष्मी आदि गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण की करें भक्ति बता दे॥ 3846 ॥
कृष्णभक्ति ते ही गोविंद राधे।
पुत्र तू पायेगा राज्य बता दे॥ 3847 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माता की बात सुनि गोविंद राधे।
निकल पड़े ध्रुव घर ते बता दे॥ 3848॥
मार्ग में ध्रुव को तो गोविंद राधे।
मिले देवर्षि नारद जी बता दे॥ 3849॥
नारद मुनि ने तो गोविंद राधे।
ध्रुव को दिया ज्ञान उलटा बता दे॥ 3850॥
नारद बोले ध्रुव गोविंद राधे।
तुम अभी पाँच वर्ष के हो बता दे॥ 3851॥
अभी तुम खेलो खाओ गोविंद राधे।
कृष्ण भक्ति आदि है कठिन बता दे॥ 3852॥
मान अपमान सब गोविंद राधे।
पूर्व जन्म कर्म के फल हैं बता दे॥ 3853॥
बड़े बड़े योगी ज्ञानी गोविंद राधे।
कई जन्म करें साधना बता दे॥ 3854॥
तब भी ना पावें वे गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण की टुक झाँकी बता दे॥ 3855॥
याते तुम लौट जावो गोविंद राधे।
बड़े होकर करो भक्ति बता दे॥ 3856॥
ध्रुव बोले अब मैं तो गोविंद राधे।
घर लौटूँगा लक्ष्य पाके बता दे॥ 3857॥
कृपा करो मुझ पै गोविंद राधे।
करो मार्ग दर्शन मेरा बता दे॥ 3858॥
नारद बोले वत्स गोविंद राधे।
तेरा वैराग्य अति दृढ़ है बता दे॥ 3859॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अतएव कृष्णभक्ति गोविंद राधे।
तेरे हित करणीय ही है बता दे॥ 3860 ॥
तू चला जा मधुवन गोविंद राधे।
यमुनातट ब्रजधाम बता दे॥ 3861 ॥
वहीं पै कृष्ण जी की गोविंद राधे।
रूपध्यानयुक्त करु भक्ति बता दे॥ 3862 ॥
नारद ने कृष्ण जी का गोविंद राधे।
रूपध्यान भी बताया ध्रुव को बता दे॥ 3863 ॥
ऊँ नमो भगवते गोविंद राधे।
वासुदेवाय दिया मंत्र बता दे॥ 3864 ॥
पुनि ध्रुव मधुवन गोविंद राधे।
गये कृष्णभक्ति हित ब्रज में बता दे॥ 3865 ॥
तीन तीन रात्रि बाद गोविंद राधे।
खाया कैथ बेर फल ध्रुव ने बता दे॥ 3866 ॥
इस प्रकार ध्रुव ने तो गोविंद राधे।
एक महीना किया ध्यान बता दे॥ 3867 ॥
दूसरे महीने खाया गोविंद राधे।
छे दिन पै शुष्क पत्र बता दे॥ 3868 ॥
तीसरे मास पिया गोविंद राधे।
नौ नौ दिन में जल ही बता दे॥ 3869 ॥
चौथे महीने में गोविंद राधे।
बारहवें दिन वायु पी बता दे॥ 3870 ॥
पाँचवें महीने में गोविंद राधे।
श्वास लेना भी किया बन्द बता दे॥ 3871 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

खम्भे के समान ध्रुव गोविंद राधे।
एक पैर ते रहे खड़े बता दे॥ 3872॥
उनकी तपस्या ते गोविंद राधे।
पूरी त्रिलोकी गई काँप बता दे॥ 3873॥
देव लोकपाल आदि गोविंद राधे।
गये श्रीकृष्ण के पास बता दे॥ 3874॥
सबने की प्रार्थना गोविंद राधे।
जड़ जंगम सब त्रस्त हैं बता दे॥ 3875॥
हरि ने कहा यह गोविंद राधे।
ध्रुव के तप का प्रभाव बता दे॥ 3876॥
पुनि श्रीकृष्ण गये गोविंद राधे।
ध्रुव के पास मधुवन में बता दे॥ 3877॥
कृष्ण के आते ही गोविंद राधे।
ध्रुव का ध्यान हुआ भंग बता दे॥ 3878॥
ध्रुव ने आँख खोली गोविंद राधे।
देखा समक्ष श्रीकृष्ण को बता दे॥ 3879॥
ध्रुव थे निरक्षर गोविंद राधे।
दण्डवत प्रणाम किया कृष्ण को बता दे॥ 3880॥
निरक्षर होने ते गोविंद राधे।
अस्तुति भी कर सके ना बता दे॥ 3881॥
अन्तर्यामी कृष्ण गोविंद राधे।
छुआ दिया शंख ध्रुव गाल में बता दे॥ 3882॥
फिर क्या था ध्रुव भी गोविंद राधे।
हो गये सर्व वेदविज्ञ बता दे॥ 3883॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव ने तो कृष्ण की गोविंद राधे।
अस्तुति की विस्तार ते बता दे॥ 3884॥
कृष्ण ने कहा ध्रुव गोविंद राधे।
तुम जो चाहते हो सो मिलेगा बता दे॥ 3885॥
सुरदुर्लभ पद गोविंद राधे।
ध्रुव लोक तुम पावोगे बता दे॥ 3886॥
जग में भी राज्यभोग गोविंद राधे।
छत्तिस हजार वर्ष करोगे बता दे॥ 3887॥
तेरा बंधु उत्तम गोविंद राधे।
वन में मारा जायेगा बता दे॥ 3888॥
सुरुचि पुत्रप्रेम में गोविंद राधे।
दावानल में जलेगी बता दे॥ 3889॥
अन्त में ध्रुव तुम गोविंद राधे।
मेरे धाम को ही आवोगे बता दे॥ 3890॥
ध्रुव ने स्वयं को ही गोविंद राधे।
धिक्कारा संसार माँगा बता दे॥ 3891॥
ध्रुव पुनि घर गये गोविंद राधे।
राजा ने किया सम्मान बता दे॥ 3892॥
सुरुचि अरु उत्तम गोविंद राधे।
मिले ध्रुव ते बड़े प्यार ते बता दे॥ 3893॥
तरुण होने पै गोविंद राधे।
ध्रुव को दिया राज्य राजा ने बता दे॥ 3894॥
कर्मी, ज्ञानी, योगी आदि गोविंद राधे।
सभी अधिकारी भक्ति पथ के बता दे॥ 3895॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि गुरु श्रद्धा दृढ़ गोविंद राधे।
भक्ति उत्तम अधिकारी बता दे॥ 3896 ॥

शास्त्र अरु युक्ति में गोविंद राधे।
निपुण उत्तम अधिकारी बता दे॥ 3897 ॥

शास्त्र ज्ञानहीन श्रद्धा गोविंद राधे।
युक्त मध्यम अधिकारी बता दे॥ 3898 ॥

साधारण श्रद्धायुक्त गोविंद राधे।
भक्ति कनिष्ठ अधिकारी बता दे॥ 3899 ॥

जग में हैं भक्त सब गोविंद राधे।
ऐसा मानना भक्त लक्षण बता दे॥ 3900 ॥

बाल्यावस्था ते ही गोविंद राधे।
कृष्णभक्ति प्रारम्भ कर दे बता दे॥ 3901 ॥

कौन जाने युवावस्था गोविंद राधे।
आवे न आवे तनु क्षणिक बता दे॥ 3902 ॥

युवा भी भक्ति करे गोविंद राधे।
वृद्ध दशा में देह दुःख बढ़ा दे॥ 3903 ॥

वृद्ध भी भक्ति करे गोविंद राधे।
अंत जैसी मति वैसी गति हो बता दे॥ 3904 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उनका स्मरण करि गोविंद राधे।
मरे जो उन्हीं को हो प्राप्त बता दे॥ 3905 ॥

भक्ति कहाँ कब करो गोविंद राधे।
सदा सर्वत्र ही करो समझा दे॥ 3906 ॥

खाना भी भक्ति है गोविंद राधे।
यदि सोचे तनु हरिभक्ति करा दे॥ 3907 ॥

सोना भी भक्ति यदि गोविंद राधे।
सोचे साधना में नींद आये ना बता दे॥ 3908॥

तनु का सब कर्म गोविंद राधे।
हरिभक्ति हित एकमात्र करा दे॥ 3909॥

लौकिक वस्तुओं को गोविंद राधे।
अपनी न मानो मानो हरि की बता दे॥ 3910॥

लोक वेद कर्महित गोविंद राधे।
हरि अर्पित सब चेष्टा करा दे॥ 3911॥

शबरी की भक्ति देखो गोविंद राधे।
भोर पथ रामहित झाड़ू लगा दे॥ 3912॥

भक्त की समस्त चेष्टा गोविंद राधे।
हरि के प्रसन्नार्थ ही हों बता दे॥ 3913॥

भक्ति अधिकारी सब गोविंद राधे।
देशकाल आदि नहिं नियम बता दे॥ 3914॥

अतल वितल आदि गोविंद राधे।
निम्न सात लोकों में भक्ति बता दे॥ 3915॥

भूर्भुवः स्वः आदि गोविंद राधे।
ऊर्ध्व सात लोकों में भक्ति बता दे॥ 3916॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

समस्त स्थानों में गोविंद राधे।
भक्ति का है अधिकार बता दे॥ 3917॥

सब इन्द्रियों ते भी गोविंद राधे।
भक्ति का है आदेश बता दे॥ 3918॥

नैनों ते करे नित गोविंद राधे।
हरि अरु हरिजन दरस बता दे॥ 3919॥

कानों ते करे नित गोविंद राधे।
हरि नाम गुण लीला श्रवण बता दे॥ 3920॥
नासिका ते कृष्ण की गोविंद राधे।
माल्य तुलसी की गंध ले बता दे॥ 3921॥
त्वचा ते ब्रज रज गोविंद राधे।
आदि का करे नित स्पर्श बता दे॥ 3922॥
हाथों ते गुरु सेवा गोविंद राधे।
पाँवों ते हरि धाम गमन बता दे॥ 3923॥
रसना ते नित गोविंद राधे।
कृष्णप्रसादी खाये जूठन बता दे॥ 3924॥
ऊधो ने कहा माधो गोविंद राधे।
मैंने प्रसादी माला पहनी बता दे॥ 3925॥
आपकी प्रसादी गन्ध गोविंद राधे।
चन्दन लगाया निज भाल पै बता दे॥ 3926॥
आपके प्रसादी वस्त्र गोविंद राधे।
निज तनु पै सदा धारूँ बता दे॥ 3927॥
आप के प्रसादी भूषण गोविंद राधे।
निज तनु पै नित धारूँ बता दे॥ 3928॥
आपकी प्रसादी जूठन गोविंद राधे।
नित ही खावूँ बड़े चाव ते बता दे॥ 3929॥
उपर्युक्त सेवन ते गोविंद राधे।
आपकी माया को जीतूँगा बता दे॥ 3930॥
सब द्रव्यों ते भी गोविंद राधे।
भक्ति का है आदेश बता दे॥ 3931॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चुल्लू भर जल भी हो गोविंद राधे।
प्रेमयुक्त तो हरि दास बना दे॥ 3932॥

कृष्ण तो हैं पूर्णकाम गोविंद राधे।
भक्तदत्त सब कछु ले लें बता दे॥ 3933॥

पत्र पुष्प फल जल गोविंद राधे।
भक्तिदत्त हरि लें सहर्ष बता दे॥ 3934॥

भक्तवश्यता का गोविंद राधे।
यह सब ही है चमत्कार बता दे॥ 3935॥

कृष्ण नहिं चह कछु गोविंद राधे।
प्रेमयुक्त सब कछु चाहें बता दे॥ 3936॥

वस्तु के भूखे नहिं गोविंद राधे।
भक्ति के भूखे भगवान बता दे॥ 3937॥

सब ही क्रियाओं ते गोविंद राधे।
भक्ति का है आदेश बता दे॥ 3938॥

सब कामनाओं ते गोविंद राधे।
भक्ति का है आदेश बता दे॥ 3939॥

समस्त शास्त्रों में गोविंद राधे।
सर्वत्र भक्ति प्रशंसा बता दे॥ 3940॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति है ऐसा तत्त्व गोविंद राधे।
जिसमें हैं सातों विभक्ति बता दे॥ 3941॥

जो बड़भागी जीव गोविंद राधे।
भक्ति करता है उसे कर्ता बता दे॥ 3942॥

जो द्रव्य हरि हेतु गोविंद राधे।
दिये जायें उसे कर्म कारक बता दे॥ 3943॥

जिस मन ते हो भक्ति गोविंद राधे।
उसको करण कारक बतला दे॥ 3944 ॥

हरि प्रीत्यर्थ जो भी गोविंद राधे।
दान दिया जाय सम्प्रदान बता दे॥ 3945 ॥

गो दुग्ध आदि जो भी गोविंद राधे।
हरि को दो सो अपादान बता दे॥ 3946 ॥

ब्रह्म श्रीकृष्ण की जो गोविंद राधे।
भक्ति निष्काम सम्बन्ध बता दे॥ 3947 ॥

जिस देश काल में हो गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण भक्ति अधिकरण बता दे॥ 3948 ॥

जिसकी हो भक्ति वह गोविंद राधे।
गोपीजनवल्लभ कृष्ण हैं बता दे॥ 3949 ॥

जिसमें हो भक्ति वह गोविंद राधे।
जीव है श्रीकृष्ण दास बता दे॥ 3950 ॥

श्रीकृष्ण भक्ति बिनु गोविंद राधे।
सब साधन साध्य शून्य बता दे॥ 3951 ॥

जितने भी साधन गोविंद राधे।
सब मर जायें जब साध्य दिला दे॥ 3952 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्म, योग, ज्ञान में तो गोविंद राधे।
साधन भिन्न साध्य भिन्न बता दे॥ 3953 ॥

किन्तु भक्तियोग में गोविंद राधे।
साधन साध्य दोनों भक्ति है बता दे॥ 3954 ॥

कर्मी के कर्मों की गोविंद राधे।
सीमा तो है सन्यास लौं बता दे॥ 3955 ॥

योगी के योग की गोविंद राधे।
सीमा तो एकमात्र सिद्धि लौं बता दे॥ 3956॥
ज्ञानी के ज्ञान की गोविंद राधे।
सीमा तो है बस मोक्ष लौं बता दे॥ 3957॥
कर्म, योग, ज्ञान की गोविंद राधे।
परिसमाप्ति है एक दिन बता दे॥ 3958॥
भक्तों की भक्ति की गोविंद राधे।
परिसमाप्ति कभु हो ना बता दे॥ 3959॥
भक्तों की भक्ति तो गोविंद राधे।
सदा बाढ़े चंद्रकला ज्यों बता दे॥ 3960॥
कर्म तो है नश्वर गोविंद राधे।
स्वर्ग दै के मर जाये सब को बता दे॥ 3961॥
ज्ञान भी है नश्वर गोविंद राधे।
मोक्ष दै के मर जाये सब को बता दे॥ 3962॥
स्वर्ग लोकादि सुख गोविंद राधे।
कृष्ण सत्ता पै निर्भर बता दे॥ 3963॥
स्वर्ग लोकादि सुख गोविंद राधे।
दिव्य सुख की है छाया बता दे॥ 3964॥
भक्ति है कृपा साध्य गोविंद राधे।
यज्ञ आदि धर्म साध्य स्वर्ग है बता दे॥ 3965॥
भक्ति है कृपा साध्य गोविंद राधे।
ज्ञान साध्य अज्ञान नाश बता दे॥ 3966॥
भक्ति है कृपा साध्य गोविंद राधे।
योग साध्य तो आठ सिद्धि हैं बता दे॥ 3967॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब साध्य मृत्युशील गोविंद राधे।
एक मात्र भक्ति अमरत्व दिला दे॥ 3968॥

साधन अरु साध्य गोविंद राधे।
दोनों ही भक्ति सुख रूप बता दे॥ 3969॥

साध्य शिरोमणि तो गोविंद राधे।
कृष्ण सुख तात्पर्य सेवा बता दे॥ 3970॥

दारुक द्वारिका में गोविंद राधे।
कृष्ण को पंखा करे सुखी हो बता दे॥ 3971॥

दारुक प्रेमसुख में गोविंद राधे।
सेवा भूला सुख को कोसा बता दे॥ 3972॥

भक्त एक भक्ति माँगे गोविंद राधे।
भक्ति जब मिले सेव्य सेवा दिला दे॥ 3973॥

भक्ति का मुख्य फल गोविंद राधे।
दिव्य प्रेमयुक्त कृष्णासेवा बता दे॥ 3974॥

आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
मायानिवृत्ति अपवर्ग बता दे॥ 3975॥

आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
चित्त का निरोध स्वयमेव करा दे॥ 3976॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
काम क्रोध आदि को सदा को नसा दे॥ 3977॥

आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
सत्य अहिंसा आदि दिलवा दे॥ 3978॥

आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
त्रिगुण त्रिकर्म त्रिताप नसा दे॥ 3979॥

आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
पंचकोशों को भस्म करा दे॥ 3980॥
आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
पंच क्लेश अत्यन्ताभाव करा दे॥ 3981॥
आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
मायिक तनु भी दिव्य बना दे॥ 3982॥
आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
इन्द्रिय मन बुधि दिव्य बना दे॥ 3983॥
आनुषंगिक फल गोविंद राधे।
दिव्य हरिधाम बिनु माँगे दिला दे॥ 3984॥
सम्बन्ध अभिधेय गोविंद राधे।
तीसरा प्रयोजन तत्व बता दे॥ 3985॥
सम्बन्ध अर्थ तो है गोविंद राधे।
जाते हो नित्य पूर्ण बंधन बता दे॥ 3986॥
सम्बन्ध ज्ञान यह गोविंद राधे।
कृष्ण मम स्वामी हौं दास बता दे॥ 3987॥
अभिधेय ज्ञान यह गोविंद राधे।
नवधा साधना भक्ति बता दे॥ 3988॥
साधन भक्ति तो दो गोविंद राधे।
एक वैधी एक रागानुगा है बता दे॥ 3989॥
ज्ञान प्रयोजन गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण दिव्य प्रेम प्राप्ति बता दे॥ 3990॥
प्रेम दो प्रकार का है गोविंद राधे।
एक महिमा ज्ञान युक्त बता दे॥ 3991॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दूसरा है प्रेम श्रेष्ठ गोविंद राधे।
जिसका नाम है केवल बता दे॥ 3992 ॥
विधि मार्ग गामी का गोविंद राधे।
प्रेम महिमा ज्ञान युक्त है बता दे॥ 3993 ॥
राग मार्ग गामी का गोविंद राधे।
प्रेम है केवल या शुद्ध बता दे॥ 3994 ॥
भक्ति में उपाधि दो हैं गोविंद राधे।
एक है निज सुख कामना बता दे॥ 3995 ॥
निज सुख कामना के गोविंद राधे।
भेद दो हैं एक भोग कामना बता दे॥ 3996 ॥
निज सुख वांछा दूजी गोविंद राधे।
पाँचों प्रकार के मोक्ष बता दे॥ 3997 ॥
भक्ति में उपाधि दूजी गोविंद राधे।
कर्म, योग, ज्ञानादि मिश्रण बता दे॥ 3998 ॥
कर्म ते अभिप्राय गोविंद राधे।
भक्तिहीन वर्णाश्रम धर्म है बता दे॥ 3999 ॥
योग ते अभिप्राय गोविंद राधे।
भक्तिहीन अष्टांग योग बता दे॥ 4000 ॥
ज्ञान ते अभिप्राय गोविंद राधे।
भक्तिहीन 'अहं ब्रह्मास्मि' बता दे॥ 4001 ॥
जिस कर्म ते भी हो गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण सेवा वह ग्राह्य बता दे॥ 4002 ॥
जिस योग ते भी गोविंद राधे।
चित्तयोग हरि में हो ग्राह्य बता दे॥ 4003 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जिस ज्ञान ते हो गोविंद राधे।
कृष्ण तत्वज्ञान वह ग्राह्य बता दे॥ 4004॥
भक्ति मार्ग में भी पूर्व गोविंद राधे।
जीव हरि तत्वज्ञान श्रवण बता दे॥ 4005॥
ज्ञान योग कर्म आदि गोविंद राधे।
गुणों ते उत्पन्न सगुण बता दे॥ 4006॥
जीव ब्रह्म एकत्व गोविंद राधे।
कैवल्य ज्ञान भी सगुण बता दे॥ 4007॥
श्रवण कीर्तनादि भक्ति गोविंद राधे।
तीनों गुणों ते परे निर्गुण बता दे॥ 4008॥
ज्ञान का प्राकट्य गोविंद राधे।
सत्व गुण ते ही हो शास्त्र बता दे॥ 4009॥
किन्तु हरि भक्ति तो गोविंद राधे।
भक्ति ते ही हो प्रकट बता दे॥ 4010॥
श्रीकृष्ण भक्ति तो गोविंद राधे।
स्वरूप शक्ति की वृत्ति बता दे॥ 4011॥
स्वरूप शक्ति में गोविंद राधे।
तीनों गुणों का प्रवेश ना बता दे॥ 4012॥
उत्तमा भक्ति तो गोविंद राधे।
शुद्ध दिव्य चित् रूपा भक्ति है बता दे॥ 4013॥
निष्काम साधन भी गोविंद राधे।
भक्ति दिलाने में शक्य ना बता दे॥ 4014॥
धर्म अर्थ काम मोक्ष गोविंद राधे।
जन्य सुख हरि दें तुरत बता दे॥ 4015॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

किन्तु विशुद्धा भक्ति गोविंद राधे।
विशुद्ध भक्तों को ही दें बता दे॥ 4016॥
धन रूप तप बल गोविंद राधे।
कृष्ण प्रीति हित ना समर्थ बता दे॥ 4017॥
श्रीकृष्ण प्रीति हित गोविंद राधे।
एकमात्र भक्ति समर्थ बता दे॥ 4018॥
हरि सुख हित जो गोविंद राधे।
भक्ति माँगे वाको दें भक्ति बता दे॥ 4019॥
सबते बड़ी बाधा गोविंद राधे।
भक्ति में एकत्व मुक्ति बता दे॥ 4020॥
भक्ति में दूजी बाधा गोविंद राधे।
ब्रह्मलोक पर्यन्त भुक्ति बता दे॥ 4021॥
दिव्य प्रेम तेरा लक्ष्य गोविंद राधे।
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष धोखा बता दे॥ 4022॥
प्रेम ते जो प्रेम मिले गोविंद राधे।
वही प्रेम प्रेमी को सेवा दिला दे॥ 4023॥
साधन साध्य नहिं गोविंद राधे।
नित्य सिद्ध कृष्णप्रेम रसिक बता दे॥ 4024॥
कृपा साध्य कृष्णप्रेम गोविंद राधे।
साधना ते तो मन पात्र बना दे॥ 4025॥
साध्य भी दे सद्गुरु गोविंद राधे।
साधना भी सद्गुरु जीव को बता दे॥ 4026॥
कृष्ण भक्ति जन्म मूल गोविंद राधे।
भक्ति और भक्त दोनों हैं बता दे॥ 4027॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चराचर कोई जीव गोविंद राधे।
हरि भक्त हो तो सर्व पूज्य बता दे॥ 4028॥
हरि में रमा हो मन गोविंद राधे।
वह चाण्डाल भी है पूज्य बता दे॥ 4029॥
भक्तिहीन ब्रह्मा ते गोविंद राधे।
भक्त चाण्डाल है पूज्य बता दे॥ 4030॥
भक्ति युक्त चाण्डाल गोविंद राधे।
योग, यज्ञ, तप सब कर चुका बता दे॥ 4031॥
भक्तियुक्त चाण्डाल गोविंद राधे।
भगवान का है प्राण प्यारा बता दे॥ 4032॥
द्विज बारह गुणयुक्त गोविंद राधे।
प्रिय नहिं हरि का अभक्त बता दे॥ 4033॥
विप्र के बारह गुण गोविंद राधे।
धर्म, सत्य, दम, अरु लज्जा बता दे॥ 4034॥
तितिक्षा, अमत्सर गोविंद राधे।
असूया, हीनता, दान बता दे॥ 4035॥
यज्ञ अरु धृति अरु गोविंद राधे।
वेद अध्ययन गुण बारह बता दे॥ 4036॥
श्वपच भी भक्त हो तो गोविंद राधे।
कोटि कर्मी ज्ञानी ते भी श्रेष्ठ बता दे॥ 4037॥
हरि कहे भक्तिहीन गोविंद राधे।
विधि हरि हर मोहिं प्रिय ना बता दे॥ 4038॥
कर्म, योग, ज्ञान अरु गोविंद राधे।
भगवान ते भी भक्ति बड़ी है बता दे॥ 4039॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति ते जो भक्ति मिले गोविंद राधे।
उसी भक्ति के वश श्याम बता दे॥ 4040॥
भक्त दे चुनौती हरि गोविंद राधे।
उर ते निकले तो जानें बता दे॥ 4041॥
हरि गुरु कृपा ते ही गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण दिव्य भक्ति मिलेगी बता दे॥ 4042॥
तप ते ना यज्ञ ते ही गोविंद राधे।
संन्यास ते ना मिले भक्ति बता दे॥ 4043॥
अग्नि जल सूर्य आदि गोविंद राधे।
आराधना ते मिले भक्ति ना बता दे॥ 4044॥
चारों वेदों के गोविंद राधे।
ज्ञान ते भी मिले नहिं भक्ति बता दे॥ 4045॥
गुरु की प्रपत्ति अरु गोविंद राधे।
सेवा अरु सत्संग भक्ति दिला दे॥ 4046॥
गुरु है प्रत्यक्ष गोविंद राधे।
याते गुरुकृपा भी है सुलभ बता दे॥ 4047॥
मेघ का काम जैसे गोविंद राधे।
भूमि पै जल बरसाना बता दे॥ 4048॥
ऐसे ही गुरुकार्य गोविंद राधे।
बिनु कारण कृपा करना बता दे॥ 4049॥
कपट रहित होके गोविंद राधे।
हरि गुरु सेवा में ही मन को लगा दे॥ 4050॥
हरि गुरु सेवा ही गोविंद राधे।
जीव का एक उद्देश्य बता दे॥ 4051॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सेवा को आज्ञा का गोविंद राधे।
शत प्रतिशत पालन ही बता दे॥ 4052 ॥
हरि गुरु सेवा है गोविंद राधे।
तीन ही प्रकार की सबको बता दे॥ 4053 ॥
मन ते स्मरण नित्य गोविंद राधे॥
यह है मानसी सेवा बता दे॥ 4054 ॥
मानसी सेवा की गोविंद राधे।
सिद्धि हेतु तन धन सेवा बता दे॥ 4055 ॥
मन की सेवा प्रमुख गोविंद राधे।
साथ में तन धन को भी लगा दे॥ 4056 ॥
सेवा तन धन ते हो गोविंद राधे।
मन ते मिलन व्याकुलता बढ़ा दे॥ 4057 ॥
हरि गुरु कृपा ते ही गोविंद राधे।
मैंने कछु सेवा की यह भाव बना दे॥ 4058 ॥
तन ते ना सेवा मिले गोविंद राधे।
मन ते ही सेवा करो फल एक सा दे॥ 4059 ॥
हरि गुरु प्रेम में ना गोविंद राधे।
देरी हो ना दूरी हो मन को बता दे॥ 4060 ॥
जग ते हटा के मन गोविंद राधे।
बार बार हरि अरु गुरु में लगा दे॥ 4061 ॥
जहाँ मन जाय तेरा गोविंद राधे।
क्रोध जनि करो हरि गुरु को बिठा दे॥ 4062 ॥
यत्र तत्र सर्वत्र गोविंद राधे।
हरि गुरु सुमिरन मन ते करा दे॥ 4063 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति ते मिले भक्ति गोविंद राधे।
याते साधना भक्ति मन ते करा दे॥ 4064॥
एकमात्र साधन गोविंद राधे।
हरि निष्काम नव भक्ति बता दे॥ 4065॥
श्रवण अरु कीर्तन गोविंद राधे।
स्मरण अर्चन पद सेवन बता दे॥ 4066॥
दास्य सख्य वंदन गोविंद राधे।
आत्म निवेदन भक्ति नवधा बता दे॥ 4067॥
श्रवण भक्ति द्वारा गोविंद राधे।
परीक्षित ने लक्ष्य पाया बता दे॥ 4068॥
कीर्तन भक्ति द्वारा गोविंद राधे।
शुकदेव ने लक्ष्य पाया बता दे॥ 4069॥
स्मरण भक्ति द्वारा गोविंद राधे।
प्रह्लाद ने लक्ष्य पाया बता दे॥ 4070॥
पादसेवा द्वारा गोविंद राधे।
लक्ष्मी ने लक्ष्य पाया बता दे॥ 4071॥
पाद पूजन द्वारा गोविंद राधे।
पृथु ने भी लक्ष्य पाया बता दे॥ 4072॥
वंदन भक्ति द्वारा गोविंद राधे।
अक्रूर ने लक्ष्य पाया बता दे॥ 4073॥
दास्य भक्ति द्वारा गोविंद राधे।
हनुमान ने लक्ष्य पाया बता दे॥ 4074॥
सख्य भक्ति द्वारा गोविंद राधे।
अर्जुन ने लक्ष्य पाया बता दे॥ 4075॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आत्म निवेदन ते गोविंद राधे।
नृप बलि ने लक्ष्य पाया बता दे॥ 4076॥
उपर्युक्त भक्तों को गोविंद राधे।
एक ही भक्ति लक्ष्य प्राप्त करा दे॥ 4077॥
नारद भक्ति सूत्र गोविंद राधे।
भक्ति के ग्यारह प्रकार बता दे॥ 4078॥
गुरुमाहात्म्यासक्ति गोविंद राधे।
रूपासक्ति अरु पूजासक्ति बता दे॥ 4079॥
स्मरण आसक्ति गोविंद राधे।
दास्यासक्ति अरु सख्यासक्ति बता दे॥ 4080॥
कान्त आसक्ति गोविंद राधे।
वात्सल्य आसक्ति भक्ति बता दे॥ 4081॥
आत्म निवेदन गोविंद राधे।
तन्मयतासक्ति भक्ति बता दे॥ 4082॥
परमविरहासक्ति गोविंद राधे।
भक्ति एक रूप हैं ग्यारह बता दे॥ 4083॥
भक्ति है अनेक विधि गोविंद राधे।
सबते प्रमुख है स्मरण बता दे॥ 4084॥
स्मरण युक्त सासंग गोविंद राधे।
स्मरण बिनु अनासंग भक्ति बता दे॥ 4085॥
स्मरण की पाँच कोटि गोविंद राधे।
स्मरण धारणा अरु ध्यान बता दे॥ 4086॥
चौथी ध्रुवानुस्मृति गोविंद राधे।
पाँचवीं है कोटि समाधि बता दे॥ 4087॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इन्द्रिय मन बुद्धि गोविंद राधे।
परे हैं यद्यपि कृष्ण बता दे॥ 4088 ॥
किन्तु स्वरूप शक्ति गोविंद राधे।
जीव की इन्द्रियादि दिव्य बना दे॥ 4089 ॥
स्वरूप शक्ति ते हो गोविंद राधे।
मन दिव्य दिव्य रूपध्यान करा दे॥ 4090 ॥
इन्द्रिय मन दिव्य गोविंद राधे।
दिव्य हरि का रस ग्रहण करा दे॥ 4091 ॥
'अपि संराधने' गोविंद राधे।
सूत्र कह हरिभक्ति ग्राह्य है बता दे॥ 4092 ॥
भक्ति ते चित्त शुद्धि गोविंद राधे।
कर्म ज्ञान ते शुद्धि ना हो बता दे॥ 4093 ॥
मन जब शुद्ध हो तो गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण मन में स्वरूप शक्ति ला दे॥ 4094 ॥
मन तब दिव्य बने गोविंद राधे।
तब करे दिव्य प्रेम धारण बता दे॥ 4095 ॥
प्रेम बिनु माँगे मिले गोविंद राधे।
प्रथम शुद्ध मनरूपी पात्र बना दे॥ 4096 ॥
जननी तो साधन भक्ति गोविंद राधे।
सुता भावभक्ति सिद्ध भक्ति ना बता दे॥ 4097 ॥
साधन भक्ति जीव करे गोविंद राधे।
सिद्धा भक्ति हरि गुरु द्वारा दिला दे॥ 4098 ॥
कृष्णभक्ति चित्त को गोविंद राधे।
स्वरूप शक्ति तादात्म्य करा दे॥ 4099 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इन्द्रिय मन बुद्धि गोविंद राधे।
सबते करे कृष्ण भक्ति बता दे॥ 4100 ॥
जो न हरि लीला सुने गोविंद राधे।
वह कान साँप की ज्यौं बिल है बता दे॥ 4101 ॥
जो न हरि नाम गावे गोविंद राधे।
वह जीभ मेढकी की टर्र ज्यों बता दे॥ 4102 ॥
जो न हरि गुरुपद गोविंद राधे।
झुके वह सिर तनु बोझ बता दे॥ 4103 ॥
जो न करे हरि गुरु गोविंद राधे।
सेवा वह कर शव का है बता दे॥ 4104 ॥
जो न लखे हरि गुरु गोविंद राधे।
वह नैन मोर पंख सम है बता दे॥ 4105 ॥
जो न हरि गुरु धाम गोविंद राधे।
जाय वह पग वृक्ष सम है बता दे॥ 4106 ॥
जो न हरि नाम गा के गोविंद राधे।
हृदय पिघले वह वज्र बता दे॥ 4107 ॥
जो न गुरु पद रज गोविंद राधे।
धारे वह तनु जनु शव है बता दे॥ 4108 ॥
जो न हरि गुन गा के गोविंद राधे।
आँसू बहावे वह अन्धा बता दे॥ 4109 ॥
नेत्रों का फल यह गोविंद राधे।
श्यामा श्याम रूप रस पान करा दे॥ 4110 ॥
जिसकी भी भक्ति करो गोविंद राधे।
उसका ही फल मिले अन्त में बता दे॥ 4111 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि हरिजन भक्ति गोविंद राधे।
मायातीत दिव्य गोलोक दिला दे॥ 4112॥
मायिक जन भक्ति गोविंद राधे।
स्वर्ग नरक मृत्युलोक दिला दे॥ 4113॥
तीन भक्ति मायिक हैं गोविंद राधे।
तमोगुणी अर्थार्थी भक्त बता दे॥ 4114॥
रजोगुणी जिज्ञासु गोविंद राधे।
सत्वगुणी आर्त है भक्त बता दे॥ 4115॥
आलम्बन हरि गोविंद राधे।
याते उपर्युक्त सुकृती बता दे॥ 4116॥
किन्तु शुद्ध भक्त तो हैं गोविंद राधे।
हरि को प्राणाधिक प्यारे बता दे॥ 4117॥
अनुकूल प्रतिकूल गोविंद राधे।
दोनों भाव की भक्ति हरि ते मिला दे॥ 4118॥
सिद्धान्त अनुकूल की गोविंद राधे।
भक्ति ही भक्ति है शुद्ध बता दे॥ 4119॥
श्रीकृष्ण प्राप्ति ते गोविंद राधे।
भक्त हो पूर्ण निर्ग्रन्थ बता दे॥ 4120॥
निर्ग्रन्थ अर्थ एक गोविंद राधे।
अविद्याग्रंथि ते रहित बता दे॥ 4121॥
निर्ग्रन्थ अर्थ दूजा गोविंद राधे।
शास्त्र विधि ते जो हो रहित बता दे॥ 4122॥
श्रीकृष्ण प्राप्ति ते गोविंद राधे।
भक्त को पूर्ण ब्रह्मज्ञान हो बता दे॥ 4123॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रीकृष्ण प्राप्ति ते गोविंद राधे।
भक्त के कर्म सब भस्म हों बता दे॥ 4124॥
श्रीकृष्ण प्राप्ति ते गोविंद राधे।
माया का अत्यन्ताभाव हो बता दे॥ 4125॥
दो हैं प्रमुख ग्रह गोविंद राधे।
एक है माया एक कृष्ण बता दे॥ 4126॥
जीव तो सदा ही गोविंद राधे।
मायाग्रह ते गृहीत है बता दे॥ 4127॥
कृष्णग्रह लगे जब गोविंद राधे।
मायाग्रह तब ही छोड़े बता दे॥ 4128॥
प्रह्लाद बालक गोविंद राधे।
कृष्णरूपीग्रह ते थे ग्रस्त बता दे॥ 4129॥
कभू तो वियोग भाव गोविंद राधे।
युक्त करते थे रुदन बता दे॥ 4130॥
कभू तो मिलन भाव गोविंद राधे।
अपना कर हँसें नाचें बता दे॥ 4131॥
कभु तन्मयता में गोविंद राधे।
अपने आप में कृष्ण भाव ला दे॥ 4132॥
जब लौं साधक तनु गोविंद राधे।
स्तंभ स्वेद रोमांच हो ना बता दे॥ 4133॥
जब लौं साधक तनु गोविंद राधे।
स्वरभेद कम्प अश्रु हो ना बता दे॥ 4134॥
तब लौं हृदय की गोविंद राधे।
शुद्धि पूर्ण रूप ते ना होगी बता दे॥ 4135॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आग में तपाने ते गोविंद राधे।
सोना ज्यों मल तजि शुद्ध हो बता दे॥ 4136॥
ऐसे ही भक्ति ते भी गोविंद राधे।
मन वासना तजि शुद्ध हो बता दे॥ 4137॥
भक्ति तो है माता सम गोविंद राधे।
जीव है सुत सम मलयुत बता दे॥ 4138॥
माता सुत-मल धोके गोविंद राधे।
स्वच्छ बना के हरि गोद में बिठा दे॥ 4139॥
पिया मोते रूठा है गोविंद राधे।
भक्ति सखि कृपा करि पिया को मना दे॥ 4140॥
भक्त भक्ति भगवान गोविंद राधे।
तीनों का भली भाँति ज्ञान करा दे॥ 4141॥
भक्ति भक्त भगवान गोविंद राधे।
सब हैं परस्पर एक सबको बता दे॥ 4142॥
भक्ति भगवत्स्वरूप गोविंद राधे।
दोनों में भेद मूढ़ बता दे॥ 4143॥
भक्त भगवान दोनों गोविंद राधे।
भक्ति के आधीन भक्तों को बता दे॥ 4144॥
आपु हरि मुट्ठी में गोविंद राधे।
हरि आपु मुट्ठी में भक्ति करा दे॥ 4145॥
भक्ति बिनु भगवान गोविंद राधे।
भगवान बिनु भक्ति रहे ना बता दे॥ 4146॥
भक्ति की प्राप्ति ते गोविंद राधे।
सब साध्य कहें भक्त सेवा दिला दे॥ 4147॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्त आगे चक्री चलें गोविंद राधे।
पीछे शिव बायें चलें वरुण बता दे॥ 4148॥
भक्त दायें इन्द्र चलें गोविंद राधे।
भक्त राधे राधे राधे नाम सुना दे॥ 4149॥
भक्तों में दो गुण गोविंद राधे।
कृष्णनिष्ठा जगतृष्णात्याग बता दे॥ 4150॥
भक्ति में श्रद्धा का गोविंद राधे।
स्थान है सबते प्रमुख बता दे॥ 4151॥
भक्ति में कृष्ण तत्व गोविंद राधे।
परिज्ञान परमानिवार्य बता दे॥ 4152॥
भक्ति में कृष्ण प्रति गोविंद राधे।
भाव अनन्य अनिवार्य बता दे॥ 4153॥
भक्ति में निष्काम गोविंद राधे।
भाव का होना मुख्य है बता दे॥ 4154॥
भक्ति में पाँचों मुक्ति गोविंद राधे।
भक्त हित सर्वथा त्याज्य बता दे॥ 4155॥
दंभी भक्त ही माँगे गोविंद राधे।
भक्ति ते भुक्ति या मुक्ति बता दे॥ 4156॥
मायिक सुख सब गोविंद राधे।
राजसी, तामसी भक्ति बता दे॥ 4157॥
मुक्ति का सुख है गोविंद राधे।
सात्विकी भक्ति ही भक्त को बता दे॥ 4158॥
निर्गुण शुद्ध भक्ति गोविंद राधे।
कृष्ण सुखार्थ ही होती बता दे॥ 4159॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रीकृष्ण भक्ति हित गोविंद राधे।
गुरु की शरण अनिवार्य बता दे॥ 4160॥

कृष्ण के समान ही गोविंद राधे।
गुरु को माने करे सेवा बता दे॥ 4161॥

हरि माहात्म्यज्ञान गोविंद राधे।
साधक को प्रथम अनिवार्य बता दे॥ 4162॥

माहात्म्यज्ञान बिनु गोविंद राधे।
जो प्रेम हो निज सुख का बता दे॥ 4163॥

कामी तो यही कहे गोविंद राधे।
मैं तो तेरा ही सुख चाहूँ बता दे॥ 4164॥

किन्तु शत प्रतिशत गोविंद राधे।
निज प्रिय को दे धोखा बता दे॥ 4165॥

अतएव भक्तों को गोविंद राधे।
माहात्म्य ज्ञान रह विरह में बता दे॥ 4166॥

संयोग आनन्द गोविंद राधे।
मन बुद्धि को आनन्द में डुबा दे॥ 4167॥

याते संयोग में तो गोविंद राधे।
माहात्म्य ज्ञान रहे ना बता दे॥ 4168॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भावनिर्माण में तो गोविंद राधे।
वस्तु विषय ज्ञान कारण बता दे॥ 4169॥

ऐसे ही प्रेम में भी गोविंद राधे।
ज्ञान का होना अनिवार्य बता दे॥ 4170॥

उत्तम जान के ही गोविंद राधे।
हम कछु भी चाहते हैं बता दे॥ 4171॥

अनुपयोगी जानि गोविंद राधे।
करते हैं उसकी उपेक्षा बता दे॥ 4172॥
लाभ या सुख जानि गोविंद राधे।
होता है मन अनुराग बता दे॥ 4173॥
ज्ञान की प्रेरणा ते गोविंद राधे।
होता है राग अरु द्वेष बता दे॥ 4174॥
व्यक्ति को भला जानि गोविंद राधे।
उस पै हो श्रद्धा स्नेह बता दे॥ 4175॥
व्यक्ति को बुरा जानि गोविंद राधे।
वाते हो द्वेष या घृणा ही बता दे॥ 4176॥
व्यक्ति सामान्य जानि गोविंद राधे।
होगा उदासीन भाव बता दे॥ 4177॥
माहात्म्य ज्ञान बिनु गोविंद राधे।
प्रेम घटता ही जाये बता दे॥ 4178॥
हरि सम्बन्धी ज्ञान गोविंद राधे।
जितना भी हो प्रेम उतना बढ़ा दे॥ 4179॥
सविशेष ज्ञान ते गोविंद राधे।
COPYRIGHT
होता है हरि ते प्रेम बता दे॥ 4180॥
RADHA GOVIND SAMITI
पुनि हरि प्रेम ते गोविंद राधे।
होता है हरि सूक्ष्म ज्ञान बता दे॥ 4181॥
सालिगराम में तो गोविंद राधे।
नहिं सौंदर्य किन्तु प्रेम है बता दे॥ 4182॥
याते यह सिद्ध हुआ गोविंद राधे।
माहात्म्य ज्ञान प्रेम करा दे॥ 4183॥

माहात्म्य सम्बन्ध गोविंद राधे।
सेवा ज्ञान ते हो पुष्ट प्रेम बता दे॥ 4184॥

अवतार काल में तो गोविंद राधे।
बिनु माहात्म्यज्ञान प्रेम हो बता दे॥ 4185॥

कामभाव युक्त प्रेम गोविंद राधे।
माहात्म्यज्ञान रहित बता दे॥ 4186॥

हरि माहात्म्य ज्ञान गोविंद राधे।
साधक यदि भूले तो दूषण बता दे॥ 4187॥

हरि माहात्म्य ज्ञान गोविंद राधे।
सिद्ध यदि भूले तो भूषण बता दे॥ 4188॥

गोपियों ने शास्त्र वेद गोविंद राधे।
ना तो पढ़ा ना सुना ही बता दे॥ 4189॥

गोपियों ने गुरुदीक्षा गोविंद राधे।
किसी भी गुरु ते नहिं ली थी बता दे॥ 4190॥

गोपियों ने कृष्ण हित गोविंद राधे।
योग, जप, तप नहिं किया था बता दे॥ 4191॥

गोपियाँ तो सिद्ध ही थीं गोविंद राधे।
याते माहात्म्यज्ञान भूली थीं बता दे॥ 4192॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

विरह में गोपियों को गोविंद राधे।
हरि माहात्म्य ज्ञान पूर्ण था बता दे॥ 4193॥

मृद्भक्षण लीला में गोविंद राधे।
कृष्ण विराट रूप मैया को दिखा दे॥ 4194॥

उस समय मैया को गोविंद राधे।
हरि माहात्म्यज्ञान हुआ था बता दे॥ 4195॥

किन्तु पुनि कृष्ण ने गोविंद राधे।
मैया के ज्ञान को भुलाया बता दे॥ 4196॥
ऐसे ही ग्वाल आगे गोविंद राधे।
कृष्ण ने दावानल पिया था बता दे॥ 4197॥
तब भी ग्वालों को गोविंद राधे।
हरि माहात्म्य ज्ञान हुआ था बता दे॥ 4198॥
किन्तु पुनि कृष्ण ने ही गोविंद राधे।
माया ते ज्ञान भुलाया बता दे॥ 4199॥
ब्रजवासियों को भी गोविंद राधे।
निज धाम दर्शन कराया बता दे॥ 4200॥
तब भी ब्रजवासियों को गोविंद राधे।
हरि माहात्म्य ज्ञान हुआ था बता दे॥ 4201॥
पुनि ब्रजवासियों का गोविंद राधे।
हरि ने भुलाया वह ज्ञान बता दे॥ 4202॥
यदि माहात्म्य ज्ञान गोविंद राधे।
रहता तो प्रेम नहिं मिलता बता दे॥ 4203॥
फिर तो ब्रजवासी गोविंद राधे।
भगवान मानि बस पूजते बता दे॥ 4204॥
कृष्ण भिन्न देव भक्ति गोविंद राधे।
रस रूप नहिं भाव रूप है बता दे॥ 4205॥
श्रीकृष्ण की भक्ति गोविंद राधे।
रसरूप की रसरूपा बता दे॥ 4206॥
'फलरूपत्वात्' गोविंद राधे।
सूत्र अर्थ भक्ति रसरूप बता दे॥ 4207॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति है सुखरूपा गोविंद राधे।
सुख का साधन ना भक्ति है बता दे॥ 4208॥
कृष्णभक्ति फलरूपा गोविंद राधे।
सुखरूपा कारणरहित बता दे॥ 4209॥
भक्ति है फलरूपा गोविंद राधे।
भक्ति ते फल जनि माँगो बता दे॥ 4210॥
भक्ति का फल भक्ति गोविंद राधे।
भक्ति का फल भगवत्प्राप्ति ना बता दे॥ 4211॥
भक्ति फल और हो तो गोविंद राधे।
भक्ति वृक्ष सम हो नीरस बता दे॥ 4212॥
भक्तिफल रसरूप गोविंद राधे।
फल में न छिलका न गुठली बता दे॥ 4213॥
भक्ति है फलरूपा गोविंद राधे।
सदा ही अमर रहे सब को बता दे॥ 4214॥
भक्ति तो है फलरूपा गोविंद राधे।
अमृतस्वरूपा, गुरुवर ते दिला दे॥ 4215॥
'अमृतस्वरूपा च' गोविंद राधे।
नारद भक्ति सूत्र अर्थ बता दे॥ 4216॥
अमृतस्वरूपा अर्थ गोविंद राधे।
भक्ति है भगवत्स्वरूपा बता दे॥ 4217॥
साधन काल में तो गोविंद राधे।
योग ज्ञान अमृत नहीं हैं बता दे॥ 4218॥
एकमात्र भक्ति ही गोविंद राधे।
साधन काल में भी अमृत बता दे॥ 4219॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति तो नित्य बढ़े गोविंद राधे।
किन्तु कभु होता ना अन्त बता दे॥ 4220 ॥
भक्ति ते हरि मिलें गोविंद राधे।
हरि ते मिले भक्ति भक्ति बढ़ा दे॥ 4221 ॥
फिर हरि फिर भक्ति गोविंद राधे।
फिर हरि फिर भक्ति अन्त ना बता दे॥ 4222 ॥
भक्ति अनुकम्पा में गोविंद राधे।
निमित्त नैमित्तिक भाव बता दे॥ 4223 ॥
जैसे बीज ते वृक्ष गोविंद राधे।
जैसे वृक्ष ते बीज दोनों बता दे॥ 4224 ॥
भक्त की कोमलता गोविंद राधे।
भक्त की वास्तविक सिद्धि बता दे॥ 4225 ॥
भक्ति की मधुरता ही गोविंद राधे।
भक्त का है अमृतत्व बता दे॥ 4226 ॥
भक्ति में अतृप्ति ही है गोविंद राधे।
प्रेमीजन वाय तृप्ति बता दे॥ 4227 ॥
भक्त की प्यास ही गोविंद राधे।
भक्त की सच्ची तृप्ति बता दे॥ 4228 ॥
भक्ति अनुभवरूपा गोविंद राधे।
विरले ही उर में हो प्रकट बता दे॥ 4229 ॥
भक्ति के पथ में तो गोविंद राधे।
पुण्य पाप दोनों हैं बाधा बता दे॥ 4230 ॥
पुण्यजन्य प्रतिबंध गोविंद राधे।
कृष्णभक्ति ते ही मिटेंगे बता दे॥ 4231 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पापजन्य प्रतिबंध गोविंद राधे।
कृष्णभक्ति ते ही मिटेंगे बता दे॥ 4232॥

सभी जीव कर्मों के गोविंद राधे।
बन्धन में ही दुख भोगें बता दे॥ 4233॥

जो जीव हरिभक्त गोविंद राधे।
वे ही सदा सुख भोगें बता दे॥ 4234॥

कर्मों के बन्धन को गोविंद राधे।
काटने में भक्ति तलवार बता दे॥ 4235॥

संसार बन्धन गोविंद राधे।
कारण गुणयुक्त कर्म बता दे॥ 4236॥

कर्मों का कारण गोविंद राधे।
इन्द्रियों की नाना वासना बता दे॥ 4237॥

कोटि कोटि साधन ते गोविंद राधे।
कर्म बीज वासनायें जायें ना बता दे॥ 4238॥

एकमात्र कृष्णभक्ति गोविंद राधे।
सब रोगों की औषधि बता दे॥ 4239॥

जैसे भुक्त अन्नों को गोविंद राधे।
जठराग्नि अपने आप जला दे॥ 4240॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वैसे ही विशुद्ध भक्ति गोविंद राधे।
पंचकोश अपने आप जला दे॥ 4241॥

भभकती आग जैसे गोविंद राधे।
काष्ठ के ढेर को राख बना दे॥ 4242॥

ऐसे ही भक्ति मेरी गोविंद राधे।
सारे पाप पुण्यों को तुरत जला दे॥ 4243॥

निष्काम धर्म अरु गोविंद राधे।
भक्ति मन शुद्ध करे अन्तर बता दे॥ 4244 ॥
निष्काम धर्म तो गोविंद राधे।
चित्त ते दोष निकाले बता दे॥ 4245 ॥
दोष निकाले अरु गोविंद राधे।
करे गुणाधान भी भक्ति बता दे॥ 4246 ॥
वासना नाश ते गोविंद राधे।
शुद्ध भक्ति ही हो उदित बता दे॥ 4247 ॥
पूर्ण वासना नाश तो गोविंद राधे।
विशुद्ध सत्व प्राप्ति ते हो बता दे॥ 4248 ॥
विशुद्ध सत्व ते ही गोविंद राधे।
प्राकृत मन भी हो दिव्य बता दे॥ 4249 ॥
विशुद्ध भक्ति दो गोविंद राधे।
जड़ देह अरु चिद्‌देह गत बता दे॥ 4250 ॥
साधना भक्ति नव गोविंद राधे।
जड़ देह द्वारा जड़ देहगत बता दे॥ 4251 ॥
श्रीकृष्ण भक्ति नव गोविंद राधे।
भाव देह द्वारा चिद्‌देहगत बता दे॥ 4252 ॥
जड़ देहगत भक्ति गोविंद राधे।
दो हैं इन्द्रिय अरु मन ते बता दे॥ 4253 ॥
मन की है भक्ति भक्ति गोविंद राधे।
तैलधारावत मन को लगा दे॥ 4254 ॥
देश काल नियम नहिं गोविंद राधे।
श्रद्धा भक्ति युक्त होके मन को लगा दे॥ 4255 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तैलधारावत गोविंद राधे।
हरि स्मरण जो हो भक्ति बता दे॥ 4256॥
सोइ जन्म सोई कर्म गोविंद राधे।
सोइ मन है धन्य धन्य बता दे॥ 4257॥
जो तैलधारावत गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण का करे स्मरण बता दे॥ 4258॥
श्रीकृष्ण प्रेम में तो गोविंद राधे।
भूल जाना है असम्भव बता दे॥ 4259॥
विस्मरण हो यदि गोविंद राधे।
वह प्रेम प्रेम ही नहीं है बता दे॥ 4260॥
सुगम भी अगम भी गोविंद राधे।
जैसी भावना हो भक्ति वैसी बना दे॥ 4261॥
भक्ति भी कठिन हो तो गोविंद राधे।
हरि शरणागति काम बना दे॥ 4262॥
मन की प्रपत्ति ऐसी गोविंद राधे।
भक्ति विरक्ति अरु ज्ञान करा दे॥ 4263॥
मन ते ही ध्यानयुक्त गोविंद राधे।
भक्ति है वास्तविक भक्ति बता दे॥ 4264॥
मन ही है भक्ति कर्ता गोविंद राधे।
शेष इन्द्रियों को साथ सेवा दिला दे॥ 4265॥
इन्द्रियों की भक्ति ऐसी गोविंद राधे।
जैसे कोइ प्राणहीन शव को सजा दे॥ 4266॥
साधन अनन्त किये गोविंद राधे।
मन को लगाया नहिं भूल बता दे॥ 4267॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग में लगा है मन गोविंद राधे।
याते प्रथम तत्वज्ञान करा दे॥ 4268॥
तत्वज्ञान होने पै गोविंद राधे।
साधना में छन छन मन को लगा दे॥ 4269॥
ज्ञान तो तीन हैं गोविंद राधे।
एक है तत् कृष्णज्ञान बता दे॥ 4270॥
यह कृष्ण ज्ञान तो गोविंद राधे।
है परम अनिवार्य बता दे॥ 4271॥
दूसरा ज्ञान है गोविंद राधे।
त्वं तत्व जीव का भी ज्ञान बता दे॥ 4272॥
यह जीव ज्ञान भी गोविंद राधे।
है परम अनिवार्य बता दे॥ 4273॥
तीसरा ज्ञान तो है गोविंद राधे।
जीव अरु ब्रह्म ऐक्य ज्ञान बता दे॥ 4274॥
यह ज्ञान मुक्ति ही दे गोविंद राधे।
याते है भक्तों को वर्ज्य बता दे॥ 4275॥
कृष्ण जीव ज्ञान अरु गोविंद राधे।
दोनों का सम्बन्ध ज्ञान करा दे॥ 4276॥
पुनि साधन अरु गोविंद राधे।
साध्य का भी ज्ञान करा दे॥ 4277॥
पुनि गुरुतत्व ज्ञान गोविंद राधे।
गुरु की शरणागति ज्ञान भी करा दे॥ 4278॥
पुनि रूपध्यान अरु गोविंद राधे।
निष्काम भाव का ज्ञान करा दे॥ 4279॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अपने इष्ट में ही गोविंद राधे।
हो अनन्यता यह ज्ञान करा दे॥ 4280॥

अपने साधन में गोविंद राधे।
हो अनन्यता यह ज्ञान करा दे॥ 4281॥

अपने आचार्य में गोविंद राधे।
हो अनन्यता यह ज्ञान करा दे॥ 4282॥

उपर्युक्त अतिरिक्त गोविंद राधे।
यदि कहीं मन हो सक्त बता दे॥ 4283॥

वह है कुसंग अति गोविंद राधे।
साधक को यह ज्ञान भी करा दे॥ 4284॥

परदोष देखे या गोविंद राधे।
सुने भी नहीं यह भी समझा दे॥ 4285॥

सर्वदा सर्वत्र गोविंद राधे।
उपर्युक्त सब ज्ञान बुद्धि में बिठा दे। 4286॥

तनु है क्षणिक यह गोविंद राधे।
ज्ञान जानि हरि भक्ति तुरत करा दे॥ 4287॥

संसार सिन्धु सम गोविंद राधे।
इसमें मगर भक्षक छे बता दे॥ 4288॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

काम क्रोध लोभ मोह गोविंद राधे।
मद मात्सर्य छे हैं मगर बता दे॥ 4289॥

ज्ञानी योगी को भी गोविंद राधे।
काम आदि मगर ना छोड़ें बता दे॥ 4290॥

विश्वामित्र को देखो गोविंद राधे।
क्रोध ते त्रिशंकु हित स्वर्ग बना दे॥ 4291॥

काम अग्नि ज्वाला सम गोविंद राधे।
विषयभोग घृत सम ज्वाला बढ़ा दे॥ 4292॥
बार बार स्वर्ग सुख गोविंद राधे।
भोगा किन्तु भोग भोग वासना बढ़ा दे॥ 4293॥
काम क्रोध लोभ शत्रु गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण भक्ति बिनु जायें ना बता दे॥ 4294॥
भक्ति ते ही माया जाय गोविंद राधे।
तब काम क्रोध लोभ जायँ बता दे॥ 4295॥
हरि की कृपा बिनु गोविंद राधे।
काम क्रोध लोभ जाना धोखा बता दे॥ 4296॥
काम क्रोध लोभ आदि गोविंद राधे।
जग ते हटा के श्याम ही में लगा दे॥ 4297॥
काम क्रोध भय स्नेह गोविंद राधे।
आदि भाव भक्ति भी हरि ते मिला दे॥ 4298॥
चिन्तामणि में ज्यों गोविंद राधे।
दीपबुद्धि चिन्तामणि ही दिला दे॥ 4299॥
ऐसे श्रीकृष्ण में भी गोविंद राधे।
जार या शत्रुभाव कृष्ण ते मिला दे॥ 4300॥
राग ब्रज गोपियों को गोविंद राधे।
द्वेष शिशुपाल को भी हरि का बना दे॥ 4301॥
काम क्रोध लोभ आदि गोविंद राधे।
कृष्ण प्रति हो तो वाय दिव्य बता दे॥ 4302॥
गोपी काम क्रोध लोभ गोविंद राधे।
प्रिय सुख हित ही था भक्त को बता दे॥ 4303॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रोध पै क्रोध करो गोविंद राधे।
अपकारी पै क्रोध करो ना बता दे॥ 4304॥

क्रोध करो तुम बिनु गोविंद राधे।
जीना क्या जीना मुझे मौत बुला दे॥ 4305॥

लोभ यह प्रेम मेरा गोविंद राधे।
मैं भी बढ़ाऊँ अरु तू भी बढ़ा दे॥ 4306॥

अभिमान मेरा स्वामी गोविंद राधे।
मैं हूँ दास और कछु अभिमान ना दे॥ 4307॥

पाँच ही हैं तेरे काम गोविंद राधे।
पाँचों काम मूढ़ मन श्याम का बना दे॥ 4308॥

शब्द, स्पर्श, रूप आदि गोविंद राधे।
विष जग के हैं रस हरि के बता दे॥ 4309॥

श्रोत्र, नेत्र, नासा, त्वक् गोविंद राधे।
रसना को हरि का विषय दिला दे॥ 4310॥

नेत्र हरि दर्शन गोविंद राधे।
श्रोत्र ते हरिकथा श्रवण करा दे॥ 4311॥

त्वचा ते संश्लेष गोविंद राधे।
नासा ते दिव्य तनुगन्ध दिला दे॥ 4312॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रसना ते उच्छिष्ट गोविंद राधे।
कृष्ण का भोग प्रसाद खिला दे॥ 4313॥

कृष्ण प्रेमी वर माँगे गोविंद राधे।
मेरे तनु कोटि कोटि नेत्र बना दे॥ 4314॥

याते प्राणधन को मैं गोविंद राधे।
जी भर देखूँ दिन रात बता दे॥ 4315॥

कृष्ण प्रेमी वर माँगे गोविंद राधे।
मेरे तनु कोटि कोटि कान बना दे॥ 4316 ॥
याते श्याम प्यारे के गोविंद राधे।
जी भर सुनूँ गुणगान बता दे॥ 4317 ॥
पृथु ने वर माँगा गोविंद राधे।
हरि कथा हित कोटि कर्ण बना दे॥ 4318 ॥
कृष्ण नाम गुण तजि गोविंद राधे।
और शब्द कान को भाये ना बता दे॥ 4319 ॥
ऐसे ही स्पर्श रूप गोविंद राधे।
रस गंध जग का भाये ना बता दे॥ 4320 ॥
जग जनि छोड़ो मन गोविंद राधे।
जग कामना छोड़ो काम बना दे॥ 4321 ॥
जग कामना बना के गोविंद राधे।
काम ना बना हरि कामना बना दे॥ 4322 ॥
हरि कामना बना के गोविंद राधे।
जग कामना निर्मूल नसा दे॥ 4323 ॥
जग जो कृपा करे गोविंद राधे।
लख चौरासी द्वार घुमा दे॥ 4324 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि जो कृपा करे गोविंद राधे।
नित्यज्ञान नित्यआनन्द दिला दे॥ 4325 ॥
हरि जो कृपा करे गोविंद राधे।
आपु को ही क्रीतदास बना दे॥ 4326 ॥
सब कामनाएँ तजि गोविंद राधे।
श्यामा श्याम मिलन की कामना बढ़ा दे॥ 4327 ॥

कामना मिटाओ जनि गोविंद राधे।
युगल चरण सेवा कामना बढ़ा दे॥ 4328॥

श्यामा श्याम प्रेम तजि गोविंद राधे।
वैकुण्ठ भी दे कोऊ तो ठुकरा दे॥ 4329॥

नाभिपुत्र ऋषभ देव गोविंद राधे।
थे अवतार भगवान के बता दे॥ 4330॥

उनके थे सौ पुत्र गोविंद राधे।
उनमें थे नौ योगीश्वर बता दे॥ 4331॥

योगीश्वर कवि गोविंद राधे।
हरि अंतरिक्ष पिप्पलायन बता दे॥ 4332॥

प्रबुद्ध आविर्होत्र गोविंद राधे।
द्रुमिल चमस करभाजन बता दे॥ 4333॥

उपर्युक्त योगीश्वर गोविंद राधे।
मायातीत जीवन्मुक्त थे बता दे॥ 4334॥

एक बार ये सब गोविंद राधे।
नृप निमि यज्ञ में थे पहुँचे बता दे॥ 4335॥

उन योगीश्वरों ते गोविंद राधे।
COPYRIGHT
निमि ने पूछा था प्रश्न बता दे॥ 4336॥
RADHA GOVIND SAMITI

भागवत धर्म क्या है गोविंद राधे।
भक्त का लक्षण क्या कृपया बता दे॥ 4337॥

कवि ने उत्तर दिया गोविंद राधे।
कृष्ण भक्ति भागवत धर्म बता दे॥ 4338॥

तन, मन, बुद्धि, वाणी गोविंद राधे।
इन्द्रियादि के जो कर्म बता दे॥ 4339॥

हरि के निमित्त सब गोविंद राधे।
करे, हरि को ही करे अर्पित बता दे॥ 4340॥
हरि गुरु एक मानि गोविंद राधे।
भक्ति करे निष्काम भाव की बता दे॥ 4341॥
लीला कथा नित्य सुने गोविंद राधे।
नाम गुण गावे रूपध्यान करा दे॥ 4342॥
याते हो प्रेम उर गोविंद राधे।
प्रकट अवशि श्रीकृष्ण का बता दे॥ 4343॥
इमि द्रुत चित्त भक्त गोविंद राधे।
हँसे रोये गाये नाचे भाव में बता दे॥ 4344॥
सम्पूर्ण जग में ही गोविंद राधे।
निज इष्ट कृष्ण को देखे बता दे॥ 4345॥
ऐसी साधना ते मिले गोविंद राधे।
भक्ति वैराग्य हरिज्ञान बता दे॥ 4346॥
मन राखे हरि ही में गोविंद राधे।
इन्द्रियों को राखे चाहे जग में बता दे॥ 4347॥
भुक्ति मुक्ति प्राप्ति में भी गोविंद राधे।
आधे क्षण को भी कृष्ण भूले ना बता दे॥ 4348॥
भक्ति नौ प्रकार की है गोविंद राधे।
मुख्य श्रवण कीर्तन स्मरण बता दे॥ 4349॥
इन तीन भक्ति में भी गोविंद राधे।
रूपध्यान पै विशेष ध्यान दो बता दे॥ 4350॥
साधन मन भाया करो गोविंद राधे।
रूपध्यान मन ते अवशि करा दे॥ 4351॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन ते ही सोचो रूप गोविंद राधे।
मन ते ही अष्टयामी सेवा करा दे॥ 4352॥

मन में कामनायें गोविंद राधे।
आने न पायें रहे ध्यान बता दे॥ 4353॥

उपासना पास जाना गोविंद राधे।
अग्नि पास जाय जैसे शीत भगा दे॥ 4354॥

मन ते बनाओ रूप गोविंद राधे।
मन ते ही करो सेवा अर्चना बता दे॥ 4355॥

माधुर्य भाव में तो गोविंद राधे।
मन ते तजे देह भौतिक बता दे॥ 4356॥

मन ते बनावे देह गोविंद राधे।
दिव्य किशोरी सुन्दरी ज्यों बता दे॥ 4357॥

रूपध्यान ही है भक्ति गोविंद राधे।
याते निज मन ध्यान में लगा दे॥ 4358॥

जिसका हो जप आदि गोविंद राधे।
उसका रूपध्यान योग दर्शन बता दे॥ 4359॥

सतयुग में ध्यान मुख्य गोविंद राधे।
त्रेता में मख द्वापर पूजा बता दे॥ 4360॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कलि नाम कीर्तन गोविंद राधे।
किन्तु रूपध्यान सब युग में करा दे॥ 4361॥

मन ते रूपध्यान करो गोविंद राधे।
रसना ते नाम गुन कीर्तन करा दे॥ 4362॥

कभु हरि सन्मुख गोविंद राधे।
कभु उर कभु जग वस्तु में बिठा दे॥ 4363॥

अग जग सब जग गोविंद राधे।
श्यामा श्याममय मन ध्यान करा दे॥ 4364॥

शरणागत पूछे गोविंद राधे।
हे शरण्य श्यामा श्याम ध्यान बता दे॥ 4365॥

युगल किशोर की तो गोविंद राधे।
रूप माधुरी शब्दगम्य ना बता दे॥ 4366॥

युगल अंग प्रत्यंग गोविंद राधे।
भूषणों के भूषण हैं बता दे॥ 4367॥

प्रिया सीमान्त प्रान्त गोविंद राधे।
अरुण सिंदूर मंडित है बता दे॥ 4368॥

मुक्ताओं की लर गोविंद राधे।
शीश फूल शोभित भी है बता दे॥ 4369॥

प्रियतम सिर पै गोविंद राधे।
झूमती मोर चन्द्रिका है बता दे॥ 4370॥

युगल मुकुटमणि गोविंद राधे।
इन्द्रधनुष छविदार बता दे॥ 4371॥

मुकुट चमक मुख गोविंद राधे।
करे रंगन बौछार बता दे॥ 4372॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रिया के ललाट पै गोविंद राधे।
श्याम वर्ण की है बिन्दी बता दे॥ 4373॥

पिया के ललाट पै गोविंद राधे।
अरुण वर्ण की है बिंदी बता दे॥ 4374॥

प्रिया के कर्णों में गोविंद राधे।
कर्णफूल रत्नों ते खचित बता दे॥ 4375॥

पिया के कर्णों में गोविंद राधे।
मणिमय कुण्डल चमक बता दे॥ 4376 ॥
कर्णफूल कुण्डल गोविंद राधे।
झलमल झलक कपोल पै बता दे॥ 4377 ॥
प्रिया की नासा पै गोविंद राधे।
बेसर चमचम चमके बता दे॥ 4378 ॥
पिया की नासा पै गोविंद राधे।
मुक्ताहल भल झलके बता दे॥ 4379 ॥
दोनों के चपल नैन गोविंद राधे।
अति ही रसीले गँसीले बता दे॥ 4380 ॥
दोनों के अधर हैं गोविंद राधे।
दिव्य बिम्बफल के सदृश बता दे॥ 4381 ॥
दोनों के कपोल गोल गोविंद राधे।
मृदु मुसकनि अनमोल बता दे॥ 4382 ॥
दोनों के नैनों में गोविंद राधे।
अंजन खंजन को भी लजा दे॥ 4383 ॥
दोनों के अधरों में गोविंद राधे।
तांबूल की लाली है बता दे॥ 4384 ॥
दोनों के अंगों ते गोविंद राधे।
कुंज है आपु प्रकाश्य बता दे॥ 4385 ॥
प्रिया की भुजन पै गोविंद राधे।
मणिमंडित चूड़ा है बता दे॥ 4386 ॥
पिया की भुजन पै गोविंद राधे।
मणिमय बाजूबंद बता दे॥ 4387 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रिया की कलाई में गोविंद राधे।
रंगबिरंगी चूरियाँ बता दे॥ 4388॥
पिया की कलाई पै गोविंद राधे।
रतन खचित पहुँची है बता दे॥ 4389॥
युगल अँगुलियों में गोविंद राधे।
विविध मणिन मुद्रिकायें बता दे॥ 4390॥
दोनों के करतल गोविंद राधे।
लाल लाल मेहँदी ललित बता दे॥ 4391॥
प्रिया के गल बिच गोविंद राधे।
मणि मुक्तन को हार बता दे॥ 4392॥
पिया के गल बिच गोविंद राधे।
बहुरंगी मुक्तमाल बता दे॥ 4393॥
प्रिया के उर पै गोविंद राधे।
शोभित है चन्द्रहार बता दे॥ 4394॥
पिया के उर पै गोविंद राधे।
वैजयन्ती वनमाल बता दे॥ 4395॥
दोनों के वक्ष पै गोविंद राधे।
रंगों की बौछार बता दे॥ 4396॥
दोनों के कटि तट गोविंद राधे।
मणिनजटित किंकिणि है बता दे॥ 4397॥
प्रिया के नीलाम्बर गोविंद राधे।
पिया के पीताम्बर चमके बता दे॥ 4398॥
प्रिया के चरणों में गोविंद राधे।
कनकन पायल दमक बता दे॥ 4399॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पिया के चरणों में गोविंद राधे।
नूपुर धुनि रुनझुन है बता दे॥ 4400 ॥
प्रिया पद अँगुरिन गोविंद राधे।
रतनखचित बिछुये हैं बता दे॥ 4401 ॥
पिया के चरणों में गोविंद राधे।
तुलसीदल शोभित है बता दे॥ 4402 ॥
दोनों की नखमणि गोविंद राधे।
चन्द्रिका चमचमाती बता दे॥ 4403 ॥
दोनों के चरणों के गोविंद राधे।
तल में अलक्तक रंग बता दे॥ 4404 ॥
जैसे नेत्रपलकें गोविंद राधे।
नेत्र ते करें नित प्यार बता दे॥ 4405 ॥
ऐसे ही रसिक जन गोविंद राधे।
युगल चरण करें प्यार बता दे॥ 4406 ॥
दोनों रूप सुधा सिन्धु गोविंद राधे।
यह ध्यान तो है बिन्दु भी ना बता दे॥ 4407 ॥
ऐसे ध्यान धरु उर गोविंद राधे।
युगल किशोर का नित्य ही बता दे॥ 4408 ॥
गरबाँहीं दै के गोविंद राधे।
कुंज ते दोनों निकले बता दे॥ 4409 ॥
श्यामा की नीली सारी गोविंद राधे।
ललित लता में गई उरझ बता दे॥ 4410 ॥
श्याम दोउ कर ते गोविंद राधे।
सारी को सुरझा रहे हैं बता दे॥ 4411 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दोनों एक दूसरे को गोविंद राधे।
देखि मुस्करा भी रहे हैं बता दे॥ 4412 ॥
श्याम बड़े नटखट गोविंद राधे।
सारी को और उरझा दिये बता दे॥ 4413 ॥
ललिता कहीं श्याम गोविंद राधे।
चलो हटो मैं सुरझा दूँ बता दे॥ 4414 ॥
हरि का स्मरण ऐसा गोविंद राधे।
घोर पापी मन शुद्ध करा दे॥ 4415 ॥
ज्यों ज्यों मन शुद्ध होवे गोविंद राधे।
त्यों त्यों हरि सूक्ष्म तत्व ज्ञान करा दे॥ 4416 ॥
श्रवण या कर्म में तो गोविंद राधे।
शक्ति नहीं है जो हरि को बुला दे॥ 4417 ॥
श्रवण या कर्म जब गोविंद राधे।
तड़पन युक्त हो तो हरि ते मिला दे॥ 4418 ॥
हरि ते मिले बिनु गोविंद राधे।
जीव ते रहा नहिं जाये जो बता दे॥ 4419 ॥
जीव ते मिले बिनु गोविंद राधे।
हरि ते भी रहा नहिं जाये बता दे॥ 4420 ॥
साधक भक्त हित गोविंद राधे।
कृष्ण सेवा दो भाँति की बता दे॥ 4421 ॥
एक है प्रकट सेवा गोविंद राधे।
एक है मानसी सेवा बता दे॥ 4422 ॥
मूर्ति या चित्र में गोविंद राधे।
श्यामा श्याम को मानि सेवे बता दे॥ 4423 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐसी सेवा को गोविंद राधे।
रसिक प्रकट सेवा बतला दे॥ 4424॥
मानसी सेवा है गोविंद राधे।
मन ते ही करे जो सेवा बता दे॥ 4425॥
प्रकट सेवा को गोविंद राधे।
मन ते करे, सेवा मानसी बता दे॥ 4426॥
मानसी सेवा ते गोविंद राधे।
मन हो जाये एकाग्र बता दे॥ 4427॥
प्रकट सेवा ते हो गोविंद राधे।
मानसी सेवा श्रेष्ठ बता दे॥ 4428॥
मानसी सेवा में गोविंद राधे।
बाह्य नियम कछु नाहिं बता दे॥ 4429॥
जहाँ कहीं जैसे भी गोविंद राधे।
बने करे मन ते सेवा बता दे॥ 4430॥
प्रकट या मानसी गोविंद राधे।
सेवा में है भाव एक बता दे॥ 4431॥
प्रकट में नियम है गोविंद राधे।
मानसी में नहिं नियम बता दे॥ 4432॥
बन्धन मोक्ष का गोविंद राधे।
कारण एकमात्र मन है बता दे॥ 4433॥
अतएव सेवा भी गोविंद राधे।
मानसी ही करणीय बता दे॥ 4434॥
वस्तुतस्तु मन की गोविंद राधे।
भक्ति ही भक्ति है शास्त्र बता दे॥ 4435॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माला जप पाठ पूजा गोविंद राधे।
है प्रारम्भिक क ख ग घ बता दे॥ 4436 ॥
कृष्ण में तो मन का गोविंद राधे।
नित्य अनुराग सच्ची साधना बता दे॥ 4437 ॥
पूजा के प्रकार दो हैं गोविंद राधे।
वाह्य अरु मानस पूजा बता दे॥ 4438 ॥
वाह्य पूजा में तो गोविंद राधे।
षोडशोपचार विधियुक्त हो बता दे॥ 4439 ॥
मानस पूजा श्रेष्ठ गोविंद राधे।
मन ते ही यथा रुचि पूजा करा दे॥ 4440 ॥
पूजन सामग्री गोविंद राधे।
निज मन ते ही ले ले बता दे॥ 4441 ॥
जग के पदार्थ हित गोविंद राधे।
संकल्प को कोरी कल्पना बता दे॥ 4442 ॥
श्रीकृष्ण संबंधी गोविंद राधे।
संकल्प तो श्रीकृष्ण ते मिला दे॥ 4443 ॥
प्यार ही है जीवन गोविंद राधे।
प्यार ज्ञान प्यार आनन्द बता दे॥ 4444 ॥
आनन्द ही है ब्रह्म गोविंद राधे।
आनन्दसार सार प्यार बता दे॥ 4445 ॥
हरि ही ते प्यार करु गोविंद राधे।
जग के न डर डर जग तोहिं का दे॥ 4446 ॥
डर ते भी जनि डरु गोविंद राधे।
प्यार किया तो डरना क्या बता दे॥ 4447 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक बात भूलो जनि गोविंद राधे।
प्यार प्रिय सुख हित ही हो बता दे॥ 4448॥
पिय सुख सुखी रहु गोविंद राधे।
निज सुख को यमुना में बहा दे॥ 4449॥
प्यार किया तो किया गोविंद राधे।
पीछे ना हटेगा पग जग को बता दे॥ 4450॥
प्यार किया तो किया गोविंद राधे।
जाय तो जाय जिया जग को बता दे॥ 4451॥
जग लागी छूटै छन गोविंद राधे।
हरि लागी छूटै नहिं प्राण गवाँ दे॥ 4452॥
ईश्वर सम्बन्ध गोविंद राधे।
जुड़ कर टूटे नहिं कबहूँ बता दे॥ 4453॥
जग का सम्बन्ध गोविंद राधे।
अवशि टूटेगा टूटेगा बता दे॥ 4454॥
तू है जीव तेरा अंशी गोविंद राधे।
जग नाते तूने जोड़े तू ही मिटा दे॥ 4455॥
जीव जीव का नाता गोविंद राधे।
कृत्रिम अरु है अनित्य बता दे॥ 4456॥
जीव ब्रह्म का नाता गोविंद राधे।
स्वाभाविक अरु नित्य बता दे॥ 4457॥
शास्त्र वेद ज्ञान सार गोविंद राधे।
जग ते हटा दे मन हरि में लगा दे॥ 4458॥
जग में लगा ना मन गोविंद राधे।
हरि ही में छन छन मन को लगा दे॥ 4459॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि में न लागे मन गोविंद राधे।
जनि कहु बार बार मन को लगा दे॥ 4460॥
साधना लगाना मन गोविंद राधे।
सिद्धि लग जाना मन हरि में बता दे॥ 4461॥
प्रथम लगाना मन गोविंद राधे।
पुनि मन लग जाना होगा बता दे॥ 4462॥
हरि का तो है ही जीव गोविंद राधे।
यह मान लेना ही हरि का बना दे॥ 4463॥
तन मन धन सब गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण का है यह बुद्धि में बिठा दे॥ 4464॥
जीव तो है कृष्ण दास गोविंद राधे।
यह बात बार बार बुद्धि में बिठा दे॥ 4465॥
श्याम स्वामी मैं दास गोविंद राधे।
यह दृढ़ विश्वास हरि ते मिला दे॥ 4466॥
किन्तु दृढ़ विश्वास गोविंद राधे।
चित्त शुद्ध होने ते ही होगा बता दे॥ 4467॥
हरि ही हैं जीव के गोविंद राधे।
यह भाव नित्य हो तो हरि का बना दे॥ 4468॥
हरि ही हैं तेरे यह गोविंद राधे।
बार बार अभ्यास मन को करा दे॥ 4469॥
मन तेरा हरि तेरा गोविंद राधे।
मन को लगाना तेरा काम बना दे॥ 4470॥
सर्पदष्ट व्यक्ति को गोविंद राधे।
कड़ुवी नीम लगे मीठी बता दे॥ 4471॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अशुद्ध मन को ही गोविंद राधे।
हरि नाम गुण लीला भाये ना बता दे ॥ 4472 ॥

ज्यौं ज्यौं मन शुद्ध होगा गोविंद राधे।
त्यौं त्यौं हरि नाम गुण भायेगा बता दे ॥ 4473 ॥

कामुक को ही जैसे गोविंद राधे।
कामिनी में मिले सुख प्रमुख बता दे ॥ 4474 ॥

ऐसे शुद्ध मन को गोविंद राधे।
श्याम प्रेम में सुख प्रमुख बता दे ॥ 4475 ॥

मन बड़ा बलशाली गोविंद राधे।
बड़े बड़े ज्ञानी ध्यानी को भी हरा दे ॥ 4476 ॥

सुगम अशन अग्नि गोविंद राधे।
विषम है मन का निग्रह बता दे ॥ 4477 ॥

मन बड़ा चंचल गोविंद राधे।
अभ्यास वैराग्य वश में करा दे ॥ 4478 ॥

मन ते न हार मानो गोविंद राधे।
हरि नाम रूप लीला गुण में लगा दे ॥ 4479 ॥

हरि नाम गुण लीला गोविंद राधे।
कोई भी गा दे मन हरि में लगा दे ॥ 4480 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि नाम गुण लीला गोविंद राधे।
गावे न गावे मन हरि में लगा दे ॥ 4481 ॥

माना मन चंचल गोविंद राधे।
मन ते भी चंचल श्याम ते मिला दे ॥ 4482 ॥

मन वश में ना होगा गोविंद राधे।
हरि नाम रूप लीला गुण में लगा दे ॥ 4483 ॥

हरि नाम रूप में तो गोविंद राधे।
मन नाहिं लगे कैसे लगेगा बता दे॥ 4484॥

हरि नाम रूप में तो गोविंद राधे।
मन को लगाते रहो लगेगा बता दे॥ 4485॥

मन में निराशा को गोविंद राधे।
आने न दो स्वप्न में भी बता दे॥ 4486॥

जैसा संकल्प करे गोविंद राधे।
वैसा ही कर्म करे पुरुष बता दे॥ 4487॥

जैसा कर्म करे गोविंद राधे।
वैसा ही बन जाये पुरुष बता दे॥ 4488॥

अच्छा संकल्प करो गोविंद राधे।
अच्छा संकल्प तोहिं अच्छा बना दे॥ 4489॥

अच्छा संकल्प तो है गोविंद राधे।
हरि ते मिलना है अभी ही बता दे॥ 4490॥

बुरा संकल्प आये गोविंद राधे।
तो उसे अच्छे संकल्प ते मिटा दे॥ 4491॥

सत्यसंकल्प कृष्ण गोविंद राधे।
उनका ही अंश है जीव भी बता दे॥ 4492॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अतएव जीव का भी गोविंद राधे।
सत्यसंकल्प होना सम्भव बता दे॥ 4493॥

यदि जीव का मन गोविंद राधे।
शुद्ध हो सत्य संकल्प हो बता दे॥ 4494॥

याते निराशा को गोविंद राधे।
मन में न आने दो भूलिहूँ बता दे॥ 4495॥

एक बार सूरदास गोविंद राधे।
कृष्ण नाम गाते जा रहे थे बता दे॥ 4496॥
औचक सूरदास गोविंद राधे।
गिर गये जल भरे कुएँ में बता दे॥ 4497॥
सूर ने सोचा मन गोविंद राधे।
जिसने गिराया सो निकाले बता दे॥ 4498॥
आये तत्काल कृष्ण गोविंद राधे।
हाथ को बढ़ाया माया ते बता दे॥ 4499॥
सूर को निकाला अरु गोविंद राधे।
हाथ छुड़ा के गये भाग बता दे॥ 4500॥
सूर ने कहा कृष्ण गोविंद राधे।
उर ते भागो मानूँ मर्द बता दे॥ 4501॥
यह है भक्तों का गोविंद राधे।
दृढ़ अरु सत्य संकल्प बता दे॥ 4502॥
हरि ने दिया आँख गोविंद राधे।
सूर को उर ते लगाया बता दे॥ 4503॥
सूर ने कहा कृष्ण गोविंद राधे।
देख लिया पुनि मोहिं सूर बना दे॥ 4504॥
पूर्ण विश्वास रखो गोविंद राधे।
एक दिन मेरा मन लगेगा बता दे॥ 4505॥
कभु राधे कभु श्याम गोविंद राधे।
बारी बारी ते दोनों के गुन गा दे॥ 4506॥
हरि में लगा दे मन गोविंद राधे।
जग में जो हटि आवे फिर ते लगा दे॥ 4507॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि पुनि यों मन गोविंद राधे।
लगाते लगाते लग जायेगा बता दे॥ 4508॥
कर सों माला फिरे गोविंद राधे।
मन फिरे जग जप धोखा बता दे॥ 4509॥
हरि ते तो जो भी कहो गोविंद राधे।
रसना के साथ साथ मन भी लगा दे॥ 4510॥
सोचना ही साधना है गोविंद राधे।
बार बार सोचना ही हरि ते मिला दे॥ 4511॥
मेरा तू मेरा तू गोविंद राधे।
बार बार सोचना ही हरि ते मिला दे॥ 4512॥
बार बार सोचो मन गोविंद राधे।
गरबाँहीं दै के दोनों झलक दिखा दे॥ 4513॥
लक्ष्य को न दूर मानो गोविंद राधे।
लक्ष्य को निकट मानो लक्ष्य दिला दे॥ 4514॥
रो रो के बुलाये जा गोविंद राधे।
इक दिन आके मिलें अवशि बता दे॥ 4515॥
काहे घबराये मन गोविंद राधे।
COPYRIGHT
पूतना को दीन्हीं गति तोहिं काहे ना दे॥ 4516॥
RADHA GOVIND SAMITI
हरि सा उदार नहिं गोविंद राधे।
असुरन बधि निज लोक पठा दे॥ 4517॥
हरि सा उदार नहिं गोविंद राधे।
घोड़ा बनि गोपों को कंधे बिठा दे॥ 4518॥
हरि सा उदार नहिं गोविंद राधे।
मित्र सुदामा हित स्वर्ग बना दे॥ 4519॥

श्रीकृष्ण मित्र थे गोविंद राधे।
एक विप्र ब्रह्मज्ञानी बता दे॥ 4520 ॥
वेदज्ञ शांतचित्त गोविंद राधे।
अति ही विरक्त जित इन्द्रिय बता दे।। 4521 ॥
गृहस्थ होकर भी गोविंद राधे।
संग्रह परिग्रह रहित बता दे।। 4522 ॥
प्रारब्ध अनुसार गोविंद राधे।
जो भी मिल जाता खाते बता दे।। 4523 ॥
फटे पुराने वस्त्र गोविंद राधे।
जैसे वे वैसी पत्नी बता दे।। 4524 ॥
एक दिन पत्नी ने गोविंद राधे।
कहा सुदामा पति ते बता दे।। 4525 ॥
सुना है तुम्हारे मित्र गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण लक्ष्मीपति हैं बता दे।। 4526 ॥
वे कृष्ण विप्रभक्त गोविंद राधे।
शरणागत वत्सल हैं बता दे।। 4527 ॥
आप वहाँ जावो अरु गोविंद राधे।
उनते धन धान्य लावो बता दे।। 4528 ॥
वे कृष्ण द्वारिका में गोविंद राधे।
रहते हैं वैभवयुक्त बता दे।। 4529 ॥
अपने भक्तों को गोविंद राधे।
अपने आपु को देते बता दे।। 4530 ॥
ऐसे वे जगद्गुरु गोविंद राधे।
कंगाल को भी मालामाल बना दे।। 4531 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सोचा सुदामा ने गोविंद राधे।
इसी बहाने दर्शन हो बता दे।। 4532 ॥
कहा सुदामा ने गोविंद राधे।
सखा हेतु कछु भेंट तो दो बता दे।। 4533 ॥
पत्नी ने पड़ोसी ते गोविंद राधे।
चार मूठि चिवड़े माँगि दीन्यो बता दे।। 4534 ॥
चिवड़े सुदामा लै गोविंद राधे।
पहुँचे द्वारिकाधाम बता दे।। 4535 ॥
कृष्ण ने सुदामा के गोविंद राधे।
धोये चरण दृग-अश्रु ते बता दे।। 4536 ॥
दोनों ने बचपन की गोविंद राधे।
लीलाओं का किया गान बता दे।। 4537 ॥
कृष्ण छोरि एक मुट्ठी गोविंद राधे।
खाया चिवड़ा बड़े चाव ते बता दे।। 4538 ॥
रुक्मिणी लक्ष्मी ने गोविंद राधे।
पकरा हाथ कहा बस बस बता दे।। 4539 ॥
सुदामा घर लौटे गोविंद राधे।
देखा यहाँ तो दिव्य स्वर्ग बता दे।। 4540 ॥
भक्ति ही स्वार्थ भी है गोविंद राधे।
भक्ति ही है परमार्थ भी बता दे॥ 4541 ॥
चित्त सरल हो तो गोविंद राधे।
भक्ति आविर्भाव शीघ्र हो बता दे॥ 4542 ॥
भोला भाला व्यक्ति गोविंद राधे।
भक्ति का लाभ शीघ्र पावे बता दे॥ 4543 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

या तो पावे भोला भक्ति गोविंद राधे।
या तो पावे पूर्ण ज्ञानी भक्ति बता दे॥ 4544 ॥

दीन दुखी व्यक्ति गोविंद राधे।
भक्ति का लाभ शीघ्र पावे बता दे॥ 4545 ॥

धन बल विद्या आदि गोविंद राधे।
भक्ति लाभ में बड़ी बाधा बता दे॥ 4546 ॥

नवजात शिशु बनि गोविंद राधे।
करु क्रन्दन मन शुद्ध करा दे॥ 4547 ॥

भक्त का क्रन्दन गोविंद राधे।
हरि ना सकें सुनि, भागें बता दे॥ 4548 ॥

कृष्ण हैं पतंग सम गोविंद राधे।
करुण क्रन्दन है डोरी बता दे॥ 4549 ॥

बनि ठनि जनि जाओ गोविंद राधे।
जैसे हो वैसे रो के हरि को बुला दे॥ 4550 ॥

प्रेम अरु जल दोनों गोविंद राधे।
एक ही प्रकृति के होवें बता दे॥ 4551 ॥

दैन्य ते बाढ़ै प्रेम गोविंद राधे।
निम्न थल ओर भागे जल भी बता दे॥ 4552 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दीनता प्रिय हरि गोविंद राधे।
भक्ति में दीनता है प्रमुख बता दे॥ 4553 ॥

याते हरि भक्ति प्रिय गोविंद राधे।
अभिमान ते द्वेष हरि का बता दे॥ 4554 ॥

कर्म, योग, ज्ञान में तो गोविंद राधे।
अभिमान बार बार आये बता दे॥ 4555 ॥

भक्ति अरु अभिमान गोविंद राधे।
दोनों रहें एक ठौर ना बता दे॥ 4556 ॥
प्रेमी जनों को गोविंद राधे।
चार वृत्तियाँ अनिवार्य बता दे॥ 4557 ॥
दीनता उदारता गोविंद राधे।
सरलता अरु सहनशीलता बता दे॥ 4558 ॥
दीनता अर्थ यह गोविंद राधे।
मन की निरहंकारिता बता दे॥ 4559 ॥
सब का सम्मान करो गोविंद राधे।
सब के हैं उर बैठे कृष्ण बता दे॥ 4560 ॥
नम्रता की सीमा देखो गोविंद राधे।
पत्तल उठा के जूठी श्याम शिक्षा दे॥ 4561 ॥
दीनता है जग निंद्य गोविंद राधे।
किन्तु वही हरि प्रति हरि ते मिला दे॥ 4562 ॥
दीनों के हैं दोनों गोविंद राधे।
मन बुद्धि दोनों को दीन बना दे॥ 4563 ॥
सब ज्ञान भूल जावो गोविंद राधे।
आँसू बहाओ आँसू हरि को बुला दे॥ 4564 ॥
'आद्यागमत्' मंत्र गोविंद राधे।
रो के पुकारो हरि दरस दिखा दे॥ 4565 ॥
रो के पुकारो उन्हें गोविंद राधे।
भाजे भाजे आयेंगे मिलेंगे बता दे॥ 4566 ॥
रो रो के बुलाये जा गोविंद राधे।
कभू तो मिलेंगे हरि सब को बता दे॥ 4567 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रो रो के माँगो प्रेम गोविंद राधे।
एक दिन रोना रंग लाये बता दे॥ 4568॥
बनि के अबोध शिशु गोविंद राधे।
हरि ते ही माँगो प्रेम बता दे॥ 4569॥
हरि तो निरन्तर गोविंद राधे।
तव उर संकल्प देखें बता दे॥ 4570॥
मेरे कर्म हरि गुरु गोविंद राधे।
देख रहे हैं विश्वास करा दे॥ 4571॥
काषायवस्त्र ते ना गोविंद राधे।
भोजनादि नियम ते हरि मिलें ना बता दे॥ 4572॥
मौन या प्रवचन ते गोविंद राधे।
वनवास ते ना हरि मिलते बता दे॥ 4573॥
सच्चा है मौन सोई गोविंद राधे।
जामें न जाये मन जग में बता दे॥ 4574॥
सच्चा एकान्त सोई गोविंद राधे।
जामें मन सदा रहे कृष्ण में बता दे॥ 4575॥
सच्चा वैराग्य सोई गोविंद राधे।
मन नित्य अनुरक्त कृष्ण में बता दे॥ 4576॥
सच्चा है तप सोई गोविंद राधे।
जामें हरि विरह की आग जला दे॥ 4577॥
निष्काम आँसू ते ही गोविंद राधे।
श्यामा श्याम पिघलें मिलें भी बता दे॥ 4578॥
आँसू बहाये जा गोविंद राधे।
एक दिन आँसू तोहिं हरि ते मिला दे॥ 4579॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आँसू बहाये जा गोविंद राधे।
एक दिन आँसू हरि को भी रुला दे॥ 4580॥

जगत को आँसू ना दे गोविंद राधे।
हरि गुरु हित नित आँसू बहा दे॥ 4581॥

सोइ जीवन धन्य गोविंद राधे।
जो हरि गुरु हित आँसू बहा दे॥ 4582॥

जग के विषय में मन गोविंद राधे।
काठिन्य हरि में द्रवत्व बता दे॥ 4583॥

हरि हित रोये जो तो गोविंद राधे।
जग में न रोना पड़े हँसते बिता दे॥ 4584॥

हरि हित रोये ना तो गोविंद राधे।
जग हित रोने का अन्त ना बता दे॥ 4585॥

हरि को न आँसू दे तो गोविंद राधे।
जग को ही आँसू देना पड़ेगा बता दे॥ 4586॥

आँसू के भाव दो हैं गोविंद राधे।
निष्काम और सकाम बता दे॥ 4587॥

आँसू दो प्रकार का है गोविंद राधे।
संयोग और वियोग का बता दे॥ 4588॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ठंडा संयोग आँसू गोविंद राधे।
गर्म हो वियोग का आँसू बता दे॥ 4589॥

आँसू की अनेक कोटि गोविंद राधे।
प्रेम कोटि अनुसार आँसू बता दे॥ 4590॥

हरि हित रोने को गोविंद राधे।
रामानुजाचार्य ताप बता दे॥ 4591॥

हरि हित रोने को गोविंद राधे।
चैतन्यदेव व्याकुलता बता दे॥ 4592॥
हरि हित रोने को गोविंद राधे।
बल्लभ निःसाधनता बता दे॥ 4593॥
हरि हित रोने को गोविंद राधे।
ब्रज के रसिक जन लालसा बता दे॥ 4594॥
दिव्य प्रेम पाने की गोविंद राधे।
सर्वप्रथम तीव्र लालसा बढ़ा दे॥ 4595॥
तीव्र लालसा ते ही गोविंद राधे।
विषय विराग हरि राग हो बता दे॥ 4596॥
आँसू न आवें दृग गोविंद राधे।
नाम अपराध याको कारण बता दे॥ 4597॥
हरि गुरु कृपा मानो गोविंद राधे।
मन जब हरि हित आँसू बहा दे॥ 4598॥
हरि ने ही करवाया गोविंद राधे।
कृपा द्वारा भक्ति यह भावना बना दे॥ 4599॥
जब हरि कृपा करे गोविंद राधे।
भक्त निज लोक वेद निष्ठा भगा दे॥ 4600॥
कृपा में देरी हेतु गोविंद राधे।
भूत वर्तमान प्रतिबंध बता दे॥ 4601॥
भूत प्रतिबंध तो है गोविंद राधे।
सुत पति नारि का स्मरण बता दे॥ 4602॥
वर्तमान प्रतिबंध गोविंद राधे।
संशय दुराग्रह आदि हैं बता दे॥ 4603॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शंका कुतर्क आदि गोविंद राधे।
बुध जन का भी पतन करा दे॥ 4604॥
श्रद्धा विश्वास अरु गोविंद राधे।
गुरु शरणागति भक्ति दिला दे॥ 4605॥

भक्ति साधकों को निम्न गोविंद राधे।
दस बातों का रहे ध्यान बता दे॥ 4606॥
नामापराध अरु गोविंद राधे।
अवैष्णव संग का त्याग बता दे॥ 4607॥

हानि लाभ में सम गोविंद राधे।
शिष्यों की परम्परा का त्याग बता दे॥ 4608॥
हरि हरिभक्त निन्दा गोविंद राधे।
वेद शास्त्र निन्दा का त्याग बता दे॥ 4609॥

धर्म अर्थ काम वार्ता गोविंद राधे।
काहू सों ना करे ना तो सुने ही बता दे॥ 4610॥
नाना ग्रन्थ पढ़े भी न गोविंद राधे।
जग के अभाव में न दुखी हो बता दे॥ 4611॥

प्राणीमात्र में हैं हरि गोविंद राधे।
याते कभु किसी को ना दुख दे बता दे॥ 4612॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बार बार पढ़ो सुनो गोविंद राधे।
हरि का चरित्र प्रेम पैदा करा दे॥ 4613॥

प्रेम में न नेम कछु गोविंद राधे।
सर्वत्र सदा मन हरि में लगा दे॥ 4614॥
प्रेम का ही नेम सत्य गोविंद राधे।
नेम का प्रेम तो धोखा बता दे॥ 4615॥

प्रेम में नेम नाहिं गोविंद राधे।
तोड़ने पड़ें टूट जायें बता दे॥ 4616॥
प्रेम की मत्तता में गोविंद राधे।
नियमों का बन्धन विघ्न बता दे॥ 4617॥
हरि में अनन्त शक्ति गोविंद राधे।
प्रेम शक्ति सब शक्तियों को हरा दे॥ 4618॥
अपना सब दे दे गोविंद राधे।
पुनि आपु को भी दे दे प्रेम बता दे॥ 4619॥
आत्म समर्पण अर्थ गोविंद राधे।
निज मन प्राण आदि दान है बता दे॥ 4620॥
प्रेम माँगे सब कछु गोविंद राधे।
तन मन धन सब अर्पन करा दे॥ 4621॥
प्रेम सब कछु माँगे गोविंद राधे।
हम कछु कछु ही दें कछु कछु ना दें॥ 4622॥
मैं भी कछु कछु ही दूँ गोविंद राधे।
वे भी कछु कछु ही दें सब कछु ना दें॥ 4623॥
रो रो के दिव्य प्रेम गोविंद राधे।
माँगना है बस तेरा काम बता दे॥ 4624॥
प्रेम देना ना देना गोविंद राधे।
यह तो काम प्रियतम का बता दे॥ 4625॥
वे हैं हितैषी तेरे गोविंद राधे।
जब हित देखेंगे देंगे बता दे॥ 4626॥
कृष्ण बिनु कारण गोविंद राधे।
करुणा वरुणालय हैं बता दे॥ 4627॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यह ज्ञान ला के उर गोविंद राधे।
करो विश्वासयुक्त भक्ति बता दे॥ 4628॥
प्रेम में निराशा नहिं गोविंद राधे।
प्रेम का है आधार आशा बता दे॥ 4629॥
खिड़की खोले रहो गोविंद राधे।
रवि निकलेगा रश्मि आयेगी बता दे॥ 4630॥
सदा परखते रहो गोविंद राधे।
एक दिन हरि कृपा होगी बता दे॥ 4631॥
प्यारे ते प्यार करु गोविंद राधे।
प्यारा प्यारा फल प्यार आपु दिला दे॥ 4632॥
भक्त को चाहिए गोविंद राधे।
धैर्य को स्वप्न में भी तजे ना बता दे॥ 4633॥
सुख में प्रसन्न ना हो गोविंद राधे।
किसी भी दुख में ना दुखी हो बता दे॥ 4634॥
भयंकर आँधी में गोविंद राधे।
पर्वत जैसे अचल बता दे॥ 4635॥
ऐसे ही साधक गोविंद राधे।
साधना में रहे अटल बता दे॥ 4636॥
संसारी बाधा को गोविंद राधे।
बाधा बनने ना दे बता दे॥ 4637॥
शूर भल प्राण तजे गोविंद राधे।
किन्तु रणक्षेत्र तजे ना बता दे॥ 4638॥
ऐसे प्राण पर्यन्त गोविंद राधे।
भक्ति साधना नहिं छूटे बता दे॥ 4639॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नवजात शिशु सम गोविंद राधे।
भोला बनि रोना तोहिं हरि ते मिला दे॥ 4640 ॥
हरि को बुलाओ रो के गोविंद राधे।
पाछे परो हाथ धोके मिलेंगे बता दे॥ 4641 ॥
हरि के मिलन की तो गोविंद राधे।
आशा के साथ विश्वास बढ़ा दे॥ 4642 ॥
बार बार सोचो यह गोविंद राधे।
आज ही अभी ही श्याम झलक दिखा दे॥ 4643 ॥
हरि तो हैं क्रीतदास गोविंद राधे।
भक्त जैसा चाहे वैसा हरि ते करा दे॥ 4644 ॥
हरि तो हैं भक्त भक्त गोविंद राधे।
भक्त जैसा चाहे वैसा नाच नचा दे॥ 4645 ॥
हठीले रसीले भक्त गोविंद राधे।
हरि को जैसा चाहें नचा दें॥ 4646 ॥
जीव को नचावे माया गोविंद राधे।
ब्रह्म को नचावे दिव्यप्रेम बता दे॥ 4647 ॥
भक्ति के वश में हैं गोविंद राधे।
भक्ति जैसा चाहे वैसा नाच नचा दे॥ 4648 ॥
भक्ति सत्व गुणवृत्ति गोविंद राधे।
नहिं, भगवान सत्व वश ना बता दे॥ 4649 ॥
भक्ति मायावृत्ति नहिं गोविंद राधे।
भगवान मायाधीश हैं बता दे॥ 4650 ॥
भक्ति है स्वरूप शक्ति गोविंद राधे।
ऐसी भक्ति शक्ति ब्रह्म श्याम को नचा दे॥ 4651 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति है तत् प्रधान गोविंद राधे।
भाव यह भक्ति हरिआश्रित बता दे॥ 4652॥
योग अरु ज्ञान दोनों गोविंद राधे।
त्वं प्रधान भाव निज बल है बता दे॥ 4653॥
भक्ति जीव यत्न नहिं गोविंद राधे।
जीव के अधीश भगवान हैं बता दे॥ 4654॥
कर्म, योग, ज्ञान का तो गोविंद राधे।
आधार मायिक जीव बता दे॥ 4655॥
किन्तु भक्तियोग का तो गोविंद राधे।
आधार मायाधीश हैं बता दे॥ 4656॥
भक्ति ह्लादिनी का सार गोविंद राधे।
भक्त उर धरि हरि रस लें बता दे॥ 4657॥
कृष्ण ह्लादिनी शक्ति गोविंद राधे।
कृष्ण अरु भक्त को सुख दे बता दे॥ 4658॥
भक्ति है विचित्र अति गोविंद राधे।
भगवान की भी भगवत्ता भुला दे॥ 4659॥
सबते बड़े हैं दोनों गोविंद राधे।
उनते बड़ी है भक्ति दास बना दे॥ 4660॥
स्वामी सखा सुत पति गोविंद राधे।
बनि हरि सेवें तुच्छ जीव को बता दे॥ 4661॥
भक्ति की है ऐसी शक्ति गोविंद राधे।
ब्रह्म को भी गोपियों की छाछ नचा दे॥ 4662॥
भक्ति का प्रभाव ऐसा गोविंद राधे।
गज हित भागे आये कृष्ण बता दे॥ 4663॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भाव के भूखे दोऊ गोविंद राधे।
विदुरानी केले के छिलके खिला दे॥ 4664॥
मंदिरों के भोग तजि गोविंद राधे।
सखा मुख छोर कौर स्वाद बता दे॥ 4665॥
श्याम का सखा सुदामा गोविंद राधे।
तन्दुल चबा के ऐश्वर्य दिला दे॥ 4666॥
श्याम का सखा सुदामा गोविंद राधे।
आया, श्याम आँसू ते चरण धुला दे॥ 4667॥
भक्तों के भक्त हरि गोविंद राधे।
यमुना के तट घट गोपिन उठा दे॥ 4668॥
ब्रह्म तो है बिनु मन गोविंद राधे।
भक्तसुख हेतु नया मन भी बना दे॥ 4669॥
जितना है प्रिय भक्त गोविंद राधे।
उतनी ना प्रिय मोहिं कमला बता दे॥ 4670॥
भक्त हैं प्रथम मेरे गोविंद राधे।
मेरी आत्मा है द्वितीय बता दे॥ 4671॥
भक्तों का भक्त हूँ मैं गोविंद राधे।
भक्त का खरीदा हुआ दास बता दे॥ 4672॥
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
ब्रज में थे एक बाबा गोविंद राधे।
ब्रजरस में सराबोर बता दे॥ 4673॥
आठों याम एक काम गोविंद राधे।
श्यामा श्याम नाम रूप गुण गण गा दे॥ 4674॥
कभु 'हा कृष्ण! कहि गोविंद राधे।
कभु 'हा राधे! कहि आँसू बहा दे॥ 4675॥

कभू नाम गाते गाते गोविंद राधे।
मुर्छित गिरि जाते क्षिति पै बता दे॥ 4676 ॥
कभू नाम गाते गाते गोविंद राधे।
नाचते थे उन्मत्त होके बता दे॥ 4677 ॥
कौपीनधारी थे गोविंद राधे।
मधुकरी माँग खाते थे बता दे॥ 4678 ॥
काउ ते कभू कछु गोविंद राधे।
बात भी नहीं करते थे बता दे॥ 4679 ॥
एक दिन ध्यान में ही गोविंद राधे।
मुरली की तान सुना श्याम की बता दे॥ 4680 ॥
तान सुनि व्याकुल गोविंद राधे।
'कृष्ण तुम कहाँ हो' कहि सुधि बिसरा दे॥ 4681 ॥
इतने में सचमुच गोविंद राधे।
कृष्ण आये साँचु साँचु मुरली बजा दे॥ 4682 ॥
बाबा लखि भाजे उत गोविंद राधे।
पकरन श्यामसुन्दर को बता दे॥ 4683 ॥
बाबा अरु श्याम बिच गोविंद राधे।
थी इक घनी झाड़ी लता की बता दे॥ 4684 ॥
बाबा की बड़ी बड़ी गोविंद राधे।
जटा उलझी उसी झाड़ी में बता दे॥ 4685 ॥
बाबा ने किया प्रण गोविंद राधे।
जो उलझाये सोइ आये सुलझा दे॥ 4686 ॥
कई दिन बीत गये गोविंद राधे।
बाबा ने हठ नहिं छोड़ा बता दे॥ 4687 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कई ब्रजवासी आये गोविंद राधे।
कहा सुलझा दूँ बाबा ना ना सुना दे॥ 4688 ॥
पति पत्नी के बीच गोविंद राधे।
तीसरे किसी का आना मना है बता दे॥ 4689 ॥
अन्त में हारि कृष्ण गोविंद राधे।
बूढ़े बनि आये कहा कृष्ण हूँ बता दे॥ 4690 ॥
बाबा ने कहा बूढ़े गोविंद राधे।
चला जा निज पथ छूना ना बता दे॥ 4691 ॥
मेरे कृष्ण बूढ़े नहिं गोविंद राधे।
रस सिरमौर किशोर हैं बता दे॥ 4692 ॥
तब कृष्ण नटवेष गोविंद राधे।
साँचो कृष्ण बनि भये प्रकट बता दे॥ 4693 ॥
कृष्ण ने कहा बाबा गोविंद राधे।
अब सुलझा दूँ जटा उलझी बता दे॥ 4694 ॥
बाबा ने कहा ना ना गोविंद राधे।
कैसे मानूँ मेरे कृष्ण तुम हो बता दे॥ 4695 ॥
एक कृष्ण द्वारिका के गोविंद राधे।
एक कृष्ण मथुरा के भी हैं बता दे॥ 4696 ॥
मैं तो हूँ कुंज के गोविंद राधे।
कृष्ण का प्रेमी उन कृष्ण को बुला दे॥ 4697 ॥
कृष्ण ने कहा मैं ही गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण कुंजबिहारी बता दे॥ 4698 ॥
बाबा ने कहा यदि गोविंद राधे।
प्यारी जू कहें तब मानूँ बता दे॥ 4699 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्ण ने कहा राधे गोविंद राधे।
आओ यह भक्त हठी माने ना बता दे॥ 4700॥
जब आईं लाड़िली जू गोविंद राधे।
कहा बाबा ये हैं 'मेरे वे' ही बता दे॥ 4701॥
तब कहा बाबा ने गोविंद राधे।
जय जय भक्तवश्य पिय प्यारी बता दे॥ 4702॥
तब लाल लाड़िली ने गोविंद राधे।
बाबा की जटा सुलझाई बता दे॥ 4703॥
पुनि लाल लाड़िली ने गोविंद राधे।
बाबा को उर ते लगाया बता दे॥ 4704॥
ऐसे ही जो भी नर गोविंद राधे।
दृढ़ विश्वास करि हरि को बुला दे॥ 4705॥
हरि हों समक्ष वाके गोविंद राधे।
प्रकट चिदानंद रूप में बता दे॥ 4706॥
जो है महापापी गोविंद राधे।
वह सोचे मोहिं हरि मिलें ना बता दे॥ 4707॥
ऐसा पापी भी यदि गोविंद राधे।
हरि दर्शन की प्यास बढ़ा दे॥ 4708॥
तो मन शुद्ध हो गोविंद राधे।
स्वरूप शक्ति मन दिव्य बना दे॥ 4709॥
घर में खजाना गड़ा गोविंद राधे।
भक्ति ते खोदे तो कुबेर बना दे॥ 4710॥
श्रीकृष्ण दिव्यप्रेम गोविंद राधे।
ह्लादिनी का सार साध्य भक्ति है बता दे॥ 4711॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निष्काम भक्ति करो गोविंद राधे।
योगक्षेम वहनकर्ता हरि को बना दे॥ 4712॥
भक्तों का योगक्षेम गोविंद राधे।
मैं ही वहन करुँ नित्य बता दे॥ 4713॥
भक्त मेरी सेवा चह गोविंद राधे।
मैं भी भक्त सेवा चहुँ सबको बता दे॥ 4714॥
भक्त आये शरण में गोविंद राधे।
मैं भक्त भक्ति करुँ सबको बता दे॥ 4715॥
भक्त जहाँ जहाँ जाये गोविंद राधे।
तहाँ तहाँ पाछे पाछे जाऊँ बता दे॥ 4716॥
भक्त मेरे प्राण प्रिय गोविंद राधे।
भक्तों के ऋण ते उऋण ना बता दे॥ 4717॥
ब्रह्मा कह भक्तों को गोविंद राधे।
क्या दोगे हरि टुक सोचि के बता दे॥ 4718॥
आपने असुरों को गोविंद राधे।
दे दिया अपने आप को बता दे॥ 4719॥
हरि कह भक्तों ते गोविंद राधे।
कभी भी उऋण नहिं होउँगा बता दे॥ 4720॥
भक्तों में शिरोमणि गोविंद राधे।
ब्रज गोपीजन ब्रज में बता दे॥ 4721॥
श्यामा श्याम जोई भज गोविंद राधे।
श्यामा श्याम भी भजें वाको बता दे॥ 4722॥
श्यामा श्याम नाहीं भजे गोविंद राधे।
ब्रजबामा भजे ऋणी मानें बता दे॥ 4723॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्त और मैं एक गोविंद राधे।
भक्त को मेरा दूजा रूप बता दे॥ 4724 ॥
भक्त बिनु मैं नहिं गोविंद राधे।
मेरे बिनु भक्त नहिं मर्म बता दे॥ 4725 ॥
भक्त उर मैं रहुँ गोविंद राधे।
मेरा उर भक्त रहें भेद ना बता दे॥ 4726 ॥
पूर्व स्वतंत्र हरि गोविंद राधे।
साधक है परतंत्र बता दे॥ 4727 ॥
पश्चात परतंत्र गोविंद राधे।
हरि, हो स्वतंत्र हरिभक्त बता दे॥ 4728 ॥
पूर्व हो सेव्य हरि गोविंद राधे।
साधक तो सेवक ही बता दे॥ 4729 ॥
पश्चात सेव्य भक्त गोविंद राधे।
हरि हों भक्त के भक्त बता दे॥ 4730 ॥
हरि तो हैं सेव्य किन्तु गोविंद राधे।
हरि प्रेम हरि को भी दास बना दे॥ 4731 ॥
परम स्वतंत्र हरि गोविंद राधे।
ऐसा वेदशास्त्र अरु रसिक बता दे॥ 4732 ॥
परम स्वतंत्र कृष्ण गोविंद राधे।
भक्त भक्ति के परतंत्र बता दे॥ 4733 ॥
थे तो अजित कृष्ण गोविंद राधे।
भक्त भक्ति ने जीता अजित बता दे॥ 4734 ॥
हरि हैं शासक गोविंद राधे।
किन्तु भक्ति उनको भी शास्य बना दे॥ 4735 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्त भगवान दोनों गोविंद राधे।
एक दूसरे का सुख चाहें बता दे॥ 4736 ॥
ह्लादिनी का सार भक्ति गोविंद राधे।
जाको मिल जाय सोई भक्त बता दे॥ 4737 ॥
भक्त प्रति अपराध गोविंद राधे।
कोटि साधनों ते भी कभू ना क्षमा दे॥ 4738 ॥
नभग पुत्र नाभाग गोविंद राधे।
नाभाग पुत्र अम्बरीष बता दे॥ 4739 ॥
अम्बरीष तो थे गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त बता दे॥ 4740 ॥
पृथ्वी के सातों ही गोविंद राधे।
द्वीप ऐश्वर्य उन्हें प्राप्त थे बता दे॥ 4741 ॥
किन्तु भक्त अम्बरीष गोविंद राधे।
स्वप्न समान मानते थे बता दे॥ 4742 ॥
अम्बरीष मन था गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण में अनुरक्त बता दे॥ 4743 ॥
अम्बरीष वाणी गोविंद राधे।
कृष्ण गुणगान अनुरक्त थी बता दे॥ 4744 ॥
कृष्ण की कथाओं में गोविंद राधे।
कान थे नित्य अनुरक्त बता दे॥ 4745 ॥
नेत्र अनुरक्त थे गोविंद राधे।
हरि हरिजन दर्शन में बता दे॥ 4746 ॥
त्वचा अनुरक्त थी गोविंद राधे।
भक्तों के अंग संग में बता दे॥ 4747 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नासा अनुरक्त थी गोविंद राधे।
मूर्ति चढ़ी तुलसी गंध में बता दे॥ 4748॥
जिह्वा अनुरक्त थी गोविंद राधे।
कृष्ण के भोग प्रसाद में बता दे॥ 4749॥
सिर अनुरक्त था गोविंद राधे।
हरि हरिजन के नमन में बता दे॥ 4750॥
सुत वित नारी ते गोविंद राधे।
अम्बरीष थे अनासक्त बता दे॥ 4751॥
उनकी भक्ति ते गोविंद राधे।
कृष्ण थे इतने प्रसन्न बता दे॥ 4752॥
उनकी रक्षा में गोविंद राधे।
कृष्ण ने चक्र रख दिया था बता दे॥ 4753॥
अम्बरीष पत्नी भी गोविंद राधे।
कृष्ण की अनन्य भक्ता थी बता दे॥ 4754॥
एक बार अम्बरीष गोविंद राधे।
पत्नी सहित भक्तियुक्त बता दे॥ 4755॥
एकादशी व्रत को गोविंद राधे।
COPYRIGHT
एक वर्ष तक किया प्रेम ते बता दे॥ 4756॥
RADHA GOVIND SAMITI
व्रत की समाप्ति पै गोविंद राधे।
किया तीन दिन उपवास बता दे॥ 4757॥
यमुना नहा के गोविंद राधे।
मधुवन की की पूजा बता दे॥ 4758॥
महाभिषेक किया गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण का अम्बरीष ने बता दे॥ 4759॥

प्रेमयुक्त पूजा की गोविंद राधे।
चन्दन आदि ते कृष्ण की बता दे॥ 4760 ॥
साठ करोड़ गाय गोविंद राधे।
स्वर्ण सींगयुक्त दान दीनी बता दे॥ 4761 ॥
पारण करने की गोविंद राधे।
की तैयारी अम्बरीष ने बता दे॥ 4762 ॥
इतने में आये तहँ गोविंद राधे।
परम तपस्वी दुर्वासा बता दे॥ 4763 ॥
शाप या वरदान गोविंद राधे।
देने में समर्थ दुर्वासा बता दे॥ 4764 ॥
उनको देखते ही गोविंद राधे।
खड़े हो गये अम्बरीष बता दे॥ 4765 ॥
षोडशोपचार ते गोविंद राधे।
पूजा दुर्वासा को बता दे॥ 4766 ॥
पुनि किया उनको गोविंद राधे।
दण्डवत् प्रणाम अम्बरीष ने बता दे॥ 4767 ॥
कहा अम्बरीष ने गोविंद राधे।
अब आप भोजन कीजिये बता दे॥ 4768 ॥
कहा दुर्वासा ने गोविंद राधे।
ठीक है भोजन करूँगा बता दे॥ 4769 ॥
दुर्वासा नहाने को गोविंद राधे।
चले गये यमुना तट पै बता दे॥ 4770 ॥
ब्रह्म का ध्यान करि गोविंद राधे।
यमुना नहाये मुनि भी बता दे॥ 4771 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

घड़ी भर शेष रहा गोविंद राधे।
व्रत के पारण काल का बता दे॥ 4772 ॥
तब अम्बरीष पै गोविंद राधे।
आ गया धर्मसंकट सा बता दे॥ 4773 ॥
मुनि को खिलाये बिनु गोविंद राधे।
पारण करना दोष है बता दे॥ 4774 ॥
द्वादशी रहते गोविंद राधे।
पारण ना करे दोष है बता दे॥ 4775 ॥
वेदवेत्ताओं ते गोविंद राधे।
किया विचार अम्बरीष ने बता दे॥ 4776 ॥
वेद में बताया जल गोविंद राधे।
पीना है खाना नहिं खाना बता दे॥ 4777 ॥
अतः अम्बरीष ने गोविंद राधे।
पारण में जल पी लिया बता दे॥ 4778 ॥
पुनि दुर्वासा के गोविंद राधे।
आने को लगे परखने बता दे॥ 4779 ॥
इतने में आये तहँ गोविंद राधे।
दुर्वासा भी नहा के बता दे॥ 4780 ॥
जानि गये दुर्वासा गोविंद राधे।
पारण किया अम्बरीष ने बता दे॥ 4781 ॥
एक ओर दुर्वासा गोविंद राधे।
त्यागी तपी संन्यासी बता दे॥ 4782 ॥
एक ओर अम्बरीष गोविंद राधे।
क्षत्रिय भक्त गृहस्थ बता दे॥ 4783 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दोनों में छिड़ गया गोविंद राधे।
युद्ध महान कौन जीते बता दे॥ 4784॥
दुर्वासा क्रुद्ध हुये गोविंद राधे।
यही थी पहली हार बता दे॥ 4785॥
अम्बरीष शान्त खरे गोविंद राधे।
कर जोरे अति नम्र बता दे॥ 4786॥
दुर्वासा क्रोध ते गोविंद राधे।
लगे थर थर थर काँपने बता दे॥ 4787॥
भौंहें तन गईं गोविंद राधे।
मुख भी हो गया विकट बता दे॥ 4788॥
दुर्वासा बोले डाटि गोविंद राधे।
तू मतवाला क्रूर है बता दे॥ 4789॥
भक्ति का लेश नहिं गोविंद राधे।
राज्य के मद में मत्त बता दे॥ 4790॥
मुझको खिलाये बिनु गोविंद राधे।
कर लिया पारण तूने बता दे॥ 4791॥
अभी चखाता हूँ गोविंद राधे।
मजा शाप दै के तोहिं बता दे॥ 4792॥
क्रोध में उखाड़ी जटा गोविंद राधे।
एक कृत्या उत्पन्न की बता दे॥ 4793॥
कृत्या ते कहा तू गोविंद राधे।
अम्बरीष का सिर काट दे बता दे॥ 4794॥
कृत्या अग्नि ज्वाला ज्यों गोविंद राधे।
लै के तलवार चली मारने बता दे॥ 4795॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अम्बरीष शान्त चित्त गोविंद राधे।
कृष्ण स्मरण कर रहे थे बता दे॥ 4796 ॥
उनकी रक्षा हित गोविंद राधे।
पूर्व ही नियुक्त था चक्र बता दे॥ 4797 ॥
धधकती ज्वाला ज्यों गोविंद राधे।
फणी सर्प को भी जला दे बता दे॥ 4798 ॥
ऐसे ही चक्र ने भी गोविंद राधे।
कृत्या को जला डाला बता दे॥ 4799 ॥
देखा दुर्वासा ने गोविंद राधे।
मेरी शक्ति कृत्या जल गई बता दे॥ 4800 ॥
डर के मारे तब गोविंद राधे।
प्राण बचाने को भागे बता दे॥ 4801 ॥
चक्र ने पीछा किया गोविंद राधे।
जहाँ जहाँ गये दुर्वासा बता दे॥ 4802 ॥
सात स्वर्ग ऊपर गोविंद राधे।
सात पाताल नीचे भागे बता दे॥ 4803 ॥
चक्र ने सर्वत्र गोविंद राधे।
पीछा किया उन मुनि का बता दे॥ 4804 ॥
पुनि गये दुर्वासा गोविंद राधे।
ब्रह्मा के पास ब्रह्मलोक बता दे॥ 4805 ॥
ब्रह्मा ते कहा मेरी गोविंद राधे।
रक्षा करो रक्षा करो चक्र ते बता दे॥ 4806 ॥
ब्रह्मा ने कहा सुनो गोविंद राधे।
हे दुर्वासा महर्षि बता दे॥ 4807 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी दो परार्ध गोविंद राधे।
आयु समाप्त हो जाये जो बता दे॥ 4808॥
तब कृष्ण संकल्प गोविंद राधे।
ब्रह्मलोक तक को जला दे बता दे॥ 4809॥
मैं या हरि हर गोविंद राधे।
सब हैं कृष्ण आधीन बता दे॥ 4810॥
भक्त अपराधी को गोविंद राधे।
हम नाहीं बचा सकते बता दे॥ 4811॥
कोरा सा उत्तर गोविंद राधे।
दिया ब्रह्मा ने मुनि को बता दे॥ 4812॥
तब गए दुर्वासा गोविंद राधे।
कैलाश शिव के पास बता दे॥ 4813॥
शिव ने कहा मुनि गोविंद राधे।
हम भी हैं कृष्ण के दास बता दे॥ 4814॥
कृष्ण की शक्ति ते गोविंद राधे।
हम भी हैं शक्तिमान बता दे॥ 4815॥
उनके विरुद्ध हम गोविंद राधे।
कछु भी न सोचें स्वप्न में बता दे॥ 4816॥
तुम भक्तद्रोही हो गोविंद राधे।
अतएव हम असमर्थ बता दे॥ 4817॥
हम या कोई भी गोविंद राधे।
तुम को बचा नाहिं सकता बता दे॥ 4818॥
याते तुम जावो वहीं गोविंद राधे।
शरण चरण श्रीकृष्ण की बता दे॥ 4819॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अब दुर्वासा गये गोविंद राधे।
सीधे वैकुण्ठ धाम बता दे॥ 4820॥
वैकुण्ठ धाम में गोविंद राधे।
कमला सहित विष्णुवास बता दे॥ 4821॥
तहँ दुर्वासा मुनि गोविंद राधे।
गिरे हरिपद भयभीत बता दे॥ 4822॥
दुर्वासा बोले गोविंद राधे।
आप हैं अनन्त शक्तिमान बता दे॥ 4823॥
आप हैं भक्तों के गोविंद राधे।
एकमात्र आधार बता दे॥ 4824॥
हे जीवन धन! गोविंद राधे।
हम हैं नामापराधी बता दे॥ 4825॥
अब तो आप ही गोविंद राधे।
मेरी रक्षा कीजिये बता दे॥ 4826॥
आपके प्रभाव को गोविंद राधे।
जाना नाहिं मैं मूढ़ बता दे॥ 4827॥
आप के तो नाम ते गोविंद राधे।
बड़े बड़े पापी तरि जायें बता दे॥ 4828॥
भगवान बोले मुनि गोविंद राधे।
मैं हूँ भक्त-आधीन बता दे॥ 4829॥
वेद स्वतंत्र कहे गोविंद राधे।
किन्तु मैं हूँ परतंत्र बता दे॥ 4830॥
भक्त करे मेरी भक्ति गोविंद राधे।
मैं करूँ भक्त की भक्ति बता दे॥ 4831॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मैं निज भक्तों का गोविंद राधे।
एकमात्र आश्रय ही हूँ बता दे॥ 4832॥
याते निज भक्त तजि गोविंद राधे।
नहिं चह कमलाहूँ को बता दे॥ 4833॥
कहँ लौं कहौं मुनि गोविंद राधे।
अपने आप को भी चहूँ ना बता दे॥ 4834॥
जिसने सर्वस्व तजि गोविंद राधे।
ली मेरी शरणाई बता दे॥ 4835॥
उसको छोड़ने की गोविंद राधे।
बात भी नहीं सोच सकता बता दे॥ 4836॥
जैसे सती नारी गोविंद राधे।
प्रेम ते करे वश पति को बता दे॥ 4837॥
ऐसे ही मेरे भक्त गोविंद राधे।
मुझको करें निज वश में बता दे॥ 4838॥
भक्त सेवा ते ही गोविंद राधे।
मेरे भक्त हों कृतार्थ बता दे॥ 4839॥
सालोक्य सारूप्य गोविंद राधे।
सार्ष्टि सामीप्य मुक्ति ठुकरा दे॥ 4840॥
सुनो दुर्वासा मुनि गोविंद राधे।
कहँ लौं कहूँ भक्त महिमा बता दे॥ 4841॥
मेरे प्रेमी भक्त गोविंद राधे।
मेरे ही हैं हृदय बता दे॥ 4842॥
मैं भी भक्तों का गोविंद राधे।
एकमात्र आप हूँ हृदय बता दे॥ 4843॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरे सिवा भक्त गोविंद राधे।
कछु भी नहीं जानते हैं बता दे॥ 4844॥
भक्त के सिवा मैं भी गोविंद राधे।
और कछु जानूँ नाहिं बता दे॥ 4845॥
सुनु दुर्वासा मुनि गोविंद राधे।
जेहि अपराध हो विकल बता दे॥ 4846॥
उसी अम्बरीष की गोविंद राधे।
शरण जावो माँगो क्षमा भी बता दे॥ 4847॥
अम्बरीष राजा अति गोविंद राधे।
कोमल स्वभाव के भक्त बता दे॥ 4848॥
क्षमा माँगते ही गोविंद राधे।
क्षमा कर देंगे तुमको बता दे॥ 4849॥
तुम यह जान गये गोविंद राधे।
भक्ति भक्त भगवान एक हैं बता दे॥ 4850॥
पुनि गये दुर्वासा गोविंद राधे।
राजा अम्बरीष पास बता दे॥ 4851॥
चरण पकड़ कर गोविंद राधे।
COPYRIGHT
रोने लगे दुर्वासा बता दे॥ 4852॥
RADHA GOVIND SAMITI
चरण पकड़ने ते गोविंद राधे।
लज्जित भये अम्बरीष बता दे॥ 4853॥
पुनि अम्बरीष ने गोविंद राधे।
चक्र की कीनी अस्तुति बता दे॥ 4854॥
बोले अम्बरीष गोविंद राधे।
हे चक्र आप अग्नि सूर्य बता दे॥ 4855॥

आप को नमस्कार गोविंद राधे।
सहस्र दंत के चक्र बता दे॥ 4856॥
आप दुर्वासा की गोविंद राधे।
रक्षा करो मम प्रार्थना बता दे॥ 4857॥
आप श्रीकृष्ण के गोविंद राधे।
तेज अनन्त स्वरूप बता दे॥ 4858॥
आप समस्त विश्व गोविंद राधे।
रक्षक हैं तेजयुक्त बता दे॥ 4859॥
आप तो हैं अजित गोविंद राधे।
सर्वशक्तिमान तेजवान बता दे॥ 4860॥
बेर ना लगावें अब गोविंद राधे।
वेगि करें रक्षा मुनि की बता दे॥ 4861॥
अम्बरीष अस्तुति ते गोविंद राधे।
चक्र हो गये शान्तचित्त बता दे॥ 4862॥
दुर्वासा ने भी गोविंद राधे।
भक्त भक्ति ते हार मान ली बता दे॥ 4863॥
राजा अम्बरीष गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे बता दे॥ 4864॥
एक बार कृष्ण ने गोविंद राधे।
अम्बरीष की ली परीक्षा बता दे॥ 4865॥
इन्द्र बनि गये कृष्ण गोविंद राधे।
कहा अम्बरीष वर माँगो बता दे॥ 4866॥
अम्बरीष बोले मैं तो गोविंद राधे।
कृष्ण ते ही वर माँगूँगा बता दे॥ 4867॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तब हारि कृष्ण ने गोविंद राधे।
निज रूप कृष्ण का दिखाया बता दे॥ 4868॥
यह है अनन्यता का गोविंद राधे।
जीता जागता नमूना बता दे॥ 4869॥
श्रीकृष्ण वृन्दावन गोविंद राधे।
नित नई नई करें लीला बता दे॥ 4870॥
एक दिन कृष्ण ने गोविंद राधे।
देखा इन्द्रयज्ञ तैयारी बता दे॥ 4871॥
यद्यपि श्रीकृष्ण गोविंद राधे।
सर्वज्ञ अन्तर्यामी बता दे॥ 4872॥
फिर भी नन्दबाबा गोविंद राधे।
आदि वृद्ध गोपों ते पूछा बता दे॥ 4873॥
आप लोग कौन सा गोविंद राधे।
उत्सव मनाना चाहें बता दे॥ 4874॥
इस उत्सव का गोविंद राधे।
फल क्या मिलेगा यह मोय बता दे॥ 4875॥
साधन क्या है अरु गोविंद राधे।
साध्य भी क्या है इसका बता दे॥ 4876॥
जग में दो भाँति के गोविंद राधे।
लोग हैं अज्ञ अरु विज्ञ बता दे॥ 4877॥
कछु कर्म अज्ञ जन गोविंद राधे।
करें परम्परागत व्यर्थ बता दे॥ 4878॥
कछु कर्म विज्ञ जन गोविंद राधे।
करें शास्त्र सम्मत जग में बता दे॥ 4879॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यह इन्द्रयज्ञ कर्म गोविंद राधे।
लौकिक या वैदिक है बता दे॥ 4880॥
नंद ने कहा बेटा गोविंद राधे।
इन्द्र हैं मेघों के स्वामी बता दे॥ 4881॥
इन्द्र ही भूमि पै गोविंद राधे।
सदा ही जल बरसायें बता दे॥ 4882॥
उन्हीं इन्द्रदेव की गोविंद राधे।
यज्ञ द्वारा करें पूजा बता दे॥ 4883॥
जिन सामग्रियों ते गोविंद राधे।
पूजें वे हों जल ते बता दे॥ 4884॥
कृषि आदि कर्मों के गोविंद राधे।
फलदाता इन्द्र देव हैं बता दे॥ 4885॥
जो राग द्वेषवश गोविंद राधे।
पूजे न इन्द्र दण्ड पावे बता दे॥ 4886॥
कृष्ण ने ठान लिया गोविंद राधे।
इन्द्र की पूजा होने देंगे ना बता दे॥ 4887॥
कृष्ण ने बाबा ते गोविंद राधे।
कहा बाबा मेरी मानो बता दे॥ 4888॥
जीव निज कर्मों ते गोविंद राधे।
पैदा भी हो अरु मरे भी बता दे॥ 4889॥
कर्म अनुसार ही गोविंद राधे।
सुख दुख आदि हों प्राप्त बता दे॥ 4890॥
कर्म ही है सब कछु गोविंद राधे।
ऐसा न माने जो कोई बता दे॥ 4891॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तो भी कर्मकर्ता को गोविंद राधे।
ईश्वर दे फल कर्म का बता दे॥ 4892॥
जो कर्म ही ना करे गोविंद राधे।
ईश्वर वाय फल का दे बता दे॥ 4893॥
जब सब ही जीव गोविंद राधे।
निज कर्म के फल भोगें बता दे॥ 4894॥
तो फिर इन्द्र की गोविंद राधे।
पूजा क्यों की जाये बता दे॥ 4895॥
पूर्व संस्कारों को गोविंद राधे।
भोगना पड़ेगा सबको ही बता दे॥ 4896॥
इन्द्र या और कोई गोविंद राधे।
कर्म फल भोग नहिं मेटे बता दे॥ 4897॥
इन्द्र भी कर्मों का गोविंद राधे।
दास है मायाधीन बता दे॥ 4898॥
इन्द्र भी एक दिन गोविंद राधे।
काल के गाल में जाये बता दे॥ 4899॥
सृष्टि की उत्पत्ति गोविंद राधे।
होती है रजोगुण ते बता दे॥ 4900॥
सृष्टि की स्थिति भी गोविंद राधे।
होती है सत्व गुण ते बता दे॥ 4901॥
सृष्टि का अन्त भी गोविंद राधे।
होता है तमोगुण ते बता दे॥ 4902॥
रजोगुण प्रेरणा ते गोविंद राधे।
मेघ भी जल बरसायें बता दे॥ 4903॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सृष्टि का एकमात्र गोविंद राधे।
शासक है भगवान बता दे॥ 4904॥

इन्द्र आदि देव भी गोविंद राधे।
भगवान ते हैं शास्य बता दे॥ 4905॥

कृष्ण कह बाबा सुनु गोविंद राधे।
हम तो सदा ते वनवासी बता दे॥ 4906॥

वन अरु पर्वत गोविंद राधे।
ये ही हमारे घर हैं बता दे॥ 4907॥

गिरि गोवर्धन गोविंद राधे।
गोधन का पोषक है बता दे॥ 4908॥

याते पूजा भी गोविंद राधे।
गोवर्धन की ही करियो बता दे॥ 4909॥

कृष्ण का लक्ष्य था गोविंद राधे।
मायिक इन्द्र पूजा बन्द हो बता दे॥ 4910॥

कृष्ण की बात को गोविंद राधे।
नंद आदि वृद्धों ने माना बता दे॥ 4911॥

जैसा श्रीकृष्ण ने गोविंद राधे।
कहा वैसा सबने किया भी बता दे॥ 4912॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

स्वस्ति वाचन करि गोविंद राधे।
गायों को खिलाई हरी घास बता दे॥ 4913॥

गायों को आगे करि गोविंद राधे।
गिरिराज की की प्रदक्षिणा बता दे॥ 4914॥

सब ब्रजवासी भी गोविंद राधे।
गिरिराज की की परिक्रमा बता दे॥ 4915॥

कृष्ण योगमाया ते गोविंद राधे।
तनु धरि लीनो विराट बता दे॥ 4916॥
गिरिराज ऊपर गोविंद राधे।
खरे हो गये श्रीकृष्ण बता दे॥ 4917॥
हौं हौं गिरिराज गोविंद राधे।
ऐसा कहि लगे खाने बता दे॥ 4918॥
पूर्व कृष्ण रूप ने भी गोविंद राधे।
किया गिरिराज को प्रणाम बता दे॥ 4919॥
पूज्य कृष्ण गिरिराज गोविंद राधे।
पूजक कृष्ण नँदलाल बता दे॥ 4920॥
इमि ब्रजवासियों ने गोविंद राधे।
पूजा गिरिराज लौटे घर को बता दे॥ 4921॥
कोई नहिं जान सका गोविंद राधे।
गिरिराज हैं श्रीकृष्ण ही बता दे॥ 4922॥
इन्द्र को पता लगा गोविंद राधे।
मेरी पूजा भई बन्द बता दे॥ 4923॥
इन्द्र अति क्रुद्ध हुआ गोविंद राधे।
उसे था गर्व ईश्वर हौं बता दे॥ 4924॥
इन्द्र ने प्रलयकारी गोविंद राधे।
मेघों ते कहा ब्रज को डुबा दे॥ 4925॥
इन्द्र है मायाधीन गोविंद राधे।
कृष्ण हैं ब्रह्म नहिं जाना बता दे॥ 4926॥
इन्द्र ने कहा कृष्ण गोविंद राधे।
नादान अज्ञानयुक्त है बता दे॥ 4927॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इसी के कहने ते गोविंद राधे।
मेरी पूजा भई बन्द बता दे॥ 4928॥
कृष्णानुयायियों के गोविंद राधे।
गर्व को मेघों मिटा दो बता दे॥ 4929॥
ऐरावत पै गोविंद राधे।
बैठकर मैं भी आता हूँ बता दे॥ 4930॥
फिर क्या था मेघों ने गोविंद राधे।
मूसलाधार की वृष्टि बता दे॥ 4931॥
गरजे भी चमके भी गोविंद राधे।
ओले गिरे आई आँधी बता दे॥ 4932॥
थोड़ी ही देर में गोविंद राधे।
ब्रज हुआ जल में मग्न बता दे॥ 4933॥
आँधी पानी ते गोविंद राधे।
पशु भी ठिठुरने लगे थे बता दे॥ 4934॥
ग्वाल अरु ग्वालिनें गोविंद राधे।
हो गइँ अतिशय विकल बता दे॥ 4935॥
सब गये कृष्ण ढिग गोविंद राधे।
कहा कृष्ण त्राहि त्राहि माम् बता दे॥ 4936॥
कृष्ण अब तुम ही गोविंद राधे।
इन्द्र के कोप ते बचाओ बता दे॥ 4937॥
कृष्ण ने जान लिया गोविंद राधे।
यह करतूत है इन्द्र की बता दे॥ 4938॥
कृष्ण ने कहा इन्द्र गोविंद राधे।
सत्व गुण प्रधान है देव बता दे॥ 4939॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

फिर भी है क्रोध गर्व गोविंद राधे।
इसे करना है चूर चूर बता दे॥ 4940॥
कृष्ण ने बुलाया निज गोविंद राधे।
योगमाया को पास बता दे॥ 4941॥
योगमाया ते कहा गोविंद राधे।
ब्रज की रक्षा करो तुरत बता दे॥ 4942॥
योगमाया बल गोविंद राधे।
कृष्ण ने उठाया गिरिराज बता दे॥ 4943॥
कहा ब्रजवासियों ते गोविंद राधे।
सब आ जावो गिरि नीचे बता दे॥ 4944॥
यह जनि सोचो मन गोविंद राधे।
गोवर्धन गिरि गिरेगो बता दे॥ 4945॥
सारा ब्रजमण्डल गोविंद राधे।
गिरि के गर्त में आ गया बता दे॥ 4946॥
सात दिन रात तक गोविंद राधे।
कृष्ण उठाये रहे गिरि को बता दे॥ 4947॥
कृष्ण का प्रभाव लखि गोविंद राधे।
इन्द्र को हुआ आश्चर्य बता दे॥ 4948॥
गर्व चूर चूर हुआ गोविंद राधे।
इन्द्र ने रोका मेघों को बता दे॥ 4949॥
कृष्ण ने कहा गोपों गोविंद राधे।
आँधी पानी बन्द हो गया बता दे॥ 4950॥
अब सब मिलि के गोविंद राधे।
बाहर जावो निकसि बता दे॥ 4951॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जब सब चले गये गोविंद राधे।
तब कृष्ण ने धरा गिरि को बता दे॥ 4952॥
सारे ब्रजवासी गोविंद राधे।
आये पास श्रीकृष्ण के बता दे॥ 4953॥
कोई चिपटाये कोई गोविंद राधे।
चूमे कोई बलिहार बता दे॥ 4954॥
कोई कहे यह कृष्ण गोविंद राधे।
नर नहिं नारायण है बता दे॥ 4955॥
कोई तिलक करे गोविंद राधे।
कोई दे आशीष बता दे॥ 4956॥
कोई पग चूमे गोविंद राधे।
कोइ उतारे आरती बता दे॥ 4957॥
कोई जय बोले गोविंद राधे।
कोइ उतारे नजर बता दे॥ 4958॥
यशोदा रोहिणी गोविंद राधे।
राम ने लगाया उर श्याम को बता दे॥ 4959॥
नभ में भी दिव्य देव गोविंद राधे।
करें श्रीकृष्ण की अस्तुति बता दे॥ 4960॥
दिव्य देवियाँ भी गोविंद राधे।
करें नभ ते पुष्पवृष्टि बता दे॥ 4961॥
सब ही ब्रजवासी गोविंद राधे।
गये सहर्ष निज घर को बता दे॥ 4962॥
ब्रज के वृद्ध गोप गोविंद राधे।
सोचने लगे आश्चर्य ते बता दे॥ 4963॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यह बालक तो है गोविंद राधे।
कोइ अलौकिक शक्ति बता दे॥ 4964॥
बिनु ही प्रयास के गोविंद राधे।
गिरि को उठाया पुनि रख दिया बता दे॥ 4965॥
हम ब्रजवासी तो गोविंद राधे।
ग्वारिया गमार ग्रामीण हैं बता दे॥ 4966॥
हम सबके बीच गोविंद राधे।
इनका जन्म हुआ कैसे बता दे॥ 4967॥
पूतना शकटासुर गोविंद राधे।
आदि का वध किया खेल में बता दे॥ 4968॥
कहाँ आठ वर्षीय गोविंद राधे।
कृष्ण कहाँ भारी गिरिराज बता दे॥ 4969॥
खेल में उठाये रहे गोविंद राधे।
सात दिन एक ही कर पै बता दे॥ 4970॥
धन्य धन्य नंद बाबा गोविंद राधे।
धन्य धन्य यशुमति माय बता दे॥ 4971॥
धन्य धन्य ब्रजधाम गोविंद राधे।
जहाँ हुआ जन्म श्रीकृष्ण का बता दे॥ 4972॥
नंद बाबा ने कहा गोविंद राधे।
सुनो सब गोपों ध्यान ते बता दे॥ 4973॥
कृष्ण के विषय में गोविंद राधे।
गर्ग ने तो पूर्व में ही कहा था बता दे॥ 4974॥
यह कृष्ण पूर्णब्रह्म गोविंद राधे।
स्वयं भगवान् अवतारी बता दे॥ 4975॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इसी का अवतार गोविंद राधे।
युग युग में सदा हुआ है बता दे॥ 4976॥
कभू श्वेत कभु रक्त गोविंद राधे।
कभू रंग पीत वर्ण का हो बता दे॥ 4977॥
द्वापर युग में तो गोविंद राधे।
कृष्ण वर्ण का है रंग बता दे॥ 4978॥
गर्ग ने बताया था गोविंद राधे।
इसके अनन्त नाम रूप हैं बता दे॥ 4979॥
यह कृष्ण बालक गोविंद राधे।
ब्रज का ही रक्षक नहीं है बता दे॥ 4980॥
यह सब जग का है गोविंद राधे।
सृष्टि स्थिति प्रलय कर्ता बता दे॥ 4981॥
अब तो तुम लोगों की गोविंद राधे।
शंका भाग गई होगी बता दे॥ 4982॥
गिरि को उठाके जब गोविंद राधे।
ब्रज को बचा लिया कृष्ण ने बता दे॥ 4983॥
तब गोलोक ते गोविंद राधे।
आ गइ दिव्य कामधेनु बता दे॥ 4984॥
दिव्य कामधेनु ने गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण को दी बधाई बता दे॥ 4985॥
उसी समय स्वर्ग ते गोविंद राधे।
आया पराजित इन्द्र भी बता दे॥ 4986॥
कृष्ण प्रभाव लखि गोविंद राधे।
इन्द्र का गर्व मिला धूल में बता दे॥ 4987॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इन्द्र ने कृष्ण के गोविंद राधे।
पग पै धरा सिर मुकुट बता दे॥ 4988 ॥
इन्द्र ने करबद्ध गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण की अस्तुति की बता दे॥ 4989 ॥
आप का स्वरूप शान्त गोविंद राधे।
तीनों गुणों ते रहित बता दे॥ 4990 ॥
विशुद्ध सत्व का ही गोविंद राधे।
दिव्य चिन्मय है देह बता दे॥ 4991 ॥
आपका सम्बन्ध गोविंद राधे।
माया ते कभु होय ना बता दे॥ 4992 ॥
याते क्रोध गर्व आदि गोविंद राधे।
आप में न आवें कभु स्वप्न में बता दे॥ 4993 ॥
धर्मरक्षा दुष्टनाश गोविंद राधे।
हित आपका अवतार बता दे॥ 4994 ॥
अवतार लै के करें गोविंद राधे।
दिव्य अनुग्रह निग्रह बता दे॥ 4995 ॥
आप जगत के गोविंद राधे।
पिता गुरु अरु स्वामी हैं बता दे॥ 4996 ॥
दुष्ट दमन हित गोविंद राधे।
आप बन जायें काल भी बता दे॥ 4997 ॥
भक्तों की इच्छावश गोविंद राधे।
आप तनु धारें दिव्य बता दे॥ 4998 ॥
मो सो अहंकारी गोविंद राधे।
जो माने हौं ही ईश्वर बता दे॥ 4999 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उसका अहंकार गोविंद राधे।
आप कर दें चूर चूर बता दे॥ 5000 ॥
तब वह आप की गोविंद राधे।
भक्ति अनन्य करे नित्य बता दे॥ 5001 ॥
इन्द्र पद मद में ही गोविंद राधे।
मैंने किये अपराध बता दे॥ 5002 ॥
मेरे अपराध गोविंद राधे।
हैं अक्षम्य किन्तु क्षमा दें बता दें॥ 5003 ॥
मैं तो हूँ मायाबद्ध गोविंद राधे।
एक अज्ञानी जीव बता दे॥ 5004 ॥
अतएव आपके गोविंद राधे।
दिव्य प्रभाव को जाना ना बता दे॥ 5005 ॥
ऐसी कृपा करें गोविंद राधे।
पुनि ऐसी भूल हो ना बता दे॥ 5006 ॥
आप लै अवतार गोविंद राधे।
असुरन मारि निज धाम पठा दें॥ 5007 ॥
आप सर्वात्मा हैं गोविंद राधे।
पुरुषोत्तम भी आप हैं बता दे॥ 5008 ॥
यदुवंशियों के तो गोविंद राधे।
आप ही एकमात्र स्वामी बता दे॥ 5009 ॥
आप भक्तवत्सल गोविंद राधे।
आप ही मदन मोहन हैं बता दे॥ 5010 ॥
जीव सदृश आप गोविंद राधे।
कर्म ते देह धारें ना बता दे॥ 5011 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निज इच्छा ते ही गोविंद राधे।
निर्मित दिव्य देह धारें बता दे॥ 5012॥
आपका देह है गोविंद राधे।
विशुद्ध ज्ञानस्वरूप बता दे॥ 5013॥
मेरे गर्व का तो गोविंद राधे।
अन्त भी नहीं था नाथ बता दे॥ 5014॥
आप की कृपा ते ही गोविंद राधे।
अब हुआ मन मेरा शान्त बता दे॥ 5015॥
आप मेरे स्वामी हैं गोविंद राधे।
आप ही मेरी आत्मा बता दे॥ 5016॥
ऐसी कृपा करें गोविंद राधे।
सदा सदा रहुँ शरण बता दे॥ 5017॥
यह अस्तुति सुनि गोविंद राधे।
इन्द्र ते बोले कृष्ण बता दे॥ 5018॥
ऐश्वर्य मद ते गोविंद राधे।
तुम हो गये थे प्रमत्त बता दे॥ 5019॥
याते तुम्हारा यज्ञ गोविंद राधे।
बन्द कराया यह कृपा है बता दे॥ 5020॥
मद नष्ट होने ते गोविंद राधे।
जीव करे मेरा स्मरण बता दे॥ 5021॥
अब तुम जावो इन्द्र गोविंद राधे।
अमरावती रजधानी बता दे॥ 5022॥
अब कभू भूलिहूँ गोविंद राधे।
करना ना मद पद का बता दे॥ 5023॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इन्द्र तो चले गये गोविंद राधे।
आई समक्ष कामधेनु बता दे॥ 5024॥

कृष्ण को प्रणाम किया गोविंद राधे।
पुनि किया कृष्ण की अस्तुति बता दे॥ 5025॥

आप हैं महायोगी गोविंद राधे।
आप महायोगेश्वर हैं बता दे॥ 5026॥

आप सच्चिदानन्द गोविंद राधे।
परात्पर ब्रह्म कृष्ण हैं बता दे॥ 5027॥

आप विश्वकारण गोविंद राधे।
आप ही विश्वरूप भी हैं बता दे॥ 5028॥

आप ही अच्युत गोविंद राधे।
आप ही जग के रक्षक बता दे॥ 5029॥

आप विश्वेश्वर गोविंद राधे।
आप ही मेरे सेव्य बता दे॥ 5030॥

इन्द्र त्रिलोकी का गोविंद राधे।
मेरे तो एक इन्द्र आप हैं बता दे॥ 5031॥

ब्रह्मा की प्रेरणा ते गोविंद राधे।
हम सब गाय आप इन्द्र हैं बता दे॥ 5032॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यदि आज्ञा हो तो गोविंद राधे।
अभिषेक करना चाहें बता दे॥ 5033॥

पुनि कामधेनु ने गोविंद राधे।
दूध ते किया अभिषेक बता दे॥ 5034॥

इन्द्र की आज्ञा ते गोविंद राधे।
ऐरावत ने भी सूँड़ ते बता दे॥ 5035॥

किया कृष्ण अभिषेक गोविंद राधे।
आकाश गंगा जल ते बता दे॥ 5036॥
तब ते ही कृष्ण का गोविंद राधे।
नाम हुआ गोविंद बता दे॥ 5037॥
नारद शारद गोविंद राधे।
आ गये सब कृष्ण पास बता दे॥ 5038॥
स्वर्ग अप्सरायें भी गोविंद राधे।
नाचने लगीं अति हर्ष ते बता दे॥ 5039॥
पुनि सब आज्ञा ले गोविंद राधे।
चले गये निज धाम बता दे॥ 5040॥
इन्द्र गर्व मर्दन गोविंद राधे।
तत्वज्ञान देता है सब को बता दे॥ 5041॥
देवी देवताओं की गोविंद राधे।
भक्ति नाहिं करनी है बता दे॥ 5042॥
इन्द्र आदि देवता भी गोविंद राधे।
काम क्रोध लोभ के हैं वश में बता दे॥ 5043॥
इन्द्र ने माँगा वर गोविंद राधे।
उर्वशी, इन्द्र को भी माया नचा दे॥ 5044॥
देवी देवता तो हैं गोविंद राधे।
आपु ही भिखारी वो भिखारी भीख का दे॥ 5045॥
हरि हरिजन की ही गोविंद राधे।
भक्ति अनन्य करणीय बता दे॥ 5046॥
भक्ति भक्त भगवान गोविंद राधे।
तीनों में अनन्य भाव रखना है बता दे॥ 5047॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इष्ट गुरु भक्ति में तो गोविंद राधे।
भाव बनाओ अनन्य बता दे॥ 5048॥
इष्ट गुरु भक्ति के गोविंद राधे।
विपरीत में उदासीन बता दे॥ 5049॥
विरोध करने ते गोविंद राधे।
हरि भक्ति आपु ही छूटे बता दे॥ 5050॥
विरोध करने ते गोविंद राधे।
मन जले, हो भी अशुद्ध बता दे॥ 5051॥
अन्य आश्रयों का गोविंद राधे।
मन ते त्याग अनन्यता बता दे॥ 5052॥
किसी को धन बल गोविंद राधे।
किसी को तो कर्म बल है बता दे॥ 5053॥
कर्म आश्रय दो हैं गोविंद राधे।
बहिरंग अरु अन्तरंग बता दे॥ 5054॥
जग की संपत्ति गोविंद राधे।
है बहिरंग कर्म आश्रय बता दे॥ 5055॥
योग, जप, तप आदि गोविंद राधे।
है अन्तरंग कर्म आश्रय बता दे॥ 5056॥
स्वबल आश्रय भी तो गोविंद राधे।
है अनन्यता का बाधक बता दे॥ 5057॥
इष्टबल आश्रय गोविंद राधे।
एकमात्र हो तो अनन्य बता दे॥ 5058॥
इष्टबल भाव यह गोविंद राधे।
इष्ट नाम, रूप, लीला, जन हैं बता दे॥ 5059॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि कृपा करुणा पै गोविंद राधे।
पूर्ण विश्वास अनन्यता बता दे॥ 5060॥

सत्य आश्रय तो हैं गोविंद राधे।
हरि आश्रय ही अनन्य बता दे॥ 5061॥

इष्टदेव एक ही हो गोविंद राधे।
रैन दिन उसमें ही मन को लगा दे॥ 5062॥

जगद्गुरु माध्वाचार्य गोविंद राधे।
इष्ट लक्ष्मी नारायण बता दे॥ 5063॥

जगद्गुरु रामानुज गोविंद राधे।
इष्ट लक्ष्मी नारायण बता दे॥ 5064॥

शेष वैष्णवों के तो गोविंद राधे।
इष्ट हैं राधा कृष्ण बता दे॥ 5065॥

इष्टदेव भगवान गोविंद राधे।
उनकी ही भक्ति करो शेष को भुला दे॥ 5066॥

मंगल मंगल गोविंद राधे।
देवों के देव हैं कृष्ण बता दे॥ 5067॥

देवी देव माननीय गोविंद राधे।
किन्तु भजनीय श्रीकृष्ण हैं बता दे॥ 5068॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन ते सब का ही गोविंद राधे।
करो सम्मान प्रेम हरि ते बता दे॥ 5069॥

पंच देवोपासना है गोविंद राधे।
विष्णु, शिव, गणेश, दुर्गा, सूर्य बता दे॥ 5070॥

दुर्गा हैं राधा अंश गोविंद राधे।
दुर्गा जी की जय जयकार करा दे॥ 5071॥

राम श्याम दोनों एक गोविंद राधे।
जाको मन जामें लगे वामें लगा दे॥ 5072॥

नार हैं जीव सब गोविंद राधे।
जीवआश्रय नारायण बता दे॥ 5073॥

हरि में अनन्य रहो गोविंद राधे।
अन्यों ते भाव तटस्थ बना दे॥ 5074॥

देवों की भक्ति तो गोविंद राधे।
मुक्ति कामियों ते भी त्याज्य बता दे॥ 5075॥

भक्त तो मुक्ति त्यागी गोविंद राधे।
वह देवभक्ति क्यों करेगा बता दे॥ 5076॥

वृक्षमूल जल डारो गोविंद राधे।
शाखा उपशाखा हो पुष्ट बता दे॥ 5077॥

प्राण हित खाद्य ज्यों गोविंद राधे।
देह इन्द्रियाँ सब पुष्ट हों बता दे॥ 5078॥

ऐसे कृष्ण भक्ति करो गोविंद राधे।
विश्व चराचर तृप्त हो बता दे॥ 5079॥

स्कन्द पुराण कह गोविंद राधे।
देवभक्तिकर्ता अति निंद्य बता दे॥ 5080॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जैसे निज माता तजि गोविंद राधे।
चांडालिनी को सेवे बता दे॥ 5081॥

जैसे दिव्यसुधा तजि गोविंद राधे।
हालाहल को सेवे बता दे॥ 5082॥

यदि सब देव मिलि गोविंद राधे।
कृपा करें तो भी माया जाये ना बता दे॥ 5083॥

हरि गुरु भक्ति करो गोविंद राधे।
हरि गुरु तेरी सब बिगरी बना दे॥ 5084 ॥
हरि हरिजन भक्ति गोविंद राधे।
देवी देवता को प्रसन्न करा दे॥ 5085 ॥
हरि हरिजन भक्ति गोविंद राधे।
सब दैवी शक्तियों को दासी बना दे॥ 5086 ॥
हरि हरिजन को तो गोविंद राधे।
देवी देवता करें नमन बता दे॥ 5087 ॥
निष्काम भक्त में तो गोविंद राधे।
सब देवी देव करें वास बता दे॥ 5088 ॥
निष्काम भक्त में तो गोविंद राधे।
ज्ञान वैराग्य करें वास बता दे॥ 5089 ॥
भक्त तो सब ही हैं गोविंद राधे।
कोउ हरि के कोउ जग के बता दे॥ 5090 ॥
जग प्रेम सीमा मृत्यु गोविंद राधे।
हरि प्रेम सीमा अमरत्व बता दे॥ 5091 ॥
जग प्रेम जीवों को गोविंद राधे।
लख चौरासी योनि घुमा दे॥ 5092 ॥
हरि प्रेम जीवों को गोविंद राधे।
गोलोक में नित्य सेवा दिला दे॥ 5093 ॥
भक्ति का साधन गोविंद राधे।
भगवान का तत्वज्ञान बता दे॥ 5094 ॥
आदर्श प्रेमी कृष्ण गोविंद राधे।
नृत्य गीत वाद्य आदि विज्ञ बता दे॥ 5095 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सकल कलाविज्ञ गोविंद राधे।
भक्तप्रिय भक्तभक्तिमान बता दे॥ 5096॥
भक्तभयहारी कृष्ण गोविंद राधे।
भक्तचरणरजकांक्षी बता दे॥ 5097॥
भक्तसर्वस्व कृष्ण गोविंद राधे।
शरणागतवत्सल कृष्ण बता दे॥ 5098॥
भक्त ऋणयुक्त कृष्ण गोविंद राधे।
भक्तप्रतिज्ञापालक बता दे॥ 5099॥
महाभारत में गोविंद राधे।
हरि ने एक की प्रतिज्ञा बता दे॥ 5100॥
हरि ने कहा था यह गोविंद राधे।
शस्त्र न उठावूँ है प्रतिज्ञा बता दे॥ 5101॥
इधर भीष्म ने भी की गोविंद राधे।
शस्त्र उठवा दूँगा हरि ते बता दे॥ 5102॥
कृष्ण भक्तवत्सल गोविंद राधे।
चक्र उठा कर भीष्म को जिता दे॥ 5103॥
दीनबन्धु दीनानाथ गोविंद राधे।
COPYRIGHT
नन्द यशोदा सुवन बता दे॥ 5104॥
RADHA GOVIND SAMITI
अनंत कल्याण गोविंद राधे।
गुणगणनिलय हैं कृष्ण बता दे॥ 5105॥
श्रीकृष्ण तनु का तो गोविंद राधे।
प्रति रोम काम कमनीय बता दे॥ 5106॥
सौन्दर्य माधुर्य गोविंद राधे।
सौशील्य सौकुमार्य गुण हैं बता दे॥ 5107॥

बिनु कारण कृष्ण गोविंद राधे।
करुणावरुणालय हैं बता दे॥ 5108॥
कृष्ण करुणामय गोविंद राधे।
भक्त पाछे चलि पद धूरि लगा दे॥ 5109॥
भक्तों के क्रीतदास गोविंद राधे।
पतितों ते प्रेम करें कृष्ण बता दे॥ 5110॥
दीनबन्धु दीनानाथ गोविंद राधे।
कृष्ण हैं अधमउधारन बता दे॥ 5111॥
उपर्युक्त तत्वज्ञान गोविंद राधे।
आपु श्रीकृष्ण ते प्रेम करा दे॥ 5112॥
कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
जग प्रेम को बिनु श्रम ही मिटा दे॥ 5113॥
कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
दैवी गुणों को बिनु चाहे बुला दे॥ 5114॥
कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
कृष्णज्ञान जगवैराग्य दिला दे॥ 5115॥
कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
पंचकोश को भस्मसात करा दे॥ 5116॥
कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
प्रेमी का उर निर्ग्रन्थ बना दे॥ 5117॥
कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
संचित पाप पुण्य भस्म करा दे॥ 5118॥
कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
माया का अत्यन्ताभाव करा दे॥ 5119॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
कृष्ण को भी प्रेमी का दास बना दे॥ 5120॥

कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
भुक्ति मुक्ति वैकुण्ठ सुख ठुकरा दे॥ 5121॥

कृष्णप्रेम आपु ही गोविंद राधे।
चिन्मय गोलोक धाम दिला दे॥ 5122॥

हरि में हो हरि भाव गोविंद राधे।
ऐसा प्रेम तो तोहिं हरि ते मिला दे॥ 5123॥

हरि में हो नर भाव गोविंद राधे।
ऐसा प्रेम भी तोहिं हरि ते मिला दे॥ 5124॥

जग में हो हरि भाव गोविंद राधे।
ऐसा प्रेम भी तोहिं हरि ते मिला दे॥ 5125॥

जग में हो जग भाव गोविंद राधे।
ऐसा प्रेम तो तेरा पतन करा दे॥ 5126॥

सर्वदेश सर्वकाल गोविंद राधे।
सर्ववस्तु में हो हरि ध्यान बता दे॥ 5127॥

दूध में है घृत जैसे गोविंद राधे।
ऐसे जग में भी व्याप्त हरि हैं बता दे॥ 5128॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि तो हैं सर्वत्र गोविंद राधे।
व्याप्त समान रूप ते ही बता दे॥ 5129॥

यों तो हरि व्यापक हैं गोविंद राधे।
किन्तु प्रकट होते भक्ति ते बता दे॥ 5130॥

जो हरि तेरे उर गोविंद राधे।
सोइ हरि हैं गोलोक में बता दे॥ 5131॥

चारों धाम काहे जाये गोविंद राधे।
तेरा श्याम तेरे उर बैठा है बता दे॥ 5132॥
वृन्दावन वास करे गोविंद राधे।
विषय भोग नाम अपराध करा दे॥ 5133॥
हरि बैठे उर में हैं गोविंद राधे।
तू तो मिलन की प्यास बढ़ा दे॥ 5134॥
गो दूध गो हित व्यर्थ गोविंद राधे।
दूध दुह के पिला दे पुष्ट बना दे॥ 5135॥
ऐसे ही उर हरि गोविंद राधे।
प्रेम ते तू हरि को भी प्रकट करा दे॥ 5136॥
साँचो स्वार्थ हरि ते ही गोविंद राधे।
मिलेगा यह ज्ञान प्यार करा दे॥ 5137॥
स्वार्थ सिद्धि विश्वास गोविंद राधे।
तन मन प्राण सब अर्पण करा दे॥ 5138॥
स्वार्थ ते ही प्रेम होवे गोविंद राधे।
सच्चा स्वार्थ ज्ञान सच्चा प्रेम करा दे॥ 5139॥
'स्व' का अर्थ देह माना गोविंद राधे।
COPYRIGHT
'देह' अर्थ विषयभोग पतन करा दे॥ 5140॥
RADHA GOVIND SAMITI
'स्व' का अर्थ आत्मा है गोविंद राधे।
'आत्मा' का अर्थ प्रेम सबको बता दे॥ 5141॥
'स्व' शब्द का सच्चा गोविंद राधे।
अर्थ 'वसुधैव कुटुम्बकं' बता दे॥ 5142॥
स्वार्थ परमार्थ दोनों गोविंद राधे।
यही ज्ञान सच्चा ज्ञान मन को करा दे॥ 5143॥

स्वार्थ ही है परमार्थ गोविंद राधे।
भोले लोग दोनों को पृथक बता दे॥ 5144॥

स्वार्थ को बुरा न मानो गोविंद राधे।
स्वार्थ अर्थ जानो बिगरी बना दे॥ 5145॥

जगत में प्रेम नहिं गोविंद राधे।
याते काऊ ते प्रेम चहु ना बता दे॥ 5146॥

प्रेम के भिखारी सब गोविंद राधे।
प्रेम देने का स्वाँग झूठा बता दे॥ 5147॥

भिखारी भिखारी घर गोविंद राधे।
माँगे भीख वो भी भिखारी भीख का दे॥ 5148॥

प्रेम प्रेम सब कहें गोविंद राधे।
पूछो प्रेम परिभाषा तो ना बता दे॥ 5149॥

दूँगा प्रेम सब कहें गोविंद राधे।
प्रेमतत्व जानें नहिं तोहिं प्रेम का दें॥ 5150॥

जिस धनवान पास गोविंद राधे।
धन है वही धन देगा बता दे॥ 5151॥

ऐसे ही प्रेमधनी गोविंद राधे।
हरि गुरु ते मिले प्रेम बता दे॥ 5152॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगत के प्रेम का गोविंद राधे।
आधार एकमात्र स्वार्थ बता दे॥ 5153॥

जग स्वार्थ बिनु ना दे गोविंद राधे।
हरि गुरु स्वार्थ बिनु प्रेमसुधा दें॥ 5154॥

हरि ते न प्यार किया गोविंद राधे।
जग ते किया जग अँगुठा दिखा दे॥ 5155॥

जग नाता तब तक गोविंद राधे।
जब तक स्वार्थ सिद्ध होवे बता दे॥ 5156॥
किसी के सुख हेतु गोविंद राधे।
कोई भी प्यार नाहिं करता बता दे॥ 5157॥
अपने ही सुख हेतु गोविंद राधे।
प्यार सब करते हैं सब ते बता दे॥ 5158॥
जितना झुकेगा जग गोविंद राधे।
उतना ही स्वार्थ उर होगा बता दे॥ 5159॥
जग लखि स्वार्थी गोविंद राधे।
हरि गुरु को भी मन स्वार्थी बता दे॥ 5160॥
स्वार्थ सिद्ध होने पै ही गोविंद राधे।
होगा परार्थ यह ज्ञान करा दे॥ 5161॥
जब लौं स्वार्थ सिद्ध ना हो गोविंद राधे।
परार्थ की बात करना धोखा बता दे॥ 5162॥
जब लौं न मिले श्याम गोविंद राधे।
तब लौं परोपकार धोखा बता दे॥ 5163॥
सारा विश्व स्वार्थी है गोविंद राधे।
COPYRIGHT
सच्चा परार्थी हरि गुरु दो बता दे॥ 5164॥
RADHA GOVIND SAMITI
स्वार्थी हैं सुर नर गोविंद राधे।
हरि गुरु ही परमार्थी बता दे॥ 5165॥
जग जो कृपा करे तो गोविंद राधे।
स्वार्थ सिद्ध करि वाय अँगुठा दिखा दे॥ 5166॥
'**मैं**' तो हूँ आत्मा गोविंद राधे।
आत्मा की आत्मा परमात्मा बता दे॥ 5167॥

आत्मा तो शुद्ध 'मैं' है गोविंद राधे।
देह तो अशुद्ध 'मैं' है सार बता दे॥ 5168॥

आत्मा तो शुद्ध 'मैं' है गोविंद राधे।
देह 'मैं' नहीं मेरा देह है बता दे॥ 5169॥

जीव तो है नित्य दास गोविंद राधे।
मन यह मान ले तो काम बना दे॥ 5170॥

जब ते विमुख हुये गोविंद राधे।
मैं देह ही हूँ माया अज्ञान ला दे॥ 5171॥

आत्मा है चेतन गोविंद राधे।
देह तो है जड़ पंचभूत का बता दे॥ 5172॥

आत्मा है चेतन गोविंद राधे।
चेतन चेतन परमात्मा बता दे॥ 5173॥

आत्मा तो रहे नित गोविंद राधे।
परमात्मा में नहिं दूर बता दे॥ 5174॥

तू तो दिव्य आत्मा है गोविंद राधे।
जग कामना की पूर्ति कछु काम ना दे॥ 5175॥

जग कामना को तजु गोविंद राधे।
हरि कामना को निज कामना बना दे॥ 5176॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग कामना ना जाये गोविंद राधे।
जग कामना हरि कामना बना दे॥ 5177॥

जग कामना जाये गोविंद राधे।
जब बनि जाये हरि कामना बता दे॥ 5178॥

पिय ते न माँगो कछु गोविंद राधे।
कामना अपूर्ति तो प्रेम नसा दे॥ 5179॥

बदले का प्यार ऐसा गोविंद राधे।
एक दिन प्यार को भी खार बना दे॥ 5180॥

हरि ते न जग माँगो गोविंद राधे।
एक दिन माँगना तो नास्तिक बना दे॥ 5181॥

हरि ते जो जग माँगो गोविंद राधे।
हरि यदि दे भी दे तो लोभ बढ़ा दे॥ 5182॥

माँगना बुरा है अति गोविंद राधे।
माँगना तो ब्रह्म को भी बामन बना दे॥ 5183॥

हरि ते न माँगो कछु गोविंद राधे।
मन दै के हरि को भिखारी बना दे॥ 5184॥

प्यार इतना करो कि गोविंद राधे।
श्याम आपु आ के पूछें कहु तोहिं का दे॥ 5185॥

प्यार इतना करो कि गोविंद राधे।
भाजे भाजे आवें दोनों गलबँहियाँ दे॥ 5186॥

हरि का तो सुत हूँ मैं गोविंद राधे।
पिता वस्तु सुत की ही पिता को बता दे॥ 5187॥

हरि बोल हरि बोल गोविंद राधे।
वासना का बिस्तर गोल करा दे॥ 5188॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि को बिठा दे उर गोविंद राधे।
जग वासना को उर बिच वास ना दे॥ 5189॥

हरि हैं अकिंचन के गोविंद राधे।
याते अकिंचन भाव मन का बना दे॥ 5190॥

निज इच्छा बल तजो गोविंद राधे।
हरि गुरु इच्छा को ही इच्छा बना दे॥ 5191॥

सदा ते सकाम रहे गोविंद राधे।
अब अभ्यास निष्काम का करा दे॥ 5192॥
मुक्ति कामना भी काम गोविंद राधे।
भक्ति कामना ही निष्काम बता दे॥ 5193॥
प्रेमी है मोक्षत्यागी गोविंद राधे।
फल है अनन्त सुख प्राप्ति बता दे॥ 5194॥
विषयी भी मोक्षत्यागी गोविंद राधे।
फल है अनन्त दुख प्राप्ति बता दे॥ 5195॥
प्रेमी है मोक्षत्यागी गोविंद राधे।
फिर भी मिले मोक्ष आपु बता दे॥ 5196॥
विषयी है मोक्षत्यागी गोविंद राधे।
फल मिले कर्मों का बन्धन बता दे॥ 5197॥
विषयों में सुखभ्रम गोविंद राधे।
मिटे बिनु छूटे ना विषय बता दे॥ 5198॥
विषयों के छूटे बिनु गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण में प्रेम हो भी ना बता दे॥ 5199॥
कृष्णप्रेम हेतु क्या है गोविंद राधे।
यह है स्वभाव, हेतु कछु ना बता दे॥ 5200॥
शुद्ध प्रेम में ना रहे गोविंद राधे।
मोक्ष सुख या प्रेम सुख भी बता दे॥ 5201॥
शुद्ध प्रेम में तो रहे गोविंद राधे।
श्यामा श्याम निष्काम सेवा बता दे॥ 5202॥
जिस प्रेम में मन का गोविंद राधे।
संयम अभाव वह प्रेम ना बता दे॥ 5203॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कामना ने तोहिं मारा गोविंद राधे।
तू भी कामनाओं को मारि के दिखा दे॥ 5204॥
मन को ऐसा बना गोविंद राधे।
कामना का कछु रहे काम ना बता दे॥ 5205॥
प्रह्लाद वर माँगा गोविंद राधे।
माँगने की मेरी कामना मिटा दे॥ 5206॥
हरि यदि पूछें का दें गोविंद राधे।
हरि को बता दे गोपीप्रेम दिला दें॥ 5207॥
प्रेम शब्द सब बोलें गोविंद राधे।
प्रेम अर्थ तो जाने बिरला बता दे॥ 5208॥
तनु साथ जाति धर्म गोविंद राधे।
भाषा नाम छूटे प्रेम छूटे ना बता दे॥ 5209॥
स्वर्ण चेतन ना गोविंद राधे।
जड़ है, जड़ का प्रेम मोह बता दे॥ 5210॥
ऐसे तनु चेतन ना गोविंद राधे।
जड़ है, जड़ का प्रेम मोह बता दे॥ 5211॥
कामना भरी है उर गोविंद राधे।
प्रेम प्रेम मुख बोलें धोखा बता दे॥ 5212॥
जहाँ प्रेम काम नहिं गोविंद राधे।
जहाँ काम प्रेम नहिं रहता बता दे॥ 5213॥
प्रेम अरु काम दोनों गोविंद राधे।
छत्तीस अंक ज्यों विरोधी बता दे॥ 5214॥
काँच अरु हीरा दोनों गोविंद राधे।
एक सी चमक वाले होते हैं बता दे॥ 5215॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

किन्तु विज्ञ जौहरी तो गोविंद राधे।
काँच को काँच हीरा हीरा को बता दे ॥ 5216 ॥
ऐसे ही काम प्रेम गोविंद राधे।
एक सा दीखे अल्पज्ञ को बता दे ॥ 5217 ॥
किन्तु ब्रज रसिक तो गोविंद राधे।
काम प्रेम भेद जाने क्षण में बता दे ॥ 5218 ॥
काम प्रेम पहिचान गोविंद राधे।
क्रिया ते नहीं हो भाव ते बता दे ॥ 5219 ॥
काम की जैसी क्रिया गोविंद राधे।
प्रेम की भी वैसी क्रिया होवे बता दे ॥ 5220 ॥
जब लौं कामना हो गोविंद राधे।
देह में केन्द्रित काम बता दे ॥ 5221 ॥
जब वह कामना हो गोविंद राधे।
कृष्ण में केन्द्रित प्रेम बता दे ॥ 5222 ॥
जहाँ श्याम काम नाहिं गोविंद राधे।
जहाँ काम तहाँ श्याम रहें ना बता दे ॥ 5223 ॥
प्रेम है सूर्य सम गोविंद राधे।
काम अन्धकार है विरोध बता दे ॥ 5224 ॥
काम निज सुख हित गोविंद राधे।
प्रेम प्रियतम सुख हित हो बता दे ॥ 5225 ॥
अज्ञ जीव काम को ही गोविंद राधे।
प्रेम मानि दुख पावे नित्य बता दे ॥ 5226 ॥
जीव के लिए तो काम गोविंद राधे।
विष युक्त मधु के समान है बता दे ॥ 5227 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

काम का तो परिणाम गोविंद राधे।
दुःख अशान्ति अतृप्ति बता दे॥ 5228॥
प्रेम है सुख रूप गोविंद राधे।
काम है अनित्य दुख रूप बता दे॥ 5229॥
कामना है गन्दी नाली गोविंद राधे।
प्रेम तो दिव्य गंगा जल ज्यौं बता दे॥ 5230॥
पिय सुख चह प्रेम गोविंद राधे।
निज सुख चहे कामना है बता दे॥ 5231॥
श्रीकृष्ण सुख हित गोविंद राधे।
कामना हो जामें वाय प्रेम बता दे॥ 5232॥
काम अग्नि प्रेम रस गोविंद राधे।
यह कामना तो प्रेमरस को सुखा दे॥ 5233॥
प्रेम में प्यास तो है गोविंद राधे।
कामना नहीं है यह भेद बता दे॥ 5234॥
काम में तो सुख को गोविंद राधे।
निज ढिग लाया जाता है बता दे॥ 5235॥
प्रेम में तो सुख को गोविंद राधे।
प्रिय ढिग ले जाया जाता है बता दे॥ 5236॥
काम में अभाव रहे गोविंद राधे।
प्रेम में आनन्द तृप्ति बता दे॥ 5237॥
दिव्य प्रेम रस ऐसा गोविंद राधे।
नित्य तृप्ति नित्य प्यास साथ बता दे॥ 5238॥
काम है कृष्ण पुत्र गोविंद राधे।
दूजा नाम वाय प्रद्युम्न बता दे॥ 5239॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति है कृष्ण प्रिया गोविंद राधे।
याते भक्ति हुई काम माता बता दे॥ 5240॥
    काम की पूज्या भक्ति गोविंद राधे।
    काम की भोग्या ना भक्ति बता दे॥ 5241॥
सुख साधन का तो गोविंद राधे।
प्रेम है अनित्य घटमान बता दे॥ 5242॥
    जब तक भूख है गोविंद राधे।
    तब तक ही भोज्य सुख दे बता दे॥ 5243॥
जब तक है प्यास गोविंद राधे।
तब तक जल में है सुख भी बता दे॥ 5244॥
    जब तक काम है गोविंद राधे।
    तब तक भोग्य में है सुख भी बता दे॥ 5245॥
किन्तु सुख में तो गोविंद राधे।
सदा सर्वत्र ही प्रेम बता दे॥ 5246॥
    सुख रूप श्रीकृष्ण गोविंद राधे।
    याते हो कृष्ण ते ही प्रेम बता दे॥ 5247॥
जो प्रेम हरि जग गोविंद राधे।
दोनों में हो वह प्रेम ना बता दे॥ 5248॥
    काम कहें जगप्रेम गोविंद राधे।
    प्रेम कहें शुद्ध हरि गुरु ते बता दे॥ 5249॥
काम अरु प्रेम दोनों गोविंद राधे।
एक ठाम रहि नहिं सकते बता दे॥ 5250॥
    ज्यों ज्यों हो प्रेम त्यों त्यों गोविंद राधे।
    आपु भजि जाये जग काम बता दे॥ 5251॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दिव्यप्रेम पाने पै गोविंद राधे।
तम पूर्ण जाये हो प्रकाश बता दे॥ 5252 ॥
प्रेम का विकास हो तो गोविंद राधे।
स्वार्थ का विनाश हो जाय बता दे॥ 5253 ॥
जब लौं न त्यागा स्वार्थ गोविंद राधे।
तब लौं न प्रेम श्रीकृष्ण में बता दे॥ 5254 ॥
स्वार्थ का पुजारी जीव गोविंद राधे।
प्रेम पथ में स्वार्थ गंध ना बता दे॥ 5255 ॥
लोक अरु परलोक गोविंद राधे।
प्रेम पथ पै दो कलंक बता दे॥ 5256 ॥
प्रेम में स्वार्थ नाहिं गोविंद राधे।
स्वार्थ में ही छल का वास बता दे॥ 5257 ॥
मन हो विशुद्ध जब गोविंद राधे।
प्रेम भी तब हो विशुद्ध बता दे॥ 5258 ॥
ज्यौं ज्यौं बाढ़ै प्रेम गोविंद राधे।
त्यौं त्यौं हो मन भी शुद्ध बता दे॥ 5259 ॥
गुणरहित प्रेम अर्थ गोविंद राधे।
त्रिगुण भोग ते हो विराग बता दे॥ 5260 ॥
प्रेम शब्द का प्रयोग गोविंद राधे।
हरि हरिजन में युक्त बता दे॥ 5261 ॥
प्रेम है शुद्ध याते गोविंद राधे।
शुद्ध ते जुड़े तो उसे प्रेम बता दे॥ 5262 ॥
प्रेम है शुद्ध याते गोविंद राधे।
जुड़े जो अशुद्ध ते तो मोह बता दे॥ 5263 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि गुरु ही हैं शुद्ध गोविंद राधे।
उनते जुड़े जो मन प्रेम बता दे॥ 5264॥

कृष्ण प्रेम पाना है गोविंद राधे।
जहाँ भी जैसे भी प्राप्त हो बता दे॥ 5265॥

हरि ते जुड़ा प्रेम गोविंद राधे।
किसी भी भाव ते हो प्रेम है बता दे॥ 5266॥

सूधी सी बात है गोविंद राधे।
जाते हो प्रेम मिले सोई बता दे॥ 5267॥

स्वयं प्रकाश्य प्रेम गोविंद राधे।
पात्र लखि आपु ही प्रकट हो बता दे॥ 5268॥

नित्यसिद्ध कृष्णप्रेम गोविंद राधे।
शुद्ध चित्त में हो उदय बता दे॥ 5269॥

प्रेम रहे मन में ही गोविंद राधे।
मन रहे हरि के वश में बता दे॥ 5270॥

मन तो है मायिक गोविंद राधे।
दिव्य प्रेम ठहरेगा कैसे बता दे॥ 5271॥

पात्र है दिव्य मन गोविंद राधे।
उसी में दिव्य प्रेम प्रकटे बता दे॥ 5272॥

सिंहिनी का दूध तो गोविंद राधे।
स्वर्ण के पात्र में ही टिकता बता दे॥ 5273॥

ऐसे ही दिव्यप्रेम गोविंद राधे।
शुद्ध दिव्य मन में ही टिकता बता दे॥ 5274॥

शुद्ध चिन्तन करो गोविंद राधे।
वाते हृदय शुद्ध होगा बता दे॥ 5275॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अशुद्ध चिन्तन गोविंद राधे।
मन को अशुद्ध करे और भी बता दे॥ 5276॥
प्रेम हरि रूप ही है गोविंद राधे।
हरि भी है प्रेम स्वरूप बता दे॥ 5277॥
प्रेम प्राप्त होने पै गोविंद राधे।
प्रेमी को दस दिशा सुख है बता दे॥ 5278॥
प्रेमी की दशा एक गोविंद राधे।
सर्वत्र देखे श्रीकृष्ण को बता दे॥ 5279॥
प्रेमी की दशा एक गोविंद राधे।
सब में देखे श्रीकृष्ण को बता दे॥ 5280॥
प्रेमी का संसार गोविंद राधे।
रहता तो है पूर्ववत ही बता दे॥ 5281॥
किन्तु कृष्ण प्रेमी का गोविंद राधे।
मन रहता है कृष्ण में बता दे॥ 5282॥
जहाँ प्रेम वहाँ सुख गोविंद राधे।
जहाँ द्वेष वहाँ दुख ही है बता दे॥ 5283॥
प्रेमी का बैरी नाहिं गोविंद राधे।
क्योंकि सब में हरि देखे बता दे॥ 5284॥
हरि प्रेमी प्रेम सोचे गोविंद राधे।
प्रेम देखे प्रेम सुने नित ही बता दे॥ 5285॥
सुख साधन का तो गोविंद राधे।
प्रेम सोपाधिक नाम बता दे॥ 5286॥
सुख रूप कृष्ण प्रेम गोविंद राधे।
नाम निरुपाधिक प्रेम बता दे॥ 5287॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम का स्वरूप तो है गोविंद राधे।
कैसा भी पराया हो अपना बना दे॥ 5288॥
प्रेम का स्वभाव तो है गोविंद राधे।
दुख को भी सुख का सिन्धु बना दे॥ 5289॥
जहाँ जहाँ प्रेम रहे गोविंद राधे।
तहाँ तहाँ सुख ही रहेगा बता दे॥ 5290॥
दूर को निकट लाये गोविंद राधे।
देर को तुरत प्रेम तत्व बता दे॥ 5291॥
जो प्रेम देरी अरु गोविंद राधे।
दूरी ते घटे वह प्रेम ना बता दे॥ 5292॥
प्रेम बढ़ता ही रहे गोविंद राधे।
संयोग हो या वियोग बता दे॥ 5293॥
कामनाएँ तजो भजो गोविंद राधे।
हो अकाम तब गुरु प्रेम दिला दे॥ 5294॥
शुद्ध प्रेम पाना हो तो गोविंद राधे।
देना देना सीखो लेना लेना भुला दे॥ 5295॥
भक्त भगवान दोनों गोविंद राधे।
देना देना जानें लेना जानें ना बता दे॥ 5296॥
जग जाने लेना लेना गोविंद राधे।
जाने न देना प्रेम पाये ना बता दे॥ 5297॥
जग जाने लेना याते गोविंद राधे।
काऊ की काऊ ते बने ना बता दे॥ 5298॥
लेना लेना सीखा सदा गोविंद राधे।
देना देना पाठ अब मन को पढ़ा दे॥ 5299॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सर्वस्व दे दे जो तो गोविंद राधे।
तो पै हरि भी सर्वस्व लुटा दे॥ 5300॥
लेना लेना छाँड़ु मन गोविंद राधे।
देना देना सीख देना प्रेम दिला दे॥ 5301॥
जहाँ जहाँ त्याग रहे गोविंद राधे।
तहाँ तहाँ प्रेम का निवास बता दे॥ 5302॥
जग प्रेम में भी जहाँ गोविंद राधे।
त्याग होगा वहीं प्रेम होगा बता दे॥ 5303॥
दास ते बड़ा है त्याग गोविंद राधे।
संसार में भी सखा का ही बता दे॥ 5304॥
सखा ते बड़ा है त्याग गोविंद राधे।
जग में माता पिता का बता दे॥ 5305॥
माता पिता ते बड़ा गोविंद राधे।
त्याग जग में स्त्री पति का बता दे॥ 5306॥
त्याग बिना प्रेम नाहिं गोविंद राधे।
प्रेम बिना त्याग नाहिं होगा बता दे॥ 5307॥
खोया सुत आया लखि गोविंद राधे।
अस्वस्थ माँ उठ बैठे बता दे॥ 5308॥
प्रेम हो जाने पै गोविंद राधे।
त्याग भी आपु हो जाये बता दे॥ 5309॥
प्रेम में तितिक्षा तो गोविंद राधे।
आपु ही आ जायेगी बता दे॥ 5310॥
प्रेम में पवित्रता भी गोविंद राधे।
अपने आप आ जाये बता दे॥ 5311॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम में त्याग की गोविंद राधे।
बात सुनि डरि जाये विषयी बता दे॥ 5312॥

प्रेम में तड़पन गोविंद राधे।
बात सुनि डरि जाये विषयी बता दे॥ 5313॥

प्रेम अग्नि ज्वाला है गोविंद राधे।
येहि लखि डर भागे विषयी बता दे॥ 5314॥

एक बार ज्वाला में गोविंद राधे।
कूद परे पुनि पाये रस ही बता दे॥ 5315॥

जग विषयासक्ति गोविंद राधे।
कृष्णप्रेम में मुख्य बाधा बता दे॥ 5316॥

जग विषयासक्ति गोविंद राधे।
कारण तत्वज्ञानाभाव बता दे॥ 5317॥

जग सब हरि का है गोविंद राधे।
हमने किया मिथ्या स्वत्व बता दे॥ 5318॥

उस मिथ्या स्वत्व को ही गोविंद राधे।
जीव को हटाना है तत्व बता दे॥ 5319॥

प्रेम धन सच्चा धन गोविंद राधे।
और धन मन में अभिमान बढ़ा दे॥ 5320॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम रस चाहे अरु गोविंद राधे।
मान भी चाहे असंभव बता दे॥ 5321॥

ब्रह्म आनन्द प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म के ही हैं तीनों रूप बता दे॥ 5322॥

सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म आनन्द दोनों दास बता दे॥ 5323॥

सबते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
प्रेम के अधीन श्यामा श्याम बता दे॥ 5324॥
प्रेमाधीन मायाधीश गोविंद राधे।
मायातीत मायाधीन सब ही बता दे॥ 5325॥
मायाधीन मायातीत गोविंद राधे।
मायाधीश तीनों माँगें प्रेमसुधा दे॥ 5326॥
सबते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म को भी जीव का खिलौना बना दे॥ 5327॥
सबते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
पुरुषोत्तम को भी दास बना दे॥ 5328॥
सबते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म को भी जीव की साँटी डरा दे॥ 5329॥
सबते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
बड़े ब्रह्म को प्रेम छोटा बना दे॥ 5330॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
सब ते बड़े ब्रह्म को भी रुला दे॥ 5331॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म को भी जीव करताल पै नचा दे॥ 5332॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म पूर्णकाम को सकाम बना दे॥ 5333॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
पूर्णब्रह्म को भी अपूर्ण बना दे॥ 5334॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म को भी छाछ भिखारी बना दे॥ 5335॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
गोपियों के पाछे पाछे ब्रज में घुमा दे॥ 5336 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
नित्य तृप्त ब्रह्म उर प्यास बढ़ा दे॥ 5337 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
सेव्य ब्रह्म को क्रीतदास बना दे॥ 5338 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
प्रेमी, प्रेम, प्रियतम एक बना दे॥ 5339 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
प्रेमाधीन ब्रह्म जीव दोनों बता दे॥ 5340 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
मृत्यु लोक में भी गोलोक बुला दे॥ 5341 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
विश्वपाल को भी गोपाल बना दे॥ 5342 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
जगत-पिता को नन्दपूत बना दे॥ 5343 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म सर्वज्ञ को भी अज्ञ बना दे॥ 5344 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म को भी जीव ऊखल में बँधा दे॥ 5345 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म को भी ग्वाल बाल खेल में हरा दें॥ 5346 ॥
सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
ब्रह्म को हरा गोप घोड़ा बना दें॥ 5347 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब ते बड़ा है प्रेम गोविंद राधे।
मुक्त आत्मा को पुनि तन बनवा दे॥ 5348॥
कोटि सिद्ध मुक्तों में गोविंद राधे।
बिरला ही कोई प्रेम पाये बता दे॥ 5349॥
प्रेम का निरूपक गोविंद राधे।
अन्त में आपु हार मान ले बता दे॥ 5350॥
प्रेम कृष्ण स्वरूप गोविंद राधे।
याते अनिर्वचनीय है बता दे॥ 5351॥
संसारी प्रेम का भी गोविंद राधे।
शब्दों ते निर्वचन हो ना बता दे॥ 5352॥
पुनि दिव्यप्रेम का गोविंद राधे।
कैसे निरूपण होगा बता दे॥ 5353॥
प्रेम मन गोचर गोविंद राधे।
सत् भी अनिर्वचनीय बता दे॥ 5354॥
प्रेम का निरूपण गोविंद राधे।
शब्दों ते करना असम्भव बता दे॥ 5355॥
प्रेम का निरूपण जो गोविंद राधे।
शब्दों ते हो सो तो धोखा बता दे॥ 5356॥
नारद बताये प्रेम गोविंद राधे।
अनुभवरूप गुड़ गूँगे का बता दे॥ 5357॥
गूँगे का गुड़ जैसा गोविंद राधे।
प्रेम का निरूपण असम्भव बता दे॥ 5358॥
प्रेम में हो ज्ञान लय गोविंद राधे।
ज्ञान बिनु कौन हो निरूपक बता दे॥ 5359॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ह्लादिनी संविदंश गोविंद राधे।
शुद्ध सत्ववृत्ति दिव्यप्रेम बता दे॥ 5360॥

स्वरूप शक्ति ते ही गोविंद राधे।
दिव्य मन दिव्यप्रेम पाता है बता दे॥ 5361॥

प्रेमविष ऐसा है गोविंद राधे।
कालकूट विष को भी नीचा दिखा दे॥ 5362॥

प्रेमामृत ऐसा है गोविंद राधे।
स्वर्ग की सुधा को भी फीका बना दे॥ 5363॥

प्रेम है अमृत गोविंद राधे।
प्रेमी भी प्रिय भी है अमृत बता दे॥ 5364॥

प्रेमी प्रेम प्रियतम गोविंद राधे।
तीनों पकारादि श्रेय हैं बता दे॥ 5365॥

तीनों में सर्वश्रेष्ठ गोविंद राधे।
प्रेम पंचम पुरुषार्थ बता दे॥ 5366॥

गुणों ते रहित भी हो गोविंद राधे।
कामना रहित भी हो प्रेम बता दे॥ 5367॥

प्रतिक्षण वर्धमान गोविंद राधे।
अविच्छिन्न भी हो वाय प्रेम बता दे॥ 5368॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सूक्ष्मतर अनुभवरूप गोविंद राधे।
छे विशेषतायें हैं प्रेम में बता दे॥ 5369॥

प्राण बिनु तनु जैसे गोविंद राधे।
कृष्ण प्रेम बिनु वैसे जीव बता दे॥ 5370॥

गंध बिनु पुष्प जैसे गोविंद राधे।
कृष्णप्रेम बिनु वैसे ज्ञान बता दे॥ 5371॥

नैन बिनु देह जैसे गोविंद राधे।
प्रेम बिनु वैसे कर्म धर्म बता दे॥ 5372॥
नीर बिनु कूप जैसे गोविंद राधे।
प्रेम बिनु वैसे योग सिद्धि बता दे॥ 5373॥
शशी बिनु रैन जैसे गोविंद राधे।
प्रेम बिनु वैसे ब्रह्मानंद बता दे॥ 5374॥
क्षीर बिनु धेनु जैसे गोविंद राधे।
प्रेम बिनु वैसे नेम वेद के बता दे॥ 5375॥
कृष्ण के प्रेमी को गोविंद राधे।
कर्मी, योगी, ज्ञानी आदि जानें ना बता दे॥ 5376॥
कृष्ण के प्रेमी को गोविंद राधे।
कृष्ण के प्रेमी ही जानें बता दे॥ 5377॥
कृष्ण के प्रेमी की गोविंद राधे।
क्रिया का रहस्य ज्ञानी जाने ना बता दे॥ 5378॥
प्रेमी की कुटिल गति गोविंद राधे।
याते प्रेम बुद्धि अतीत बता दे॥ 5379॥
बाहर सर्प टेढ़ा चले गोविंद राधे।
बिल में घुसे किन्तु सीधा बता दे॥ 5380॥
ऐसे ही कृष्ण प्रेमी गोविंद राधे।
भीतर कछु बाहर कछु हो बता दे॥ 5381॥
गोपी मुख ना ना कह गोविंद राधे।
नैन हाँ हाँ कहि प्रेम प्रकट करा दे॥ 5382॥
प्रीति की निराली रीति गोविंद राधे।
ना का अर्थ हाँ, हाँ का अर्थ ना बता दे॥ 5383॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम देश, काल, वस्तु गोविंद राधे।
भाषा, क्रिया आदि ते स्वतन्त्र बता दे॥ 5384॥
प्रेम है अलौकिक गोविंद राधे।
याते प्रेम लौकिक बुद्धि पर बता दे॥ 5385॥
प्रेम की विचित्र गति गोविंद राधे।
प्रेम कहीं देना कहीं छीनना बता दे॥ 5386॥
कृष्ण निज प्रेमी की गोविंद राधे।
लेते हैं परीक्षा बार बार बता दे॥ 5387॥
कृष्ण कृपा का मर्म गोविंद राधे।
कोई भी नहीं जान सका है बता दे॥ 5388॥
कृष्ण निज प्रेमी को गोविंद राधे।
कभू जग दें कभू छीनें बता दे॥ 5389॥
द्रवीभूत मन पै गोविंद राधे।
अभिव्यक्त कृष्ण ही प्रेम है बता दे॥ 5390॥
कृष्ण प्रेमयुक्त मति गोविंद राधे।
प्राण दै के भी मिले तो कोइ ला दे॥ 5391॥
प्रेम अधिकारी सोई गोविंद राधे।
दुख को सुख ते प्यारा बता दे॥ 5392॥
निजसुख चाहे जो गोविंद राधे।
प्रेम पथ में पैर धरे ना बता दे॥ 5393॥
प्रेम में तो निजसुख गोविंद राधे।
जो चाहे सो है गणिका बता दे॥ 5394॥
प्रेम एक सा ना रहे गोविंद राधे।
घटे नाहिं बढ़े सदा प्रेम बता दे॥ 5395॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सबके हृदय में है गोविंद राधे।
प्रेम किन्तु जग में है विकृत बता दे॥ 5396 ॥
सुख में बढ़े ना जो गोविंद राधे।
दुख में घटे ना जो प्रेम बता दे॥ 5397 ॥
जग का तो सारा प्रेम गोविंद राधे।
एक समान नाहिं रहता बता दे॥ 5398 ॥
जग प्रेम है ऐसा गोविंद राधे।
क्षण क्षण घटता ही जाये बता दे॥ 5399 ॥
क्षण क्षण बाढ़ै प्रेम गोविंद राधे।
क्षण क्षण घटे वाको कामना बता दे॥ 5400 ॥
प्रेम रस प्यास ऐसी गोविंद राधे।
पीते जाओ पीते जाओ प्यास बढ़ा दे॥ 5401 ॥
चन्द्र पूर्णिमा तो होती गोविंद राधे।
प्रेम पूर्णिमा कभु होती ना बता दे॥ 5402 ॥
प्रेमी सदा ही सोचे गोविंद राधे।
मुझमें अभी है कमी प्रेम की बता दे॥ 5403 ॥
हरि प्रेमी सोचे नहिं गोविंद राधे।
मेरा प्रेम तो पूर्ण हो गया बता दे॥ 5404 ॥
प्रेम की सीमा नहिं गोविंद राधे।
किन्तु बढ़ता ही जाये सर्वदा बता दे॥ 5405 ॥
संकोच सीमा जामें गोविंद राधे।
वह प्रेम प्रेम नहिं होता बता दे॥ 5406 ॥
प्रेम की आग तो गोविंद राधे।
उर में धधकती रहे सदा ही बता दे॥ 5407 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कभी कभी आग ते गोविंद राधे।
धुवाँ भी निकल जाये बाहर बता दे॥ 5408॥

प्रेम कभू रुके नहिं गोविंद राधे।
रोकने की शक्ति हरि में भी ना बता दे॥ 5409॥

ध्वंस हेतु हो भी तो भी गोविंद राधे।
घटे नाहिं बाढ़ै सदा प्रेम बता दे॥ 5410॥

किसी अपराध ते भी गोविंद राधे।
जिसका न हो ह्रास प्रेम बता दे॥ 5411॥

अत्यधिक नमन ते भी गोविंद राधे।
जिसकी न हो वृद्धि प्रेम बता दे॥ 5412॥

प्रेम सरोवर विमल गोविंद राधे।
विमल मन को इसमें नहला दे॥ 5413॥

प्रेम सर निर्मल गोविंद राधे।
लोक वेद कानि जल मैला करा दे॥ 5414॥

प्रेम सर निर्मल गोविंद राधे।
निज सुख पग जल मैला करा दे॥ 5415॥

प्रेम में न हेतु रहे गोविंद राधे।
हेतु मिटे प्रेम मिटे प्रेमी को बता दे॥ 5416॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृष्ण का विशुद्ध प्रेम गोविंद राधे।
बिना हेतु के ही हो प्रकट बता दे॥ 5417॥

प्रेम क्यों करते हो गोविंद राधे।
उत्तर दो प्रेम हित ही बता दे॥ 5418॥

प्रेम क्यों करते हो गोविंद राधे।
उत्तर पियसुख हेतु बता दे॥ 5419॥

मोक्ष की इच्छा नाहिं गोविंद राधे।
नरक का भय नाहिं प्रेम बता दे॥ 5420॥
कृष्ण सर्वव्यापक गोविंद राधे।
प्रेम बढ़ावो प्रेम प्रकट करा दे॥ 5421॥
'तेरा मैं हूँ' जनि सोचो गोविंद राधे।
'मेरा तू है' सोचो यह प्रेम बढ़ा दे ॥ 5422॥
प्रेम खिलौना नहिं गोविंद राधे।
सिर काटि गेंद बना खेलना बता दे॥ 5423॥
प्रेम का पंथ ऐसा गोविंद राधे।
तलवार धार पै चलना बता दे॥ 5424॥
विप्रयोग दुख में गोविंद राधे।
अपमान में जो सुखी प्रेमी बता दे॥ 5425॥
सच्चा प्रेमी यह चह गोविंद राधे।
पिय करे मेरा अपमान बता दे॥ 5426॥
प्रेमी का कठोर बोल गोविंद राधे।
लगे प्रेम की मीठी गाली बता दे॥ 5427॥
सच्चा प्रेमी नहिं चह गोविंद राधे।
पिय ते कछु सत्कार बता दे॥ 5428॥
सच्चा प्रेमी यह चह गोविंद राधे।
मेरा पिय मेरा प्रेम जाने ना बता दे॥ 5429॥
सच्चा प्रेमी यह चह गोविंद राधे।
मैं चाहूँ पिय पिय चाहे ना बता दे॥ 5430॥
सच्चा प्रेमी चह बस गोविंद राधे।
कैसे सुख दूँ निज पिय को बता दे॥ 5431॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग की तो नारी चह गोविंद राधे।
मेरा पति और नारी देखे ना बता दे॥ 5432 ॥
हरि प्रेमिका तो चाहे गोविंद राधे।
हरि सुख, नारी कोई भी हो बता दे॥ 5433 ॥
हरि प्रेयसी चाहे गोविंद राधे।
हरि सब को ही निज प्रेयसी बना दे॥ 5434 ॥
प्रेमी सुनि निन्दा को गोविंद राधे।
कहे यह प्रेम व्यंग उक्ति बता दे॥ 5435 ॥
प्रेम में ना गुण देखो गोविंद राधे।
गुण जाय प्रेम जाय प्रेमी को बता दे॥ 5436 ॥
प्रिय में तो गुण अरु गोविंद राधे।
अवगुण चिन्तन हो ना बता दे॥ 5437 ॥
प्रेमी प्रेमास्पद के गोविंद राधे।
दोष में भी गुण ही देखे बता दे॥ 5438 ॥
एक ने भक्त ते गोविंद राधे।
पूछा श्रीकृष्ण कैसे ईश्वर बता दे॥ 5439 ॥
मैया के डर ते गोविंद राधे।
बार बार वो तो झूठ बोलें बता दे॥ 5440 ॥
भक्त ने कहा कृष्ण गोविंद राधे।
कितने उदार भक्त वश्य हैं बता दे॥ 5441 ॥
माना श्याम चौर जार गोविंद राधे।
प्रेम अवगुण में भी गुण को दिखा दे॥ 5442 ॥
प्रेमी है चातक गोविंद राधे।
प्रियतम स्वाती का मेघ बता दे॥ 5443 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेमी माँगे स्वाति जल गोविंद राधे।
पिय दे पत्थर ओले बता दे ॥ 5444 ॥
ओले पत्थर को गोविंद राधे।
प्रेमी उपहार ही माने बता दे ॥ 5445 ॥
ऐसे भक्त कृष्णदत्त गोविंद राधे।
दुख को माने उपहार बता दे ॥ 5446 ॥
प्रेम अनन्य ही हो गोविंद राधे।
साथ ही निरन्तर भी हो बता दे ॥ 5447 ॥
चातक नीचे का गोविंद राधे।
गंगा जल ना पिये प्रेम निभा दे ॥ 5448 ॥
चातक स्वाती का गोविंद राधे।
जल पिये बनि के अनन्य दिखा दे ॥ 5449 ॥
ऐसे ही तू भी जीव गोविंद राधे।
हरि का अनन्य भक्त बनि के दिखा दे ॥ 5450 ॥
घन गरजे किन्तु गोविंद राधे।
चातक उर प्रेम घटे ना बता दे ॥ 5451 ॥
घन मारे पाहन गोविंद राधे।
चातक उर ना हो रोष बता दे ॥ 5452 ॥
गुण दोष देखे बिनु गोविंद राधे।
छिन छिन उर हरि प्रेम बढ़ा दे ॥ 5453 ॥
निष्ठुरता है गुण गोविंद राधे।
निष्ठुरता तो प्रेम और बढ़ा दे ॥ 5454 ॥
निष्ठुरता है गुण गोविंद राधे।
निष्ठुरता तो निष्कामता सिखा दे ॥ 5455 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निष्ठुरता है गुण गोविंद राधे।
आग में तपा के सोना चमक बढ़ा दे॥ 5456 ॥
निष्ठुरता है गुण गोविंद राधे।
झूठे सच्चे प्रेम की परख बता दे॥ 5457 ॥
निष्ठुरता है गुण गोविंद राधे।
प्रेमी सोचे मेरा प्रेम कम है बता दे॥ 5458 ॥
निष्ठुरता है गुण गोविंद राधे।
निज दोष लखि प्रेमी प्रेम को बढ़ा दे॥ 5459 ॥
निष्ठुरता है गुण गोविंद राधे।
निष्काम प्रेम की कसौटी बता दे॥ 5460 ॥
प्रेमी के दुःख ते जो गोविंद राधे।
पिय हो सुखी तो दुख सुख है बता दे॥ 5461 ॥
प्रेमी में रहे नाहिं गोविंद राधे।
बदले की भावना पिय ते बता दे॥ 5462 ॥
प्रेमी तो है सेवक गोविंद राधे।
सेव्य ते कभू कछु चाहे ना बता दे॥ 5463 ॥
हरि ते तू प्रेम करु गोविंद राधे।
तोसों हरि प्रेम करें मन ते भुला दे॥ 5464 ॥
प्रेम की आदि हरि गोविंद राधे।
प्रेम का मध्य अन्त हरि हैं बता दे॥ 5465 ॥
वस्तुतस्तु प्रेम का गोविंद राधे।
आदि अन्त कोई नहिं जाने बता दे॥ 5466 ॥
जिसका हो आदि अन्त गोविंद राधे।
वह कहलाता है काम बता दे॥ 5467 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जिसका न आदि अन्त गोविंद राधे।
वह कहलाता है प्रेम बता दे॥ 5468॥

प्रेम का स्वरूप तो है गोविंद राधे।
प्रेम की स्वाभाविक चाह बता दे॥ 5469॥

सरसता नूतनता गोविंद राधे।
आतुरता निष्कामता बता दे॥ 5470॥

कोमलता एक रस गोविंद राधे।
नित्य वर्धमान अवस्था बता दे॥ 5471॥

तत्सुखसुखिता की गोविंद राधे।
इच्छा क्षण क्षण बलवती बता दे॥ 5472॥

निज सुख हित करे गोविंद राधे।
भक्ति जो सो है निजभक्त बता दे॥ 5473॥

हरिसुख हित करे गोविंद राधे।
भक्ति जो सो है हरिभक्त बता दे॥ 5474॥

जो कृष्ण सेवा सुख गोविंद राधे।
चह वे भक्त हैं दुर्लभ बता दे॥ 5475॥

जो चह कृष्ण-सुख गोविंद राधे।
वे तो दुर्लभतम हैं बता दे॥ 5476॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वस्तुतस्तु वे ही हैं गोविंद राधे।
पूर्ण निष्काम अरु शान्त बता दे॥ 5477॥

आत्मसुख कामी का गोविंद राधे।
चित्त बार बार हो चपल बता दे॥ 5478॥

सबते महत्वपूर्ण गोविंद राधे।
सिद्धान्त है निष्कामता बता दे॥ 5479॥

कृष्ण सुख तात्पर्य- गोविंद राधे।
मयी कामना निष्कामता बता दे॥ 5480॥
भक्त सुख हरि को दे गोविंद राधे।
हरि सुख भक्त को पुनि लौटा दे॥ 5481॥
यही है निष्काम गोविंद राधे।
प्रेम रस का वैचित्र्य बता दे॥ 5482॥
एक बार एक सखि गोविंद राधे।
सोरहों सिँगार किया अपना बता दे॥ 5483॥
सखि की लालसा थी गोविंद राधे।
प्राणधन देखें अरु सुखी हों बता दे॥ 5484॥
प्रियतम ढिग आई गोविंद राधे।
देखा नेत्र बन्द श्याम सोये बता दे॥ 5485॥
बार बार देखे सोचे गोविंद राधे।
एक बार आँख खोलि देख लें बता दे॥ 5486॥
सखी के कर में था गोविंद राधे।
फूल सुगन्धित कमल बता दे॥ 5487॥
सखी कर कमल के गोविंद राधे।
मकरंद को उड़ाने लगी थी बता दे॥ 5488॥
सखी ने सोचा नेत्र गोविंद राधे।
परे जो पराग नेत्र खोलें बता दे॥ 5489॥
उतने में आईं तहँ गोविंद राधे।
श्री वृषभानुनन्दिनी भी बता दे॥ 5490॥
राधा ने पूछा सखि गोविंद राधे।
क्या कर रही है यहाँ साँचु बता दे॥ 5491॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सखी ने बताया सब गोविंद राधे।
श्यामसुखहित निज कर्म बता दे॥ 5492॥
राधा ने डाटा कहा गोविंद राधे।
झूठ ही कहे चाहूँ श्याम सुख बता दे॥ 5493॥
श्याम के सोने के गोविंद राधे।
सुख में विघ्न डाले भोली बता दे॥ 5494॥
यह तो है निज सुख गोविंद राधे।
कामना, प्रेम में कलंक बता दे॥ 5495॥
सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रेम गोविंद राधे।
राधा ही जानें पूर्ण रूप ते बता दे॥ 5496॥
एक बार पार्थ कृष्ण गोविंद राधे।
दोनों गये बन में घूमने बता दे॥ 5497॥
वहाँ देखा एक बाबा गोविंद राधे।
सूखे सूखे पत्ते खाते बता दे॥ 5498॥
वह बाबा नंगा था गोविंद राधे।
वाम हस्त थी तलवार बता दे॥ 5499॥
पार्थ ने कहा बाबा गोविंद राधे।
कछु है जिज्ञासा चाहो तो बता दे॥ 5500॥
पार्थ ने पूछा बाबा गोविंद राधे।
सूखे पत्ते क्यों खाते हो बता दे॥ 5501॥
बाबा ने कहा यह गोविंद राधे।
नश्वर शरीर भौतिक है बता दे॥ 5502॥
इसके लिए मैं क्यों गोविंद राधे।
वनस्पतियों को कष्ट दूँ बता दे॥ 5503॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

बाबा ने कहा तुम गोविंद राधे।
जाओ जहाँ तुम्हें जाना है बता दे॥ 5504 ॥
पार्थ ने कहा बाबा गोविंद राधे।
तलवार हाथ में क्यों लिये हो बता दे॥ 5505 ॥
बाबा ने कहा मेरे गोविंद राधे।
तीन शत्रु उन्हें मारना है बता दे॥ 5506 ॥
पार्थ ने कहा वे हैं गोविंद राधे।
कौन कौन बाबा टुक नाम बता दे॥ 5507 ॥
बाबा ने कहा भृगु गोविंद राधे।
द्रौपदी अरु एक अर्जुन बता दे॥ 5508 ॥
भृगु उर लात मारा गोविंद राधे।
द्रौपदी ने जूठन खिलाया बता दे॥ 5509 ॥
पार्थ ने कृष्ण ते गोविंद राधे।
अपना रथ हँकवाया बता दे॥ 5510 ॥
बाबा ने कहा तुम गोविंद राधे।
तीनों को मारि सको तो बता दे॥ 5511 ॥
पार्थ ने कहा बाबा गोविंद राधे।
भृगु तो है विप्र नारी द्रौपदी बता दे॥ 5512 ॥
इनको मारना है पाप गोविंद राधे।
अच्छा नमस्कार जाता हूँ बता दे॥ 5513 ॥
पार्थ के बारे में गोविंद राधे।
क्या बोलते भागे तुरत बता दे॥ 5514 ॥
कोइ भजे निर्गुण ब्रह्म गोविंद राधे।
कोइ भजे सगुण श्रीकृष्ण बता दे॥ 5515 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मैं तो भजुँ प्रेम को ही गोविंद राधे।
याते नित्य मुक्त ब्रह्म बद्ध हो बता दे॥ 5516॥
प्रेमी के ऋणी बने गोविंद राधे।
प्रेमास्पद श्रीकृष्ण बता दे॥ 5517॥
प्रेमी के ऋण ते तो गोविंद राधे।
कृष्ण उऋण कभू हों ना बता दे॥ 5518॥
प्रेम के ऋणी हरि गोविंद राधे।
हरि के ऋणी प्रेमी आपु को बता दे॥ 5519॥
प्रीति की रीति न्यारी गोविंद राधे।
बातों ते होती न प्रीति बता दे॥ 5520॥
प्रेम प्रवचन नहिं गोविंद राधे।
प्रेम का आचरण मन ते करा दे॥ 5521॥
जल ऊपर मुख गोविंद राधे।
शब्द करे, डूबे तो चुप हो बता दे॥ 5522॥
ऐसे प्रेमसिन्धु महँ गोविंद राधे।
यदि डूब जाये तो चुप हो बता दे॥ 5523॥
प्रेम में मन बुद्धि गोविंद राधे।
डूबें आपु ही तो बताये को बता दे॥ 5524॥
प्रेम का बाँध जब गोविंद राधे।
टूट जाये बाहर दीखे बता दे॥ 5525॥
तब प्रेमतत्वज्ञ गोविंद राधे।
उर प्रेम का अनुमान लगा दे॥ 5526॥
बाहर धुवाँ लखि गोविंद राधे।
अग्नि का ज्यों हो अनुमान बता दे॥ 5527॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सात्विक भाव बाह्य गोविंद राधे।
प्रेमी का उर प्रेम आपु बता दे॥ 5528॥
वेद के धर्मों ते गोविंद राधे।
कृष्ण प्रेमी होय अतीत बता दे॥ 5529॥
प्रेमी वेद तजे नाहिं गोविंद राधे।
वेद ही प्रेमी को तजि दे बता दे॥ 5530॥
प्रेम का पंथ न्यारा गोविंद राधे।
सिर काटे वा पै पग धरि के चला दे॥ 5531॥
प्रेम का पंथ न्यारा गोविंद राधे।
इहलोक परलोक दोनों नसा दे॥ 5532॥
लोक परलोक सुख गोविंद राधे।
प्रेम का पिपासु गंगा में बहा दे॥ 5533॥
प्रेम का पंथ न्यारा गोविंद राधे।
लोक वेद कुल कानि आपु छुड़ा दे॥ 5534॥
हरिप्रेम पाने में गोविंद राधे।
वेद के विधि निषेध छूटें बता दे॥ 5535॥
प्रेमबंध हरि को गोविंद राधे।
ब्रज छछिया भर छाछ पै नचा दे॥ 5536॥
प्रेम बन्धन पै गोविंद राधे।
कोटि मुक्ति सुख न्यौछावर करा दे॥ 5537॥
प्रेम है पुरोहित गोविंद राधे।
जीव ब्रह्म दोनों की गाँठ जुरा दे॥ 5538॥
प्रेमी कर प्रेम डोरी गोविंद राधे।
पिय है पतंग जैसा चाहे उड़ा दे॥ 5539॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम में ऐसा जादू गोविंद राधे।
प्रेमी को प्रिय प्रिय प्रेमी बना दे॥ 5540 ॥
हरि दे प्रेमी को गोविंद राधे।
प्रेम के साथ आपु को भी बता दे॥ 5541 ॥
प्रेमी दे निज सब गोविंद राधे।
हरि अपना दे सौदा सस्ता बता दे॥ 5542 ॥
प्रेम में ऐसा जादू गोविंद राधे।
ब्रह्म श्याम को भी दै छाछ नचा दे॥ 5543 ॥
ब्रह्म तो था सर्वव्यापी गोविंद राधे।
प्रेम सर्वव्यापी को मानव बना दे॥ 5544 ॥
ब्रह्म तो था निर्लेप गोविंद राधे।
प्रेम कुबरि में भी लिप्त करा दे॥ 5545 ॥
ब्रह्म तो था सदा एक गोविंद राधे।
प्रेम उसे रास में अनेक बना दे॥ 5546 ॥
प्रेम का कमाल देखो गोविंद राधे।
इच्छा रहित कृष्ण इच्छा बना दे॥ 5547 ॥
जीव जब प्रेम पा ले गोविंद राधे।
जीव मायाधीश हरि को भी नचा दे॥ 5548 ॥
प्रेम ते ही हारा है गोविंद राधे।
प्रेम ते अँगूठाछाप गोपियाँ नचा दें॥ 5549 ॥
ज्ञान मिश्र भक्ति ते गोविंद राधे।
एकत्व मुक्ति प्राप्त होती है बता दे॥ 5550 ॥
ऐश्वर्य मिश्र भक्ति गोविंद राधे।
नारायण का वैकुण्ठ दिला दे॥ 5551 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

केवल शुद्धा भक्ति गोविंद राधे।
स्वयंरूप श्रीकृष्ण प्राप्ति करा दे॥ 5552॥
सर्वश्रेष्ठ शुद्धा भक्ति गोविंद राधे।
गोपी प्रेम है आदर्श बता दे॥ 5553॥
शुद्ध दिव्य प्रेम की तो गोविंद राधे।
निर्मल मूर्ति ब्रज गोपी बता दे॥ 5554॥
ऐश्वर्य भाव त्याज्य गोविंद राधे।
दिव्यदृष्टियुक्त अर्जुन को डरा दे॥ 5555॥
श्रीकृष्ण लगें प्यारे गोविंद राधे।
भगवान कृष्ण अर्जुन को डरा दें॥ 5556॥
ऐश्वर्ययुक्त भक्ति गोविंद राधे।
उत्पन्न होकर भी बढ़े ना बता दे॥ 5557॥
मोहिं मानो छोटा या गोविंद राधे।
अपने समान मानो हरि कह बता दे॥ 5558॥
कृष्ण ऐश्वर्य में तो गोविंद राधे।
भय संकोच दोनों रहते बता दे॥ 5559॥
कृष्ण माधुर्य में तो गोविंद राधे।
ममता अधिक ही रहती बता दे॥ 5560॥
श्रीकृष्ण ऐश्वर्य गोविंद राधे।
काल भय को भी भयभीत करा दे॥ 5561॥
श्रीकृष्ण माधुर्य गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण को भी मोहित करवा दे॥ 5562॥
ऐश्वर्य अधिकार गोविंद राधे।
तन, माधुर्य तन मन पै बता दे॥ 5563॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐश्वर्य महाशक्ति गोविंद राधे।
किन्तु माधुर्य ते हारे बता दे॥ 5564॥
माधुर्य शक्ति का गोविंद राधे।
चमत्कार कृष्ण भगवत्ता भुला दे॥ 5565॥
मृद्भक्षण लीला गोविंद राधे।
ऐश्वर्य माधुर्य युक्त है बता दे॥ 5566॥
ऐश्वर्य शक्ति ऐसी गोविंद राधे।
शिशु श्याम मुख सारा विश्व दिखा दे॥ 5567॥
माधुर्य शक्ति ऐसी गोविंद राधे।
ऐश्वर्य शक्ति का भान भुला दे॥ 5568॥
ऐश्वर्य माधुर्य गोविंद राधे।
पूतनादि असुरों के वध में बता दे॥ 5569॥
ब्रह्मा मोह लीला गोविंद राधे।
ऐश्वर्य माधुर्य युक्त है बता दे॥ 5570॥
चीर हरण लीला गोविंद राधे।
पूर्ण माधुर्य रस युक्त है बता दे॥ 5571॥
दिव्यरस रासलीला गोविंद राधे।
पूर्ण माधुर्य रसयुक्त है बता दे॥ 5572॥
पूर्णतम ऐश्वर्य गोविंद राधे।
पूर्णतम माधुर्य रास में बता दे॥ 5573॥
चैतन्य रामानन्द गोविंद राधे।
साध्य साधन संवाद बता दे॥ 5574॥
चैतन्य प्रश्न यह गोविंद राधे।
जीव का है अंतिम साध्य क्या बता दे॥ 5575॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राय ने बताया यह गोविंद राधे।
वर्णाश्रम धर्म है साध्य बता दे॥ 5576 ॥
चैतन्य प्रश्न पुनि गोविंद राधे।
धर्म कर्म तो स्वर्ग नश्वर दिला दे॥ 5577 ॥
पुनि राय ने बताया गोविंद राधे।
हरि के निमित्त कर्म सिद्धि दिला दे॥ 5578 ॥
चैतन्य प्रश्न पुनि गोविंद राधे।
यह तो कर्मबन्धन मात्र ते छुड़ा दे॥ 5579 ॥
पुनि राय ने बताया गोविंद राधे।
धर्म तजि हरि भज पाप नसा दे॥ 5580 ॥
चैतन्य प्रश्न पुनि गोविंद राधे।
यह साधन पाप नाश ही करा दे॥ 5581 ॥
पुनि राय ने बताया गोविंद राधे।
ब्रह्मभूत को परा भक्ति दिला दे॥ 5582 ॥
चैतन्य प्रश्न पुनि गोविंद राधे।
यह ज्ञानयुक्त भक्ति मुक्ति दिला दे॥ 5583 ॥
पुनि राय ने बताया गोविंद राधे।
केवल कृष्णभक्ति साध्य दिला दे॥ 5584 ॥
चैतन्य प्रश्न पुनि गोविंद राधे।
यह है समीचीन आगे बता दे॥ 5585 ॥
राय बोले दास्य सख्य गोविंद राधे।
वात्सल्य माधुर्य भाव बना दे॥ 5586 ॥
चैतन्य प्रश्न पुनि गोविंद राधे।
इन चार भावों में श्रेष्ठ बता दे॥ 5587 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सर्वश्रेष्ठ माधुर्य गोविंद राधे।
इसमें हैं चारों भाव बता दे॥ 5588॥
सखी भाव रसिकों का गोविंद राधे।
श्याम दर्शन ही लक्ष्य बता दे॥ 5589॥
कान्त भाव रसिकों का गोविंद राधे।
दर्शन के साथ लक्ष्य स्पर्श भी बता दे॥ 5590॥
सर्वश्रेष्ठ विद्या कौन गोविंद राधे।
राय कहें कृष्णभक्ति श्रेष्ठ बता दे॥ 5591॥
सर्वश्रेष्ठ कीर्ति कौन गोविंद राधे।
राय कहें कृष्णदासकीर्ति बता दे॥ 5592॥
सर्वश्रेष्ठ धन कौन गोविंद राधे।
राय कहें कृष्णप्रेमधन है बता दे॥ 5593॥
सर्वाधिक दुःख कौन गोविंद राधे।
राय कहें हरिविरहदुःख है बता दे॥ 5594॥
मुक्तों में मुक्त कौन गोविंद राधे।
राय कहें कृष्णभक्त मुक्त बता दे॥ 5595॥
सर्वश्रेष्ठ गान कौन गोविंद राधे।
राय कहें गोपीगीत बता दे॥ 5596॥
सर्वश्रेष्ठ श्रेय कौन गोविंद राधे।
राय कहें कृष्णभक्त संग बता दे॥ 5597॥
सर्वश्रेष्ठ स्मरण कौन गोविंद राधे।
राय कहें कृष्णगुण, लीला बता दे॥ 5598॥
सर्वश्रेष्ठ ध्यान कौन गोविंद राधे।
राय कहें राधाकृष्णध्यान बता दे॥ 5599॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सर्वश्रेष्ठ वास कौन गोविंद राधे।
राय कहें हरि लीला धाम बता दे॥ 5600॥
सर्वश्रेष्ठ श्रवण कौन गोविंद राधे।
राय कहें राधा कृष्ण लीला बता दे॥ 5601॥
भक्ति के पाँच भाव गोविंद राधे।
शान्त, दास्य, सख्य, वत्सल, मधुर बता दे॥ 5602॥
शांत भाव निष्ठायुत गोविंद राधे।
मिले बैकुण्ठ धाम सुख ही बता दे॥ 5603॥
दास्य भाव में सदा गोविंद राधे।
निष्ठा अरु सेवा दोनों बता दे॥ 5604॥
सख्य भाव में तो है गोविंद राधे।
निष्ठा सेवा विश्रम्भ तीनों बता दे॥ 5605॥
वात्सल्य में है निष्ठा गोविंद राधे।
सेवा विश्रम्भ ममता बता दे॥ 5606॥
माधुर्य में हैं चारों गोविंद राधे।
पाँचवाँ है आत्म समर्पण बता दे॥ 5607॥
भक्ति के पाँच भाव गोविंद राधे।
आकाश आदि के समान बता दे॥ 5608॥
आकाश का है गुण गोविंद राधे।
केवल शब्द, शान्त भाव यों बता दे॥ 5609॥
वायु में शब्द स्पर्श गोविंद राधे।
ऐसे दास्य में शान्त दास्य बता दे॥ 5610॥
तेज में शब्द स्पर्श गोविंद राधे।
रूप, यों सख्य तीन भाव का बता दे॥ 5611॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जल में तो शब्द स्पर्श गोविंद राधे।
रूप रस यों वात्सल्य में बता दे॥ 5612॥
पृथ्वी में पाँच गुण गोविंद राधे।
शब्द स्पर्श रूप रस गंध बता दे॥ 5613॥
माधुर्य में भी शान्त गोविंद राधे।
दास्य, सख्य, वत्सल, मधुर बता दे॥ 5614॥
शान्त भाव वालों को गोविंद राधे।
भक्ति प्रेमा भक्ति तक ही पहुँचा दे॥ 5615॥
दास्य भाव वालों को गोविंद राधे।
भक्ति राग भक्ति तक ही पहुँचा दे॥ 5616॥
सख्य भाव वालों को गोविंद राधे।
भक्ति अनुराग पूर्व तक पहुँचा दे॥ 5617॥
वात्सल्य वालों को गोविंद राधे।
भक्ति अनुराग अन्त तक पहुँचा दे॥ 5618॥
मधुर भाव वालों को गोविंद राधे।
भक्ति महाभाव भक्ति तक पहुँचा दे॥ 5619॥
माया मुक्ति हेतु जो गोविंद राधे।
कर्म, ज्ञान, योग करें धन्य बता दे॥ 5620॥
प्रेम रस चसका गोविंद राधे।
जिसको लगा मुक्ति शुक्ति बता दे॥ 5621॥
याते मुमुक्षुओं ते गोविंद राधे।
अति धन्य हैं हरिभक्त बता दे॥ 5622॥
हरि के स्वरूपों में गोविंद राधे।
कृष्णभक्त और भी हैं धन्य बता दे॥ 5623॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

कारण श्रीकृष्ण गोविंद राधे।
स्वयं भगवान अवतारी बता दे॥ 5624॥
श्रीकृष्ण भक्तों में गोविंद राधे।
धन्य श्रीकृष्ण दास्यभक्त बता दे॥ 5625॥
कृष्ण दास्य भक्तों ते गोविंद राधे।
धन्य हैं कृष्ण सख्यभक्त बता दे॥ 5626॥
कृष्ण सख्य भक्तों ते गोविंद राधे।
धन्य कृष्ण वात्सल्यभक्त बता दे॥ 5627॥
वात्सल्य भक्तों ते गोविंद राधे।
धन्य कृष्ण माधुर्यभक्त बता दे॥ 5628॥
माधुर्य भक्तों में गोविंद राधे।
धन्य निष्कामभक्त गोपियाँ बता दे॥ 5629॥
गोपियों ते आगे गोविंद राधे।
जीव की है नाहिं गति ही बता दे॥ 5630॥
अतएव गोपियाँ ही गोविंद राधे।
धन्य धन्य धन्य धन्य धन्य बता दे॥ 5631॥
गोपियों में भी हैं गोविंद राधे।
मूर्धन्य ललितादि सखियाँ बता दे॥ 5632॥
किन्तु वहाँ कोई गोविंद राधे।
जीव नहिं जा सकता है बता दे॥ 5633॥
नँदनंद माधुर्य गोविंद राधे।
भाव निष्काम लक्ष्य जीव का बता दे॥ 5634॥
मणि का प्रकार तीन गोविंद राधे।
एक तो साधारण मणि है बता दे॥ 5635॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दूजी है चिन्तामणि गोविंद राधे।
तीसरी कौस्तुभ मणि है बता दे॥ 5636॥

साधारण मणि गोविंद राधे।
सम प्रेम है कुब्जा का बता दे॥ 5637॥

चिन्तामणि सम प्रेम गोविंद राधे।
रुक्मिणी आदि रानियों का बता दे॥ 5638॥

कौस्तुभ मणि सम गोविंद राधे।
प्रेम निष्काम गोपियों का बता दे॥ 5639॥

साधारणी रति गोविंद राधे।
कुब्जा आदि की थी सकाम बता दे॥ 5640॥

समंजसा रति गोविंद राधे।
रुक्मिणी आदि रानियों की बता दे॥ 5641॥

समर्था रति तो गोविंद राधे।
ब्रजांगनाओं की थी बता दे॥ 5642॥

जो निजसुख ही चह गोविंद राधे।
सोइ साधारणी रति है बता दे॥ 5643॥

जो निजसुख अरु गोविंद राधे।
COPYRIGHT
पियसुख चाहे सो समंजसा बता दे॥ 5644॥
RADHA GOVIND SAMITI

जो पियसुख चाहे गोविंद राधे।
सो है समर्था रति की बता दे॥ 5645॥

साधारणी रति गोविंद राधे।
प्रेमाभक्ति तक जाये बता दे॥ 5646॥

समंजसा रति गोविंद राधे।
अनुराग भक्ति तक जाये बता दे॥ 5647॥

समर्था रति तो गोविंद राधे।
सर्वोच्च भक्ति महाभाव दिला दे॥ 5648॥

नर का है चार भाव गोविंद राधे।
दास्यादि स्वसुख वासना का बता दे॥ 5649॥

हरि का भी चार भाव गोविंद राधे।
दास्य आदि जीव हित दिव्य बता दे॥ 5650॥

दास्य सख्य वात्सल्य गोविंद राधे।
सम्बन्धानुगा है भक्ति बता दे॥ 5651॥

माधुर्य भाव की तो गोविंद राधे।
कृष्ण भक्ति कामानुगा है बता दे॥ 5652॥

कामानुगा दो हैं गोविंद राधे।
निजसुख अरु पिय का सुख बता दे॥ 5653॥

स्वसुखवासनाभक्ति गोविंद राधे।
द्वारिका की महिषी की दासी बना दे॥ 5654॥

प्रिय सुख वासना है गोविंद राधे।
श्रेष्ठ ब्रज गोपियों की दासी बना दे॥ 5655॥

स्तम्भ स्वेद रोमांच गोविंद राधे।
वैवर्ण्य सात्विक भाव बता दे॥ 5656॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

स्वरभेद अश्रु कम्प गोविंद राधे।
मूर्च्छा आठ सात्विक भाव बता दे॥ 5657॥

दास्य सख्य माधुर्य गोविंद राधे।
भाव में आठ सात्विक भाव बता दे॥ 5658॥

वात्सल्य भाव में तो गोविंद राधे।
एक भाव और स्तन-दुग्ध बता दे॥ 5659॥

एक दो सात्विक भाव गोविंद राधे।
प्रकट हों तो धूमायित बता दे॥ 5660॥
दो तीन सात्विक भाव गोविंद राधे।
प्रकट हों तो उसे ज्वलित बता दे॥ 5661॥
चार पाँच सात्विक भाव गोविंद राधे।
प्रकट हों तो उसे दीप्त बता दे॥ 5662॥
सात आठ सात्विक भाव गोविंद राधे।
प्रकट हों तो उद्दीप्त बता दे॥ 5663॥
यही उद्दीप्त भाव गोविंद राधे।
महाभाव में सूद्दीप्त बता दे॥ 5664॥
उत्तमा भक्ति के गोविंद राधे।
भेद हैं तीन मुख्य शास्त्र बता दे॥ 5665॥
एक है साधन भक्ति गोविंद राधे।
एक भाव एक प्रेमा भक्ति बता दे॥ 5666॥
मन इन्द्रियों ते जो हो गोविंद राधे।
भक्ति साधन भक्ति नवधा बता दे॥ 5667॥
साधन भक्ति गुण गोविंद राधे।
क्लेशघ्नी अरु शुभदा बता दे॥ 5668॥
क्लेश के प्रकार तीन गोविंद राधे।
पाप अरु वासना, अविद्या बता दे॥ 5669॥
पाप के भेद दो हैं गोविंद राधे।
प्रारब्ध, प्रारब्ध रहित बता दे॥ 5670॥
जिसका फल मिल रहा है गोविंद राधे।
वह पाप प्रारब्धजन्य बता दे॥ 5671॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जिसका फल मिला नाहिं गोविंद राधे।
वह अप्रारब्ध पाप बता दे॥ 5672॥
दोनों ही पापों की गोविंद राधे।
बीज स्वरूपा है वासना बता दे॥ 5673॥
वासनाओं का भी गोविंद राधे।
कारण एक अविद्या बता दे॥ 5674॥
सब का मूल कारण गोविंद राधे।
भगवद्विमुखता प्रमुख बता दे॥ 5675॥
शुभ का तात्पर्य गोविंद राधे।
जगत की प्रीति विधान बता दे॥ 5676॥
शुभ का तात्पर्य गोविंद राधे।
दैवी गुणों का विकास बता दे॥ 5677॥
शुभ अर्थ वह सुख गोविंद राधे।
विषय ब्राह्म ईश्वरीय बता दे॥ 5678॥
उपर्युक्त सब गुण गोविंद राधे।
साधन भक्ति में प्राप्त हों बता दे॥ 5679॥
भाव भक्ति में तो गोविंद राधे।
गुण मोक्षलघुताकृत है बता दे॥ 5680॥
मोक्षलघुताकृत गोविंद राधे।
अर्थ पाँचों मुक्ति को तुच्छ बता दे॥ 5681॥
भक्त मुक्ति सालोक्य गोविंद राधे।
सारूप्य सामीप्य सार्ष्टि बता दे॥ 5682॥
ज्ञानियों का मोक्ष एक गोविंद राधे।
सायुज्य या कैवल्य बता दे॥ 5683॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति

भाव भक्ति में दूजा गोविंद राधे।
सुदुर्लभा गुण प्रमुख बता दे॥ 5684॥

सुदुर्लभा अर्थ यह गोविंद राधे।
भुक्ति मुक्ति दें भक्ति ना दें बता दे॥ 5685॥

साधन भक्ति के भी गोविंद राधे।
दो गुण हैं भाव भक्ति में बता दे॥ 5686॥

जैसे आकाश गुण गोविंद राधे।
वायु में अन्तर्निहित बता दे॥ 5687॥

आकाश वायु गुण गोविंद राधे।
तेज में अन्तर्निहित बता दे॥ 5688॥

ऐसे साधन भक्ति गोविंद राधे।
गुण रहें भाव भक्ति में भी बता दे॥ 5689॥

साधन भाव भक्ति गोविंद राधे।
गुण रहें प्रेमभक्ति में भी बता दे॥ 5690॥

प्रेमभक्ति गुण सान्द्रा-गोविंद राधे।
नन्द विशेषात्मा है बता दे॥ 5691॥

कोटि कोटि ब्रह्मानन्द गोविंद राधे।
प्रेमानन्द बिन्दु के सम ना बता दे॥ 5692॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यही अर्थ सान्द्रानन्द गोविंद राधे।
विशेषात्मा गुण का है बता दे॥ 5693॥

प्रेम भक्ति गुण दूजा गोविंद राधे।
श्रीकृष्णाकर्षिणी है बता दे॥ 5694॥

सब प्रिय जन सँग गोविंद राधे।
कृष्ण को जो भक्ति वश में करा दे॥ 5695॥

वही है प्रेम भक्ति गोविंद राधे।
श्रीकृष्णाकर्षिणी ही बता दे॥ 5696 ॥

श्रवण कीर्तनादि गोविंद राधे।
भक्ति है साधन भक्ति बता दे॥ 5697 ॥

मिलन की प्यास अरु गोविंद राधे।
रूपध्यान साधन भक्ति बता दे॥ 5698 ॥

साधन भक्ति द्वारा गोविंद राधे।
भाव प्रेम भक्ति है साध्य बता दे॥ 5699 ॥

यही श्रवणादि भक्ति गोविंद राधे।
पक्व हो के भावभक्ति बनती बता दे॥ 5700 ॥

भाव का नाम रति गोविंद राधे।
भाव अनुभाव नौ प्रकार का बता दे॥ 5701 ॥

क्षांति विरक्ति अरु गोविंद राधे।
अव्यर्थकालत्व अंकुर बता दे॥ 5702 ॥

नामगान में रुचि गोविंद राधे।
मानशून्यता आशाबंध बता दे॥ 5703 ॥

गुणकथन आसक्ति गोविंद राधे।
समुत्कंठा धामवासप्रीति बता दे॥ 5704 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्षोभ का कारण हो गोविंद राधे।
तो भी ना क्षोभ हो क्षांति बता दे॥ 5705 ॥

लोक परलोक के गोविंद राधे।
सुखों ते अरुचि विरक्ति बता दे॥ 5706 ॥

सदा करे हरि स्मरण गोविंद राधे।
यही अव्यर्थकालत्व है बता दे॥ 5707 ॥

नाम गान में सतत गोविंद राधे।
रस मिले नाम गान रुचि है बता दे॥ 5708॥
सबको दे मान आपु गोविंद राधे।
चाहे न मान मानशून्यता बता दे॥ 5709॥
अवशि मिलेगा प्रेम गोविंद राधे।
दृढ़ विश्वास आशाबंध बता दे॥ 5710॥
हरि गुण में हो मत्त गोविंद राधे।
सोइ गुणगण आसक्ति बता दे॥ 5711॥
कृष्ण दरस हेतु गोविंद राधे।
तीव्र इच्छा समुत्कंठा बता दे॥ 5712॥
वृन्दावनादि धाम गोविंद राधे।
वास इच्छा धामवास प्रीति बता दे॥ 5713॥
भावभक्ति में तो गोविंद राधे।
ममता की हो अति वृद्धि बता दे॥ 5714॥
भावभक्ति में तो गोविंद राधे।
ईश्वरत्व बुद्धि हो क्षीण बता दे॥ 5715॥
भावभक्ति ही गोविंद राधे।
COPYRIGHT
होके प्रगाढ़ प्रेमाभक्ति बना दे॥ 5716॥
RADHA GOVIND SAMITI
भाव पक्व दशा नाम गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण का शुद्ध प्रेम है बता दे॥ 5717॥
किसी भी विघ्न द्वारा गोविंद राधे।
रंचमात्र घटे ना प्रेम बता दे॥ 5718॥
प्रेम के आगे भी गोविंद राधे।
प्रेम की अनेक कोटियाँ हैं बता दे॥ 5719॥

स्नेह मान प्रणय राग गोविंद राधे।
अनुराग भाव महाभाव बता दे॥ 5720॥

अधिकारी भेद ते ही गोविंद राधे।
उपर्युक्त प्रेमकोटि प्राप्त हों बता दे॥ 5721॥

महाभाव प्रेम तो गोविंद राधे।
ब्रजगोपीप्रेम की है सीमा बता दे॥ 5722॥

प्रेम के तीन भाव गोविंद राधे।
लाक्षावत् घृतवत् मधुवत् बता दे॥ 5723॥

निम्न भाव लाक्षा है गोविंद राधे।
एकमात्र निज सुख हित हो बता दे॥ 5724॥

आग ते पिघले ज्यौं गोविंद राधे।
लाख, हरि देखि त्यौं प्रकटे बता दे॥ 5725॥

लाक्षा सकाम प्रेम गोविंद राधे।
उदाहरण कुब्जा आदि बता दे॥ 5726॥

लाक्षा ते श्रेष्ठ घृत गोविंद राधे।
निजसुख पियसुख युक्त बता दे॥ 5727॥

पिय ते जो मान पाके गोविंद राधे।
बढ़े उपेक्षा ते घटे भी बता दे॥ 5728॥

जैसे घृत शैत्य ते गोविंद राधे।
कड़ा उष्णता ते पिघले बता दे॥ 5729॥

चन्द्रावली आदि गोविंद राधे।
घृत प्रेम की उदाहरण बता दे॥ 5730॥

सर्वश्रेष्ठ मधु प्रेम गोविंद राधे।
स्वाभाविक निरपेक्ष बता दे॥ 5731॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम के हेतु ही हो गोविंद राधे।
मधु प्रेम ना हो अन्य हेतु बता दे॥ 5732॥
प्रेमास्पद सुख गोविंद राधे।
मधु प्रेम का एक लक्ष्य बता दे॥ 5733॥
प्रियतम स्वार्थ ही गोविंद राधे।
मधु प्रेम में निज स्वार्थ बता दे॥ 5734॥
मधु प्रेम में ही हो गोविंद राधे।
आत्मसमर्पण पूर्ण बता दे॥ 5735॥
मधु प्रेम का स्वभाव गोविंद राधे।
नित्य नित्य वर्धनशीलता बता दे॥ 5736॥
मधु प्रेम दुर्लभ गोविंद राधे।
ललिता विशाखा आदि में बता दे॥ 5737॥
अति आदरमय गोविंद राधे।
स्नेह नाम है घृत स्नेह बता दे॥ 5738॥
अति ममतामय गोविंद राधे।
स्नेह नाम है मधु स्नेह बता दे॥ 5739॥
'मैं उनका हूँ' यह गोविंद राधे।
स्नेह नाम है घृत स्नेह बता दे॥ 5740॥
'वे मेरे हैं' यह गोविंद राधे।
स्नेह नाम है मधु स्नेह बता दे॥ 5741॥
राग तीन मंजिष्ठा गोविंद राधे।
कुसुमिका और शिरीषा बता दे॥ 5742॥
मंजिष्ठा बेल नाम गोविंद राधे।
लाल लाल स्थिर चमक वाली बता दे॥ 5743॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मंजिष्ठा राग भी है गोविंद राधे।
प्रतिक्षण ही वर्धमान बता दे॥ 5744 ॥
मंजिष्ठा राग को तो गोविंद राधे।
अन्य हेतु की ना अपेक्षा बता दे॥ 5745 ॥
मंजिष्ठा राग तो गोविंद राधे।
राधा माधव में स्थित है बता दे॥ 5746 ॥
मंजिष्ठा राग तो गोविंद राधे।
स्वयं प्रकट हो बढ़े भी बता दे॥ 5747 ॥
कुसुमिका राग वह गोविंद राधे।
जो कुसुंभ फूल के रंग सा बता दे॥ 5748 ॥
कुसुंभ फूल का गोविंद राधे।
रंग पक्का नाहिं होता बता दे॥ 5749 ॥
कुसुंभ फूल को गोविंद राधे।
कषाय वस्तु मिलि पक्का बना दे॥ 5750 ॥
वैसे ही कुसुमिका राग गोविंद राधे।
कृष्ण सौन्दर्य लखि बाढ़े बता दे॥ 5751 ॥
शिरीषा राग वह गोविंद राधे।
शिरीषा पुष्प सा क्षणिक बता दे॥ 5752 ॥
शिरीषा पुष्प में तो गोविंद राधे।
पीली सी आभा हो क्षणिक बता दे॥ 5753 ॥
शिरीषा राग तो गोविंद राधे।
संयोग में ही हो प्रकट बता दे॥ 5754 ॥
शिरीषा राग तो गोविंद राधे।
हरि वियोग में हो क्षीण बता दे॥ 5755 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जिन लक्ष्य कृष्णसुख गोविंद राधे।
उन रति समर्था प्रेम मधुवत् बता दे॥ 5756 ॥
जिन लक्ष्य कृष्ण सुख गोविंद राधे।
उनका है राग मंजिष्ठा बता दे॥ 5757 ॥
उभय सुखकामी की गोविंद राधे।
रति समंजसा प्रेम घृतवत् बता दे॥ 5758 ॥
उभय सुखकामी का गोविंद राधे।
राग कुसुमिका रसिक बता दे॥ 5759 ॥
निज सुखकामी की गोविंद राधे।
रति एकमात्र साधारणी बता दे॥ 5760 ॥
निज सुखकामी प्रेम गोविंद राधे।
लाक्षावत राग शिरीषा बता दे॥ 5761 ॥
प्रथम उत्तम दूजा गोविंद राधे।
मध्यम अधम है तीसरा बता दे॥ 5762 ॥
सर्वश्रेष्ठ भक्ति तो है गोविंद राधे।
महाभाव गोपीजन भक्ति बता दे॥ 5763 ॥
युगल मिलन में भी गोविंद राधे।
अनुभव हो विप्रयोग का बता दे॥ 5764 ॥
युगल वियोग में भी गोविंद राधे।
अनुभव हो संयोग का बता दे॥ 5765 ॥
प्रेम उत्कृष्टता ते गोविंद राधे।
योग में वियोग अनुभव हो बता दे॥ 5766 ॥
वह विरह अनुभव गोविंद राधे।
गोपीजन प्रेम वैचित्र्य बता दे॥ 5767 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गोपी प्रेम पाना हो तो गोविंद राधे।
निष्काम माधुर्य भाव बना दे॥ 5768॥
निष्काम माधुर्य गोविंद राधे।
भाव सोने में सुहागा बता दे॥ 5769॥
निष्काम माधुर्य गोविंद राधे।
सर्वश्रेष्ठ प्रेम महाभाव दिला दे॥ 5770॥
महाभाव भेद दो हैं गोविंद राधे।
रूढ़ अधिरूढ़ महाभाव बता दे॥ 5771॥
रूढ़ अधिरूढ़ में भी गोविंद राधे।
अधिरूढ़ महाभाव श्रेष्ठ है बता दे॥ 5772॥
अधिरूढ़ संयोग गोविंद राधे।
मोदन मादन भेद बता दे॥ 5773॥
अधिरूढ़ विरह में गोविंद राधे।
मोहन राधा में ही प्रायः बता दे॥ 5774॥
मोहन में दिव्योन्माद गोविंद राधे।
प्रजल्प परिजल्प दस हैं बता दे॥ 5775॥
विजल्प, उज्जल्प गोविंद राधे।
संजल्प अरु अवजल्प बता दे॥ 5776॥
अभिजल्प, आजल्प गोविंद राधे।
प्रतिजल्प दशम सुजल्प बता दे॥ 5777॥
भक्ति की मुकुट मनि गोविंद राधे।
राधा जी की भक्ति मादन बता दे॥ 5778॥
मादन महाभाव गोविंद राधे।
केवल श्री राधारानी में है बता दे॥ 5779॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधा प्रेम मादन गोविंद राधे।
ब्रह्म गोविंद को भी दास बना दे॥ 5780॥
राधा पायें मादन गोविंद राधे।
लक्ष्मी पायें अनुराग भक्ति बता दे॥ 5781॥
राधा हैं ब्रजरानी गोविंद राधे।
लक्ष्मी हैं द्वारिका की रानी बता दे॥ 5782॥
राधा ने दिया दिया गोविंद राधे।
लक्ष्मी ने लिया दिया अन्तर बता दे॥ 5783॥
कृष्ण पटरानियों ने गोविंद राधे।
कहा साध्वी द्रौपदी ते बता दे॥ 5784॥
भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ गोविंद राधे।
हौं नहिं चाहौं स्वप्न में भी बता दे॥ 5785॥
राधाकुचकुंकुम गोविंद राधे।
गंधयुत कृष्ण पद धूरि दिला दे॥ 5786॥
कृष्ण पद धूरि ही है गोविंद राधे।
रानियों की जीवन मूरि बता दे॥ 5787॥
श्रीकृष्ण पत्नियाँ थीं गोविंद राधे।
सोलह हजार एक सौ आठ बता दे॥ 5788॥
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
किन्तु उन पत्नियों का गोविंद राधे।
प्रेम ब्रजगोपी सम ना बता दे॥ 5789॥
प्रेम की अनेक कोटि गोविंद राधे।
सर्वश्रेष्ठ कोटि गोपीप्रेम बता दे॥ 5790॥
गोपीप्रेम में भी श्रेष्ठ गोविंद राधे।
प्रेमसार महाभाव राधा बता दे॥ 5791॥

एक बार नारद गोविंद राधे।
गये द्वारिका कृष्ण पास बता दे॥ 5792॥
नारद बोले कृष्ण गोविंद राधे।
बार बार गोपीप्रेम श्रेष्ठ क्यों बता दे॥ 5793॥
याते रुक्मिणी आदि गोविंद राधे।
बार बार दुखी होती हैं बता दे॥ 5794॥
कृष्ण ने कहा फिर गोविंद राधे।
बता दूँगा अभी मेरी सुनो तुम बता दे॥ 5795॥
सिर में भयंकर गोविंद राधे।
पीड़ा है कहीं जाके औषधि ला दे॥ 5796॥
नारद सोचे यह गोविंद राधे।
नटखट की कोइ लीला है बता दे॥ 5797॥
नारद बोले प्रभु गोविंद राधे।
इस रोग की औषधि भी बता दे॥ 5798॥
हरि बोले कोई भक्त गोविंद राधे।
निज पदरज मम सिर में लगा दे॥ 5799॥
नारद जहाँ भी माँगें गोविंद राधे।
भक्त पदरज भक्त खिल्ली उड़ा दे॥ 5800॥
कृष्ण पत्नियों ते भी गोविंद राधे।
पूछा किन्तु पत्नियों ने डाटा बता दे॥ 5801॥
पुनि हरि ढिग जाके गोविंद राधे।
कहा जग कोई भक्त पदरज ना दे॥ 5802॥
कृष्ण ने कहा ब्रज गोविंद राधे।
जाके गोपियों को मेरा कष्ट बता दे॥ 5803॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नारद गये ब्रज गोविंद राधे।
कष्ट भी बताया गोपियों को बता दे ॥ 5804 ॥
सब ब्रज गोपियों ने गोविंद राधे।
नारद आगे निज पग फैला दे ॥ 5805 ॥
लखि प्रेम गोपीजन गोविंद राधे।
नारद नैनों ते नीर बहा दे ॥ 5806 ॥
गोपी पदरज लैके गोविंद राधे।
नारद पूर्व निज सिर में लगा दे ॥ 5807 ॥
पद रज लैके पुनि गोविंद राधे।
गये द्वारिका कृष्ण सिर में लगा दे ॥ 5808 ॥
नारद ने पूरी कथा गोविंद राधे।
रुक्मिणी आदि को सुनाई बता दे ॥ 5809 ॥
सब ने कहा धन्य गोविंद राधे।
गोपी, धन्य धन्य गोपीप्रेम बता दे ॥ 5810 ॥
भाव तो प्रमुख दो गोविंद राधे।
एक स्वकीया भाव बता दे ॥ 5811 ॥
दूजा भाव है गोविंद राधे।
परकीया सर्वोच्च बता दे ॥ 5812 ॥
रुक्मिणी आदि का गोविंद राधे।
भाव तो एक स्वकीया बता दे ॥ 5813 ॥
ब्रज गोपियों का गोविंद राधे।
भाव तो था परकीया बता दे ॥ 5814 ॥
परकीया भाव में तो गोविंद राधे।
गुरूक्ति विषवर्षण हो बता दे ॥ 5815 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

परकीया भाव में तो गोविंद राधे।
छुप छुप कर हो मिलन बता दे॥ 5816 ॥
परकीया भाव में तो गोविंद राधे।
सास ससुर प्रतिबन्ध बता दे॥ 5817 ॥
परकीया भाव में तो गोविंद राधे।
आर्य पथ का भी हो त्याग बता दे॥ 5818 ॥
परकीया भाव में तो गोविंद राधे।
कलंक कालिमा का भय हो बता दे॥ 5819 ॥
परकीया भाव में तो गोविंद राधे।
चिन्तन निरन्तर हो आपु ही बता दे॥ 5820 ॥
परकीया भाव में तो गोविंद राधे।
दोष दृष्टि का हो अभाव बता दे॥ 5821 ॥
परकीया भाव में तो गोविंद राधे।
मिलन की प्यास बढ़े छिन छिन बता दे॥ 5822 ॥
हरि आलिंगन में गोविंद राधे।
गोपी रोमांच भी दुखद बता दे॥ 5823 ॥
हरि आलिंगन में गोविंद राधे।
वस्त्र आदि व्यवधान दुखद बता दे॥ 5824 ॥
इक टक देखूँ कैसे गोविंद राधे।
लाज निगोड़ी आ के पलक गिरा दे॥ 5825 ॥
अपलक देखूँ कैसे गोविंद राधे।
निगुरी पलकनि पर्दा गिरा दे॥ 5826 ॥
गोपी योगमाया ते गोविंद राधे।
मोहित हो के कोसा विधि को बता दे॥ 5827 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आँखों के भाग्य में गोविंद राधे।
हरि दर्शन सुख लिखा ना बता दे॥ 5828॥
हरि के वियोग योग गोविंद राधे।
दोनों में, आँखों में जल हो बता दे॥ 5829॥
श्याम प्रेम रोगी कह गोविंद राधे।
मेरे रोग का वैद्य श्याम है बुला दे॥ 5830॥
श्याम वैद्य आवे तो गोविंद राधे।
प्रेम रोग और बढ़ि जाये बता दे॥ 5831॥
इसी लुका छिपी में ही गोविंद राधे।
प्रेमी को मिले रस अमित बता दे॥ 5832॥
प्रेम है अमूल्य वस्तु गोविंद राधे।
याते छिपाओ यथा शक्ति बता दे॥ 5833॥
कुलटा का प्यार जैसा गोविंद राधे।
जग को जना ना मन हरि में लगा दे॥ 5834॥
'जरयति गुणान्' अर्थ गोविंद राधे।
जग जार परलोक लाभ जला दे॥ 5835॥
'जरयत्यविद्यां' अर्थ गोविंद राधे।
कृष्ण जार ग्रन्थि अविद्या जला दे॥ 5836॥
दिव्य जार श्रीकृष्ण गोविंद राधे।
जगत के पंच प्रपंच जला दे॥ 5837॥
हरि में तो जार भाव गोविंद राधे।
त्रिगुण, त्रिकर्म, त्रिदेह जला दे॥ 5838॥
हरि में तो जार भाव गोविंद राधे।
पंचक्लेश अरु पंचकोश जला दे॥ 5839॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि में तो जार भाव गोविंद राधे।
तीनों ताप अरु पुण्य पाप जला दे॥ 5840॥
हरि में तो जार भाव गोविंद राधे।
हरि ते मिला दे अरु माया को भगा दे॥ 5841॥
हरि में तो जार भाव गोविंद राधे।
दिव्य चिन्मय हरि धाम दिला दे॥ 5842॥
जग जार प्रेम तो हो गोविंद राधे।
चोरी चोरी कोई नहिं जाने बता दे॥ 5843॥
कृष्ण जार प्रेम तो हो गोविंद राधे।
बीच बजार खुल्लम खुल्ला बता दे॥ 5844॥
श्रीकृष्ण उपपति गोविंद राधे।
होकर भी परम पति हैं बता दे॥ 5845॥
जग काम निन्दनीय गोविंद राधे।
कृष्ण काम तो वन्दनीय है बता दे॥ 5846॥
कृष्ण भक्त यदि चह गोविंद राधे।
जग का विषय वह निंद्य है बता दे॥ 5847॥
कृष्ण प्रेमिका कुब्जा गोविंद राधे।
कृष्ण का विषय चाहा वंद्य है बता दे॥ 5848॥
कृष्ण काम काम नहिं गोविंद राधे।
भर्जित बीज ना हो अंकुरित बता दे॥ 5849॥
भुने या उबले गोविंद राधे।
बीज कभू ना दें अंकुर बता दे॥ 5850॥
हरि सम्बन्धी काम गोविंद राधे।
प्रेम ही है माया का बंध छुड़ा दे॥ 5851॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

विहित भक्ति ते जैसे गोविंद राधे।
जीव को सद्गति प्राप्त हो बता दे॥ 5852॥
वैसे ही काम आदि गोविंद राधे।
अविहित भक्ति दे सुगति बता दे॥ 5853॥
दण्डकारण्य मुनि गोविंद राधे।
अग्नि पुत्र आदि हरिकामी बता दे॥ 5854॥
काम की कौन कहे गोविंद राधे।
कृष्ण प्रति द्वेष भय सुगति दिला दे॥ 5855॥
किसी भी प्रकार ते हो गोविंद राधे।
मन का निवेश श्रीकृष्ण में बता दे॥ 5856॥
मन का निवेश ही तो गोविंद राधे।
जीव को ब्रह्म श्रीकृष्ण ते मिला दे॥ 5857॥
जाने अनजाने ज्यों गोविंद राधे।
विषपान व्यक्ति की मृत्यु करा दे॥ 5858॥
किसी प्रकार त्यों गोविंद राधे।
हरिभक्ति सम्बन्ध पाप नसा दे॥ 5859॥
शिशुपाल पौन्ड्रक गोविंद राधे।
शाल्व बैर ते की थी भक्ति बता दे॥ 5860॥
द्वेष आदि ते तो है गोविंद राधे।
श्रेष्ठ काम भाव युक्त भक्ति बता दे॥ 5861॥
काम भाव भक्ति ते है गोविंद राधे।
श्रेष्ठ शास्त्रीय वैधी भक्ति बता दे॥ 5862॥
वैधी भक्ति ते भी श्रेष्ठ गोविंद राधे।
निष्काम रागानुगा है बता दे॥ 5863॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सर्वश्रेष्ठ सिद्धा भक्ति गोविंद राधे।
रागात्मिका भक्ति ही है बता दे॥ 5864॥
रागानुगा भक्ति गोविंद राधे।
आनुगत्यमयी ही होती है बता दे॥ 5865॥
रागात्मिका भक्ति गोविंद राधे।
स्वातंत्र्यमयी ही होती है बता दे॥ 5866॥
रागात्मिका भक्ति गोविंद राधे।
राधा, ललिता आदि में बता दे॥ 5867॥
रागात्मिका वारे गोविंद राधे।
स्वरूप शक्ति के नियन्ता बता दे॥ 5868॥
रागात्मिका भक्ति गोविंद राधे।
जीव ते है अप्राप्य बता दे॥ 5869॥
जीव को तो बस गोविंद राधे।
रागानुगा भक्ति रसिक बता दे॥ 5870॥
भक्तों की भक्ति भेद गोविंद राधे।
वैधी अरु रागानुगा हैं बता दे॥ 5871॥
पुनि इन दोनों के गोविंद राधे।
भेद हैं चार चार और बता दे॥ 5872॥
पार्षद साधनसिद्ध गोविंद राधे।
जातरति साधक तीसरा बता दे॥ 5873॥
चौथा है साधक गोविंद राधे।
नाम अजातरति साधक बता दे॥ 5874॥
नित्य सिद्ध परिकर गोविंद राधे।
गोलोक के पार्षद हैं बता दे॥ 5875॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो साधन ते बने गोविंद राधे।
सिद्ध वे हैं साधन सिद्ध बता दे॥ 5876 ॥
उर प्रेम अंकुर गोविंद राधे।
जिनके वे जातरति साधक बता दे॥ 5877 ॥
प्रेम अंकुरहीन गोविंद राधे।
हैं अजातरति साधक वे बता दे॥ 5878 ॥
चारों ही दास्य सख्य गोविंद राधे।
वात्सल्य माधुर्य भाव के बता दे॥ 5879 ॥
वैधी भक्तियुक्त जन गोविंद राधे।
श्याम मिलन का करें यत्न बता दे॥ 5880 ॥
रागानुगा भक्तों ते गोविंद राधे।
श्याम ही मिलन का करें यत्न बता दे॥ 5881 ॥
वैधी भक्ति शास्त्र- गोविंद राधे।
विधि युक्त याते है दुर्बला बता दे॥ 5882 ॥
रागानुगा भक्ति गोविंद राधे।
विधि ते रहित याते प्रबला बता दे॥ 5883 ॥
नरक के भय ते वैधी गोविंद राधे।
सहज जो भक्ति रागानुगा बतला दे॥ 5884 ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वैधी रसोइया सम गोविंद राधे।
रागानुगा माता सम भक्ति बता दे॥ 5885 ॥
वैधी में चौंसठ गोविंद राधे।
नेम, रागानुगा में प्रेम बता दे॥ 5886 ॥
दोनों में नव भक्ति गोविंद राधे।
अरु गुरु शरणागति है बता दे॥ 5887 ॥

रागानुगा भक्ति का गोविंद राधे।
दूसरा नाम अविहिता बता दे॥ 5888॥
रागानुगा भक्ति में गोविंद राधे।
रुचि की ही है प्रधानता बता दे॥ 5889॥
रागानुगा भक्ति को गोविंद राधे।
किसी विधि की न अपेक्षा बता दे॥ 5890॥
भक्ति के अनुकूल गोविंद राधे।
जो भी हो आचरण सोई करा दे॥ 5891॥
भक्ति के प्रतिकूल गोविंद राधे।
जो भी हो उदासीन भाव बना दे॥ 5892॥
भक्ति व्यवधान तीन गोविंद राधे।
मल विक्षेप आवरण बता दे॥ 5893॥
मल का निवारण गोविंद राधे।
भक्ति की तीव्रतम इच्छा बता दे॥ 5894॥
विक्षेप वारण गोविंद राधे।
श्रीकृष्ण साधन भक्ति बता दे॥ 5895॥
आवरण वारण गोविंद राधे।
कृपा ते स्वरूप शक्ति प्राप्ति बता दे॥ 5896॥
हिंसा दम्भ मात्सर्य गोविंद राधे।
भावयुक्त भक्ति है तामसी बता दे॥ 5897॥
विषय ऐश्वर्य गोविंद राधे।
भावयुक्त भक्ति है राजसी बता दे॥ 5898॥
पापक्षय हित अरु गोविंद राधे।
हरि अर्पण हित सात्विकी बता दे॥ 5899॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति

तैलधारावत गोविंद राधे।
भक्ति निष्काम निर्गुण है बता दे॥ 5900॥
निर्गुण भक्ति में तो गोविंद राधे।
वैधी भक्ति नियम अमान्य बता दे॥ 5901॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ॥
राधे राधे गोविंद गोविंद राधे ।

भक्तियोगरसावतार, जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज
जगद्गुरु कृपालु परिषत्, भक्ति धाम, मनगढ़
प्रेम रस

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI